शिष्यता सुसमाचार प्रचार

Discipleship Evangelism Course
Levels 1-3
48 lessons

लेखक

एन्ड्र्यू वॉमक और डोन क्रो

Copyright © 2012, Andrew Wommack
Permission is granted to duplicate or reproduce for discipleship purposes on the condition that it is distributed free of charge.

Andrew Wommack Ministries
P.O. Box 3333
Colorado Springs, CO 80934-3333
www.awmi.net

The Complete Discipleship Evangelism 48-Lesson Course © 2012

LEVEL 1

Andrew Wommack Ministries India
info@awmindia.net   www.awmindia.net

Item Code: HI417-1/3

अनुक्रमणिका
प्रथम स्तर

अध्याय	1	शाश्वत् जीवन	05
अध्याय	2	अनुग्रह द्वारा उद्धार	11
अध्याय	3	अनुग्रह द्वारा धार्मिकता	19
अध्याय	4	परमेश्वर के साथ संबंध	24
अध्याय	5	परमेश्वर का स्वभाव	31
अध्याय	6	पश्चाताप	38
अध्याय	7	समर्पण	47
अध्याय	8	डूब का बपतिस्मा	53
अध्याय	9	मसीह में हमारी पहचान (भाग 1)	59
अध्याय	10	मसीह में हमारी पहचान (भाग 2)	66
अध्याय	11	क्या होता है, जब एक मसीही पाप करता है	72
अध्याय	12	परमेश्वर के वचन की सम्पूर्णता	78
अध्याय	13	परमेश्वर दोषी नहीं	84
अध्याय	14	आत्मा से भरे जीवन की सामर्थ	91
अध्याय	15	पवित्र आत्मा को कैसे प्राप्त करें	97
अध्याय	16	अन्य अन्य भाषा में बोलने से लाभ	103

प्रथम स्तर

अध्याय १

शाश्वत् जीवन

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

पवित्र शास्त्र का एक सबसे लोकप्रिय पद यूहन्ना 3:16 है। ऐसा प्रतीत होता है, कि इस वचन को लोग बहुत छोटी आयु से जानते हैं, इसके बावजूद मैं विश्वास करता हूँ कि इसे गलत समझा गया और गलत रीति से लागू किया गया है। यूहन्ना 3:16 कहता है, *"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश ना हो, परन्तु अनन्त जीवन पाएं।"*

परम्परानुसार, इस वचन का उपयोग हमें यह सिखाने के लिये किया गया है, कि यीशु मसीह आया और हमारे पापों के लिये मरा ताकि हम नाश ना हों। जैसे की यह बात सत्य है, यह पद कह रहा है, कि यीशु मसीह के इस पृथ्वी पर आने और हमारे लिये मरने का मुख्य उद्देश्य यह था, कि हमें अनन्त जीवन प्राप्त हो। मात्र ऐसा हुआ कि हमारे पाप इस अनंत जीवन और हमारे बीच बाधा बनकर खड़े हो गये।

यह सत्य है, कि यीशु मसीह वास्तव में हमारे पापों के लिये मरा, यह भी सत्य है कि यदि हम यीशु मसीह पर विश्वास करें, हम नाश नहीं होगें,पर सुसमाचार में इससे अधिक और भी कुछ है। सुसमाचार का मूल संदेश यह है, कि परमेश्वर आपको अनंत जीवन देना चाहता हैं। अब मुझे इसे समझाने दें।

क्रूस पर चढ़ाये जाने से पूर्व उस रात को, यीशु मसीह प्रार्थना कर रहे थे, और उसने इस प्रकार कहा,*"और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है,जानें"* (यूहन्ना 17:3)। यह वचन कहता है, कि अनंत जीवन पिता जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है को जानना और यीशु मसीह जिसको उसने भेजा है, जानना है। यही अनन्त जीवन है। कई लोगों का यह मानना है कि, अनंन्त जीवन का अर्थ सदा जीवित रहना है। दरअसल हर व्यक्ति सदा के लिये जीवित रहता है। यह सोचना हमारी गलत धारणा है, कि जब एक व्यक्ति मरता है तब उनका

विद्यमान होना समाप्त हो जाता है। आत्मा और प्राण परमेश्वर के पास वापिस चला जाता है। शरीर कब्र में नष्ट हो जाता है। सत्य यह है कि, हर व्यक्ति जो कभी इस पृथ्वी पर रहा हो वह आत्मा रूप में जीवित रहना जारी रहेगा। अतः यह कहना, कि अनंत जीवन का अर्थ सदा जीवित रहना पूर्ण सत्य नही है–हर व्यक्ति सदा जीवित रहता है। यह पद इस बात को सिद्ध करता है कि अनंत जीवन सभी को नही दिया जाता है।

कुछ लोग कहेंगे, "अनंत जीवन स्वर्ग में सदा जीवित रहना बनाम नरक में सदा जीवित रहना है।" पर अनंत जीवन वह है जिसके विषय में यीशु मसीह ने यूहन्ना 17:3 में बताया है। यह परमेश्वर को और यीशु मसीह को जानना है। यह बौद्धिक ज्ञान से कहीं अधिक है, यह शब्द "जानें" या जानने का उपयोग पूरे पवित्रशास्त्र में उस सबसे गहरे, व्यक्तिगत संबंध को दर्शाने के लिये किया गया है, जो आप उसके साथ रख सकते हैं।

उद्धार का वास्तविक उद्देश्य सदा के लिये स्वर्ग में रहना नहीं है, जैसा कि यह महान होगा। उद्धार का वास्तविक उद्देश्य उसके साथ गहरा सन्निकट और व्यक्तिगत संबंध होना है। हजारों लोगों ने परमेश्वर को उनके पापों की क्षमा के लिये पुकारा है, पर उसके साथ गहरा संबंध स्थापित करना उनका कभी लक्ष्य नहीं रहा है।

उद्धार का सही वास्तविक अर्थ ना समझाने के द्वारा, हम सुसमाचार की अवहेलना कर रहे हैं। जब हम उद्धार को ऐसे रूप में प्रस्तुत करते हैं जो मात्र आत्मिक चीजों से संबंध रखता है, यह हमें सिर्फ भविष्य में लाभ पहुँचायेगा। अनंन्त जीवन में हम किसी की सहायता नहीं कर पायेंगे। कई लोग हैं जो इस पृथ्वी पर अब भी अक्षरशः नरक की सी स्थिति में रह रहे हैं। कई लोग निराशा से जूझ रहे हैं गरीबी में जी रहे हैं अनबन के साथ निपटना, अस्वीकार, चोट खाये हुये व असफल वैवाहिक जीवन के साथ जी रहे हैं। लोग दिन प्रतिदिन बस जीवित रहने कि कोशिश में लगे हुये हैं। वे अपने आप को डूबने से बचाने के लिये अपने सर को पानी से ऊपर रखे हुये हैं। उद्धार को ऐसा मानकर कि मानों यह भविष्य से संबंधित है, अधिकांश लोग इस निर्णय को टाल देते हैं कि यह भविष्य से संबंधित है, क्योंकि वे आज जीवित रहने की कोशिश में व्यस्त हैं।

सत्य यह है कि यीशु मसीह ना सिर्फ हमारे शाश्वत गन्तव्य को प्रभावित करने के लिये आया ताकि हम नरक के श्राप और सजा के बजाये स्वर्ग में आशीष के साथ सदा जीवित रह सकें। पर वह हमें वर्तमान दुष्ट संसार से बचाने के लिये आया

(गलतियों 1:4)। यीशु मसीह आपको परमेश्वर पिता के साथ एक गहरा, घनिष्ठ और व्यक्तिगत संबंध देने के लिये आया।

यीशु इसलिये आया, कि वह आपको उसके साथ फिर से निकट संबंध में ला सकें। यीशु आपसे प्रेम करता है। यीशु आपको व्यक्तिगत रूप से जानना चाहता है। यीशु मसीह आपको एक ऐसा गुणों से भरा जीवन देना चाहता है, जो इतना महान है जिसे किसी अन्य स्त्रोत से आप नहीं प्राप्त कर सकते हैं।

यीशु मसीह इसे यूहन्ना को 10:10: में इस प्रकार व्यक्त करता था, *"चोर (शैतान के बारे में बोला) किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।"* (कोष्टक में दिये गये शब्द मेरे हैं)। परमेश्वर आपको अनंत जीवन देना चाहता है। परमेश्वर आपको बहुतायत का जीवन देना चाहता है, मैं विश्वास करता हूँ कि आज आपको इसकी आवश्यकता है, कि आपको यह चाहिए। मसीह न सिर्फ आपके पापों की क्षमा करने के लिये मरा, पर उसके निकट लाने के लिये मरा। यदि आप प्रभु को नहीं जानते तो इस उद्देश्य के लिये आपको उसे जानने की आवश्यकता है। यदि आप नया जन्म पा चुके हैं तो आपको अपने पापों की क्षमा से परे पिता के साथ अनंत जीवन में प्रवेश करने की आवश्यकता है।

शाश्वत् जीवन के तथ्य

क. सुसमाचार का उद्देश्य अनंत जीवन है।(यूहन्ना 3:16)।

ख. अनंत जीवन परमेश्वर को जानना है।(यूहन्ना 17:3)

ग. परमेश्वर को जानना गहरे घनिभठ संबंध के समान है। (1 कुरिन्थियों 6:16–17)।

घ. अनंत जीवन अब उपलब्ध है।(1 यूहन्ना 5:12)।

ड. परमेश्वर आप के साथ एक व्यक्तिगत संबंध स्थापित करना चाहता है। (प्रकाशितवाक्य 3:20)

शिष्यता के प्रश्न

1. यूहन्ना 3:16 पढ़ें। परमेश्वर का यीशु मसीह को भेजने का क्या उद्देश्य था?

2. शब्द "जानने" का बाइबल के अनुसार उपयोग का अर्थ है, कि एक व्यक्ति के साथ गहरा व्यक्तिगत संबंध रखना (उत्पत्ति 4:1)। पढ़ें यूहन्ना 17:3 इस पद के अनुसार शाश्वत् और अनंत जीवन क्या है।

3. पढ़ें 1 यूहन्ना 5:11–12. इस पद के अनुसार शाश्वत् जीवन या अनंत जीवन की शुरूआत कब होती है?

4. यूहन्ना 10:10 पढ़ें यीशु मसीह हमें किस प्रकार का जीवन देने के लिये आया था?

5. अपने शब्दों में बहुतायत के जीवन के गुणों या विशेषताओं को समझाये।

6. क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को इस संसार में हमारे पापों के लिये मरने को भेजा, और इसके द्वारा हम जो विश्वास करते हैं, को शाश्वत् या अनंत जीवन देता है?

7. क्या आपको यह स्पष्ट हो गया है कि शाश्वत्/अनंत जीवन न सिर्फ समय की अवधि (शाश्वत् जीवन काल) है, पर जीवन कि गुणवत्ता और मात्रा है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

यूहन्ना 3:16 –*"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश ना हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"*

उत्पत्ति 4:1 – *"जब आदम अपनी पत्नी हव्वा के पास गया तब उस ने गर्भवती होकर कैन को जन्म दिया और कहा, मैं ने यहोवा की सहायता से एक पुरूष पाया है।"*

यूहन्ना 17:3 – *"और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें।"*

1 यूहन्ना 5:11–12 – *"11 और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है: और वह जीवन उसके पुत्र में है। 12 जिस के पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिस के पास परमेश्वर का पुत्र नहीं उसके पास जीवन भी नहीं है।"*

यूहन्ना 10:10 – *"चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात् करने और नष्ट करने का आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाए।"*

उत्तर निर्देशिका

1. पढ़ें यूहन्ना 3:16। परमेश्वर का यीशु मसीह को भेजने का क्या उद्देश्य था?

   जगत का उद्धार करने और उन सभी लोगों को जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, पाप को समाप्त कर अनंत जीवन देना है।

2. शब्द "जानने" का बाइबल के अनुसार उपयोग का अर्थ है कि एक व्यक्ति के साथ गहरा व्यक्तिगत संबंध रखना (उत्पत्ति 4:1)। पढ़ें यूहन्ना 17:3 इस पद के अनुसार शाश्वत् और अनंत जीवन क्या है?

   अनंत जीवन परमेश्वर और यीशु मसीह को (भौतिक रूप से नहीं पर गहरी घनिष्ठता) से जानना है।

3. पढ़ें 1 यूहन्ना 5:11–12. इस पद के अनुसार शाश्वत् जीवन या अनंत जीवन की शुरूआत कब होती है?

जब हम पुत्र (यीशु मसीह को) अपने जीवन में ग्रहण करते हैं।

4. यूहन्ना 10:10 पढ़ें। यीशु मसीह हमें किस प्रकार का जीवन देने के लिये आया था?

शाश्वत् जीवन!

5. अपने शब्दों में बहुतायत के जीवन के गुणों या विशेषताओं को समझाये।

अनंत जीवन इसके ठीक विपरीत होगा जैसा यीशु मसीह ने बताया की चोर किस लिये आता है।

6. क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को इस संसार में हमारे पापों के लिये मरने को भेजा, और इसके द्वारा हम जो विश्वास करते हैं, को शाश्वत् या अनंत जीवन देता है?

हाँ।

7. क्या आपको यह स्पष्ट हो गया है कि शाश्वत्/अनंत जीवन न सिर्फ समय की अवधि (शाश्वत् जीवन काल) है, पर जीवन कि गुणवत्ता और मात्रा है?

हाँ।

प्रथम स्तर

अध्याय २

अनुग्रह द्वारा उद्धार

लेखक - डोन क्रो

आत्मिक सत्य को समझाने के लिये यीशु मसीह कई बार दृ टांतों, और कहानियों का उपयोग करता था। लूका 18:9–14 इस प्रकार ुरू होता है। *"और उस ने कितनों को जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और औरों को तुच्छ जानते थे, यह दृ टान्त कहा।"* यीशु मसीह एक विशे ा समूह को लक्षित कर बोल रहे थे। यह वह समूह था जो अपने आप को धर्मी कहकर पुकारता था और दूसरे लोगों को नीचे दर्ज का मानते हुये देखता था। उसने इन दृ टान्तों को उन लोगों को बताया जो उन बातों पर विश्वास करते थे, जो वो करते थे। वह उन्हें स्वयं को धर्मी ठहराने वाला कहते थे। इसी वि ाय पर यीशु मसीह बोल रहे थे जब उसने कहा, वह यह कहते हुये दूसरों को नीचा दिखाते हुये देखते हैं कि,"मैं तुम से बेहतर हूँ!"

पद 10 में यीशु मसीह कहते हैं,*"कि दो मनु य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए; एक फरीसी था दूसरा चुंगी लेनेवाला।"* हम आधुनिक भा ा में यह कहेंगे कि वह प्रार्थना करने कलीसिया को गये, उनमें से एक फरीसी था। एक फरीसी बहुत धर्मी व्यक्ति था। इस ाब्द का वास्तविक अर्थ है "अलग किये हुये", ऐसे लोग जो इतने धर्मी थे कि एक दृ ट से यह कह रहे हों कि,"मुझे अशुद्ध मत करो! मेरे बहुत करीब ना आओ। मैं अन्य लोगों के समान नहीं हूँ! मैं बाकी सभी से बेहतर हूँ!" जिस दूसरे मनु य कि प्रभु यीशु ने चर्चा कि वह था चुंगी लेनेवाला। चुंगी लेनेवाले बहुत दु ट, पापी और ऐसे लोग होने के लिये जाने जाते थे, जो लोगों को धोखा देते हैं। वह जो भी रीति बन पड़ती उसे अपनाकर कर जमा किया करते थे। वे अपनी जेबों में बहुत सारा पैसा रखा करते थे, और उसमे से कुछ रोमी सरकार को दिया करते थे। इसी वजह से उनके साथी उनको नीची दृ ट से देखा करते थे।

पद 11 में यह कहानी जारी रहती है, *"फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनु यों के समान*

अन्धेर करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं ,और न इस चुंगी लेनेवाले के समान हूँ।" मैं चाहता हूं कि आप इसे नोट करें। वह किससे प्रार्थना कर रहा था? वह अपने आप से प्रार्थना कर रहा था यद्यपि वह ''परमेश्वर'' कह रहा था, और सही ाब्दों का इस्तेमाल कर रहा था। परमेश्वर उसकी प्रार्थना को स्वीकृति नहीं दे रहा था। हम बाद में देखेंगे कि यह ऐसा क्यों है। यह नोट करें कि वह किस प्रकार प्रार्थना कर रहा था, कि ''हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं,'' कि ''मैं और मनु यों के समान अन्धेर करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेनेवाले के समान हूँ।'' जो यहाँ प्रार्थना करने के लिये आया। आप देख सकते हैं कि उसने दूसरों कि अवहेलना की और उन्हें नीचा दिखाया क्योंकि वह सोचता था कि वह अन्य लोगों से बेहतर है।

पद 12 में फरीसी ने कहा,*"मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूँ; मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं।"* वह कह रहा था कि ''देखो मैं क्या करता हूँ?'' क्या तुम जानते हो उपवास रखने का क्या अर्थ है? दरअसल इसका अर्थ है बिना भोजन के रहना। वह कलीसिया को दान भी दिया करता था। वह उन लोगों में से था जो कहते हैं,"मेरी चिन्ता मत करो! मैं अच्छा जीवन जीता हूँ! मैं दान देता हूँ! मैं कलीसिया को धन देता हूँ!"

फिर हम पद 13 में चुंगी लेनेवाले के वि ाय में आते हैं *"परन्तु चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आंखे उठाना भी न चाहा, बरन अपनी छाती पीट–पीटकर कहा; हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर।"* उसके हाव भाव को देखें: *"दूर से ही खड़ा रहकर।"* वह कलीसिया के भवन के भीतर भी नहीं गया। वह अपने जीवन और जो कुछ उसने किया था उससे इतना ार्मिन्दा था, कि वह बहुत दूर खड़ा रहता है और नजरें ऊपर भी नहीं करता, ना ही स्वर्ग की ओर नजरें उठाके देखता है वरन् अपनी छाती पीटता है। जब बाइबल पुराने नियम में छाती पीटने के वि ाय में चर्चा करती है, इसके तहत कई बार लोग अपने वस्त्र भी फाड़ लिया करते थे, जो यह कहने का एक तरीका था,"हे परमेश्वर जो कुछ मैंने किया है, उसके लिये मैं दुखी हूँ! यह पश्चाताप, टूटा हुआ मन और पिसे हुओं का चिन्ह था। जिसकी परमेश्वर अनदेखी नहीं करेगा। चुंगी लेने वाला जो एक पापी था उसने परमेश्वर को पुकारा और प्रार्थना की, "परमेश्वर मुझ पर दया कर मैं पापी हूँ!"

पद 14 कहता है, *"मैं तुम से कहता हूं, कि वह दूसरा नहीं; परन्तु यही मनु य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया; क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनायेगा, वह छोटा किया जायेगा; और जो अपने आप को छोटा बनायेगा, वह बड़ा किया जायेगा।"* चुंगी लेने वाला धर्मी ठहराया जाकर घर गया, वह परमेश्वर के सामने धर्मी घोि ात हुआ, *वह* परमेश्वर के सम्मुख सही चाल चलने वाला घोि ात हुआ, परमेश्वर द्वारा उसे क्षमा घोि ात किया गया। उसे क्षमा क्यों किया गया? वह परमेश्वर की दृि ट में धर्मी ठहराया जाकर क्यों घर गया, और धर्मी फरीसी परमेश्वर कि दृि ट में धर्मी क्यों नहीं ठहराया गया? यह इसलिये था कि फरीसी ने अपने आप को यह कहते हुये ऊंचा उठाया कि "मैं अन्य लोगों से बेहतर हूँ! मैं पापी नही हूँ! मैं अन्य लोगों के समान नहीं हूँ।" जबकि चुंगी लेने वाला जानता था कि वह परमेश्वर के सम्मुख खड़े हाने लायक नहीं है। वह उसे कुछ भी नहीं दे सकता था। वह पापी था। बाइबल कहती है कि यीशु मसीह धर्मियों को बचाने के लिये नहीं आया, पर पापियों को बचाने के लिये आया, और हम सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। इस चुंगी लेने वाले ने अपने आप को दीन किया और उसे पाप क्षमा और माफी मिली।

हम अनुग्रह के द्वारा उद्धार के वि ाय में चर्चा कर रहे हैं। अनुग्रह एक अदभुत ाब्द है, मैं आपको अनुग्रह की एक स्वीकृत परिभा ाा दूंगा, पर अनुग्रह का अर्थ इससे कही अधिक है। ग्रीक भा ाा जिसमे नया नियम लिखा गया है वहां पर अनुग्रह ाब्द के लिये उपयोग किया गया ाब्द चेरिस बींतपे है। अनुग्रह की एक स्वीकृत परिभा ाा यह हैः मुफ्त, परमेश्वर द्वारा उन लोगों के प्रति की गई मुफ्त की मेहरबानी जो इसके योग्य नहीं है। यह चुंगी लेने वाला परमेश्वर की ओर से कुछ भी पाने के योग्य नहीं था, पर उसने परमेश्वर का अनुग्रह पाया क्योकि उसने परमेश्वर के सामने अपने आप को नम्र और दीन किया। ग्रीक भा ाा में एक अन्य ाब्द *करिसमा* (*charisma*) है, जो कि (*charis*) ाब्द है जो आखरी में (*ma*) प्रत्यय लगाकर बनाया गया है। इसका अर्थ परमेश्वर की ओर से एक विशि ट प्रगटिकरण या परमेश्वर की ओर से अनुग्रह का रूप है और यह चुंगी लेने वाले ने परमेश्वर के सम्मुख धर्मी ठहराया जाना, परमेश्वर के साथ सही संबन्धों में होने को एक उपहार स्वरूप पाया।

रोमियों 5:17 कहता है, *"क्योंकि जब एक मनु य के अपराध कें कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी बरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनु य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगें"*

परमेश्वर आपको और मुझे अपने सम्मुख धर्मी ठहराये जाना एक वरदान स्वरूप देता है। हमारे अनुच्छेद के चुंगी लेने वाले ने न्यायोचित्त, धर्मी ठहराये जाने का वरदान पाया जो की सिर्फ यीशु मसीह के द्वारा आ सकता है। यूहन्ना 1:17 में बाइबल कहती है, *"इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई ; परन्तु अनुग्रह, और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुंची।"* यह अनुग्रह सिर्फ एक ही प्रकार के व्यक्ति को मिलता है जो अपने आप को परमेश्वर के सामने नम्र और दीन करते हैं और यह जानते हैं कि परमेश्वर के सम्मुख वह खड़े होने के लायक नहीं है, और जो परमेश्वर की दया के लिये पुकारते हैं। यह लोग परमेश्वर की दया और क्षमा प्राप्त करेंगे।

शिष्यता के प्रश्न

1. लूका 18:9 पढ़ें। दृ टान्त क्या है?

2. लूका 18:9 पढ़ें। इस दृ टान्त को यीशु मसीह ने किसको निर्देशित किया?

3. लूका 18:9 पढ़ें। (पद का आखरी भाग)। लोग जो स्वयं धर्मी होते हैं वे अक्सर दूसरों के प्रति एक दृि टकोण प्रगट करते हैं। लूका 18:9 के अनुसार वह दृि टकोण क्या है?

   क. वे दूसरों को चाहते हैं।

   ख. वे दूसरों का तिरस्कार करते या उनको नीचा दिखाते हैं

   ग. वे दूसरों से प्रेम करते हैं।

4. लूका 18:10 पढ़ें। दो लोग मंदिर में प्रार्थना करने के लिये गये, आधुनिक भा ा में वे कहा प्रार्थना करने के लिये गये?

5. लूका 18:10 पढ़ें। यह लोग कौन थे?

6. लूका 18:11 पढ़ें। फरीसी की प्रार्थना क्या थी?

7. लूका 18:12 पढ़ें। उपवास का अर्थ क्या है?

8. लूका 18:12 पढ़ें। इसके तहत दशमांश देने का क्या अर्थ है?

9. लूका 18:13 पढ़ें। चुंगी लेने वाला कहाँ खड़ा था? क्यों?

10. लूका 18:13 पढ़ें। चुंगी लेने वाला अपना सर क्यों झुकाये हुये था और ऊपर क्यों नहीं देख रहा था?

11. लूका 18:13 पढ़ें। चुंगी लेने वाले कि प्रार्थना क्या थी?

12. लूका 18:14 पढ़ें। इनमें से कौन सा व्यक्ति परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराया गया जब वह अपने घर गया?

13. लूका 18:14 पढ़ें। फरीसी के बजाये चुंगी लेने वाला क्यों धर्मी ठहराया गया?

14. लूका 18:14 पढ़ें। क्या परमेश्वर ने इस चुंगी लेने वाले को क्षमा किया?

15. रोमियों 10:13 पढ़ें। यदि आप ठीक इसी वक्त अपने घुटने टेक लें और अपने दिल की गहराई से परमेश्वर को पुकार उठें? "परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर," तब क्या परमेश्वर आपके साथ ठीक उसी तरह व्यवहार करेगा जैसे उसने चुंगी लेने वाले के साथ किया था?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

लूका 18:9 – *"और उस ने कितनों को जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी है, और औरों को तुच्छ जानते थे, यह दृ टान्त कहा।"*

लूका 18:10 – *"कि दो मनु य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए; एक फरीसी था दूसरा चुंगी लेनेवाला।"*

लूका 18:11 – *"फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनु यों की नाई अन्धेर करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेनेवाले के समान हूँ।"*

लूका 18:12 – *"मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी सब कमाई का दसवां अंश भी देता हूं।"*

लूका 18:13 – *"परन्तु चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर,स्वर्ग की ओर आंखे उठाना भी न चाहा, बरन अपनी छाती पीट–पीटकर कहा; है परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर।"*

लूका 18:14 – *"मैं तुम से कहता हूं, कि वह दूसरा नहीं; परन्तु यहीं मनु य धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया; क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।"*

रोमियों 10:13 – *"क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा वह उद्धार पाएगा।"*

1 यूहन्ना 1:8–9 – *"यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं: और हम में सत्य नहीं है। यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करनें, और हमें सब अधर्म से ुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।"*

उत्तर निर्देशिका

1. लूका 18:9 पढ़ें दृ टान्त क्या है?

   क बाइबल का दृष्टान्त एक कहानी होती है जो किसी विशेषए सत्य को दर्शाती है।

2. लूका 18:9 पढ़ें इस दृ टांत को यीशु मसीह ने किसको निर्देशित किया?

उन लोगों को निर्देशित किया जो अपने आप पर भरोसा रखते थे कि वे धर्मी हैं अर्थात वे स्वयंधर्मी हैं।

3. लूका 18:9 पढ़ें। (पद का आखरी भाग)। लोग जो स्वयं धर्मी होते हैं वे अक्सर दूसरों के प्रति एक दृि टकोण प्रगट करते हैं। लूका 18:9 के अनुसार वह दृि टकोण क्या है?

ख. वे औरों को तुच्छ जानते है।

4. लूका 18:10 पढ़ें। दो लोग मंदिर में प्रार्थना करने के लिये गये, आधुनिक भा ाा में वे कहा प्रार्थना करने के लिये गये?

कलीसिया/आराधनालय में गये।

5. लूका 18:10 पढ़ें। ये लोग कौन थे?

एक फरीसी एक चुंगी लेने वाला/कर जमा करने वाला।

6. लूका 18:11 पढ़ें। फरीसी की प्रार्थना क्या थी?

फरीसी की प्रार्थना थी, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनुष्यों की नाई पापी, अन्यायी और व्यभिचारी नहीं,और न इस चुंगी लेनेवाले के समान हूँ।

7. लूका 18:12 पढ़ें। उपवास का अर्थ क्या है?

बिना भोजन के रहना।

8. लूका 18:12 पढ़ें। इसके तहत दशमांश देने का क्या अर्थ है?

अपनी आय का दसवां भाग देना।

9. लूका 18:13 पढ़ें। चुंगी लेने वाला कहाँ खड़ा था?

दरअसल.

क्यों?

वह गिरजाघर/ भवन मे जाने से शर्माता था क्योंकि वह भयानक पापी था अत: वो बाहर ही रह गया।

10. लूका 18:13 पढ़ें। चुंगी लेने वाला अपना सिर क्यों झुकाये हुये था और ऊपर क्यों नहीं देख रहा था?

वह शर्मिन्दा था

क्या आपने ऐसा कुछ गलत किया है जिसकी वजह से आप किसी से नजरे नहीं मिला सकते।

11. लूका 18:13 पढ़ें। चुंगी लेने वाले की प्रार्थना क्या थी?

परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर। मैं पापी हूँ।"

12. लूका 18:14 पढ़ें। इनमें से कौन सा व्यक्ति परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराया गया जब वह अपने घर गया?

चुंगी लेने वाला।

13. लूका 18:14 पढ़ें। फरीसी के बजाये चुंगी लेने वाला क्यों धर्मी ठहराया गया?

क्योंकि उसने अपने आप को परमेश्वर के सामने दीन किया। फरीसी घमण्ड से भरा हुआ था, उसने यह नहीं सोचा कि उसे उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है।

14. लूका 18:14 पढ़ें। क्या परमेश्वर ने इस चुंगी लेने वाले को क्षमा किया?

हाँ

15. रोमियों 10:13 पढ़ें। यदि आप ठीक इसी वक्त अपने घुटने टेक ले और अपने दिल की गहराई से परमेश्वर को पुकार उठे? "परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर," तब क्या परमेश्वर आपके साथ ठीक उसी तरह व्यवहार करेगा जैसे उसने चुंगी लेने वाले के साथ किया था?

हाँ, वो ऐसा करेगा। वह मुझे क्षमा करेगा, और सारे अधर्म से शुद्ध करेगा।

देखें 1 यूहन्ना 1:8–9

प्रथम स्तर

अध्याय ३

अनुग्रह द्वारा धार्मिकता

लेखक - डोन क्रो

आज हम अनुग्रह द्वारा धार्मिकता को देखेंगे। रोमियों 3:21–23 कहता है,"पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है, जिस की गवाही व्यवस्था और भवि यद्व क्ता देते हैं। अर्थात परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालो के लिये है; क्योंकि कुछ भेद (फर्क) नहीं। इसलिये कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित (बिना) हैं।"

यह नोट करें कि यहां पवित्रशास्त्र क्या कहता है, *''पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई हैं।''* मैंने एक बार एक व्यक्ति से पूछा, "आप क्या सोचते हैं कि आपको स्वर्ग जाने के लिये क्या करना चाहिए? उसने उत्तर दिया उसे दस आज्ञाओं को मानना चाहिए, अपनी पत्नी के प्रति वफादार रहना चाहिए, एक आर्दश जीवन जीना चाहिए साथ ही उसने और भी बहुत कुछ बताया। मैंने कहा, "क्या आप जानते हैं कि आपको स्वर्ग जाने, परमेश्वर की उपस्थिति में होने या उसके राज्य में होने के लिये क्या करना चाहिए? आपकी धार्मिकता परमेश्वर की धार्मिकता के बराबर होनी चाहिए।" उसने कहा, "मुझे माफ करना? किसी भी व्यक्ति की धार्मिकता परमेश्वर के तुल्य धार्मिकता नहीं हो सकती" सिर्फ एक व्यक्ति के पास यह धार्मिकता थी और वह व्यक्ति यीशु मसीह! था।" मैंने कहा, "आप की बात सच है!" यह पूर्ण सत्य है! हम में से प्रत्येक ने अपने जीवन में व्यवस्था या आज्ञाओं का भीतरी या बाहरी रूप से पालन किया है, पर हमें एक ऐसी धार्मिकता चाहिए जो ईश्वर के बराबर हो ताकि हम उसके समक्ष स्वीकार्य हों।"

यही पद 21–22 में कहा गया है *"पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है, जिस की गवाही व्यवस्था और भवि यद्वक्ता देते हैं। अर्थात परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये हैं।''* परमेश्वर आपको और मुझे जो धार्मिकता प्रदान करता है ''वह यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा प्राप्त होती है'', यह धार्मिकता उन सब को

प्राप्त हो सकती है जो विश्वास करते हैं। दो प्रकार की धार्मिकता होती है– मनु य की धार्मिकता और परमेश्वर की धार्मिकता। मनु य की धार्मिकता एक व्यक्ति का श्रे ठ व्यवहार, और जो भले काम वह करता है होता है, पर यह आपको परमेश्वर के सम्मुख स्वीकार्य नहीं बनाता। आपको एक ऐसी धार्मिकता चाहिए जो परमेश्वर के तुल्य हो, वह आपको यह प्रदान कर रहा है, परमेश्वर की धार्मिकता जो व्यवस्था विहीन है।

ग्रीक भा ा में ऐसा कोई ठोस उपपद नहीं है जो यह बताये कि इस पाठ्य में परमेश्वर यह कह रहा है कि, वह बिना व्यवस्था के अपनी धार्मिकता प्रदान कर रहा है। व्यवस्था के अधीन धार्मिकता ऐसी धार्मिकता है जो करने के द्वारा, अर्जित करने के द्वारा और प्राप्त करने के द्वारा धार्मिक होने को बताती है ताकि हम परमेश्वर के द्वारा स्वीकार्य हो। विश्व के सभी धर्म यह मानते हैं कि, आपको ईश्वर द्वारा स्वीकार होने के लिये कुछ करना होगा, कमाना होगा और प्राप्त करना होगा। ाब्द "सुसमाचार" का अर्थ है "अच्छी खबर" और सुसमाचार की अच्छी खबर यह है कि परमेश्वर अपनी स्वयं की धार्मिकता और स्वीकृति उन सब को प्रदान कर रहा है जो उस पर विश्वास करते हैं जो यीशु मसीह ने प्रदान किया– जो कि हमारे पापों के लिये क्रूस पर उसकी मृत्यु है, और हमें वह धार्मिकता प्रदान करता है जो व्यवस्था के बराबर है। यह परमेश्वर की ध ार्मिकता है, जो कि व्यवस्था से परे है, जो कि हमारे बिना कुछ किये, कमाये, उपलब्ध, हासिल किये बगैर आती है, और यह यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा आती है।

नोट करें पद 22 में परमेश्वर की धार्मिकता है जो यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा सब के लिये और सब के ऊपर आती है। परमेश्वर अपनी धार्मिकता सभों को क्यों प्रदान कर रहा है? परमेश्वर की वह धार्मिकता, *जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है; क्योंकि कुछ भेद (फर्क) नहीं। इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं* (को टक में दिये गये ाब्द मेरे है)। आपने पाप किया मैंने पाप किया और हम सब परमेश्वर के उस मानक से कहीं पीछे है। अपने पापों के कारण जिस चीज की हमें सबसे ज्यादा आवश्यकता है वह है स्वीकृति सही संबंध और परमेश्वर...के साथ सही रीति से खड़ा होना। परमेश्वर ने हमें यह सब व्यवस्था के कामों के कारण *नहीं* प्रदान किया पर यीशु मसीह में विश्वास के कारण प्रदान किया है। परमेश्वर की धार्मिकता आपके काम करने, आपकी कोशिश करने,

आपके कमाने से नहीं ना ही उसे प्राप्त करने के आपके प्रयासों से आती है। पर यह प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास, भरोसा और उस पर निर्भर रहने से आती है।

इब्राहीम (यहूदी मूल पिता) कैसे बचाया गया? बाइबल कहती है कि उसने परमेश्वर पर विश्वास किया उन प्रतिज्ञाओं पर विश्वास किया जो परमेश्वर ने उसे दी थी – फिर उसके खाते में यह धार्मिकता गिना गया। यह तथ्य की अब्राहम को परमेश्वर के सामने अपने विश्वास के कारण धर्मी घोि ात किया गया, यह मात्र उसके लिये नहीं था। हम रोमियों 3:21–22 में पढ़ते हैं कि एक व्यक्ति यीशु मसीह पर अपने विश्वास के कारण ध ार्मी ठहराया जाता है। बाइबल कहती है कि मसीह के द्वारा क्रूस पर अपने लोहू बहाकर अपना मूल्य चुकाने के द्वारा धार्मिकता किसी भी व्यक्ति के खाते में आ सकती है, जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है।

रोमियों 5:17 कहता है,"क्योंकि जब एक मनु य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनु य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।" (मैं धर्मरूपी वरदान पर जोर देना चाहता हूँ।) परमेश्वर आपको धार्मिकता का वरदान देना चाहता है। यह परमेश्वर के सम्मुख निर्दो ा ठहरना है। उपहार की कोई कीमत नहीं होती है पर यह उस व्यक्ति के लिये नहीं होती जो इसे प्राप्त करता है। यदि आप मुझे एक उपहार देना चाहते हैं, और यदि आप मुझसे उसके लिये भुगतान करने को कहें तो फिर यह उपहार नहीं होगा। पर इसकी आपने कीमत अदा की है। परमेश्वर ने आपके और मेरे लिये धार्मिकता को एक वरदान के रूप में उपलब्ध कराया और यह धार्मिकता का वरदान छुटकारा परमेश्वर के सामने निर्दो ा ठहरना यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा आता है।

शिष्यता के प्रश्न

1. पढ़ें तीतुस 3:5 क्या जो धार्मिकता हमें चाहिए वह धार्मिकता हम उत्पन्न कर सकते हैं?

2. पढ़ें 2 कुरिन्थियों 5:21 हमें किस प्रकार की धार्मिकता की आवश्यकता है?

3. पढ़ें रोमियों 3:22 हम इस धार्मिकता को कैसे प्राप्त करते हैं?

4. पढ़ें फिलिप्पियों 3:9 व्यवस्था की धार्मिकता क्या है?

5. पढ़ें गलतियों 2:21 परमेश्वर के अनुग्रह को हम किस प्रकार नि‍ि क्रय बना सकते हैं?

6. पढ़ें रोमियों 5:17 परमेश्वर की धार्मिकता हमें किस रूप में प्राप्त होती है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

तीतुस 3:5 – *"तो उस ने हमारा उद्धार किया और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किये, पर अपनी दया के अनुसार, नये जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।"*

2 कुरिन्थियों 5:21 – *"जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।"*

रोमियो 3:22 – *"अर्थात परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है; क्योंकि कुछ भेद नहीं।"*

फिलिप्पियों 3:9 – *"और उस में पाया जाऊं; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, बरन उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है, और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है।"*

गलतियों 2:21 – *"मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता।"*

रोमियो 5:17 – *"क्योंकि जब एक मनु य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनु य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य की अनन्त जीवन में राज्य करेंगे"।*

उत्तर निर्देशिका

1. पढ़ें तीतुस 3:5 क्या जो धार्मिकता हमें चाहिए, क्या वह धार्मिकता हम उत्पन्न कर सकते हैं?

नहीं।

2. पढ़ें 2 कुरिन्थियों 5:21 हमें किस प्रकार की धार्मिकता की आवश्यकता है?

परमेश्वर की धार्मिकता (जो यीशु मसीह के द्वारा आती है)।

3. पढ़ें रोमियों 3:22 हम इस धार्मिकता को कैसे प्राप्त करते हैं?

यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा।

4. पढ़ें फिलिप्पियों 3:9 व्यवस्था की धार्मिकता क्या है?

अ. एक धार्मिकता जो मेरी है-कर्मों से उत्पन्न धार्मिकता जिसे मैं उत्पन्न कर सकता हूँ।

5. पढ़ें गलतियों 2:21 परमेश्वर के अनुग्रह को हम किस प्रकार नि‍ि क्रय बना सकते हैं?

हम अपने उद्धार के लिये मसीह और उसकी मृत्यु पर भरोसा न रखकर अपने सब अच्छे कामों पर भरोसा रखने के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह को निष्क्रिय बना सकते हैं।

6. पढ़ें रोमियों 5:17 परमेश्वर की धार्मिकता हमें किस रूप में प्राप्त होती है?

एक वरदान के रूप में।

प्रथम स्तर

अध्याय ४

परमेश्वर के साथ संबंध

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

संबंधों के बारे में एक सबसे महत्वपूर्ण बात यह समझना है, कि आप किस के साथ संबंध रख रहे हैं, और यह परमेश्वर पर भी लागू होता है। परमेश्वर के साथ एक अच्छा संबंध रखने के लिये हमे परमेश्वर के मूल स्वभाव और गुण को समझना चाहिए। उसके गुण और स्वभाव को ना समझ पाना ही एक कारण है जिसकी वजह से कई लोग उसके साथ सकारात्मक संबंध नही रख पाते हैं। यही अदन की वाटिका में हुआ जब आदम और हव्वा की परीक्षा ौतान (सर्प) ने ली। वे परीक्षा में पड़े, अन्ततः परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया और पूरी मानव जाति को पाप में ढकेल दिया। परमेश्वर के स्वाभाव को नहीं समझ पाना ही उनकी परीक्षा का एक भाग था।

उत्पत्ति 3:1–5 में वर्णित कहानी अधिकांश लोगों के बीच लोकप्रिय हैः *"यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त्त था, और उस ने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना? स्त्री ने सर्प से कहा, इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं। पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के वि ाय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना नहीं तो मर जाओगे। तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे, बरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर (परमेश्वरों) के तुल्य हो जाओगे।"* (को टक में दिये गये ाब्द मेरे हैं)।

यहाँ पर ौतान के द्वारा ओछा कथन है, कि परमेश्वर एक अच्छा परमेश्वर नहीं है। कि वह आदम और हव्वा से कुछ छुपाना चाहता है... वह नहीं चाहता कि वह अपनी पूर्ण क्षमता पर पहुँच सके... वह नहीं चाहता है कि वह मेरे जैसे हो जायें... इसी वजह से उसने भले और बुरे के ज्ञान के फल को ना खाने का नियम बनाया कि वह उनको रोक सके या चोट पहुँचा सकें। एक दृ ट से ौतान ने परमेश्वर के स्वभाव और गुण के बारे

में गलत कहा, जब उसने उसे यह कहते हुये भड़काया कि परमेश्वर उनके लिये सर्वश्रे ठ नहीं चाहता है। आज लोगों से ठीक इसी प्रकार हो रहा है, ैतान उनसे कहता है कि, “यदि आप, परमेश्वर का अनुसरण करेंगे और उन सब चीजों का प्रयोग नहीं करेंगे जो कि उसके वचन के विरोध में है, तो आप सच्ची खुशी हासिल नहीं कर सकेंगे। जीवन नीरस और ऊबाने वाला हो जायेगा।” दुःखद तथ्य यह है कि लोग कई प्रकार के अनुभव वा कोशिश करते हैं जैसे नाशीली दवाऐं, ाराब, सैक्स, विद्रोह, स्वयं संतुि ट या भोग करना, नौकरी में सफलता, और कई अन्य प्रकार के अनुभव प्राप्त करते हैं। जब तक वो यह जान पाते हैं प्रयोग उन्हें निर्धारित संतुि ट नहीं दे पाते हैं। तब तक वे अपना जीवन परिवार और स्वास्थ बरबाद कर चुके होते हैं।

सच्चाई यह है, कि परमेश्वर एक अच्छा परमेश्वर है और उसकी हमारे प्रति इच्छा सिर्फ भलाई की है। पर ैतान आज भी उन्हीं प्रलोभनों का हम पर इस्तेमाल करता है जैसा उसने अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के लिये इस्तेमाल किया, मूल रूप से इसका यह अर्थ है कि परमेश्वर एक अच्छा परमेश्वर नहीं है। जिन लोगों को बाइबल की बहुत कम समझ है उन्हें यह लगेगा कि, पवित्र वचन में कई ऐसे उदाहरण हैं, जिसमें उसने अपने लोगों के साथ कठोर व्यवहार किया। गिनती 15:32–36 में एक व्यक्ति ने सब्त के दिन लकड़ियाँ बटोरी और वह पत्थरवाह किया गया, क्योंकि उसने सब्त के दिन को नहीं माना। यह बड़ा क्रूर लगता है, पर इस सज़ा के पीछे एक बड़ा उद्देश्य था, यद्यपि यह पवित्र ाास्त्र को साधारण रीति से पढ़ने पर किसी व्यक्ति को समझ में नहीं आता। ध्यानपूर्वक पढ़ने से यह स्प ट होता है, कि पुराने नियम की व्यवस्था हमने जो पाप किया है, उसे अत्याधिक पापमय बनाने के लिये था। जैसा कि पौलुस रोमियों के नाम 7:13 में कहता है। इसका उद्देश्य यह था कि लोग यह नहीं जान पायें कि उनके पाप कितने विनाशकारी थे। परमेश्वर के सामने यह अपराध थे। उन्होंने आपस में तुलना करने और कार्य को जो कार्य दूसरे लोग कर रहे थे उसके साथ तुलना कर नाप रहे थे।

यदि कोई पाप करता और नहीं मारा जाता, तो वे यह सोचते कि उसका पाप इतना भयानक नहीं होगा, और वे उसके स्तर को गिरा देते। सही और गलत का सही दृि टकोण वे खो चुके थे। परमेश्वर को उन्हें साहुल कि रेखा के पास लाना था, जो एक सही मानक था कि क्या सही है, और क्या गलत है, ताकि वह ैतान और उसके प्रलोभनों को अस्वीकार करें, और यह जानें कि गलत चुनाव करने का अंतरिम परिणाम

क्या होगा। और जब उसने किया तब उसे, उस नियम को लागू करना था जो उसने दिया है।

परमेश्वर ने हमें पुराने नियम की आज्ञाओं को यह कहने के उद्देश्य से नहीं दिया कि, "जब तक आप यह सब ना करें तब तक मैं आपको स्वीकार नही करूंगा ना आपको प्रेम करूंगा।" यह न तो उसका स्वाभाव और न ही उसका गुण है। इसके बजाये उसने हमें यह इसलिये दिया, कि वह हमारी सही और गलत दृ ट की दृढ़ता से पु ट करें, और इस तथ्य, कि ओर हमारा ध्यान आक ित करें कि हमें एक ऊद्धारर्कत्ता की आवश्यकता है। समस्या यह थी कि लोगों का यह मानना था कि परमेश्वर उनसे प्रेम करने के पहले उनसे परिशुद्धता की मांग कर रहा था, जिसकी वजह से अधिकांश लोगों ने यह दृ टकोण अपना लिया था कि उसका उनके प्रति प्रेम सीधा उनके प्रदर्शन के अनुपात में है। वे यह मानते हैं, कि जब तक वे सब कामों को ठीक ठीक रीति से करने कि कोशिश नहीं करते तब तक, वे परमेश्वर द्वारा स्वीकार नहीं होंगे। यह बाइबल का संदेश नहीं है।

परमेश्वर की इच्छा मनु य जाति को अपने आप से मेल कराने कि है...ना कि उनका न्याय करने कि है न ही उनके पापों...कि वजह से उन पर दो ा लगाने कि है, ना ही उनके पापों को थामे रहने की है। बाइबल के लोगों के प्रति परमेश्वर कि इच्छा यही थी, और आपके और मेरे लिये भी यही है। आपको उसके सच्चे मन को समझने कि आवश्यकता है, कि *"परमेश्वर प्रेम है"* (1 यूहन्ना 4:8) वह आपके पापों को और जो कुछ आपको उससे अलग करता है, ले लेना चाहता है। उसने यह यीशु मसीह के द्वारा पहले ही कर दिया है। आज आपको वह एक ऐसा संबंध प्रदान कर रहा है जो आपके प्रदर्शन पर नहीं पर आपके इस बात को स्वीकार करने पर आधारित है कि यीशु मसीह ने आपके पापों को उठा लिया है। अपने जीवन में असफलताओं और कमजोरियों के बावजूद आज आप परमेश्वर से संबंध रख सकते हैं। मात्र वह आपसे यह मांग करता है कि आप प्रभु यीशु मसीह में अपना विश्वास रखें।

शिष्यता के प्रश्न

1. उत्पत्ति 3:1 पढ़ें। ैतान ने हव्वा से क्या प्रश्न पूछा?

2. उत्पत्ति 2:17 और 3:3 पढ़ें परमेश्वर ने जो आदम से कहा था उसमें हव्वा ने क्या ाब्द या ाब्दों को जोड़ा?

3. उत्पत्ति 3:6 पढ़ें एक बार जब ैतान ने हव्वा के मन में परमेश्वर के वचन के प्रति ाक उत्पन्न किया तब उसने इस पद में क्या किया?

4. उत्पत्ति 3:9–10 पढ़ें जब आदम और हव्वा ने पाप किया तब क्या परमेश्वर भी उनके साथ बातचीत करता रहा और उनके साथ संबंध बनाये रखा?

5. उत्पत्ति 3:22–24 पढ़ें परमेश्वर ने आदम और हव्वा को वाटिका से क्यों निकाला?

6. क्या आप देख सकते हैं, कि सजा के बजाये यह परमेश्वर की दया का कार्य था?

7. रोमियों 5:17 पढ़ें हम परमेश्वर के अनुग्रह की बहुतायत और धार्मिकता का वरदान कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

क. उसे खरीदने के द्वारा

ख. उसे कमाने के द्वारा

ग. उसे प्राप्त करने के द्वारा

8. रोमियों 6:23 पढ़ें यदि हम पाप करते हैं तो हम वास्तव में क्या पाने के योग्य हैं?

9. इसके बजाये परमेश्वर अपने अनुग्रह से क्या देता है?

10. रोमियों 10:3 पढ़ें | यदि हम परमेश्वर के सम्मुख अपनी स्वंय की धार्मिकता को स्थापित करने की कोशिश करेंगे तो हम क्या करने में असफल होंगे?

11. 1 यूहन्ना 1:9 और रोमियों 4:3 पढ़ें परमेश्वर उसके विरूध हमारे सब पापों और अपराधो के साथ क्या करने की प्रतीज्ञा करता है यदि हम विश्वास नहीं करेंगे?

12. यह आपको परमेश्वर के गुण के बारे में क्या बताता है यूहन्ना?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

उत्पत्ति 3:1 *– "यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उस ने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?"*

उत्पत्ति 2:17 *– "पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना :क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"*

उत्पत्ति 3:3 *– "पर जो वृक्ष बाटिका के बीच में है, उसके फल के वि ाय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।"*

उत्पत्ति 3:6 *– "सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उस ने उस में से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उस ने भी खाया।"*

उत्पत्ति 3:9–10 *– "9 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम से पुकारकर पूछा, तू कहां है? 10 उस ने कहा, मैं तेरा   ाब्द बारी में सुनकर डर गया क्योंकि मैं नंगा था; इसलिये छिप गया।"*

उत्पत्ति 3:22–24 *– "22 फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, मनु य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है : इसलिये अब ऐसा न हो, कि पह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ के खा ले और सदा जीवित रहे।23 तब यहोवा परमेश्वर*

ने उसको अदन की बाटिका में से निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे जिस में से वह बनाया गया था। 24 इसलिये आदम को उस ने निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये अदन की बाटिका के पूर्व की ओर करूबों को, और चारों ओर घूमनेवाली ज्वालामय तलवार को भी नियुक्त कर दिया।"

रोमियों 5:17 *– "क्योंकि जब एक मनु य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी बरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनु य के, अर्थात यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।"*

रोमियों 6:23 *– "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"*

रोमियों 10:3 *–"क्योंकि वे परमेश्वर की धार्मिकता से अनजान होकर, और अपनी घार्मिकता से स्थापन करने का यत्न करके, परमेश्वर की धार्मिकता के आधीन न हुए।"*

1 यूहन्ना 1:9 *–"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से ुद्ध करने मे विश्वासयोग्य और धर्मी है।"*

रोमियो 4:3 *–"पवित्र ास्त्र क्या कहता है? यह कि इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया।"*

उत्तर निर्देशिका

1. उत्पत्ति 3:1 पढ़ें ैतान ने हव्वा से क्या प्रश्न पूछा?

   "क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?"

2. उत्पत्ति 2:17 और 3:3 पढ़ें परमेश्वर ने जो आदम से कहा था उसमें हव्वा ने क्या ाब्द या ाब्दों को जोड़ा?

   कि वे उसके वृक्ष के फल को न छुऐं।

3. उत्पत्ति 3:6 पढ़ें एक बार जब ैतान ने हव्वा के मन में परमेश्वर के वचन के प्रति ाक उत्पन्न किया तब उसने इस पद में क्या किया?

   उसने उस फल को लिया और खाया।

4. उत्पत्ति 3:9–10 पढ़ें जब आदम और हव्वा ने पाप किया तब क्या परमेश्वर तब भी उनके साथ बातचीत करता रहा और उनके साथ संबंध बनाये रखा?

हाँ

5. उत्पत्ति 3:22–24 पढ़ें परमेश्वर ने आदम और हव्वा को वाटिका से क्यों निकाला?

ताकि वो जीवन के वृक्ष का फल खाकर पाप की दशा में सदा के लिये जीवित न रहें।

6. क्या आप देख सकते हैं कि सजा के बजाये यह परमेश्वर की दया का कार्य था?

हाँ

7. रोमियों 5:17 पढ़ें हम परमेश्वर की अनुग्रह की बहुतायत और धार्मिकता का वरदान कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

ग. उसे प्राप्त करने के द्वारा।

8. रोमियों 6:23 पढ़ें यदि हम पाप करते हैं तो हम वास्तव में क्या पाने के योग्य हैं?

मृत्यु

9. इसके बजाये परमेश्वर अपने अनुग्रह से क्या देता हैं?

यीशु मसीह में अनंत जीवन।

10. रोमियों 10:3 पढ़ें यदि हम परमेश्वर के सम्मुख अपनी स्वंय की धार्मिकता को स्थापित करने की कोशिश करेंगे तो हम क्या करने में असफल होंगे?

हमारी धार्मिकता के रूप में यीशु मसीह के प्रति समर्पण करें।

11. 1 यूहन्ना 1:9 और रोमियों 4:3 पढ़ें। परमेश्वर उसके विरूध हमारे सब पापों और अपराधों के साथ क्या करने की प्रतीज्ञा करता है यदि हम विश्वास नहीं करेंगे?

उन्हे हटा देगा, उन्हे भूल जायेगा, उन्हे क्षमा करेगा।

12. यह आपको परमेश्वर के गुण के बारे में क्या बताता है?

कि वो दयालु और प्रेमी है।

प्रथम स्तर

अध्याय ५

परमेश्वर का स्वभाव

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

परमेश्वर के साथ सकारात्मक संबंध होने के लिये हमें उसका स्वभाव और वास्तविक गुण को जानना चाहिए। क्या वो हमारे पापों के कारण नाराज़ हैं, या वो दयालु हैं जो हमें अपना जीवन और आशी ा देना चाहता हैं, चाहे हमारा प्रदर्शन कैसा भी हो? पवित्रशास्त्र हमको परमेश्वर के वि ाय में दो दृ टकोण प्रदान करता है। यह इसलिये नहीं कि वो बदल गया है या कुछ भिन्न रीति से उसने किया है। बाइबल की ाब्दावली में एक ऐसे समय का वर्णन है जिसमें बताया गया है कि परमेश्वर अपने ''लोगों के पापों को थामे रहता था या उनको अपने खाते में लिखे रहता था।''

इसकी तुलना बच्चों को पालने से की जा सकती है। जब वे बहुत छोटे होते हैं तब उनके साथ तर्क करना संभव नहीं होता, उन्हें यह बताना कठिन होता है, कि उन्हें सही रीति से व्यवहार क्यों करना चाहिए या उन्हें स्वार्थी होकर अपने भाईयों और बहनों से उनके खिलौने नहीं लेना चाहिए। उन्हें नियम बताना पड़ता है, और जब वे नियम तोड़ते हैं, उन्हें अनुशासित करना पड़ता है। उन पर तब भी नियम कानुन लागु करना पड़ता है,यद्यपि वे परमेश्वर और ौतान के बारे में कुछ नहीं जानते या फिर वे ौतान को स्थान देते हैं, जब वे स्वार्थी होते हैं। हो सकता है वे अवधारणा नहीं समझ पाये पर वे यह जरूर समझ जायेंगे कि यदि वे उस को दोहराते हैं तो उन्हें सजा मिलेगी।

एक दृ ट से परमेश्वर ने पुराने नियम के साथ यही किया। नया जन्म पाने के पहले लोगों के पास आत्मिक समझ नहीं थी, जो हमारे पास नये नियम के तहत होती है। अतः उन्हें नियम देकर उन्हें सजा के साथ लागु करना था, कभी कभी मृत्यु दंड भी देना था ताकि उन्हें पाप करने से रोका जाये। चूँकि ौतान लोगों को पाप के द्वारा नाश कर रहा था, अतः पाप पर प्रतिबन्ध लगाने और उसे लागु करने की आवश्यकता थी। दरअसल इसने एक गलतफहमी को जन्म दिया, कि वास्तव में परमेश्वर हमें हमारे पापों के कारण प्रेम नहीं करता, पर यह परमेश्वर का वचन नहीं सिखाता। रोमियों 5:13 कहता

है, *"क्योंकि व्यवस्था के दिए जाने तक पाप जगत में तो था, परन्तु जहां व्यवस्था नहीं, वहां पाप गिना नहीं जाता।"* "व्यवस्था के दिए जाने" का अर्थ है मूसा के दिनों तक जब परमेश्वर ने दस आज्ञायें और अन्य समारोह के दौरान अपनायें जाने वाले नियम दिये जो यहूदी रा ट्र में लागु होते थे। उस वक्त तक पाप जगत में तो था पर उसे मढ़ा नहीं गया था। ''मढ़ना'' या खाते में लिखना एक वाणिज्यिक भा ा है। आप किसी दुकान में जाते हैं, और कुछ खरीदते हैं, और कहते हैं कि ''उसे आपके खाते में डाल दें''। जब वह आपके खाते में डाला जाता है, तब आपके खाते से उतनी रकम काट ली जाती है, और यह सिद्ध हो जाता है, कि खरीददारी आपने की है। यदि दुकानदार आपके खाते में नहीं डालता, तो इसका सीधा अर्थ है कि यह बहीखाते में चढ़ाया नहीं गया और आपके नाम से यह नहीं है।

यह पद इस प्रकार कहता है कि जब तक दस आज्ञायें नहीं आई तब तक लोगों के खातों में पाप का हिसाब किताब नहीं रखा जा रहा था। यह बड़ा आश्चर्यजनक कथन है। उत्पत्ति 3 और 4 को देखें अधिकांश लोगों के मन में यह धारणा रहती है जब आदम और हव्वा ने पाप किया, चूँकि परमेश्वर पवित्र है, अब मनु य पापी हो गया है। उसका पापी मनु यजाति से कोई लेना देना नहीं था। वे यह सोचते हैं, कि परमेश्वर ने मनु य को वाटिका से निकाला ताकि वह उसे उसके सामने से उसे हटा सकें। क्योंकि एक पवित्र परमेश्वर का एक अपवित्र मनु य से कोई लेना देना नहीं था। उन्होंने आगे यह सोचा जब तक आप सही कार्य करके अपने कर्मों को नहीं सुधार लेते तब तक, परमेश्वर एक बार फिर आप के साथ सही संबंध नहीं रख पाता। यह उस संदेश के ठीक विपरीत है जिसे यीशु लेकर आया। रोमियों 5:8 कहता है, कि परमेश्वर ने अपना प्रेम तब ही प्रकट किया जब आप पापी ही थे, और मसीह आपके लिये मरा। अतः नया नियम यह शिक्षा देता है कि परमेश्वर ने अपने प्रेम को तब ही प्रगट किया, जब आप पाप में जी रहे थे न कि तब जब आपने अपने आप को अपने कर्मों से ुद्ध कर लिया हो। सुसमाचार का एक सत्य जो आपके जीवन को बदल देगा वह यह समझ है, कि परमेश्वर आपको आप जैसे हैं वैसे प्यार करता है। वह आपको इतना प्यार करता है, कि यदि आप उसके प्रेम को प्राप्त कर लें तो आप वैसे नहीं रहेंगे जैसे आप हैं। आप बदल जायेंगे आप परमेश्वर के प्रेम के उपउत्पाद के रूप में बदलेंगे न की आप इसलिये बदलेंगे कि आप उसका प्रेम प्राप्त कर सकें।

उत्पत्ति 4 में आप देख सकते हैं कि परमेश्वर अब भी मनु य के साथ सहचर्य बनाये हुये था, अब भी आदम और हव्वा के साथ बातचीत करता था, जबकी उन्होंने पाप किया था। वह कैन और हाबिल के साथ बातचीत करता था, और जब कैन और हाबिल अपनी भेंट चढ़ाने के लिये आये तब भी वह उनसे सुनी जा सकने वाली आवाज में बोला। उन कि प्रतिक्रिया से हम देख सकते हैं, कि वे परमेश्वर कि आवाज सुनने के आदी थे, और उसकी आवाज ने उन्हें भयभीत नहीं किया। जब कैन अपने भाई हाबिल को मारकर पृथ्वी का पहला हत्यारा बना तब परमेश्वर कि सुनी जा सकने वाली आवाज स्वर्ग से आई कि, "तेरा भाई हाबिल कहाँ है?" बिना शोक किये कैन ने परमेश्वर से झूठ बोला। यह तब ही हो सकता है, जब कोई परमेश्वर कि आवाज सुनने का आदि हो कि वे इसे हल्के से ले और इससे भयभीत ना हो। यह प्रमाणित करता है, कि परमेश्वर अब भी मनु य के साथ सहचर्य बनाये हुये था, और उसने अपना सहचर्य नहीं तोड़ा था जैसा कि आम तौर पर विश्वास किया जाता है। वह मनु य में पाप को उसके ऊपर नहीं मढ़ रहा था। क्या इसका यह अर्थ है कि उसने उन्हें क्षमा किया या वे गलत नहीं थे? नहीं यही कारण है कि अन्ततः उसने व्यवस्था दी। परमेश्वर को व्यवस्था देनी पड़ी ताकि मनु य जाति को सही स्तर पर ला सके। परमेश्वर को मनु य को बताना था कि उसे एक उद्ध ारकर्त्ता की आवश्यकता है। और वह अपने आप को नम्र और दीन करें और पाप क्षमा को एक उपहार के रूप में स्वीकार करें। दुःखद बात है कि धर्म ने फेर बदल कर इन चीजों को यह शिक्षा देने के लिये नियंत्रित किया है, की व्यवस्था इसलिये दी गई ताकि आप उसका पालन कर सकें, और इसके द्वारा आप परमेश्वर कि क्षमा और स्वीकृति प्राप्त कर सकें। नहीं! पुराने नियम की व्यवस्था का उद्देश्य था कि आपके पाप को इस हद तक उजागर करें, कि यह आपको निराश कर दें कि आप कभी अपने आप को बचा भी पायेंगे और कहें, "परमेश्वर यदि आपकी पवित्रता का यह स्तर है तो मैं यह नहीं कर सकता। मुझे क्षमा करें मुझ पर दया करें। परमेश्वर का पूर्ण स्वभाव हमेशा से प्रेम रहा है।"

शिष्यता के प्रश्न

1. रोमियों 5:13 पढ़ें खाते में डालने ाब्द का क्या अर्थ है?

2. रोमियों 7:7 पढ़ें व्यवस्था का उद्देश्य क्या था?

3. गलतियों 3:24 पढ़ें इस पद के अनुसार व्यवस्था का उद्देश्य क्या था?

4. यूहन्ना 8:1–11 पढ़ें व्याभिचार में पकड़ी गई स्त्री के साथ यीशु ने किस प्रकार का व्यवहार किया?

5. क्या यीशु के ाब्द और क्रियाकलाप परमेश्वर के सच्चे स्वभाव को प्रतिबिम्बित करते हैं? देखें यूहन्ना 3:34

6. 1 यूहन्ना 4:8 पढ़ें इस पद के अनुसार परमेश्वर का वास्तविक स्वाभाव क्या है?

7. पढ़ें रोमियों 5:6 परमेश्वर का प्रेम हम पर तब प्रगट हुआ जब हम क्या थे?

8. पढ़ें रोमियों 5:8 परमेश्वर ने हमें तब प्रेम किया जब हम क्या थे?

9. पढ़ें रोमियों 5:10 परमेश्वर ने हमे तब प्रेम किया जब हम क्या थे?

10. यदि आप यीशु मसीह से मांगेंगे कि वह आपको क्षमा करें और आपका प्रभु और उद्धारकर्त्ता बने आपके पापों के लिये यीशु मसीह के बलिदान को एक भुगतान के रूप में आप भरोसा करें, तो क्या परमेश्वर आप पर दया और अनुग्रह का अपना स्वभाव प्रदर्शित करेगा?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

रोमियों 5:13 – *"क्योकि व्यवस्था के दिए जाने तक पाप जगत में तो था, परन्तु जहां व्यवस्था नहीं, वहां पाप गिना नहीं जाता।"*

रोमियो 7:7 – *"तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं! बरन बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहिचानताः व्यवस्था यदि न कहती, कि लालच मत कर तो मैं लालच को ना जानता।"*

गलतियों 3:24 – *"इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारा शिक्षक हुई है, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें।"*

यूहन्ना 8:1–11 – *"1 परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया।2 और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा। 3 तब ाास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए, जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उस को बीच में खड़ी करके यीशु से कहा।4 हे गुरू, यह स्त्री व्यभिचार करते ही पकड़ी गई है। 5 व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह करें; सो तू इस स्त्री के वि ाय में क्या कहता है? 6 उन्होंने उस को परखने के लिये यह बात ही ताकि उस पर दो ा लगाने के लिये कोई बात पाएं, परन्तु यीशु झुककर उंगली से भूमि पर लिखने लगा। 7 जब वे उस से पूछते ही रहे, तो उस ने सीधे होकर उन से कहा, कि तुम मे जो नि पाप हो, वही पहिले उसको पत्थर मारे। 8 और फिर झुककर भूमि पर उंगली से भूमि पर लिखने लगा।9 परन्तु वे यह सुनकर बड़ो से लेकर छोटो तक एक एक करके निकल गए, और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रह गई।10 यीशु ने सीधे हो कर उस से कहा, हे नारी, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझ पर दंड की आज्ञा न दी। 11 उस ने कहा, हे प्रभु, किसी ने नहीं ; यीशु ने कहा, मै भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना।"*

यूहन्ना 3:34 – *"क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है; क्योंकि वह आत्मा नाम नापकर नही देता।"*

1 यूहन्ना 4:8 – *जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।*

रोमियों 5:6 – *"क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा।"*

रोमियो 5:8 – *"परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।"*

रोमियो 5:10 – *"क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों ना पाएंगे?"*

उत्तर निर्दिशिका

1. रोमियों 5:13 पढ़ें खाते में डालने ाब्द का क्या अर्थ है?

   किसी व्यक्ति के खाते में लिखना ।

2. रोमियों 7:7 पढ़ें व्यवस्था का उद्देश्य क्या था?

   पाप को उजागर करना।

3. गलतियों 3:24 पढ़ें इस पद के अनुसार व्यवस्था का उद्देश्य क्या था?

   मनुष्य जाति को एक उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की आवश्यकता को दर्शाना।

4. यूहन्ना 8:1–11 पढ़ें व्याभिचार में पकड़ी गई स्त्री के साथ यीशु ने किस प्रकार का व्यवहार किया?

   दया और अनुग्रह में।

5. क्या यीशु के ाब्द और क्रियाकलाप परमेश्वर के सच्चे स्वभाव को प्रतिबिम्बित करते हैं? देखे यूहन्ना 3:34।

   हाँ।

6. 1 यूहन्ना 4:8 पढ़ें इस पद के अनुसार परमेश्वर का वास्तविक स्वाभाव क्या है?

   प्रेम

7. पढ़ें रोमियों 5:6 परमेश्वर का प्रेम हम पर तब प्रगट हुआ जब हम क्या थे?

शक्तिहीन अर्थात निर्बल और भक्तिहीन थे।

8. पढ़ें रोमियों 5:8 परमेश्वर ने हमे तब प्रेम किया जब हम क्या थे?

पापी।

9. पढ़ें रोमियों 5:10 परमेश्वर ने हमे तब प्रेम किया जब हम क्या थे?

बैरी।

10. यदि आप यीशु मसीह से मांगेंगे कि वह आपको क्षमा करें और आपका प्रभु और उद्धारकर्त्ता बने आपके पापों के लिये यीशु मसीह के बलिदान को एक भुगतान के रूप में आप भरोसा करें, तो क्या परमेश्वर आप पर दया और अनुग्रह का अपना स्वभाव प्रदर्शित करेगा?

हाँ।

प्रथम स्तर

अध्याय ६

पश्चाताप

लेखक - डोन क्रो

कुछ लोगों को यह गलतफहमी है, कि पश्चाताप क्या है। पश्चाताप परिपक्वता नहीं पर दिशा का बदलना है। हम उड़ाऊ पुत्र या गुमे हुये पुत्र के वि ाय में चर्चा करेंगे। यीशु मसीह एक ऐसी कहानी बता रहा है जो इस बात को पूर्ण रूप से स्प ट करती है, कि एक व्यक्ति के लिये पश्चाताप करने का क्या अर्थ होता है। लूका 15:11–12 में यीशु ने कहा, *"फिर उस ने कहा, किसी मनु य के दो पुत्र थे। उन में से छुटके ने पिता से कहा कि हे पिता संपत्ति में से जो भाग मेरा हो, वह मुझे दे दीजिए। उस ने उन को अपनी संपत्ति बांट दी।"*

छोटा बेटा अपने पिता के मरने के पूर्व ही अपने हिस्से कि संपत्ति चाहता था, जो की बड़ा असाधारण है। पर उसके पिता ने उनके निवेदन को स्वीकार किया और अपने पुत्रों को उनके हिस्से कि संपत्ति दे दी। पद 13 कहता है, *"और बहुत दिन न बीते थे कि छुटका पुत्र सब कुछ इक्ट्ठा करके एक दूर देश को चला गया और वहां कुकर्म में अपनी संपत्ति उड़ा दी।"* छोटे पुत्र ने अपनी सारी संपत्ति, अपनी संपत्ति का हिस्सा ले लिया और दूर देश को चला गया और उसे गलत जीवन जीने में खर्च कर दिया। एक बाइबल अनुवाद कुकर्म के वि ाय में कहता है,"खाना पीना मौज मस्ती करने और वेश्याओं पर पैसा उड़ाना।"

पद 14–15 कहता है, *"जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, (भूमि विरान हो गई और लोग भूखे मरने लगे)।* और वह कंगाल हो गया। और वह उस देश के निवासियों में से एक के यहां जा पड़ा; उस ने उसे अपने खेतों में सुअर चराने के लिये भेजा। (को ठक में दिये गये   ाब्द मेरे हैं)। *पद 16 कहता है, "और वह चाहता था, कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था।"* वह भुखमरी की ऐसी दशा में पहुँच गया और उसने कहा, "मुझे कुछ भी भोजन दे दे मुझे सुअरों का ही भोजन दे दें" पर किसी ने भी उसे कुछ

भी नहीं दिया। उसने अपनी पूरी संपत्ति लुटा दी थी। पद 17 इस बात को जारी रखता है, *"जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, कि मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखा मर रहा हूं!"* एक अनुवाद उसे इस प्रकार व्यक्त करता है, "जब वह होश में आया।" दूसरे ाब्दों में उसके पिता के दसों पास जरूरत से ज्यादा भोजन था और वह भूख से मर रहा था।

उसने एक निर्णय लिया उसने पश्चाताप किया। पश्चाताप बदलता है मन, हृदय और यह कारक है एक व्यक्ति के बदलने और मुड़कर नई दिशा में बढ़ने के लिए। वचन 18–19 में लिखा है, उसने कहा, ''मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उससे कहूंगा कि पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर के समान रख ले''। ''पिता जी मुझे सिर्फ एक मजदूर बना लें। मैं ने आपके विरोध में पाप किया आपकी जीविका उड़ा दी और परमेश्वर के विरुध पाप किया। केवल अपना मजदूर बना के रख लें।'' तब वह उठा और अपने पिता के पास गया। पश्चाताप मन का बदलना है, हृदय का बदलना है जो एक व्यक्ति को मोड़कर उस पर कार्य करने को मजबूर करता है जिस पर वो विश्वास करते हैं, और वह एक नई दिशा कि ओर मुड़ते हैं। हम सब ने अपने पिता परमेश्वर और अपने घर स्वर्ग से मुँह मोड़ लिया है। बाइबल यशायाह 53:6 में कहती है कि,"हम तो सब के सब भेड़ों की समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" पर परमेश्वर ने अपनी दया में हमारे पापों को लिया और यीशु पर डाल दिया।

यह पद 20–24 में जारी रहती है, *"तब वह उठकर अपने पिता के पास चला।"* एक दिन में यह कहानी एक व्यक्ति को बता रहा था जिसने पहले इसे कभी नहीं सुना था, वह मात्र यह जानता था कि जब पुत्र लौटेगा तो पिता यही कहेगा, *"पुत्र देखो तुमने क्या किया तुमने मेरा सारा धन बर्बाद कर दिया जो मैंने जीवन भर कमाया था। अब मेरे दासो में से एक बन।"* अधिकांश संसारिक पिता बहुत गुस्सा करेंगे और इसी प्रकार का दृ टकोण रखेंगे। पर इस पिता का दृ टकोण देखे: *"वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, (अपने पुत्र के लिये उसके हृदय से प्रेम उमड पड़ा) और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा। पुत्र ने उस से कहा; पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृ ट में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊं। परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा; झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर*

उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी, और पांवों में जूतियां पहिनाओ। और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खांए और आनन्द मनावें। क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है; और वे आनन्द करने लगे।" और उन्होंने पार्टी करना ारू कर दिया। (को ठक में दिये गये ाब्द मेरे है।)

मैंने एक बार एक व्यक्ति को बताया और उसने मुझे बताया, "अब मुझे पता चला। यदि मैं अपने स्वर्गीय पिता की ओर दया के लिये फिरूं और कहूँ 'पिता, मैंने तेरे विरूध पाप किया है और मैं तेरा पुत्र कहलाने के योग्य नही हूँ। वह मुझे स्वीकार करेगा। हमारा स्वर्गीय पिता हम पर तरस खायेगा और वह आपको दास नहीं बनायेगा। वह आपको अपने पूर्ण पुत्रत्व में स्थापित करेगा। परमेश्वर आपका इंतजार कर रहा है। क्या आपने मुँह फेर लिया है? आप आज ही अपने स्वर्गीय पिता और स्वर्ग अपने घर की ओर क्यों नही मुड़ते?

शिष्यता के प्रश्न

1. पश्चाताप की परिभा ा दें?

2. लूका 13:1–5 पढ़ें एक व्यक्ति को क्या करना चाहिए कि वो नाश ना हों?

3. 2 पतरस 3:9 पढ़ें परमेश्वर की सभी लोगों के लिए इच्छा क्या है?

4. लूका 16:19–31 पढ़ें। लूका 16:28 में धनवान मनु य क्यों चाहता था कि मरे हुये में से कोई उसके भाईयों से बात करें?

5. लूका 16:30 पढ़ें। उसके भाई इस पीड़ा के स्थान नरक में आने से बचने के लिये क्या करें?

6. प्रेरितों 26:18 पढ़ें यद्यपि यह विशे ा रूप से नहीं बताता यह पद पश्चाताप के वि ाय में कह रहा है। उनका क्या होगा जो पश्चाताप करते हैं?

7. प्रेरितों 26:20 पढ़ें इस पद के आखिरी भाग में तीन बाते बताई गई हैं, जिसे गैर यहूदी को करना चाहिए। यह चीजें क्या हैं?

8. मत्ती 7:21–23 पढ़ें। यीशु मसीह ने क्या कहा, परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के बजाये ये लोग क्या करते थे?

9. सच्चा पश्चाताप बनाम मुँह जबानी ईश्वर की सेवा के महत्व के वि ाय में यह आपको क्या बताता है?

10. यशायाह 55:7 पढ़ें दु ट जनों को क्या करना चाहिए?

11. अधर्मी लोगों को कौन से दो काम करना चाहिए?

12. उपरोक्त कही गई बातों को यदि कोई व्यक्ति करता है तो परमेश्वर उस व्यक्ति के लिये क्या करेगा?

13. लूका 15:7 पढ़ें एक पापी के पश्चाताप करने पर स्वर्ग में क्या प्रतिक्रिया होती है?

14. प्रेरितों 3:19 पढ़ें जब आप पश्चाताप करते और मन परिर्वतन कर लेते हैं तो आपके पापों का क्या होता है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

लूका 13:1–5 *– " 1 उस समय कुछ लोग आ पहुंचे और उस से उन गलीलियों की चर्चा करने लगे, जिन का लोहू पीलातुस ने उन ही के बलिदानों के साथ मिलाया था। 2 यह सुन उस ने उन से उत्तर में यह कहा, क्या तुम समझते हो, कि ये गलीली, और सब गलीलियों से पापी थे कि उन पर ऐसी विपत्ति पड़ी? 3 मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओंगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे। 4 या क्या तुम समझते हो, कि वे अठारह जन जिन पर ीलोह का गुम्मट गिरा, और वे दब कर मर गएः यरूशलेम के और सब रहनेवालों से अधिक अपराधी थे? 5 मैं तूम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओंगे तो तुम भी सब इसी रीति से नाश होंगे।"*

2 पतरस 3:9 *– "प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के वि ाय में देर नही करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; बरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।"*

लूका 16:19–31 *– "19 एक धनवान मनु य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहिनता और प्रति दिन सुख–विलास और धूम–धाम के साथ रहता था। 20 और लाजर नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उस की डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। 21 और वह चाहता था, कि धनवान की मेज पर की झूठन से अपना पेट भरे; बरन कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। 22 और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया; और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया। 23 और अधोलोक में उस की पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखे उठाई, और दूर से इब्राहीम की गोद में लाजर को देखा। 24 और उस ने पुकार कर कह, हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगुली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं। 25 परन्तु इब्राहीम ने कहा; हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएं; परन्तु अब वह यहां ान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है । 26 और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे ना जा सकें, और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके। 27 उस ने कहा; तो हे पिता मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। 28 क्योंकि मेरे पांच भाई हैं, वह उन के साम्हने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं। 29 इब्राहीम ने उस*

से कहा, उन के पास तो मूसा और भवि यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उन की सुनें। 30 उस ने कहा; नहीं, हे पिता इब्राहीम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उन के पास जाए, तो वे मन फिराएंगे। 31 उस ने उस से कहा, कि जब वे मूसा और भवि द्वक्ताओं को नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं मे से कोई जी भी उठे तौभी उस की नहीं मानेंगे।

लूका 16:30 *– "उस ने कहा; नहीं, हे पिता इब्राहिम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उन के पास जाए, तो वे मन फिराएंगे।"*

प्रेरितो के काम 26:18 *– "कि तू उनकी आँखे खोले, कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और ैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें; कि पापों की क्षमा, और उन लोगों कें साथ मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं।"*

प्रेरितो के काम 26:20 *– "परन्तु पहिले दमिश्क के, फिर यरूशलेम के रहनेवालों को, तब यहूदियों के सारे देश में और अन्यजातियों को समझाता रहा, कि मन फिराओं और परमेश्वर की ओर फिर कर मन फिराव के योग्य काम करो।"*

मत्ती 7:21–23 *– "21 जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। 22 उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे; हे प्रभु, हे प्रभु क्या हम ने तेरे नाम से भवि यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दु टआत्माओ को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किएं? 23 तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि मैं ने तुम को कभी नहीं जाना, है कुकर्म करनेवालों, मेरे पास से चले जाओं।"*

यशायाह 55:7 *– "दु ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोडकर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।"*

लूका 15:7 *– "मैं तुम से कहता हूँ; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के वि य में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्यानवे ऐसे धर्मियों के वि य नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं।"*

प्रेरितों के काम 3:19 *– "इसलिये, मन फिराओं और लौट आओं कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिस से प्रभु के सन्मुख से विश्रांन्ति के दिन आएं।"*

उत्तर निर्देशिका

1. पश्चाताप की परिभा ा दें?

क. मुड़कर एक नये समर्पण का सामना करना है।

ख. यह हृदय का बदलना है।

ग. एक हृदय का परिवर्तन जो कि एक व्यक्ति के पुराने जीवन शैली से परमेश्वर के मार्ग में मुड़ना है।

घ. दिशा में परिवर्तन नहीं की श्रेष्ठता।

ङ. एक ऐसा निर्णय लेना जो कि एक व्यक्ति के जीवन की संपूर्ण दिशा ही बदल दे।

च. अपनी पुरानी चालचलन से फिरना और परमेश्वर और उसके मार्गों पर चलने का समर्पण करना।

छ. परमेश्वर कि ओर एक व्यक्ति को यीशु मसीह के द्वारा मोड़ना

2. लूका 13:1–5 पढ़ें एक व्यक्ति को क्या करना चाहिए कि वो नाश ना हों?

पश्चाताप

3. 2 पतरस 3:9 पढ़ें परमेश्वर की सभी लोगों के लिए इच्छा क्या है?

कि सब लोग पश्चाताप करें।

4. लूका 16:19–31 पढ़ें लूका 16:28 में धनवान मनु य क्यों चाहता था कि मरे हुये में से कोई आये और उसके भाईयों से बात करें?

ताकि वे पीड़ा के इस स्थान में आने से बच सके।

5. लूका 16:30 पढ़ें। उसके भाई इस पीड़ा के स्थान नरक में आने से बचने के लिये क्या करे?

उन्हें पश्चाताप करना चाहिए।

6. प्रेरितों 26:28 पढ़ें यद्यपि यह विशे ा रूप से नहीं बताता यह पद पश्चाताप के वि ाय में कह रहा है। उनका क्या होगा जो पश्चाताप करते है?

क. उनकी आँखें खुल जायेंगी।

ख. अंधकार से ज्योति कि ओर मुड़ेगे।

ग. शैतान की ताकत से परमेश्वर की ओर मुड़ेगे।

घ. पापों कि क्षमा प्राप्त होगी।

ङ. विरासत प्राप्त होगी।

7. प्रेरितों 26:20 पढ़ें इस पद के आखिरी भाग में तीन बातें बताई गई है, जिसे गैर यहूदी को करना चाहिए। यह चीजें क्या है?

क. पश्चाताप करना।

ख. परमेश्वर की ओर मुड़ना।

ग. अपने कामों के द्वारा अपने पश्चाताप को सिद्ध करना।

8. मत्ती 7:21–23 पढ़ें यीशु मसीह ने क्या कहा, परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के बजाये ये लोग क्या करते थे?

कुकर्म करने वाले या व्यवस्था विहीन

9. सच्चा पश्चाताप बनाम मुँह जबानी ईश्वर की सेवा के महत्व के वि ाय में यह आपको क्या बताता है?

उद्धार दिल से आता है ना कि बक बक करने से।

10. यशायाह 55:7 पढ़ें दु ट जनों को क्या करना चाहिए?

अपना मार्ग छोड़ देना चाहिए अपनी दुष्टता छोड़ देनी चाहिए।

11. अधर्मी लोगों को कौन से दो काम करना चाहिए?

अपने विचारों को त्याग कर परमेश्वर की ओर लौटना चाहिए।

12. उपरोक्त कहीं गई बातों को यदि कोई व्यक्ति करता है तो परमेश्वर उस व्यक्ति के लिये क्या करेगा?

दया करेगा और बहुतायत से क्षमा करेगा।

13. लूका 15:7 पढ़ें एक पापी के पश्चाताप करने पर स्वर्ग में क्या प्रतिक्रिया होती है?

स्वर्ग में आनंद मनाया जाता है।

14. प्रेरितों 3:19 पढ़ें जब आप पश्चाताप करते और मन परिर्वतन कर लेते हैं तो आपके पापों का क्या होता है?

मेरे पाप धुल जायेंगे।

प्रथम स्तर

अध्याय ७

समर्पण

लेखक - डोन क्रो

लूका १४:२५-२६- और जब बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी, तो उस ने पीछे फिरकर उन से कहा। यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़के बालों और भाइयों और बहिनों बरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जानें, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।

"और जब बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी, तो उस ने पीछे फिरकर उन से कहा" (लूका 14:25)। यीशु मसीह की सेवकाई के इस समय भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो लेती थी। अंग्रेजी भा ा में इसकी सही अभिव्यक्ति नहीं प्राप्त होती है पर यूनानी ग्रीक भा ा में है यह अनिश्चितकाल में है। इसका अर्थ है कि इस वक्त बड़ी भीड़ बारंबार और निरंतर यीशु के पीछे हो लेती है। यह ायद उसके द्वारा चमत्कारों या फिर उसके द्वारा उन्हें भोजन खिलाने के कारण हुआ होगा इसका हमें ठीक ठीक ज्ञान नहीं है, पर बड़ी भीड़ उसका अनुसरण करती थी। इसी बिन्दु पर यीशु ने फिरकर उसे डपटकर कुछ कहा होगा जिसकी वजह से कई लोगों को उससे फिरकर उसका फिर अनुसरण न करने के लिये मजबूर किया होगा।

''यदि कोई मेरे पास आए, (अर्थात यदि कोई मेरे साथ चलना चाहे, मेरे साथ हो लेना चाहे, मेरा अनुसरण करना चाहे तो उसकी योग्यताएं ये होनी चाहिए) और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़केबालों और भाइयों और बहिनों बरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।'' (लूका 14:26, को टक में दी गई बातों पर मैं जोर देना चाहता हूँ।) जब मैंने इन वचनों को देखा तब मैंने विचार किया, हे प्रभु आप का यह मतलब नहीं हो सकता वह ाब्द ''अप्रिय'' जाने का क्या अर्थ है? इसका संभवतः अर्थ कम प्यार करना या ऐसा ही कोई अन्य कार्य। जब मैंने इस पर अध्ययन करना ुरू किया तो इस ाब्द का अक्षरशः अर्थ "नफरत" है।

किसी बात पर जोर देने के लिये यीशु मसीह ने संभवतः सबसे ज्यादा हृदय भेदी ाब्दों का इस्तेमाल किया। उसने कहा कि जब तक आप अपने पिता को अपनी माता को अपनी बहन को, अपने भाई को, हाँ अपने स्वयं के जीवन को भी अप्रिय ना जानें तब तक वो मेरे शि य नहीं हो सकते। मैं आप से पूछना चाहता हूँ: इस पृथ्वी पर सबसे ज्यादा निकटस्थ संबंध आप कभी किस के साथ रखेंगे? क्या यह आपके माता पिता हैं, आपके पति पत्नी या बच्चे हैं? क्या होगा यदि आपकी पत्नी आप से मुँह फेर लें, और आपको तलाक दे दे या फिर आपके माता पिता की मृत्यु हो जाये? आपके साथ फिर कौन रहेगा? निश्चय ही आपके भाई या बहन। यीशु ने कहा, जब तक तुम उन्हें अप्रिय नहीं जानते तब तक तुम मेरे शि य नहीं हो सकते। वह क्या कह रहा है?

यीशु मसीह सबसे निकटस्थ संबंध के वि ाय में चर्चा करता है जो हमारा कभी हो सकता है। वह आपसे एक समर्पण की मांग कर रहा है, एक ऐसा समर्पण जो सर्वश्रे ठ आपके जीवन में प्रथम स्थान रखना चाहता है। जो संबंध आप उसके साथ रखते हैं, वह उसकी तुलना उस निकटस्थ संबंध के साथ करेगा जो आपका इस पृथ्वी पर है। ''अप्रिय'' ाब्द एक तुलना का ाब्द है और यीशु मसीह कह रहा है,"आपके साथ मेरा संबंध इतना महत्वपूर्ण है कि मैं चाहता हूँ कि इसे आप पृथ्वी की सभी चीजों से ऊपर हों।" एक ऐसा व्यक्ति है जिसे आप अपनी पत्नी बच्चों माता पिता भाई बहन से कहीं अधिक चाहते हैं। क्या आप जानते हैं कि वह कौन है? यह परमेश्वर नहीं है... वह आप हैं। आप अपने आप को अपने निकटस्थ मित्र से भी ज्यादा अपने आप को प्यार करते हो।

विवाह बंधन क्यों टूटते हैं? लोग तलाक क्यों लेते हैं? क्योंकि वे अपनी पति पत्नी से अधिक अपने आप को प्यार करते हैं। "तुम वैसा नहीं कर रहे हो जैसा मैं चाहता / चाहती हूँ, अतः मैं आपसे छुटकारा पाना चाहता हूँ।"

यीशु मसीह ने कहा एक ऐसा संबंध है जिससे मैं चाहता हूँ कि आप ऊपर हो – वह आपका स्वयं का स्वार्थी जीवन है। यह सच्ची शि यता है। वह बिना मूल्य के शि य बनने के वि ाय में नहीं कह रहा है। वह हमसे उसका अनुसरण करने को कह रहा है। वह हमसे उसे अपने जीवन में सर्वप्रथम होने की मांग कर रहा है।

शिष्यता के प्रश्न

1. लूका 9:57–62 पढ़ें यह पद यीशु मसीह का अनुसरण करने के प्रति समर्पण के किस स्तर की शिक्षा दे रहा है?

2. लूका 8:13–14 पढ़ें कुछ लोग मसीह विश्वास से पीछे हटते या दूर भागते हुये क्यों प्रतीत होते हैं?

3. यहेजकेल 16:8 पढ़ें अपने लोगों के साथ संबंध को प्रदर्शित करने के लिये परमेश्वर पिता एक विवाह का दृ टांत का उपयोग करता है। इस संबंध में एक व्यक्ति किसका बन जाता है?

4. 1 कुरिन्थियों 6:19 पढ़ें आप किसके हैं?

5. 1 कुरिन्थियों 6:20 पढ़ें आपकी देह और आपकी आत्मा किसकी है?

6. याकूब 4:4 पढें क्या आप परमेश्वर के विरूध आत्मिक व्याभिचार कर सकते हैं?

7. परमेश्वर की दृि ट में आत्मिक व्याभिचार कैसे होगा? देखें रोमियों 1:25।

8. यूहन्ना 2:23–25 पढ़ें इन पदों से हम समर्पण और विश्वास के बारे में क्या सीखते हैं?

9. लूका 14:28–30 पढ़ें क्या आपने यीशु मसीह का अनुसरण करने कि कीमत का पता लगाया है? क्या आप उसका अनुसरण करना चाहते हैं?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

लूका 9:57–62 *– "57 जब वे मार्ग में चले जाते थे, तो किसी ने उससे कहा, जहां जहां तू जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूंगा। 58 यीशु ने उस से कहा, लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, पर मनु य के पुत्र का सिर धरने की भी जगह नहीं। 59 उस ने दूसरे से कहा, मेरे पीछे हो ले; उस ने कहा; हे प्रभु मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं। 60 उस ने उस से कहा, मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना। 61 एक और ने भी कहा; हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूंगा; पर पहिले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से विदा हो आऊं। 61 यीशु ने उस से कहा; जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।"*

लूका 8:13–14 *– "13 चट्टान पर के वे हैं, कि जब सुनते हैं, तो आनन्द से वचन को ग्रहण तो करते हैं, परन्तु जड़ न पकड़ने से वे थोड़ी देर तक विश्वास रखते हैं, और परीक्षा के समय बहक जाते हैं।14 जो झाड़ियों में गिरा, सो वे हैं, जो सुनते हैं, पर होते होते चिन्ता और धन और जीवन के सुख विलास में फंस जाते हैं, और उन का फल नही पकता।"*

यहेजकेल 16:8 *– "मैं ने फिर तेरे पास से होकर जाते हुए तुझे देखा, और अब तू पूरी स्त्री हो गई थी; सो मैं ने तुझे अपना वस्त्र ओढ़ाकर तेरा तन ढांप दिया; और सौगन्ध खाकर तुझ से वाचा बांन्धी, और तू मेरी हो गई प्रभु यहोवा की यही वाणी है।"*

1 कुरिन्थियों 6:19 *– "क्या तुम नहीं जानते,कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो?"*

1 कुरिन्थियों 6:20 *– "क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्व ारा परमेश्वर की महिमा करो।"*

याकूब 4:4 *– "हे व्यभिचारिणियों, क्या तुम नहीं जानती, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है।"*

रोमियों 1:25 *– "क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृ ट की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन।"*

यूहन्ना 2:23–25 *– "23 जब वह यरूशलेम में फसह के समय पर्ब्ब में था, तो बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखाता था देखकर उसके नाम पर विश्वास किया। 24 परन्तु यीशु ने अपने आप को उन के भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब को जानता था। 25 और उसे प्रयोजन न था, कि मनु य के वि ाय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप ही जानता था, कि मनु य के मन में क्या है?"*

लूका 14:28–30 *– "28 तुम मे से ऐसा कौन है कि गढ बनाना चाहता हो, और पहिले बैठकर खर्च न जोड़े कि पूरा करने की सामर्थ मेरे पास है कि नहीं? कहीं ऐसा ना हो कि जब नेव डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें।30 कि यह मनु य बनाने तो लगा पर तैयार न कर सका?"*

उत्तर निर्दिशिका

1. लूका 9:57–62 पढ़ें यह पद यीशु मसीह का अनुसरण करने के प्रति समर्पण के किस स्तर की शिक्षा दे रहा है?

पूर्ण समर्पण

2. लूका 8:13–14 पढ़ें कुछ लोग मसीह विश्वास से पीछे हटते या दूर भागते हुये क्यों प्रतीत होते हैं?

उन्होंने परमेश्वर के वचन में जड़ की व्यवस्था नहीं स्थापित की। चिन्ता और धन और जीवन के सुखविलास में फंस जाते है और उन्हें दूर ले जाता है।

3. यहेजकेल 16:8 पढ़ें अपने लोगों के साथ संबंध को प्रदर्शित करने के लिये परमेश्वर पिता एक विवाह का दृ टांत का उपयोग करता है। इस संबंध में एक व्यक्ति किसका बन जाता है?

परमेश्वर का

4. 1 कुरिन्थियों 6:19 पढ़ें आप किसके है?

परमेश्वर के हैं।

5. 1 कुरिन्थियों 6:20 पढ़ें आपकी देह और आपकी आत्मा किसकी है?

परमेश्वर

6. याकूब 4:4 पढ़ें क्या आप परमेश्वर के विरूध आत्मिक व्याभिचार कर सकते हैं?

हाँ

7. परमेश्वर की दृ ि ट में आत्मिक व्याभिचार कैसे होगा?

एक ऐसा हृदय जो उसको छोड मूर्तियों की ओर मुड़ गया है। (ऐसी चीजें जिन्हें आपने परमेश्वर से ज्यादा महत्व दिया है)। देखें रोमियों १:२५

8. यूहन्ना 2:23–25 पढ़ें इन पदों से हम समर्पण और विश्वास के बारे में क्या सीखते हैं?

यीशु मसीह हमारा पूरा हृदय सम्पूर्ण समर्पण चाहता है।

9. लूका 14:28–30 पढ़ें क्या आपने यीशु मसीह का अनुसरण करने की कीमत का पता लगाया है? क्या आप उसका अनुसरण करना चाहते हैं?

हाँ

प्रथम स्तर

अध्याय ८

डूब का बपतिस्मा

लेखक - डोन क्रो

प्रश्न: "मुझे यह जानने की आवश्यकता है, कि क्या स्वर्ग जाने के लिये आपको बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है। मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ और सात व र्ा की आयु में मेरा बपतिस्मा हुआ। अब मैं अठाहरह व र्ा का हूँ और किसी अन्य कलीसिया के सदस्य ने मुझे बताया कि कोई भी इतनी कम आयु में उद्धार पाकर बपतिस्मा ग्रहण नहीं कर सकता। उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि स्वर्ग जाने के लिये आपको बपतिस्मा पाने की आवश्यकता है, पर मेरे बैपटिस्ट विश्वासी परिवार ने मुझे बताया कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। मैं स्वर्ग जाना चाहता हूँ। मैं हर तरीके से जैसा मैं कर सकता हूँ, परमेश्वर के लिये जीना चाहता हूँ। मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या मुझे फिर से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, क्योंकि अब मैं बपतिस्मा लेने लायक आयु का हो गया हूँ। कृपया मेरी सहायता करें। परमेश्वर आपको आशी ा दे धन्यवाद।"

जवाब: उद्धार और पापों से क्षमा यीशु मसीह पर विश्वास के कारण एक वरदान के रूप में मुफ्त में आते हैं। प्रेरितों 10:43 कहता है *"उस की सब भवि यद्वक्ता गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उस को उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।"* उद्धार विश्वास से आता है अर्थात यीशु मसीह और उसके बहाये हुये खून पर भरोसा करने से आता है कि वह परमेश्वर के सम्मुख आपको सही रीति से खड़ा कर सकें। प्रेरितों 10:44–48 कहता है, पवित्र आत्मा विश्वासियों को उनके (उद्धार प्राप्त कर लेने की पुि ट करने हेतु) बपतिस्मा पाने के पूर्व दिया गया था।

यद्यपि यह सत्य है, अन्य अवसरों पर ऐसा प्रतीत होता है, कि पापों की क्षमा बपतिस्मा के समय प्राप्त होती है (प्रेरितों 2:38)। यह इसलिये है क्योंकि यह एक अभिव्यक्ति है, एक विश्वास का कार्य है, यह तब किया जाता था, जब एक व्यक्ति विश्वास और पश्चाताप में प्रभु यीशु की ओर मुड़ता है (मरकूस 16:16 कहता है,*"जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास नहीं करेगा वह*

दो ी ठहराया जाएगा")। यह परमेश्वर को अपना विवेक ुद्ध करने के लिये पुकारना है (प्रेरितों 22:16 और 1 पतरस 3:21)।

यदि आप यीशु मसीह की ओर सात व ी की अपनी आयु में मुड़े और आपको बपतिस्मा दिया तो परमेश्वर आपके बच्चो के समान विश्वास को स्वीकार करता है। बपतिस्मा की आवश्यकताएं होती है। उसकी एक आवश्यकता पश्चाताप है। क्या आपका हृदय परिवर्तन हुआ, क्या आपका मन परिवर्तन हुआ है जो कि पाप से यीशु की ओर मुड़ने के परिणाम स्वरूप हुआ (प्रेरितों 2:38, 20:21, और 17:30)? क्या आपने अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में यीशु मसीह पर विश्वास लाया है (मरकुस 16:16,यूहन्ना 3:16, और रोमियों 10:9–10)? यदि नहीं तो यीशु मसीह की ओर आज ही मुडें,अपने पापों से पश्चाताप करें, क्षमा प्राप्त करने के लिये उसके अनुग्रह की ओर मुड़ें, और इस निर्णय पर जल के बपतिस्मे द्वारा मुहर लगाये।

बपतिस्मा एक कार्य है जो यीशु मसीह पर एक व्यक्ति के विश्वास को प्रगट करता है। विश्वास के बिना यह कार्य कोई भी मायने नही रखता। प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में जो लोग यीशु मसीह की ओर मुड़ते थे, वे अपने विश्वास को खुले रूप में प्रदर्शित करने और सबके साम्हने यीशु मसीह को अंगीकार करने के इच्छुक रहते थे। जो लोग यीशु की आज्ञाओं पर ना कहते वे दरअसल एक मृत विश्वास को प्रदर्शित करते। **विश्वास तब मरा हुआ है जब लोग उसे अभिव्यक्त करने के लिये तैयार नहीं रहते** (याकूब 2:18–19)। विश्वास बचाता है, पर बचाने वाला विश्वास अकेला नहीं होता। वह हमेशा अपने आपको अभिव्यक्त करना चाहता है। बपतिस्मा उस विश्वास को अभिव्यक्त करने का एक तरीका है। **बपतिस्मा वह नहीं जो बचाता है, यीशु मसीह बचाता है। पानी हमारे पापों को नहीं धोता, यीशु मसीह का लोहू हमारे पापों को धोता है।** विश्वास उसके लोहू को आपके ऊपर लगाता है, और कभी कभी वह विश्वास तब अभिव्यक्त होता था जब एक व्यक्ति बपतिस्मा लेता था (प्रेरितों 22:16)। प्रश्न यह है कि क्या आपने पश्चाताप किया है? क्या आप यीशु पर विश्वास करते हैं?(यीशु मसीह) यदि ऐसा है तो फिर आप देर क्यों करते हैं, उठे और बपतिस्मा ले!

शिष्यता के प्रश्न

1. यह जवान क्या प्रश्न पूछ रहा है?

2. प्रेरितों 10:43 के अनुसार उद्धार हमें कैसे प्राप्त होता है?

3. बपतिस्मा विश्वास की अभिव्यक्ति है, जो उद्धार के समय किया जाता है। इस सत्य को प्रेरितों 2:38 किस प्रकार अभिव्यक्त करता है?

4. मरकूस 16:16 इस बात को किस प्रकार अभिव्यक्त करता है?

5. बपतिस्मा प्रभु को पुकारने का एक तरीका है। प्रेरितों 22:16 इस बात को कैसे अभिव्यक्त करता है?

6. बपतिस्मा अपने विवेक को ुद्ध करने के लिये परमेश्वर को पुकारना है। क्या 1 पतरस 3:21 इस सत्य की पुि ट करता है?

7. प्रेरितों 2:38 के अनुसार बपतिस्मा की आवश्यकताएं क्या है?

8. मरकूस 16:16 के अनुसार बपतिस्मा की आवश्यकताएं क्या है?

9. क्या बच्चा पश्चाताप कर सकता है?

10. क्या बच्चा विश्वास कर सकता है?

11. प्रेरितों 10:43–48 मसीह में विश्वास करने के बाद एक विश्वासी को अगला कदम क्या उठाना चाहिए?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

प्रेरितों के काम 10:43 – *"उस की सब भवि यद्वक्ता गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उस को उसके नाम के द्वारा पापो की क्षमा मिलेगी।"*

प्रेरितों के काम 2:38 – *"पतरस ने उन से कहा, मन फिराओं, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओंगे।"*

मरकुस 16:16 – *"जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दो ी ठहराया जाएगा।"*

प्रेरितों के काम 22:16 – *"अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।"*

1 पतरस 3:21 – *"और उसी पानी का दृ टान्त भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उस से ारीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु ुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)।"*

प्रेरितों के काम 10:44–48 – *"44 पतरस ये बातें कह ही रहा था, कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया 45 और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है। 46 क्योंकि उन्हों ने उन्हें भांति भांति की भा ा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना।47 इस पर पतरस ने कहा; क्या कोई जल की रोक कर सकता है, कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्हों ने हमारी नाई पवित्र आत्मा पाया है? 48 और उस ने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह नाम में बपतिस्मा दिया जाए; तब उन्हों ने उस से बिनती की, कि कुछ दिन हमारे साथ रह।"*

उत्तर निर्देशिका

1. यह जवान क्या प्रश्न पूछ रहा है?

कि क्या स्वर्ग जाने के लिये उसे बपतिस्मा की आवश्यकता है।

2. प्रेरितों 10:43 के अनुसार उद्धार हमें कैसे प्राप्त होता है?

मुफ्त में यीशु मसीह में विश्वास के वरदान के रूप में।

3. बपतिस्मा विश्वास की अभिव्यक्ति है, जो उद्धार के समय किया जाता है। इस सत्य को प्रेरितों 2:38 किस प्रकार अभिव्यक्त करता है?

पतरस ने कहा, "पश्चाताप करो और बपतिस्मा लो।"

4. मरकूस 16:16 इस बात को किस प्रकार अभिव्यक्त करता है?

यीशु ने कहा,"जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा," जिसका अर्थ है कि वह उसी वक्त हो सकता है।

5. बपतिस्मा प्रभु को पुकारने का एक तरीका है। प्रेरितों 22:16 इस बात को कैसे अभिव्यक्त करता है?

पवित्र शास्त्र का यह वचन कहता है जब एक व्यक्ति प्रभु का नाम लेता है, उनके पाप धुल जायेंगे। ऐसा प्रतीत होता है की प्रभु का नाम लेना बोलने का कार्य हो सकता है (लूका १८:१३) या बपतिस्मा के द्वारा, जैसा की पवित्र शास्त्र में प्रतीत होता है।

6. बपतिस्मा अपने विवेक को ुद्ध करने के लिये परमेश्वर को पुकारना है। क्या 1 पतरस 3:21 इस सत्य की पुि ट करता है?

हाँ।

7. प्रेरितों 2:38 के अनुसार बपतिस्मा की आवश्यकतायें क्या है?

पश्चाताप

8. मरकूस 16:16 के अनुसार बपतिस्मा की आवश्यकताएं क्या है?

एक व्यक्ति को विश्वास करना चाहिए।

9. क्या बच्चा पश्चाताप कर सकता है?

नहीं

10. क्या बच्चा विश्वास कर सकता है?

नहीं

11. प्रेरितों 10:43–48 मसीह में विश्वास करने के बाद एक विश्वासी को अगला कदम क्या उठाना चाहिए?

जल में बपतिस्मा।

प्रथम स्तर

अध्याय ९

मसीह में हमारी पहचान (भाग १)

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

2 कुरिन्थियों 5:17 कहता है– "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृ ट हैः पुरानी बाते बीत गई है; देखों वे सब नई हो गई।" वाक्यांश ''मसीह में'' एक ऐसी ाब्दावली है जिसका 300 बार नये नियम में उपयोग किया गया है, जो हमेशा परमेश्वर के साथ महत्वपूर्ण संबंध को दर्शाता है। एक बार यह होता है, आप एक नये प्राणी बन जाते हैं कुछ अनुवाद इसे ''नई सृ ट'' कहते हैं।

यह एक संवेदनशील मुद्दे की ओर लेकर जाता है, जो की मसीह में आपकी नई पहचान की समझ के लिये आपके लिये महत्वपूर्ण है। यह ारीरिक क्षेत्र में नहीं हुआ। यह आपके भौतिक ारीर के वि ाय में चर्चा करता है। यह कहता है कि यह पूर्णतः बदल देता है, कि आपका नजरिया बदल देता है। यदि उद्धार प्राप्त करने के पहले यदि वे मोटे थे तो इसके बाद भी वे मोटे रहेंगे यदि वे संतुलित आहार ना ले। यह आपके मानसिक या भावनात्मक भाग के वि ाय में चर्चा करता है, जो अधिकांश लोग अपने व्यक्तिगत ''स्वयं'' पर विचार करेंगे। यदि आप उद्धार प्राप्त करने के पहले स्मार्ट नहीं थे, तो फिर आप उद्धार प्राप्त करने के बाद भी स्मार्ट ही रहेंगे, पर आपके पास अब भी वही पुराने विचार और यादें होंगी।

एक तीसरा भाग भी है, और इसके अनुसार और छटाई की प्रक्रिया में हमारा भाग है जिसे बदलना है–जो हमारा आत्मिक मनु यत्व है। पवित्रशास्त्र का एक वचन जो इसकी पुि ट करता है वह है 1 थिस्सलुनीकियो 5:23 जहाँ पौलुस थिस्सलुनीकियों के लिये प्रार्थना कर रहा है "शांन्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दो ा सुरक्षित रहें।" यह अनुच्छेद दर्शाता है कि हमारे पास देह,प्राण और आत्मा है। ारीरिक भाग पूर्ण रूप से प्रगट है। यह हमारा वह भाग है जो कि दिखता है, यह हमारा बाहरी व्यक्तित्व है। हम यह देखते हैं कि एक अन्य भाग है जो हमारा भावनात्मक, मानसिक

भाग है, जिसे पवित्र आत्मा पुकारती है। हम यह भी जानते हैं कि यदि कोई व्यक्ति आपको भौतिक रूप से नहीं छू सकता, पर फिर भी वह आपको अपने ाब्दों, चाहे वह सकारात्मक या नकारात्मक रूप में हो छू सकता है। बहुत से लोग भौतिक और प्राण के भाग के साथ सामंजस्य बिठाये हुये हैं। पर पवित्रशास्त्र के अनुसार एक अन्य भाग है जो की आत्मा है।

यह आत्मा का भाग, वह भाग है जो बदल गया है और उद्धार के बाद वह नया हो गया है। यह जीवन देने वाला भाग है। याकूब 2:26 कहता है, *"निदान, जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसा की विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।"* यह इस बात को दर्शाता है कि आत्मा है, जो वास्तव में ारीरिक देह में जीवन का प्राण फूँकता है। यहाँ से हमें जीवन मिलता है। उत्पत्ति 2 में जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा की रचना की तब उसने जीवन का प्राण फूँका। यह ाब्द "श्वास" पुराने नियम के हीब्रू संस्करण के लिये उपयोग किया गया है, जिसका की हम आज वास के लिये उपयोग करते हैं। जो कि अन्य स्थानो पर ''आत्मा'' अनुवाद हुआ है। परमेश्वर ने आदम का ारीरिक देह और प्राण वाला भाग सृजा पर जब उसने उसमें जीवन का वास फूँका तब आदम जीवता प्राणी बन गया। आत्मा हमारे जीवन का वह भाग है जो हमे जीवन देता है।

उद्धार प्राप्त करने के पूर्व इससे पहले, कि एक व्यक्ति अपना पूर्ण समर्पण करता है और प्रभु उसके जीवन में आता है, उनके भीतर की आत्मा मरी हुई थी। इफ़िसियों 2:1 *"और उस ने तुम्हें भी जिलाया, (जीवित किया) जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।"* (को ठक में दिये गये ाब्दों पर मैं जोर देना चाहता हूँ।) हम जानते हैं कि हम नया जन्म पाने के पहले जीवित थे, पर ाब्द ''मरे'' हुए आत्मिकता में मरे हुये के वि ाय में बोलता है। बाइबल में मृत्यु ाब्द का अर्थ विद्यमान होना समाप्त हो जाना नहीं है, जैसा की अधिकांश लोग आज सोचते हैं। इसका अक्षरशः अर्थ "अलग हो जाना" है। जब एक व्यक्ति मरता है तब वह भौतिक रूप से विद्यमान होना समाप्त नहीं हो जाता है। बाइबल शिक्षा देती है, कि वे परमेश्वर की उपस्थिति में जाते हैं या फिर नरक कि उपस्थिति में जाते हैं। आत्मा और प्राण जीवित रहते हैं, पर भौतिक ारीर से यह अलग हो जाते हैं जो कि मर कर सड़ जाता है।

जब उत्पत्ति 2:17 कहता है,*"पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खानाः क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"*

इसका अर्थ नहीं है कि वे ारीरिक रूप से मरते हैं पर आत्मिक रूप से मरते हैं। वे परमेश्वर से अलग हो जायेंगे। आत्मा वह भाग जो परमेश्वर हम में फूकता है, जो वास्तव में आपको जीवन देता है और प्रेरणा देता है परमेश्वर के आलौकिक जीवन... उसके पवित्र जीवन और पूर्ण जीवन... से अलग हो जाता है, जिसे बाइबल ''ज़ोए'' लाईफ या ''पूर्ण या बहुतायत की दृ ट से जीवन कहती है''। वह अब भी कार्य कर रहा था पर वह स्वतंत्र रूप से परमेश्वर से अलग कार्य कर रहा था। यही हमारे जीवन... में सारी समस्याएं, सब प्रकार की भावनात्मक तनाव का कारण बनती है।

जब एक व्यक्ति परमेश्वर के पास आता है तब उसे नई आत्मा प्राप्त होती है और वह नया जन्म पाता है यह वह ब्दावली है जिसका यीशु मसीह ने यूहन्ना 3:5 में उपयोग किया। इसी रीति से मनु य रीरिक रूप से आत्मा, प्राण, देह, के साथ जन्म पाता है, और जब वह नया जन्म पाता है तब वह मसीह का आत्मा पाता है। गलतियों 4:6 कहता है, *"और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो है अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है।"* परमेश्वर हम में एक नई प्रकार की आत्मा देता है, और अब हमारे पास जीवन की नई गुणवत्ता है, नई पहचान है, और अपनी आत्मा मे पूर्णतः नये व्यक्ति है।

बाकी का मसीही जीवन यह सीखना है कि, आपके प्राण, मानसिक परिक्षेत्र में क्या घटित हुआ है। सत्य यह है कि प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार करने के बाद आपके उद्धार का एक तिहाई भाग पूरा हो चुका है। आपकी आत्मा पूर्णतः बदल जाति है। यही वह आत्मा है जो आपके पूरे ाश्वत् जीवन काल तक बनी रहती है। उसमें पहले से ही प्रेम, आनंद ओर ांति है, और परमेश्वर की उपस्थिति से भरी है। आपकी आत्मा में कोई कमी या घटी नहीं है, पर इसे आपको समझना होगा यही कारण है कि परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना इतना महत्वपूर्ण क्यों है। आप पूर्णतः नये मनु य हैं, पर जब तक आपको ज्ञान प्राप्त नहीं होगा आप नहीं बदलेंगे। मसीही जीवन में विजय तब प्राप्त होती है। जब आप परमेश्वर के वचन को देख पायें जो कि आत्मा ओर जीवन है। आप यह देखें कि आप कौन हैं, आप यह देखें कि परमेश्वर ने क्या किया है और उस पर विश्वास करना ुरू कर दें।

शिष्यता के प्रश्न

1. 2 कुरिन्थियों 5:17 पढ़ें यदि कोई मसीह में है तो वे क्या है?

2. 2 कुरिन्थियों 5:17 पढ़ें पुरानी बातों का क्या हुआ?

3. 2 कुरिन्थियों 5:17 पढ़ें कौन सी बातें नई हो गई है?

4. इफ़िसियों 2:1 पढ़ें नया जन्म पाने या जीवित होने के पूर्व आप की दशा क्या थी?

5. इफ़िसियों 2:2 पढ़ें एक अविश्वासी के रूप में आप कैसे चलते या जीते थे?

6. इफ़िसियों 2:3–5 पढ़ें परमेश्वर किस बात में धनी है?

7. इफ़िसियों 2:4 पढ़ें परमेश्वर इतना दयावान क्यों है?

8. इफ़िसियों 2:5 पढ़ें जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तब परमेश्वर ने हमारे लिये क्या किया?

9. इफ़िसियों 2:5 पढ़ें परमेश्वर ने हमें कैसे बचाया?

10. 1 कुरिन्थियों 6:9–10 पढ़ें क्या दी गई सूची में से किसी से भी आप संबंध स्थापित कर सकते हैं?

11. 1 कुरिन्थियों 6:11 पढ़ें क्या ाब्द ऐसे ही भूत वर्तमान या भवि य की स्थिति को बताती है?

12. 1 कुरिन्थियों 6:11 पढ़ें जब आप नया जन्म पाते हैं, तब कौन सी तीन बातें आप के साथ होती हैं?

13. 1 कुरिन्थियों 6:11 पढ़ें क्या यह भूत, वर्तमान या भवि य की स्थिति है?

14. 1 कुरिन्थियों 6:17 पढ़ें "जो प्रभु की संगति में रहता है, वह उसके साथ ..... हो जाता है।"

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

2 कुरिन्थियों 5:17 *– "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृ ट है: पुरानी बातें बीत गई है; देखों वे सब नई हो गई।"*

इफिसियों 2:1 *– "और उस ने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।"*

इफिसियों 2:2 *– "जिन में तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा कें अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है।"*

इफिसियों 2:3–5 *– "3 इन में हम भी सब के सब पहिले अपने ारीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और ारीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे। परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया । 5 जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)"*

1 कुरिन्थियों 6:9–10 *– 9 क्या तुम नही जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओं, न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजरक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरू ागामी।10 न चोर, ना लोभी, न पियक्कड़ न गाली देनेवाले, न अन्धेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।"*

1 कुरिन्थियों 6:11 *– "और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से ओर हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।"*

1 कुरिन्थियों 6:17 *– "और जो प्रभु की संगति में रहता है, वह उसके साथ एक आत्मा हो जाता है।"*

उत्तर निर्देशिका

1. 2 कुरिन्थियों 5:17 पढ़ें यदि कोई मसीह में है तो वे क्या है?

   एक नई सृष्टि।

2. 2 कुरिन्थियों 5:17 पढ़ें पुरानी बातों का क्या हुआ?

   वे बीत गई है।

3. 2 कुरिन्थियों 5:17 पढ़ें कौन सी बातें नई हो गई है?

   सब बातें।

4. इफ़िसियों 2:1 पढ़ें नया जन्म पाने या जीवित होने के पूर्व आप की दशा क्या थी?

   आप अपराधों और पापो के कारण मरे हुए थे।

5. इफ़िसियों 2:2 पढ़ें एक अविश्वासी के रूप में आप कैसे चलते या जीते थे?

   मैं संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है।

6. इफ़िसियों 2:3–5 पढ़ें परमेश्वर किस बात में धनी है?

   दया में धनी है।

7. इफ़िसियों 2:4 पढ़ें परमेश्वर इतना दयावान क्यों है?

उसके बड़े प्रेम के कारण वह दयावान है।

8. इफ़िसियों 2:5 पढ़ें जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तब परमेश्वर ने हमारे लिये क्या किया?

हमें मसीह के साथ जिलाया।

9. इफ़िसियों 2:5 पढ़ें परमेश्वर ने हमें कैसे बचाया?

परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से बचाया।

10. 1 कुरिन्थियों 6:9–10 पढ़ें क्या दी गई सूची मे से किसी से भी आप संबंध स्थापित कर सकते है?

हाँ

11. 1 कुरिन्थियों 6:11 पढ़ें क्या ाब्द ऐसे ही भूत वर्तमान या भवि य की स्थिति को बताती है?

भूतकाल

12. 1 कुरिन्थियों 6:11 पढ़ें जब आप नया जन्म पाते हैं, तब कौन सी तीन बातें आप के साथ होती है?

आप धोय गये, पवित्र हुए और परमेश्वर के सम्मुख धर्मी ठहराये गए।

13. 1 कुरिन्थियों 6:11 पढ़ें क्या यह भूत, वर्तमान या भवि य की स्थिति है?

वर्तमान

14. 1 कुरिन्थियों 6:17 पढ़ें "जो प्रभु की संगति में रहता है, वह उसके साथ हो जाता है।"

एक आत्मा

प्रथम स्तर

अध्याय १०

मसीह में हमारी पहचान (भाग २)

लेखक - एन्ड्रयू वॉमक

अपने पिछले अध्याय में हमने इस बात पर चर्चा की कि नया जन्म पाने का क्या अर्थ है, कि हमारी आत्मा व हमारा हृदय बदल जाता है। 2 कुरिन्थियों 5:17 का उपयोग किया जो कहता है, *"सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृ ट हैः पुरानी बातें बीत गई है; देखों वे सब नई हो गई।"* हम यह देखना ुरू कर देते हैं, कि जब हम नया जन्म पाते हैं हमारी आत्मा में पूर्ण परिवर्तन होता है। और क्या क्या हमारी आत्मा में घटित हुआ (प्रकट) है इसे जानने का सही तरीका परमेश्वर का वचन है। हम इसे बाहरी चीजों से अपनी भावनाओं से नहीं समझ सकते हैं, क्योंकि यह प्राण क्षेत्र में है। पर हमारी आत्मा के भाग में पूर्ण रूप में बदलाव होता है।

मुझे कुछ वचनों का उपयोग करने दें जो यह बताता है, कि क्या होता है जब एक व्यक्ति यीशु मसीह को अपने जीवन में ग्रहण करता है। इफ़िसियों 4:24 कहता है, *"और नये मनु यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है।"* जब एक व्यक्ति नया जन्म पाता है तब उनकी आत्मा धर्मी और पूर्णतः पवित्र हो जाती है। बाइबल दो प्रकार की धार्मिकता के वि ाय में बोलती है।

एक ऐसी धार्मिकता है, जो आप अपने कार्यों द्वारा उत्पन्न करते हैं। और इस धार्मिकता को आपको दूसरों के साथ अपने संबंध में बनाये रखना चाहिए। यदि आप सही रीति से नहीं जीते या सही काम नहीं करते, तो आपका बास आपको डाँटेगा या आपका पति या आपकी पत्नी आपको तलाक दे देगीं। अतः आपके पास आपकी स्वयं की धार्मिकता होनी चाहिए। परमेश्वर आपको आपकी बाहरी धार्मिकता के आधार पर स्वीकार नहीं करता। परमेश्वर अक्षरशः आपको उसकी अपनी धार्मिकता प्रदान करता है। वचन यह कहता है कि परमेश्वर पिता ने प्रभु को हमारे लिए पाप बनाया ताकि हम उसमे होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।

2 कुरिन्थियों 5:21 कहता है, "जो पाप से अज्ञात था उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" अतः एक ऐसी धार्मिकता है जो हमारी बाहरी धार्मिकता से कहीं अधिक परे है और वह उस पर आधारित है जो परमेश्वर ने हमारे लिये किया है। हमने यीशु मसीह पर विश्वास करने के कारण परमेश्वर की धार्मिकता को स्वीकार किया। हम धार्मिकता और सच्ची पवित्रता में सृजे गये थे। हम उस धार्मिकता में बढ़ नहीं रहे हैं पर, हम उस धार्मिकता में हैं। एक साधरण सी परिभा ाा यह है कि हम परमेश्वर के साथ पहिले से सही मायने में है।

मसीह के आधार पर परमेश्वर हम से खुश रहता है, किसी और के आधार पर नहीं। हमारी आत्मा वही है, जहाँ पर परिवर्तन हुआ था। हम धार्मिकता और सच्ची पवित्रता में सृजे गये हैं और हम पूर्णतः नई सृि ट है। इफ़िसियों 2:10 कहता है, *"क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैः और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया।"* हमारी आत्मा में हम पूर्ण और परिपक्व हैं। कोई भी पाप और अपर्याप्तता नहीं है। इफ़िसियों 1:13 *"और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी।''*

आप में से कुछ लोग सोचेंगे, *जब मैंने पहली बार प्रभु पर विश्वास किया, मैंने वास्तव में यह विश्वास किया कि मैं पूर्णतः क्षमा किया गया और ुद्ध किया गया, और सब कुछ बेहतर है, पर मैंने जब से पाप किया तब से परमेश्वर को एक बार फिर निराश कर दिया।* यदि ऐसा हुआ है, तो आप कार्य करने मे अपने मानसिक और भावनात्मक क्षेत्र में अलग हुऐ हैं। पर आपकी आत्मा ने पाप नहीं किया। यह उसी प्रकार सीलबंद कर दिया गया है जैसे एक स्त्री फल, अचार या कोई अन्य खाने पीने की चीज रख देती है, ताकि बाहर की हवा और अशुद्धता उसमे प्रवेश न कर सकें। परमेश्वर ने आपको मुहरबंद कर दिया है अतः जब आपने नया जन्म पाया तब आपको एक नई आत्मा प्राप्त हुई और पाप ने आपके भीतर प्रवेश नही किया। आप की एक नई पहिचान है। आप जो कुछ अपनी आत्मा में है के आधार पर ना, कि आप जो ारीर में है के आधार पर आपका परमेश्वर के साथ एक संबंध है जिसके साथ आप सहचर्य कर सकते हैं और जिसकी आराधना कर सकते हैं।

मसीही जीवन में यही वास्तव में एक महान परिवर्तन है, कि एक व्यक्ति को अपनी पहिचान बदलना पड़ता है। आपको परमेश्वर से इस आधार पर संबंध रखना पड़ता है कि आप भौतिक क्षेत्र में क्या करते हैं, ना कि इस आधार पर की आप मन में क्या सोचते हैं। पर जो कुछ उसने आपके लिए किया है उसी के आधार पर आप अपनी आत्मा में जो है, के आधार पर ही सोचते हैं। वह पूर्ण कार्य और स्थिर है बार बार बदलता नहीं है। आपको धार्मिकता और सच्ची पवित्रता में रचा गया। जो कि आपकी आत्मा का भाग है। और परमेश्वर के साथ सहचर्य करने के लिये आपको आत्मा और सच्चाई से करना पड़ेगा।

शिष्यता के प्रश्न

1. 1 कुरिन्थियों 6:17 पढ़ें एक मात्र तरीका जिसके जरिये हम यह जान सकते हैं, कि परमेश्वर के वचन के द्वारा हमारी आत्मा में परिवर्तन हुआ है। यह पद क्या कहता है कि हमें क्या हुआ है?

2. इफ़िसियों 3:17 पढें मसीह अब कहां रहता है?

3. इफ़िसियों 3:17 पढ़ें यह कैसे होता है?

4. 1 यूहन्ना 5:12 पढ़ें उद्धार प्राप्त करने के लिये हम में क्या होना चाहिए?

5. कुलुस्सियों 1:26–27 पढ़ें वह भेद जो पीढ़ियों और समयों से गुप्त रहा क्या है, और अब वह ज्ञात हो गया है?

6. इफ़िसियों 4:23–24 पढ़ें धार्मिकता और पवित्रता में क्या सृजा गया?

7. 2 कुरिन्थियों 5:21 पढ़ें हमें किसकी धार्मिकता प्राप्त होती है?

8. इफ़िसियों 1:4 पढ़ें विश्वासियों की परमेश्वर के सम्मुख परमेश्वर की क्या स्थिती है?

9. इफ़िसियों 1:6 पढें किसमें हमें स्वीकारा गया?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

1 कुरिन्थियों 6:17 – *"और जो प्रभु की संगति में रहता है, वह उसके साथ एक आत्मा हो जाता है।"*

इफ़िसियों 3:17 – *"और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डालकर।"*

1 यूहन्ना 5:12 – *"जिस के पास पुत्र है उसके पास जीवन है; और जिस के पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है।"*

कुलुस्सियों 1:26–27 – *"26 अर्थात उस भेद को जो समयों और पीढियों से गुप्त रहा, परन्तु अब उसके उन पवित्र लोगों पर प्रगट हुआ है। 27 जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उसे भेद की महिमा का मूल्य क्या है? और वह यह है कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।"*

इफ़िसियों 4:23–24 – *"23 और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओं । 24 और नये मनु यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है।"*

2 कुरिन्थियों 5:21 – *"जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।"*

इफ़िसियों 1:4 – *"जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दो । हों।"*

इफ़िसियों 1:6 – *"कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमे उस प्यारे में सेंत मेंत दिया।"*

उत्तर निर्देशिका

1. 1 कुरिन्थियों 6:17 पढ़ें एक मात्र तरीका जिसके जरिये हम यह जान सकते हैं, कि परमेश्वर के वचन के द्वारा हमारी आत्मा में परिवर्तन हुआ है। यह पद क्या कहता है कि हमें हुआ है?

   हमारी आत्मा प्रभु के साथ जुड़ गई है।

2. इफ़िसियों 3:17 पढ़ें मसीह अब कहां वास करता है?

   हमारे दिल में।

3. इफ़िसियों 3:17 पढ़ें यह कैसे होता है?

   विश्वास सें।

4. 1 यूहन्ना 5:12 पढ़ें उद्धार प्राप्त करने के लिये हम में क्या होना चाहिए?

   पुत्र (यीशु मसीह)।

5. कुलुस्सियों 1:26–27 पढ़ें वह भेद जो पीढ़ियों और समयों से गुप्त रहा क्या है, और अब वह ज्ञात हो गया है?

   मसीह जो महिमा की आशा है हम में रहता है।

6. इफ़िसियों 4:23–24 पढ़ें धार्मिकता और पवित्रता में क्या सृजा गया?

   हमारा नया मनुष्यत्व (हमारी नई जन्म पाई हुई आत्मा)

7. 2 कुरिन्थियों 5:21 पढ़ें हमें किसकी धार्मिकता प्राप्त होती है?

   मसीह में होकर परमेश्वर की धार्मिकता प्राप्त होती है।

8. इफ़िसियों 1:4 पढ़ें विश्वासियों की परमेश्वर के सम्मुख परमेश्वर की क्या स्थिती है?

   पवित्र और निर्दोष।

9. इफ़िसियों 1:6 पढ़ें किस में हमें स्वीकारा गया?

प्रभु यीशु में हमें सेंत मेंत स्वीकार किया गया।

प्रथम स्तर

अध्याय ११

क्या होता है जब एक मसीही पाप करता है

लेखक - डोन क्रो

आज हम एक ऐसे वि ाय को देखना चाहेंगे कि क्या होता है, "जब एक मसीही व्यक्ति पाप करता है?" बाइबल हमें 1 यूहन्ना 1:8–9, *"यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं: और हम में सत्य नहीं। यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से   ुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।"* मसीह होने के नाते हम अन्ततः लड़खडाकर गिर जाते हैं और हम पाप करेंगे। मन परिर्वतन के बाद जो भिन्न बात हम देखते हैं, वह यह है कि अब हमारा भिन्न स्वभाव होता है, यह हमारा नया स्वभाव है। वह पाप करने पर हमें कचोटता है। हम पाप नहीं करना चाहते हैं, हम एक धर्मी जीवन जीना चाहते हैं। पर जब हम पाप करते हैं तब क्या होता है? तब क्या हमें फिर उद्धार पाने की आवश्यकता है? क्या बाइबल की यही शिक्षा है? इस स्थिति में हमारे पास कोई सुरक्षा नहीं है, और कुछ दृ ट से हम संसार से ज्यादा गये बीते हैं। कम से कम संसार पाप के ज्ञान की पीड़ा से नहीं जूझता है। विश्वासी होने के नाते पाप पर हमें ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए। इब्रानियों 10:2 कहता है, कि यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा, कि विश्वासी को पाप का आभास भी नही होना चाहिए। दूसरे   ाब्दों मे पाप हमारे जीवन का केन्द्र नही होना चाहिए परमेश्वर हमारे जीवन का केन्द्र होना चाहिए।

रोमियों 4:2 कहता है, *"क्योंकि यदि इब्राहीम कामों से धर्मी ठहराया (धर्मी घो ित हुआ) जाता, परन्तु परमेश्वर के निकट नहीं।"* यदि उद्धार हमारे योग्यता के द्वारा होता तो जो काम हम करते तो हम डींगे मारते।(को ठक में दिये गये   ाब्द मेरे है।) हम कह सकते हैं, "हे प्रभु जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसकी मैं वास्तव में सराहना करता हूँ, पर मैंने जो काम किये उसे याद रखें।" अतः पूरे   ाश्वत् काल में हमने जो कुछ किया है उसके लिये यीशु की और अपनी पीठ थपथपायेंगे। नहीं! परमेश्वर ने उद्धार को इस रीति से तैयार किया है, कि मनु य की ओर से ना तो कोई घमंड ना गर्व हो। वह एक मात्र

बात जिस पर घमण्ड करना है, वह प्रभु यीशु मसीह होगा (रोमियों 3:27)। अनंत जीवन का वरदान, वास्तव में एक वरदान है, जिसे कमाया नहीं जा सकता है (रोमियों 6:23)।

रोमियों 4:2 कहता है, यदि इब्राहीम कामों से धर्मी ठहराया जाता, तो उसे घमण्ड करने का कारण होता, पर ऐसा नहीं हुआ। पवित्र ाास्त्र इस प्रकार कहता है कि एक व्यक्ति उद्धार पाता है? अपने प्रदर्शन के द्वारा? अपने कामों के द्वारा? जो काम वह करता है, उसके द्वारा? इब्राहीम किस प्रकार धर्मी गिना गया या धर्मी घोि ात हुआ? क्या यह इसलिये हुआ कि उसने कुछ काम किया नहीं किया, या फिर मात्र इसलिये कि उसने विश्वास किया, भरोसा किया और विश्वास के जरिये परमेश्वर पर निर्भर था। बाइबल रोमियों 4:3 में कहती है,*"इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया।"*

यद्यपि मैं असफल होता और पाप करता हूँ तब भी कौन सी चीजें मुझें अपने स्तर पर बने रहने और पाप करने से रोकती है? क्या इसलिये कि यीशु मसीह ने आपके सारे पापों को क्रूस पर उठा लिया और उस पर विश्वास रखने के द्वारा (अपने स्वंय के कामों से नहीं) मैं धर्मी (परमेश्वर के सम्मुख मैं धर्मी बना लिया गया) बना लिया गया।

रोमियों 4:6 कहता है, *"जिसे परमेश्वर बिना कर्मो के धर्मी ठहराता है, उसे दाऊद भी धन्य कहता है।"* पुराने नियम का दाऊद कह रहा है कि नई वाचा के द्वारा एक ऐसा दिन होगा जब परमेश्वर मनु य द्वारा बिना कार्य किये अपनी धार्मिकता ऊंडेलेगा। और उनके धार्मिकता के अधिकार के फलस्वरूप उन्हें धर्मी ठहरायेगा। फिर उसने पद 7 में कहा, *"कि धन्य वे हैं, जिन के अधर्म क्षमा हुए और जिन के पाप ढांपे गए।"* यह निर्णायक तथ्य है। *"कि धन्य वे हैं, जिन के अधर्म क्षमा हुए, और जिन के पाप ढांपे गए।"* (रोमियों 4:7)। यह इस प्रकार नहीं कहता कि वह करेगा, कभी कभी वह करेगा, और कभी कभी वह नहीं करेगा। वह कहता है,"धन्य हैं वह मनु य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए" ग्रीक भा ा में इसे जबरदस्त नकारात्मक कहा गया है। इसका अर्थ है कि, वह हमारे पापों को हमारे खाते में नहीं लिखेगा, कभी नहीं लिखेगा। यह नई वाचा का ाुभ समाचार है। इब्रानियों 10:16 कहता है, *"कि प्रभु कहता है; कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद उन से बान्धूंगा वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्थाओं को* (उन के हृदय) *पर लिखूंगा* (अर्थात डालूंगा) *और मैं उन के विवेक में डालूंगा* (अर्थात लिखुंगा) "अनुबंध का दूसरा भाग में

परमेश्वर पद 17 में यह कहता है; "(फिर वह यह कहता है, कि) *मैं उन के पापों को, और उनके अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूंगा।*

आप जब पाप करते हैं और आप के पास उसे अंगीकार करने का समय भी नहीं होता, तो आपको धार्मिकता में और सही स्धिति में क्या बनाये रखता है? वह यीशु मसीह पर आपका विश्वास है। उसका नाम यीशु है, और वह लोगो का उनके पापों से उद्धार करता है (मत्ती 1:21)।

शिष्यता के प्रश्न

1. पढ़ें रोमियों 4:5 परमेश्वर उन लोगों को धर्मी ठहराता जो

2. पढ़ें रोमियों 4:2–3 परमेश्वर ने इब्राहीम के खाते मे ऐसा कुछ (जब उसने विश्वास किया) डाला जो उसके पास पहले नही था? वह क्या था?

3. पढ़ें रोमियों 4:22–24 यदि हम वह विश्वास करें जो इब्राहीम ने किया तो परमेश्वर हमारे खाते में क्या डालेगा?

4. पढ़ें रोमियों 4:6 परमेश्वर एक व्यक्ति के खाते में उसके अनुसार धार्मिकता डालता है?

क. उनके कामों के अनुसार

ख. अलग किये गये कामों से

ग. वे कितने अच्छे हैं उसके अनुसार

5. पढ़ें इब्रानियों 10:14 परमेश्वर के सामने विश्वासी कब तक सिद्ध किये जाते हैं?

6. रोमियों 5:17 पढ़ें धार्मिकता ____________________ द्वारा प्राप्त होती है।

क. उसे कमाने से

ख. एक वरदान के रूप में

ग. उसके लिये काम करने के द्वारा

7. वरदान ाब्द का क्या अर्थ है?

8. अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता के रूप में उस पर भरोसा करने के लिये आपको उस पर भरोसा करना चाहिए कि वह आपको____________________ ले जाएं।

क. कलीसिया

ख. स्वर्ग

ग. रूस

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

रोमियों 4:5 – *"परन्तु जो काम नहीं करता बरन भक्तिहीन कें धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना जाता है"*

रोमियों 4:2–3 – *"2 क्योंकि यदि इब्राहीम कामों से धर्मी ठहराया जाता, तो उसे घमण्ड़ करने की जगह होती, परन्तु परमेश्वर के निकट नहीं। 3 पवित्र ाास्त्र क्या कहता है? यह कि इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया।"*

रोमियों 4:22–24 *"22 इस कारण, यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया। 23 और यह वचन, कि विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया, न केवल उसी के लिये लिखा गया। 24 बरन हमारे लिये भी जिन के लिये विश्वास धार्मिकता गिना जाएगा, अर्थात् हमारे लिये जो उस पर विश्वास करते हैं, जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया।"*

रोमियों 4:6 –*"जिसे परमेश्वर बिना कर्मो के धर्मी ठहराता है, उसे दाऊद भी धन्य कहता है।"*

इब्रानियों 10:14 – *"क्योंकि उस ने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिये सिद्ध कर दिया है।"*

रोमियों 5:17 –*"क्योंकि जब एक मनु य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी बरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनु य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।"*

उत्तर निर्देशिका

1. रोमियों 4:5 पढ़ें परमेश्वर उन लोगों को धर्मी ठहराता है जो ____________ है।

   अधर्मी

2. रोमियों 4:2–3 पढ़ें परमेश्वर ने इब्राहीम के खाते में क्या लिखा (जब उसने विश्वास किया) जो उसके पास पहले से नहीं था। वह क्या था?

   धार्मिकता या धर्मी ठहराया जाना।

3. रोमियों 4:22–24 पढ़ें जैसा इब्राहीम ने विश्वास किया यदि उसी प्रकार हम विश्वास करें तो परमेश्वर हमारे खाते में क्या लिखेगा?

   धार्मिकता या धर्मी ठहराया जाना

4. रोमियों 4:6 पढ़ें परमेश्वर धार्मिकता को .... के अलावा एक व्यक्ति के खाते में लिखता है?

   ख. उनके कर्म के बिना।

5. इब्रानियों 10:14 पढ़ें परमेश्वर के सामने विश्वासी कब तक सिद्ध किये जाते है?

   सदा के लिये

6. रोमियों 5:17 पढ़ें धार्मिकता ____________________ द्वारा प्राप्त होती है।

   ख. एक वरदान के रूप में

7. वरदान ाब्द का क्या अर्थ है?

ऐसा कुछ जो मुफ्त मे दिया जाता है जिसके तहत लेने वाले को कोई मूल्य नहीं चुकाना पड़ता।

8. अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता के रूप में उस पर भरोसा करने के लिये आपको उस पर भरोसा करना चाहिए कि वह आपको__________________ले जाए।

ख. स्वर्ग

प्रथम स्तर

अध्याय १२

परमेश्वर के वचन की सम्पूर्णता

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

मरकुस 4 परमेश्वर के वचन में सामर्थ, गुण, और उसमें विश्वास की सम्पूर्णता के वि ाय में एक बड़ा अदभुत अध्याय है। इस एक ही दिन में 10 दृ टान्तों में शिक्षा दी गई थी। इसकी जाँच करने के लिये हमें मरकुस 4 मत्ती 13 और लूका 8 की आपस में तुलना करना होगा। अनेक दृ टान्त हैं, जिसमें से एक बीज बोने वाले का दृ टान्त है। मरकुस 4:26 में वह कहता है, *"फिर उसने कहा; परमेश्वर का राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनु य भूमि पर बीज छींटे।"* यह याद रखें कि पद 14 में वह कहता है कि यह बीज परमेश्वर का वचन है। परमेश्वर आपको यह शिक्षा नहीं देता कि किस प्रकार हम किसान बने, पर वह आत्मिक सत्य को समझाने के लिए स्वाभाविक चीजों का उपयोग किया। पद 27 कहता है, *"और रात को सोए, और दिन को जागे और वह बीज ऐसे उगे और बढ़ें कि वह न जाने।"* अब मैं विश्वास करता हूँ कि यह महत्वपूर्ण है। वह कहता है, मनु य वास्तव में नहीं समझ सकता। वह नहीं जानता कि कैसे हो रहा है।

कुछ लोग कहते हैं, "मुझे नहीं समझ आ रहा, कि आप किस वि ाय में बात कर रहे हैं। परमेश्वर का वचन किस प्रकार हमें बदल सकता है और परमेश्वर के जीवन को हम में किस प्रकार जीवंत कर सकता है?" मैं इसे पूर्ण रूप से समझ नहीं पाता, पर मैं जानता हूँ कि यह कार्य करता है। मैं यह नहीं समझ पाता कि किस प्रकार आप एक छोटा बीज जमीन में डालते हैं और बीज ऐसे उगे और बढ़ें, कि उसमें अंकुर बाल और दाने तैयार हो और वह सौ गुना उत्पन्न करें। कोई भी इसे पूर्ण रूप से नहीं समझ सकता, पर यह कार्य करता है, मैं कहता हूँ यह कार्य करता है। परमेश्वर का वचन पढ़ने और उसे अपने हृदय में अधिकाई से बसने देने से, आपका दृि टकोण अवधारणा अनुभव सब बदल जाता है।

पद 28 कहता है, *"पृथ्वी आप से आप फल लाती है।"* पृथ्वी इसलिये बनी कि वह बीज को धारण करें वा उसको जन्म दे उस जीवन को बाहर लेकर आये। आपका

हृदय परमेश्वर के वचन के लिये बनाया गया है– वह वास्तव में इसीलिये बनाया गया है। परमेश्वर का वचन इसलिये सृजा गया कि आपके दिल में रखा जाये। बाइबल को लेकर अपने पास रखना, अपनी काफी की मेज पर उसे रखना, उसे साथ लेकर चलने का कोई महत्व नहीं है। यह आपके जीवन मे सामर्थ का संचार नहीं करता। आपको वचन को लेना होगा, उसे बीज बनाना होगा, और अपने दिल में बोना होगा। जब आप ऐसा करेंगे तब आपका हृदय इस प्रकार तैयार होगा कि वह फल उत्पन्न करें। आपके जीवन में चीजें किस प्रकार कार्य करती है इसको यह स्वतः ही बदल देगा। पद इसे बताना जारी रखता है।*"पहले अंकुर, तब बाल, और तब बालों में तैयार दाना।"* इसका अर्थ यह हुआ कि विकास करने और परिपक्वता तक पहुँचने के स्तर होते हैं। लोग मेरे पास अक्सर आते हैं, वे यह अभिव्यक्त करते हैं कि वे परमेश्वर से कुछ अच्छा करने या कुछ ईश्वरीय करने के लिये विश्वास करते हैं, तो मैं इससे सहमत हूँ। पर यदि उन्होंने कुछ भी नहीं किया हो यदि उन्होंने किसी भी व्यक्ति को प्रभु में ना लाया हो। तो मैं आपको इस बात की गारंटी देता हूँ कि अगले कुछ सप्ताहों में उनकी टेलीविजन या रेडियो सेविकाई नहीं ुरू हो सकती है।

आपको चीजों को चरणबद्ध रीति से करना होगा। परमेश्वर से प्राप्त करने के चरण होते हैं, और यही यह दृ टांत सिखाता है। पहले आपको ुरूआत करनी होगी, फिर आशा आएेगी फिर विश्वास आयेगा जो अन्तः परिणाम उत्पन्न करेगा। विजय के चरण होते हैं कोई भी व्यक्ति अचानक ही ून्य से हजार किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार तक नहीं पहुँच सकता है। यद्यपि यह ईश्वरीय इच्छा होगी पर यह इस प्रकार कार्य नहीं करता। पवित्र ास्त्र का यह वचन यह दर्शाता है कि परमेश्वर का राज्य एक बीज के समान है। वचन को आपके हृदय में बोया जाना चाहिए, और फिर विकास चरणों में होता है। पहिले अंकुर, तब बाल, और तब बालों में तैयार दाना। पर अगला पद कहता है, *"परन्तु जब दाना पक जाता है, तब वह तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुंची है।"* ये चरण होते हैं, पर अन्त में फलवन्त होने और परिपक्वता का समय आयेगा।

यह बात पद 35 में व्यक्त की गई है,*"उसी दिन जब सांझ हुई, तो उस ने उन से कहा; आओ, हम पार चलें।"* यीशु मसीह पूरे दिन उन्हें वचन की सामर्थ के वि ाय में शिक्षा दे रहा था, कि किस प्रकार वचन बीज के समान है और किस प्रकार वह परमेश्वर के जीवन का आपके जीवन में प्रवाहित करेगा। वह इसकी शिक्षा पिछले दस दृ टान्तों

से देता आ रहा था, यहाँ पर वह उनकी एक परीक्षा लेता है। वह उनसे कहता है,"यहाँ प्रभु का वचन है, आओ हम पार चलें।" उसने यह नहीं कहा, आओं हम नाव पर चढ़ें, आधे झील को पार करें और डूब जायें। पर "आओ हम पार चलें।" फिर वह नाव पर चढ़ा और सो गया। कहानी आगे बढ़ती है, और उसमे बताया जाता है कि एक बड़ी आंधी आती है, और जल नाव में भर गया जाता है। आपको यह याद रखना चाहिए कि यहां बड़े जहाज वाली व्यवस्था नहीं थी जिसमें तहखाने में सोने के लिये बने यन कक्ष में यीशु सो रहा हो जहाँ वह सूखा हो ओर उसे यह भी पता ना हो कि आसपास क्या हो रहा है। यह एक खुली नाँव थी, और यीशु सो रहा था और पानी उसके चारों ओर था। पानी नाव के भीतर घुस चुका था। पानी यीशु को छू भी रहा था। यह महत्वपूर्ण था इसका कारण यह था, क्योंकि वह जानता था कि क्या हो रहा है, पर वह फिर भी सोने की, कोशिश कर रहा था। शि य तो भयभीत हो गये, और उसके पास आये और कहा,"हे गुरू, क्या तुझे चिन्ता नहीं, कि हम नाश हुए जाते हैं? "दूसरे ाब्दों में वह कहना जा रहे थे कि "वो कुछ करे! कोई पानी उलीचने का बर्तन लाये और पानी उलीचे! आप अपना भार नहीं उठा पा रहे है!"

कई लोग आज परमेश्वर के साथ यही करते हैं, और कहते हैं,"परमेश्वर आपने कुछ क्यों नहीं किया?" परमेश्वर ने कुछ किया है। यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा उसने हमे वह सबकुछ प्रदान किया है जिसकी हमें आवश्यकता है। उसने अपना वचन तैयार किया और ये सारे बीज दिये हैं। यह हमारा काम है, कि हम उसे अपने हृदय में बोये। उसने हमे पवित्रशास्त्र का वचन दिया है, यह हमारा काम है कि हम उसके बीज को ले, उसे अपने दिल में रखें उस पर मनन करें, जब तक कि वह जीवन ना उत्पन्न करें। पर शि य लोग यीशु को जगाना चाहते थे, वे उससे यह कहना चाहते थे कि वो क्यों कुछ नहीं करता?" वह उठा और उसने आँन्धी को डाँटा, और आन्धी थम गई। फिर उसने मुड़कर अपने चेलों से कहा,"तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं?" उसने उनसे यह नहीं कहा, "मुझे माफ करना, मुझे ाायद कुछ करना चाहिए था।" नहीं, उसका काम था कि, वह उन्हें वचन की शिक्षा दे और उनका काम था कि वे अपने हिस्से का काम करते कि वे वचन ले और उसकी प्रतिज्ञा पर विश्वास करें। यीशु मसीह के इस पृथ्वी पर आने के द्वारा परमेश्वर ने सब कुछ प्रदान किया है। उसने आपको सब कुछ दिया है कि जो कि आपको अपने जीवन मे सफल होने के लिये बीज रूप में आवश्यक है। आपको मात्र करना यह है कि आप परमेश्वर के वचन रूपी बीज को ले, और उसे

पढ़ने के द्वारा, उस पर मनन करने के द्वारा, उस पर विचार करने के द्वारा और आपके भीतर उसे जड़ पकड लेने के द्वारा, अपने दिल में उसे बोये। जब आप ऐसा कर लेंगे तब आप अपने जीवन में आने वाले तूफान के समय खड़े रहकर तूफान को रोक सकेंगे।

मेरा यह मानना है, कि इन शि यों के लिये जो बेहतर था कि वह यीशु मसीह की शिक्षा को लेते जो उन्हें उसने उस दिन दी और कहते, "आओ हम पार चलें।" वे कह सकते थे, आज जो कुछ उसने हमें शिक्षा दी उसके अनुसार उसकी प्रतिज्ञा यह है। यह सारे ब्रह्ममांड का सृजनहार है जिसने कहा आओं हम पार चलें, ना कि यह हम आधी दूरी तय करे और डूब जाये। वे वह वचन ले लेते, उसे विश्वास के साथ मिलाते आन्धी और लहरों को डांटते। यही यीशु मसीह ने कहा,"हे अल्प विश्वासियों तुम्हें ाक क्यों हुआ?" आप जानते है? हमें परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना है और उस पर कार्य करना है।

शिष्यता के प्रश्न

1. मत्ती 13:19 पढ़ें यदि आप परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में नहीं रखेंगे तो उसके साथ क्या होगा?

2. यहोशू 1:8 पढ़ें हमें परमेश्वर के वचन पर कब कब मनन करना चाहिए?

3. यूहन्ना 6:63 पढ़ें इस पद के अनुसार परमेश्वर का वचन

4. मत्ती 4:4 पढ़ें मनु य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु

5. इफ़िसियों 6:17 पढ़ें परमेश्वर का वचन किस प्रकार का हथियार है?

6. तलवार अपने दुश्मन को क्या हानि पहुँचा सकती है?

7. रोमियों 8:6 पढ़ें जब हम परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में सही स्थान दें तो हमें

8. 2 कुरिन्थियों 3:18 पढ़ें हम जिस पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं उसी से हम भर जाते हैं। हमें अपना ध्यान किस पर केन्द्रित करना चाहिए?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

मत्ती 13:19 – *"जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे वह दु ट आकर छीन ले जाता है; यह वहीं है, जो मार्ग के किनारे बोया गया था।"*

यहोशू 1:8 – *"व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सुफल होंगे और तू प्रभावशाली होगा"*

यूहन्ना 6:63 – *"आत्मा तो जीवन दायक है,   ारीर से कुछ लाभ नहीं; जो बातें मैं तुम से कहीं हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।"*

मत्ती 4:4 – *"उस ने उत्तर दिया; कि लिखा है कि मनु य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।"*

इफ़िसियों 6:17 – *"और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है ले, लो।"*

रोमियों 8:6 – *"शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु हैं, पर आत्मा पर मन लगाना जीवन और   ाान्ति है।"*

2 कुरिन्थियों 3:18 – *"परन्तु जब हम सब के सब उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते है।"*

उत्तर निर्देशिका

1. मत्ती 13:19 पढ़ें यदि आप परमेश्वर के वचन को अपने ह्रदय में नहीं रखेंगे तो उसके साथ क्या होगा?

वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है।

2. यहोशु 1:8 पढ़ें हमें परमेश्वर के वचन पर कब कब मनन करना चाहिए?

दन और रात।

3. यूहन्ना 6:63 पढ़ें इस पद के अनुसार परमेश्वर का वचन है।

आत्मा और जीवन

4. मत्ती 4:4 पढ़ें मनु य केवल रोटी ही से नहीं,

परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।

5. इफ़िसियों 6:17 पढ़ें परमेश्वर का वचन किस प्रकार का हथियार है?

एक तलवार।

6. तलवार अपने दुश्मन को क्या हानि पहुँचा सकती है? **हाँ**

7. रोमियों 8:6 पढ़ें जब हम परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में सही स्थान दें तो हमें

जीवन और शान्ति मिलेगी।

8. 2 कुरिन्थियों 3:18 पढ़ें हम जिस पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं उसी से हम भर जाते हैं। हमें अपना ध्यान किस पर केन्द्रित करना चाहिए?

प्रभु और उसके प्रताप पर।

प्रथम स्तर

अध्याय १३

परमेश्वर दोषी नहीं

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

आज मैं आपसे सबसे महत्वपूर्ण बात को बाटूँगा जो परमेश्वर ने कभी मेरे जीवन में किया है। ऐसा प्रतीत होता है लोग स्वतः ही यह विश्वास करते हैं, कि उनके जीवन में जो कुछ होता है, वह परमेश्वर की ओर से है, कि वह सब चीजों का नियंत्रण करता है। इसका कारण यह है कि परिभा ाानुसार परमेश्वर सर्वसामर्थी और सर्वशक्तिमान है, और वे यह मान लेते हैं कि, वह उस सब को नियंत्रित करता है जो उनके जीवन में घटित होता है। अविश्वासी भी इस पर विश्वास करते हैं। कई मसीही लोग इस धर्मसिद्धांत को बढावा देते हैं, और यह उनके जीवन में स्थापित हो गया है। मैं विश्वास करता हूँ कि जो पवित्रशास्त्र हमें शिक्षा देता है वह इसके विपरीत है, और यह अतिमहत्वपूर्ण है कि आप इसकी शिक्षा लें। याकूब 1:13–17 कहता है, *"जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिला ा से खिंचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिला ा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है। हे मेरे प्रिय भाईयो, धोखा न खाओ। क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।"*

यह पद सिद्ध करता है कि परमेश्वर भले कामों का रचियता है, यीशु ने यूहन्ना 10:10 में कहा, *"चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और न ट करने को आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। यदि अच्छा हो तो परमेश्वर का है; और यदि बुरा हो तो वह ैतान की ओर से है।"* यह बड़ा साधरण सा धर्मविज्ञान है, जिस कारण से यह बड़ा नाजुक है उसे याकूब 4:7 बताता है, *"इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और ैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।"* यह पद कहता है कि हमें परमेश्वर के

आधीन या समर्पित होना है, और ैतान का साम्हना करना है। साम्हना करने का अर्थ है, क्रियात्मक रूप से विरोध करते हुये लड़ना है।

जब लोग यह विश्वास कर लेते हैं कि जो कुछ भी लोगों के जीवन में होता है वह पूर्ण रूप से परमेश्वर की ओर से होता है उदाहरण के लिये, बीमारी, व्यापार का असफल होना, नौकरी का छूटना विरोध करने वाले बच्चे या विवाह संबंध का टूटना उन्हें नि क्रय होने की स्थिति में डाल देता है। यदि वो वास्तव में यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर किसी परिस्थिति का मालिक है और वह इसका उपयोग उन्हें बदलने के लिये या उन्हें सजा देने के लिये उपयोग कर रहा है यदि वे उसका साम्हना कर रहे हो तो वे उसी के विरूध लड़ रहे होंगे। इसके बावजूद याकूब 4:7 कहता है, कि ैतान का साम्हना करो तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। आपको परमेश्वर के अधीन होना है। यह इस बात को बताता है कि कुछ चीजें परमेश्वर की ओर से है तो कुछ चीजें ैतान की ओर से हैं। इस संसार में दु टता की एक ताकत है, वह हर चीज जो आपके जीवन में होता है, परमेश्वर की ओर से नहीं आता। यदि आप इस बात को नहीं समझ पाते हैं तो आप अन्ततः ैतान के अधीन हो जायेंगे और आप ैतान को अधिकार प्रदान करा देंगे।

मैं रोमियों के नाम लिखी गई पत्री में से एक पद को प्रस्तुत करना चाहूँगा जिसका की अक्सर गलत उपयोग किया जाता है। मैं ऐसे अंतिम संस्कारों में गया हूँ जहाँ लोग परमेश्वर के वि ाय में नहीं जानते, वे कलीसिया नहीं जाते, और पवित्रशास्त्र के वचन के बारे में ाायद ही कुछ जानते हों पर, यह पद वे अवश्य जानते हैं। रोमियों 8:28 कहता है, *"और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।"* इस पद कि व्याख्या इस प्रकार की गई है, कि आपके जीवन में जो कुछ होता है, वह परमेश्वर करता है और वह एक उद्देश्य के साथ करता है, वह भलाई के लिये करता है। मैं जवान लड़के लड़की की अंतिम यात्रा में ाामिल हुआ जो ाराब और ड्रग्स का सेवन कर, कार में चले उन्होंने कार बहुत तेजी से चलाई वे फिसलने वाली सड़क से गुजरे और फिसल गये, उन्होंने टेलीफोन खम्बे को टक्कर मारी और दोनों मारे गये। प्रचारक ने इस वचन का उदाहरण दिया और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; और कहा परमेश्वर का ऐसा करने के पीछे कोई ना कोई उद्देश्य होगा। परमेश्वर ने इन युवाओं को नहीं मारा। मुझे पूरा विश्वास है कि ैतान

ने उन्हें उस स्तर का विरोध करने को प्रेरित किया होगा जो उनके माता पिता ने उन्हें सिखाया है। पर अंततः चुनाव उनका था। उन्हीं ने डोपिंग और ाराब का सहारा लिया, वे ही टेलीफोन खम्बे से टकराये। यह एक प्राकृतिक चीज थी और इसके पीछे परमेश्वर का हाथ नहीं था।

इसका क्या अर्थ होता है ''जब यह कहा जाता है, कि और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है?'' वचन कहता है कि ''सब बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती है,'' पर उसमें योग्यताएं ामिल हैं *''जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं।''* यह पवित्रशास्त्र उस व्यक्ति के लिये नहीं है जो परमेश्वर से प्रेम नहीं करता यह इतना स्वाभाविक है कि इसके वि ाय में कुछ नहीं कहना चाहिए पर यह अदभुत है कि किस प्रकार लोग इसे इस प्रकार के युवा लोगों के उदाहरणों के लिये लागू करते हैं जो नशीली दवाओं और ाराब आदि का सेवन कर रहे थे और परमेश्वर और उसके सिद्धांतों के पूर्ण विरोध में थे। यह इस प्रकार कहता है कि यह उनके लिये भलाई को उत्पन्न करती है जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं, और उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाये गये हैं, अर्थात वे लोग जो उसकी बुलाहट में चल रहे हैं।

1 युहन्ना 3:8 कहता है, *"परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ, कि ैतान के कामों को नाश करें।"* परमेश्वर ने अपने आप को ैतान का नाश करने के लिये प्रगट किया। उसकी इच्छा सिर्फ भलाई के लिये कार्य करती है और सिर्फ उनके लिये जो उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाये गये हैं, अर्थात वे जो उसकी बुलाहट के अनुसार चल रहे हैं और ैतान का विरोध कर रहे हैं, और उसके कामों का नाश करने के लिये तत्पर है। जो लोग ैतान का सामना कर रहे हैं, और परमेश्वर के लिये जी रहे हैं, वे कह सकते हैं कि चाहे उनके जीवन में ैतान जो भी कर लें, परमेश्वर उसे फेरकर उसका उपयोग उनकी भलाई के लिये कर सकता है।

हमें यह जाँचना ुरू कर देना चाहिए, कि परमेश्वर हमारे जीवन में सभी चीजों का नियंत्रण नहीं करता। एक ात्रु है जो चोरी करने, डाका डालने, नाश करने के लिये आता है, पर यीशु मसीह हम को जीवन देने के लिये आया। हमें जीवन का चुनाव करना है, और स्वंय इच्छा से चुनाव करना है कि, जो कुछ हमारे जीवन में आता है, उसके लिए परमेश्वर दो ी नहीं है।

यदि परमेश्वर ारीरिक मनु य होता और उस पर उन सब बातों के लिए दो ा लगाया जाता जैसे कि वह कैंसर, अपंगता, अवसाद, दु:ख ओर ाोक को लोगों पर डालता है, मैं आपको गारंटी देता हूँ कि इस पृथ्वी पर ऐसी कोई भी सरकार नहीं है, जो उसे गिरफ्तार करके बंदीगृह में न डाले या उसे रोकने कि कोशिश करें। इसके बावजूद हम सोचते हैं कि परमेश्वर उस व्यक्ति से कहीं अधिक दयालु है, जिनसे हम कभी न मिले हों। या उसकी कल्पना अपने जीवन में कभी की हो वह लोगों को चोट पहुँचाता ऐसा कुछ कर रहा हो। ऐसे कुछ प्रहार होते हैं जो ैतान की ओर से होते हैं और कुछ प्राकृतिक होते हैं। सब प्रकार की दुर्घटनाऐं परमेश्वर की नियति के अनुसार नहीं होती। बीमा कम्पनी अपनी पालसी में ''ईश्वर द्वारा किये गये कार्य'' जैसे भूकम्प और महामारी का उल्लेख करते हैं। नहीं, परमेश्वर इन सब चीजों का कर्त्ता नहीं है ।

शिष्यता के प्रश्न

1. याकूब 1:13 पढ़ें क्या बुरी बातों से परमेश्वर किसी की परीक्षा लेता है?

2. याकूब 1:17 पढ़ें अच्छा वरदान कहां से आता है?

3. यूहन्ना 10:10 पढ़ें चोर कौन है?

4. यूहन्ना 10:10 पढ़ें चोर के क्या उद्देश्य होते हैं?

5. यूहन्ना 10:10 पढ़ें यीशु किस कारण से आया?

6. याकूब 4:7 पढ़ें अपने आप को परमेश्वर को समर्पित करने और ैतान का साम्हना करने का क्या परिणाम होता है?

7. रोमियों 8:28 पढ़ें क्या रोमियों 8:28 कहता है की सारी बातें परमेश्वर की ओर से होती है?

8. प्रेरितों के काम 10:38 पढ़ें क्या बीमारी परमेश्वर की ओर से आती है?

9. पढ़ें 1 यूहन्ना 3:8 परमेश्वर का पुत्र किस लिये प्रगट हुआ?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

याकूब 1:13 – *"जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहें, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।"*

याकूब 1:17 – *"क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।"*

यूहन्ना 10:10 – *"चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और न ट करने को आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।"*

याकूब 4:7 – *"इसलिये परमेश्वर के अधीन हो जाओ; और ैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।"*

रोमियों 8:28 – *"और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।"*

प्रेरितों के काम 10:38 – *"कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभि ेक किया; वह भलाई करता, और सब को जो ैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।"*

1 यूहन्ना 3:8 – *"जो कोई पाप करता है, वह ौतान की ओर से है, क्योंकि ौतान आरम्भ ही से पाप करता आया है: परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ, कि ौतान के कामों को नाश करें।"*

उत्तर निर्देशिका

1. याकूब 1:13 पढ़ें क्या बुरी बातों से परमेश्वर किसी की परीक्षा लेता है?

   नहीं

2. याकूब 1:17 पढ़ें अच्छा वरदान कहां से आता है?

   ज्योंतियों के पिता की ओर से आता है।

3. यूहन्ना 10:10 पढ़ें चोर कौन है?

   शैतान है।

4. यूहन्ना 10:10 पढ़ें चोर के क्या उद्देश्य होते हैं?

   चोरी करना, घात करना और नष्ट करने को आता है।

5. यूहन्ना 10:10 पढ़ें यीशु किस कारण से आया?

   बहुतायत से जीवन देने के लिये।

6. याकूब 4:7 पढ़ें अपने आप को परमेश्वर को समर्पित करने और ौतान का साम्हना करने का क्या परिणाम होता है?

   शैतान मेरे पास से भाग जायेगा।

7. रोमियों 8:28 पढ़ें क्या रोमियों 8:28 कहता है कि सारी बातें परमेश्वर की ओर से होती है?

   नहीं।

8. प्रेरितों 10:38 पढ़ें क्या बीमारी परमेश्वर की ओर से आती है?

   नहीं।

9. 1 यूहन्ना 3:8 पढ़ें परमेश्वर का पुत्र किस लिये प्रगट हुआ?

परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों का नाश करें।

प्रथम स्तर

अध्याय १४

आत्मा से भरे जीवन की सामर्थ

लेखक – डोन क्रो

मरकुस 16:15–16 को महान आज्ञा के रूप में जाना जाता है। यीशु मसीह ने अपने शि यों से कहा, *"तुम सारे जगत में जाकर सारी सृ ट के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दो ी ठहराया जाएगा।"* प्रेरितों के काम पद 5 और 12 में हम देखते हैं कि किस प्रकार सामरिया में फिलिप्पुस के प्रचार के द्वारा यह महान आज्ञा क्रियान्वित हुई। *"और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा...परन्तु जब उन्हों ने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरू ा, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।"*

प्रश्न यह है क्या सामरिया के यह लोग मरकुस 16:15–16 के अनुसार मसीह बने। हाँ वो बने। फिलिप्पुस सामरिया नगर को गया, उसने यीशु मसीह का प्रचार किया, और यीशु मसीह में विश्वास के कारण स्त्री और पुरू ों ने बपतिस्मा लिया। महान आज्ञा के अनुसार यह लोग बचाये गये पर क्या उन्होंनं पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया?

बाइबल यूहन्ना द्वारा जल में बपतिस्मा के वि ाय में बोलती है, पर सिर्फ यीशु मसीह ही पवित्रआत्मा से बपतिस्मा दे सकता है। पवित्रशास्त्र के अनुसार लोग जो विश्वास करते थे वे उद्धार पाते थे और जल में बपतिस्मा लेते थे, पर उन्होंने कभी भी पवित्रआत्मा का बपतिस्मा नहीं पाया। प्रेरितों 8:14–16 *"जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उन के पास भेजा। और उन्हों ने जाकर उन के लिये प्रार्थना की, कि पवित्र आत्मा पाए। क्योंकि वह अब तक उन में से किसी पर न उतरा था, उन्हों ने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था।"*

हम पवित्रशास्त्र से देख सकते हैं, कि मात्र इस कारण की एक व्यक्ति ने विश्वास किया, उसने बपतिस्मा लिया, और उसने उद्धार पाया, इसका यह अर्थ नहीं है, कि उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया है। पवित्र आत्मा उनके जीवन में आया है– यूहन्ना 20:22 में हमने देखा है पवित्र आत्मा ने लोगों को नवीन रूप प्रदान किया पर– वह पिन्तेकुस्त का दिन आया जब उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त हुआ और उन्होनें परमेश्वर की ओर से सामर्थ प्राप्त किया। उद्धार के समय पवित्रआत्मा द्वारा अनुप्राणि ात होना और पवित्र आत्मा जो व्यक्ति विशे ा पर आता है, के बीच बड़ा फर्क है। पवित्र आत्मा में डूबना होता है जो कि किसी व्यक्ति विशे ा के ऊपर आता है और उन्हें सामर्थ प्रदान करता है। यद्यपि एक व्यक्ति बचाया जा चुका है इसका यह मतलब नहीं है कि उन्होंने पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाया है।

प्रेरितों 19:1–2 इस प्रकार कहता है, *"और जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के सारे देश से होकर इफिसुस में आया, और कई चेलों को देखकर। उन से कहा; क्या तुम ने विश्वास करते सम य पवित्र आत्मा पाया? उन्होने उस से कहा, हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।"* पौलुस ने कहा,''क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा का दान पाया'' उन्होंने कहा "हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।" पौलुस ने कहा, यदि तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा से बपतिस्मा नहीं पाया, तो फिर आपका बपतिस्मा किस से हुआ?" उन्होंने कहा,"यूहन्ना का बपतिस्मा।" मैं मानता हूँ कि पौलुस ने श्रे ठता से यह स्प ट किया कि यीशु मसीहा है और इन विश्वासियों ने यीशु मसीह के साथ जल मे बपतिस्मा के द्वारा अपनी पहचान करा ली है। पद 6–7 में यह पद कहता है, *"और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखें तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और ये भिन्न भिन्न भा ाा बोलने और भवि यद्वाणी करने लगे। ये सब लगभग बारह पुरू ा थे।"*

यद्यपि ये लोग वह शि य थे जो आने वाले मसीहा पर विश्वास करते थे, पर उन्होंने पवित्र आत्मा से बपतिस्मा नहीं पाया था। एक व्यक्ति पवित्रआत्मा से बपतिस्मा पाये हुये नया जन्म पाया हुआ, जल का बपतिस्मा पाया हुआ हो सकता है। पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाना, नये जन्म पाने से भिन्न एक पूर्णतः नया अनुभव है।

यद्यपि मैं एक व्यक्ति को बपतिस्मा दे सकता हूँ, मैं उन्हें पवित्र आत्मा में बपतिस्मा नहीं दे सकता, सिर्फ यीशु मसीह ऐसा कर सकता है। यदि आपने यीशु मसीह को इससे

पहले आपको बपतिस्मा देने को नहीं कहा तो क्यों ना उससे आज आप आपको बपतिस्मा देने को कहें? लूका 11:13 कहता है, *"सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़केबालों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र.आत्मा क्यों न देगा"* आप क्यों ना उससे आज ही मांगे?

शिष्यता के प्रश्न

1. मरकूस 16:16 पढ़ें अब प्रेरितों 8:5,12. क्या प्रेरितों 8:12 में वर्णित लोग मसीह बनें?

2. प्रेरितों के काम 8:14–16 पढ़ें क्या इन लोगों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया?

3. प्रेरितों के काम 19:1–5 पढ़ें क्या यह लोग विश्वासी थे?

4. प्रेरितों काम 19:6–7 पढ़ें क्या वे पवित्रआत्मा का बपतिस्मा पा चुके थे?

5. लूका 11:13 पढ़ें पवित्रआत्मा को प्राप्त करने के लिये हमें क्या करना चाहिए, इस वि ाय में लूका 11:13 क्या कहता है?

6. 1 कुरिन्थियों 14:2 पढ़ें जब एक व्यक्ति अन्य अन्य भा ा में बोलता है, तो वह क्या कर रहे होते हैं?

7. 1 कुरिन्थियों 14:14 पढ़ें जब एक व्यक्ति अन्य अन्य भा ा में बोलता है, तो वह क्या कर रहे होते हैं?

8. 1 कुरिन्थियों 14:16–17 पढ़ें जब एक व्यक्ति अन्य अन्य भा ाा में बोलता है, तो वह क्या कर रहे होते है?

9. प्रेरितों के काम 2:4 पढ़ें जब कोई अन्य अन्य भा ाा में बोलता है, तो क्या पवित्र आत्मा बात कर रहा है या व्यक्ति विशे ा बात कर रहा है?

10. प्रेरितों के काम 2:4 पढ़ें उस व्यक्ति को बोलने के लिये कौन प्रेरित कर रहा है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

मरकूस 16:16 – *"जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दो ाी ठहराया जाएगा।"*

प्रेरितों के काम 8:5–12 – *"और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा।12 परन्तु जब उन्होने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरू ा क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।"*

प्रेरितों के काम 8:14–17 – *"जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उन के पास भेजा। और उन्हों ने जाकर उन के लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं। क्योंकि वह अब तक उन में से किसी पर ना उतरा था, उन्हों ने तो केवल प्रभु यीशु के नाम से बपतिस्मा लिया था।"*

प्रेरितों के काम 19:1–5 – *"और जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के सारे देश से होकर इफिसुस में आया, और कई चेलों को देखकर। उन से कहा; क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया? उन्हों ने उस से कहा, हम ने तो पवित्रआत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी। उस ने उन से कहा; तो फिर तुम ने किस का बपतिस्मा लिया? उन्होंने कहा; युहन्ना का बपतिस्मा, पौलुस ने कहा; यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात यीशु मसीह पर विश्वास करना यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया।"*

प्रेरितों के काम 19:6–7 – *"और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न भिन्न भा ा बोलने और भवि यद्वाणी करने लगे। ये सब लगभग बारह पुरू ा थे।"*

लूका 11:13 –*"सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़केबालों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा।"*

1 कुरिन्थियों 14:2 – *"क्योंकि जो अन्य भा ा में बातें करता है; वह मनु यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिये की उसकी कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।"*

1 कुरिन्थियों 14:14 – *"इसलिये यदि मैं अन्य भा ा में प्रार्थना करू, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नही देती।"*

1 कुरिन्थियों 14:16–17 – *"नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आमीन क्योंकर कहेगा? इसलिये कि वह तो नहीं जानता, कि तू क्या कहता है? तू तो भली भांति से धन्यवाद करता है, परन्तु दूसरे की उन्नति नहीं होती।"*

प्रेरितों के काम 2:4 – *"और वे सब पवित्रआत्मा से भर गये, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य भा ा बोलने लगे।"*

उत्तर निर्देशिका

1. मरकुस 16:16 पढ़ें अब प्रेरितों 8:5,12. क्या प्रेरितों 8:12 में वर्णित लोग मसीह बने?
   हाँ

2. प्रेरितों 8:14–16 पढ़ें क्या इन लोगों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया?
   नहीं।

3. प्रेरितों 19:1–5 पढ़ें क्या यह लोग विश्वासी थे?
   हाँ।

4. प्रेंरितों 19:6–7 क्या वे पवित्रआत्मा का बपतिस्मा पा चुके थे?

नहीं, नोट करे: यह इस बात को सिद्ध करता है कि उद्धार से यह अनुभव भिन्न था।

5. पवित्रआत्मा को प्राप्त करने के लिये हमे क्या करना चाहिए, इस वि ाय में लूका 11:13 क्या कहता है?

पूछें।

6. 1 कुरिन्थियों 14:2 पढ़ें लूका 1 कुरिन्थियों 14:2 पढ़ें। जब एक व्यक्ति अन्य अन्य भा ाा में बोलता है तो वह क्या कर रहे होते हैं?

परमेश्वर से प्रार्थना करते और भेद की बातें बोलते हैं।

7. 1 कुरिन्थियों 14:14 जब एक व्यक्ति अन्य अन्य भा ाा में बोलता है तो वह क्या कर रहे होते है?

उनकी आत्मा परमेश्वर से प्रार्थना कर रही होती है।

8. 1 कुरिन्थियों 14:16–17 जब एक व्यक्ति अन्य अन्य भा ाा में बोलता है तो वह क्या कर रहे होते है?

अपनी आत्मा द्वारा प्रभु को धन्यवाद कर रहे होते हैं और उसे धन्यवाद दे रहे होते हैं (परमेश्वर की स्तुति कर रहे होते है।)

9. प्रेरितों 2:4 जब कोई अन्य अन्य भा ाा में बोलता है, तो क्या पवित्र आत्मा बात कर रहा है या व्यक्ति विशे ा बात कर रहा है?

वह व्यक्ति बात कर रहा है।

10. प्रेरितों 2:4 पढ़ें उस व्यक्ति को बोलने के लिये कौन प्रेरित कर रहा है?

पवित्र आत्मा।

प्रथम स्तर

अध्याय १५

पवित्र आत्मा को कैसे प्राप्त करें

लेखक - डोन क्रो

आज हम पवित्र आत्मा को प्राप्त करने के वि ाय में चर्चा करेंगे। प्रेरितों 10:1 कहता है, *"कैसरिया में कुरनेलियुस नाम एक मनु य था, जो इतालियानी नाम पलटन का सूबेदार था।"* यह सेना की एक पदवी थी संभवतः किसी रेजिमेंट के ऊपर कप्तान। पद 2 जारी रहता है, *"वह भक्त था और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता था, और हमेशा परमेश्वर से प्रार्थना करता था।"* वह धर्मी था, वह ऐसा काम करता था जो सही है, परमेश्वर से डरता था। उन लोगों को बहुत दान दिया करता था जिनको इसकी आवश्यकता थी। और बाइबल कहती है कि वह परमेश्वर से प्रार्थना करता था। पर हमें यह पता चलता है और हमारा यह जानना आश्र्चजनक है कि यद्यपि वह हर काम सही रीति से करता था, यद्यपि वह परमेश्वर से डरता था, और उसका प्रार्थनामय जीवन था, उसका यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध नही था।

पद 3–6 में वचन कहता है, *"उस ने दिन के तीसरे पहर (दोपहर के तीन बजे) के निकट दर्शन में स्प ट रूप से देखा, कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत मेरे पास भीतर आकर कहता है; कि हे कुरनेलियुस। उस ने उसे ध्यान से देखा; और डरकर कहा; हे प्रभु क्या है? तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान (देना) स्मरण के लिए परमेश्वर के साम्हने पहुंचे है। और अब याफा में मनु य भेजकर ामौन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। वह ामौन चमड़े के धंधा करने वाले के यहाँ पाहुन है जिस का घर समुद्र के किनारे है"* (को ठक में दिये ाब्द मेरे है)।

यद्यपि यह व्यक्ति परमेश्वर से भय मानता था, जहाँ तक सही काम करने की बात थी वह धर्मी था, परमेश्वर के सम्मुख उसका प्रार्थनामय जीवन था। उसके पास एक स्वर्गदूत भेजा गया जिसने उसे बताया कि ामौन पतरस को बुलवा ले जो उसे यह बतायेगा कि उसे क्या करना है। हम प्रेरितों 10:43 में हम वह देखते हैं जो पतरस को

करने का निर्देश हुआ कि उसे बताया जाये कि *"उस की सब भवि यद्वक्ता गवाही देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उस को उसके नाम (यीशु मसीह के नाम के द्वारा) के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।"* (को टक में दिये ाब्द मेरे हैं) क्या यह आर्श्चजनक नहीं है? यह व्यक्ति जिसके पास सब कुछ था उसके पास यीशु मसीह के जरिये परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध नहीं था। परमेश्वर ने कहा "जो काम तू कर रहा है वह महान है, वह अदभुत है, और मेरे लिए एक यादगारी स्वरूप है। पर मैं तुझ से कहता हूँ कि मैं करूंगा अच्छा है मैंने एक स्वर्गदूत तेरे पास यह संदेश लेकर भेजा है, कि तू पतरस नामक व्यक्ति को बुला ले, और वह तुझे बतायेगा कि तुझे क्या करना है प्रेरितों के काम अध्याय 10:43 में जब पतरस कुरनेलियुस के पास गया उसने कहा, *"जो कोई उस पर* (यीशु मसीह पर) *विश्वास करेगा, उस को उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी"* (को ठक में दिये गये ाब्द मेरे हैं)।

अब देखें कि यहाँ क्या हुआ, *"पतरस ये बातें कह ही रहा था कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया।"* (प्रेरितों के काम 10:44)। यीशु मसीह के विश्वास के बारे मे जब कुरनेलियुस ने सुना, तब वह उसे प्राप्त कर रहा था, और उसने अपने पापों की क्षमा के लिये मसीह पर विश्वास किया। जैसे ही उसने ऐसा किया तब पवित्र आत्मा उस पर तथा उन सब लोगों पर जो उस घर में थे उन पर उतरा। पद 45 यह कहता है, *"और जितने खतना किये हुये विश्वासी पतरस के साथ आए थे, सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंड़ेला गया।"* उन्हें यह कैसे पता चला? *''क्योंकि उन्होंने उन्हे भांति भांति की भा ाा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना"* (पद 46)।

नये नियम में हर बार जब किसी व्यक्ति पर पवित्र आत्मा उतरता है, तब पवित्र आत्मा का एक वरदान अपने आप को प्रकट करता है, और उन्हें इस बात का साक्ष्य देता है, कि उन्होंने पवित्र आत्मा पाया है। नये नियम में वे अक्सर अन्य अन्य भा ाा में बोलते थे। और भवि यद्ववाणी किया करते थे।

मैं ने डलास टैकसेस के एक मैदान में एक ााम घुटना टेका और कहा, "परमेश्वर लोग जो अन्य अन्य भा ाा के वि ाय में बात करते हैं, और पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के वि ाय में बात करते हैं, मैं इसके वि ाय में नहीं जानता, यदि ऐसा कोई मार्ग है जिसके द्वारा मैं आपकी स्तुति कर सकता हूँ, एक ऐसा तरीका है जिसके द्वारा मैं आपकी महिमा

कर सकता हूँ, एक ऐसा तरीका है जिसके द्वारा मैं अपनी मानवीय अंग्रेजी से बढ़कर बोल सकता हूँ तो वह मुझे चाहिए। मैंने परमेश्वर कि स्तुति करना ाुरू किया, और जब मैंने ऐसा किया तब पवित्र आत्मा ने मुझे ऐसा उच्चारण दिया जिसे मैंने पहले कभी ना तो जाना था ना सीखा था। बाइबल प्रेरितों के काम 2:4 मे कहती है, *"और वे सब पवित्र आत्मा से भरे गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भा ाा बोलने लगे।"* किसने बोला ? उन्होने बोला किसने उन्हें उच्चारण प्रदान किया है? पवित्र आत्मा ने।

लूका 11:13 कहता है, *"सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़केबालों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवाले वाले को पवित्रआत्मा क्यों ना देगा।"* आप को अभी मात्र एक कार्य करना है कि आपको मांगना, विश्वास करना है कि आपने पाया है, अपने आप को परमेश्वर को समर्पित करना होगा प्रभु की आराधना करना ाुरू करना होगा वह आपको एक उच्चारण देगा कि आप उसकी स्तुति और आराधना ऐसी भा ाा में करें जिसे आपने कभी नहीं सीखा है।

शिष्यता के प्रश्न

1. कुछ ाब्दों का वर्णन करे जिसे बाइबल ऊद्धार के लिये उपयोग करती है।

2. प्रेरितों के काम 11:15 पढ़ें पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के अनुभव को यह पद किस प्रकार वर्णित करता है?

3. यीशु मसीह के शि यों ने पवित्र आत्मा प्राप्त किया (यूहन्ना 20:22), पर कुछ दिन पश्चात् उन्होंने वास्तव में पवित्र ाास्त्र से बपतिस्मा प्राप्त किया (प्रेरितों 2:1–4)। इन तथ्यों को देखें और इनकी तुलना करें (यूहन्ना 20:22 और प्रेरितों 2:1–4)।

4. प्रेरितों के काम 1:8 पढ़ें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाने का क्या उद्देश्य है?

5. प्रेरितों के काम 2:38–39 और 1 कुरिन्थियों 1:7 पढ़ें। क्या आज पवित्र आत्मा से बपतिस्मा हमारे लिए है?

6. प्रेरितों के काम 11:13 पढ़ें यदि आपने आज पवित्र आत्मा से बपतिस्मा नहीं पाया है तो आज आपको क्या करना चाहिए?

7. प्रेरितों के काम 2:4 पढ़ें क्या आप उस भा ा में माँगेगे, प्राप्त करेंगे और परमेश्वर की आराधना करेगे जिसे परमेश्वर ने आपको दिया है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

यूहन्ना 3:3 – *"यीशु ने उस को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि* ***कोई नये सिरे से ना जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नही सकता।"***

प्रेरितों के काम 3:19 – *" इसलिये, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिस से प्रभु के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं।"*

मरकुस 16:16 – *"जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दो ी ठहराया जाएगा।"*

कुलुस्सियों 2:13 – *"और उस ने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने रीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया।"*

रोमियों 8:9 – *"परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम ारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।"*

मत्ती 25:46 – *"और यह अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।"*

प्रेरितों के काम 11:15 – *"जब मैं बातें करने लगा तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था।"*

यूहन्ना 20:22 – *"यह कहकर उस ने उन पर फूंका और उन से कहा, पवित्र आत्मा लो।"*

प्रेरितों के काम 2:1–4 – *"जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। 2 और एकाकए आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का ब्द हुआ, और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। 3 और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीः और उन में से हर एक पर आ ठहरी। 4 और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भा ा बोलने लगे।"*

प्रेरितों के काम 1:8 – *"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।"*

प्रेरितों के काम 2:38–39 – *"38 पतरस ने उन से कहा, मन फिराओं, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।39 क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।"*

1 कुरिन्थियों 1:7 – *"यहां तक कि किसी बरदान में तुम्हें घटी नहीं, और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोहते रहते हो।"*

लूका 11:13 – *"सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़केबालों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा।"*

प्रेरितों के काम 2:4 – *"और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भा ा बोलने लगे।"*

उत्तर निर्देशिका

1. कुछ ब्दों का वर्णन करें जिसे बाइबल उद्धार के लिये उपयोग करती है।

   नया जन्म पाना/नये सिरे से जन्म (यूहन्ना ३:३) मन फिराना (प्रेरितों ३:१९) विश्वास करें और बपतिस्मा लेना (मरकूस १६:१६) हमारे सब अपराधों से क्षमा (कुलुस्सियों २:१३) मसीह का आत्मा प्राप्त करने के द्वारा किया (रोमियों ८:९) और अनंत जीवन (मत्ती २५:४६)।

2. प्रेरितों के काम 11:15 पढ़ें पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के अनुभव को यह पद किस प्रकार वर्णित करता है?

पवित्र आत्मा किसी पर उतरने के समान।

3. यीशु मसीह के शि यों ने पवित्र आत्मा प्राप्त किया (यूहन्ना 20:22), पर कुछ दिन पश्चात उन्होंने वास्तव में पवित्र आत्मा से बपतिस्मा प्राप्त किया (प्रेरितों 2:1–4)। इन तथ्यों को देखें और इनकी तुलना करें।

(यूहन्ना २०:२२ और प्रेरितों २:१-४)। प्रेरितों के काम २०:२२ में शिष्यों ने पवित्रआत्मा पाया। प्रेरितों २:१-४ मे वही शिष्यों ने फिर से पवित्र आत्मा पाया (जो कि भीतरी और बाहरी रूप से डूबना है) देखें प्रेरितों के काम १:८।

4. प्रेरितों के काम 1:8 पढ़ें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाने का क्या उद्देश्य है?

सेवा या गवाही के लिए सामर्थ प्रदान करना।

5. प्रेरितों के काम 2:38–39 और 1 कुरिन्थियों 1:7 पढें। क्या आज पवित्र आत्मा से बपतिस्मा हमारे लिए है?

हाँ. मसीह के द्वितीय आगमन पर आत्मा के वरदान समाप्त हो जायेंगे पर उसके आने के पहले तक जारी रहेंगे।

6. प्रेरितों के कामे 11:13 पढ़ें यदि आपने आज पवित्र आत्मा से बपतिस्मा नहीं पाया है तो आज आपको क्या करना चाहिए?

इसके लिये मांग करें।

7. प्रेरितों के काम 2:4 पढ़ें क्या आप उस भा ा में माँगेगे, प्राप्त करेंगे और परमेश्वर की आराधना करेगें जिसे परमेश्वर ने आपको दिया है?

हाँ, मैं बोलूंगा पर पवित्र आत्मा मुझे उच्चारण देगा (अर्थात वह भाषा)।

प्रथम स्तर

अध्याय १६

अन्य अन्य भाषा में बोलने से लाभ

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

पहली बार जब पवित्र आत्मा का बपतिस्मा आया तो सबसे पहली घटना यह घटी की जितने लोग वहाँ थे वे अन्य अन्य भा   ा बोलने लगे। प्रेरितों 2:4 कहता है, पिन्तेकुस्त के दिन वो पवित्र आत्मा से भर गये और जिस प्रकार पवित्र आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वो अन्य अन्य भा   ा बोलने लगे। सुसंगत रीति से प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में, परमेश्वर की उपस्थिति का प्रगटिकरण हुआ जब लोगों ने पवित्र आत्मा पाया।

अन्य अन्य भा   ा में बोलने से भिन्न पवित्र आत्मा में और भी कुछ है। पर यह एक महत्वपूर्ण प्रगटिकरण है। 1 कुरिन्थियों 14:13–14 *"इस कारण जो अन्य भा   ा बोले, तो वह प्रार्थना करें, कि उसका अनुवाद भी कर सके। इसलिये यदि मैं अन्य भा   ा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती।"* जब आप आत्मा में बात करते हैं तो आपकी आत्मा प्रार्थना करती है। एक बार जब आप अन्य अन्य भा   ा में बोलते हैं, तो यह प्रार्थना करें कि आप व्याख्या कर सकें ताकि आपकी समझ फलवन्त हो सकेगी।

मैं अपने स्वयं की गवाही दे सकता हूँ, कि जब मैंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया और अन्य अन्य भा   ा बोलना   ुरू किया, इसने मेरे जीवन को नाटकीय रूप से बदल दिया। मैं यह मानता हूँ कि जब मैंने नया जन्म पाया तब, मसीह मेरे भीतर रहने के लिये आया और उसने सब कुछ वहाँ जमा कर दिया पर जब पवित्र आत्मा मुझ पर उतरा, वह मुझ पर और अन्य लोगों पर अपने आप को प्रकट करना   ुरू कर दिया। कुछ घटनाएं घटी। पहले व   र्ा जब मैं अन्य अन्य भा   ा में बोलना   ुरू किया मेरे मन ने मुझसे कहा कि मैं पागल हूँ और जो कुछ भी मैं कर रहा हूँ वह केवल अपना समय बर्बाद करना मात्र है। अन्य अन्य भा   ा में बात करने के लिये मुझे विश्वास करना था। इसी वजह से यहूदा 20 कहता है पर हे प्रियों, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुये। अपने पवित्र विश्वास में बढ़ते जाओ। यह

आपको आपके स्वाभाविक सोच से बाहर निकालकर विश्वास के एक आलौकिक क्षेत्र में लेकर जायेगा।

एक अन्य चीज जिसे मैंने अनुभव किया जब मैंने अन्य अन्य भा ाा में प्रार्थना की कि, वे लोग जिनके वि ाय में मैंने कई व ाोंं से नहीं सोचा था वह मुझे याद आने लगे। मैं उनके लिये प्रार्थना करना ाुरू कर देता और एक दो दिन के भीतर वे मुझसे संपर्क करते और मैं यह पाता की कुछ चमत्कारिक घटित हुआ है। यह इतनी बार घटित हुआ कि जब मैंने इन सबको एक साथ रखकर प्रार्थना करना ाुरू किया तो मैंने यह पाया कि जब मैं अन्य अन्य भा ाा में प्रार्थना कर रहा था तब मैं ऐसी बुद्धि के साथ प्रार्थना कर रहा था जो मेरी समझ से परे थी। मेरी आत्मा जो सब कुछ जानती थी और जिसमे मसीह की मानसिकता थी वह लोगों के लिये इस रीति से प्रार्थना कर रहा था, जिसे मैं स्वयं अपनी भौतिक समझ से नहीं कर पाता।

एक दिन मैं अन्य अन्य भा ाा में प्रार्थना कर रहा था। जैसा मैंने पहले कहा अन्य अन्य भा ाा में बात करने के लिये मुझे विश्वास की आवश्यकता थी। मैं इस प्रकार के कुछ विचारों से जूझ रहा था। *आप अंग्रेजी में बात करते हुये कुछ अच्छा कर सकते थे, बजाये इसके कि आप उलूल जलूल भा ाा बोलें।* मुझे इस प्रकार के विचारों से जूझना था, और उन्हें समाप्त करना था और मैंने उसे समाप्त किया और प्रार्थना करना जारी रखा। एक लड़का जिसे मैंने चार व ाोंं से नहीं देखा था। मेरे घर का दरवाजा खटखटाया। वह भीतर आया उसने कोई सम्बोधन नहीं किया और ना ही कुछ कहा। वह बैठ गया और रोने लगा और उसने अपने आप को ऊंडेल दिया क्योंकि उसकी बहुत सी समस्याएं थी। मैं वहा सोचता हुआ बैठ गया, भाई, *मुझे अंग्रेजी में प्रार्थना करनी थी।* मेरा अगला विचार यह था, कि यदि *मैंने उसे पिछले पाँच व ाोंं में यदि नहीं देखा? तो मैं यह कैसे जान गया की उसके लिए मुझे प्रार्थना करनी थी।* अन्ततः,मुझे यह बात समझ में आई की मैं प्रार्थना कर रहा था और परमेश्वर मुझे तैयार कर रहा था। मैं उसके लिये इस रीति से मध्यस्थता की प्रार्थना कर रहा था जिसे मैं नहीं कर पाता यदि मैं अपनी समझ से प्रार्थना कर रहा होता। अचानक एक प्रकाशन मुझ में आना ाुरू हुआ और मैंने उससे कहा कि," मैं आपको बता सकता हूँ कि आपकी समस्या क्या है।" मैने उसकी सारी बातें समाप्त की और उसे एक उत्तर दिया।

आपको यह समझना होगा, कि यह तब हुआ जब मैं साम्प्रदायिक कलीसिया का सदस्य रहा। उसे यह नहीं पता था कि मुझे क्या हुआ और मैं सुनिश्चित नहीं था। इसने हम दोनों को भयभीत किया। पर यह परमेश्वर कि सामर्थ का प्रगटिकरण था। और उसने इसे आलौकिक रूप से इस्तेमाल किया। इसका यही अर्थ है जब आप अन्य अन्य भ ा में प्रार्थना करते हैं, यह आपकी आत्मा का प्रार्थना करना है। आपकी आत्मा ने नया जन्म पा लिया है उसे पता है, कि क्या करना चाहिए उसे परमेश्वर की ओर से अभि ेक प्राप्त है, इसी वजह से आप सब जानते हैं और आपकी आत्मा में कोई सीमा नहीं है। यदि आप अपनी आत्मा के प्रकाशन में चलंगे तब यह आपके भौतिक जीवन को बदल देगा। इसे करने का एक तरीका, यद्यपि यह मात्र एक तरीका नहीं है, वह यह है कि आप अन्य – अन्य भा ा में बोलना ुरू कर दें। इस बात को जान ले की और विश्वास कर ले कि जब आप ऐसा करते हैं, तो आप आपने आप को अत्यंत पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति कर रहे हैं, आपकी आत्मा परमेश्वर के उस गुप्त ज्ञान में प्रार्थना कर रही है, और परमेश्वर का श्रे ठ प्रकाशन आ रहा है। फिर, 1 कुरिन्थियों 14:13 के अनुसार प्रार्थना करें कि आप अनुवाद कर सकें। इसका यह अर्थ नहीं है कि आप अन्य–अन्य भा ा में प्रार्थना करना छोड़कर अनुवाद करने के लिए अंग्रेजी में प्रार्थना करने लगे; इसका मात्र यह अर्थ है कि आपकी समझ फलवन्त बन जाती है।

यदि आप किसी कलीसिया में अन्य–अन्य भा ा में प्रार्थना करते हैं, तो आप को रूक कर अंग्रेजी में अनुवाद करना होगा। जब आप अपने से प्रार्थना करते है, तो आप अन्य अन्य भा ा में प्रार्थना करें और यह भरोसा करें कि परमेश्वर हमें प्रकाशन दे रहा है। कभी कभी मेरा दृ टकोण बदल जाता है। मेरे पास वह खास ाब्द नहीं होते, पर अचानक ही मैं चीजों को स्प ट रूप से देखने लगता हूँ और एक भिन्न दृ टकोण मुझे प्राप्त होता है। हो सकता है कि पूरा प्रकाशन पाने के लिये मुझे एक हफ्ते का समय लग जाये पर मैं विश्वास करता हूँ कि जिस समय को मैंने अन्य अन्य भा ा में प्रार्थना करने, विश्वास करने और अनुवाद करने में बिताया यह उसका एक भाग है।

अन्य अन्य भा ा में बोलना कई कारणों से महत्वपूर्ण है, इस बात को साबित करने से कहीं ज्यादा कि आपने पवित्र आत्मा पा लिया है। यह आपके दैनिक जीवन का भाग बना। यह आपके मस्ति क को उसके ाक और भय के साथ दरकिनार कर आपके सीधे दिल की पिता से बातचीत करना है। यह आपको आपके सबसे श्रे ठ विश्वास में तैयार करता है और परमेश्वर के गुप्त ज्ञान का प्रकाशन करता है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि

आप सब इस रीति से चलेंगे, अपने विश्वास को क्रियान्वित करेंगे, और अन्य अन्य भा ाा में बात करने का पूरा लाभ प्राप्त करेंगे।

शिष्यता के प्रश्न

1. यहूदा 20 पढ़ें पवित्र आत्मा में प्रार्थना करने से क्या बड़ा लाभ प्राप्त होता है?

2. प्रेरितों के काम 2:4 पढ़ें कितने लोग पवित्र आत्मा से भरे गये थे?

3. प्रेरितों के काम 2:4 पढ़ें पवित्र आत्मा से भरे जाने के प्रमाण स्वरूप उसने क्या किया?

4. 1 कुरिन्थियों 14:14 पढ़ें जब आप प्रार्थना कर रहे होते हैं, तो आपका कौन सा भाग प्रार्थना कर रहा होता?

5. 1 कुरिन्थियों 14:2 पढ़ें जब एक व्यक्ति अन्य अन्य भा ाा में बोल रहा होता है तो वह किससे बोल रहा होता है?

6. 1 कुरिन्थियों 14:2 पढ़ें जब एक व्यक्ति अन्य अन्य भा ाा में बोल रहा होता है तो क्या लोग वह समझ पाते हैं कि क्या बोला जा रहा है?

7. 1 कुरिन्थियों 14:2 पढ़ें जब आप अन्य अन्य भा ाा में प्रार्थना कर रहे होते हैं तो आपकी आत्मा क्या बोल रही होती हैं?

8. 1 कुरिन्थियों 14:4 पढ़ें जब आप अन्य अन्य भा ाा में प्रार्थना कर रहे होते है तो आप क्या करते है?

9. 1 कुरिन्थियों 14:16 पढ़ें जब आप अन्य अन्य भा ाा में प्रार्थना कर रहे होते है तो आप क्या कर रहे होते है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

यहूदा 20 – *"पर हे प्रियों, तुम अपने अति पवित्र? विश्वास में अपनी उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा मे प्रार्थना करते हुए।"*

प्रेरितों के काम 2:4 – *"और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भा ाा बोलने लगे।"*

1 कुरिन्थियों 14:14 – *"इसलिये यदि मैं अन्य भा ाा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती।"*

1 कुरिन्थियों 14:2 – *"क्योंकि जो अन्य भा ाा में बाते करता है; वह मनु यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बाते करता है; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।"*

1 कुरिन्थियों 14:4 – *"जो अन्य भा ाा में बातें करता है वह अपनी ही उन्नति करता है; परन्तु जो भवि यद्वाणी करता है वह कलीसिया की उन्नति करता है।"*

1 कुरिन्थियों 14:16– *"नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आमीन क्योंकर कहेगा? इसलिये कि वह तो नहीं जानता, कि तू क्या कहता है?"*

उत्तर निर्देशिका

1. यहूदा 20 पवित्र आत्मा में प्रार्थना करने से क्या बड़ा लाभ प्राप्त होता है?
   जब मैं पवित्र आत्मा में प्रर्थना करता हूँ, तब मै अपनी उन्नति करता हूँ।

2. प्रेरितों के काम 2:4 पढ़ें कितने लोग पवित्र आत्मा से भरे गये थे?

वे सभी

3. प्रेरितों के काम 2:4 पढ़ें पवित्र आत्मा से भरे जाने के परिणाम स्वरूप उन्होने क्या किया?

अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।

4. 1 कुरिन्थियों 14:14 पढ़ें जब आप प्रार्थना कर रहे होते हैं, तो आपका कौन सा भाग प्रार्थना कर रहा होता?

मेरी आत्मा प्रार्थना कर रही होती है।

5. 1 कुरिन्थियों 14:2 पढ़ें जब एक व्यक्ति अन्य अन्य भा ाा में बोल रहा होता है तो वह किस से बात कर रहा होता है?

परमेश्वर से बात कर रहा होता है।

6. 1 कुरिन्थियों 14:2 पढ़ें जब एक व्यक्ति अन्य अन्य भा ा में बोल रहा होता है तो क्या लोग वह समझ पाते है कि क्या बोला जा रहा है?

नहीं

7. 1 कुरिन्थियों 14:2 पढ़ें जब आप अन्य अन्य भा ाा में प्रार्थना कर रहे होते हैं तो आपकी आत्मा क्या बोल रही होती है?

रहस्य की बातें, गुप्त बातें (न्यू सेन्चयूरी वर्जन) सिर्फ मेरे और परमेश्वर के बीच गहरा संबंध (संदेश)।

8. 1 कुरिन्थियों 14:4 जब आप अन्य अन्य भा ाा में प्रार्थना कर रहे होते हैं तो आप क्या करते हैं?

अपनी उन्नति करता हूँ (अपना निर्माण करता हूँ।)

9. 1 कुरिन्थियों 14:16 जब आप अन्य अन्य भा ाा में प्रार्थना कर रहे होते हैं तो आप क्या कर रहे होते हैं?

धन्यवाद और परमेश्वर को धन्य कह रहे होते हैं।

CONTACT DETAILS

CHENNAI

Andrew Wommack Ministries India
72-D, Nandhini Mahal, First Floor,
Velachery Main Road Velachery,
Chennai • 600 042, INDIA.
Ph: (044)-4202 1820

HYDERABAD

Andrew Wommack Ministries India
42-343/1/188, Near Flora Hotel,
Maruthi Nagar A S Rao Nagar,
Hyderabad 500 040, INDIA.
Ph: (040)- 40280718

MUMBAI

Andrew Wommack Ministries India
Bethel, Plot No 305/E, Mith Chowky,
Near Girdhar ParkMalad (W),
Mumbai 400 064, INDIA.
Ph: +91 8976549515

info@awmindia.net www.awmindia.net

Charis Bible Colleges

And the things that thou hast heard of me among many witnesses, the same commit thou to faithful men, who shall be able to teach others also. 2 Tim 2:2

You can learn from the 'school of hard knocks,' I certainly have. But I don't recommend it! There's a better way to learn; it's Charis Bible College.

Andrew Wommack,
President & Founder

The Lord led Andrew to start Charis Bible College (CBC) to equip the saints for the work of ministry with a profound message emphasizing God's Unconditional Love and the balance of Grace and Faith. CBC equips the students giving them rich teaching of God's Word as well as practical hands-on ministry experience.

CBC is not just another bible college, it's a school for life! It is for people from all walks of life whether you are a preacher, businessman, mum, dad or grandparent.

There are three course options to match your own schedule: Full Time, Part Time and Correspondence. In Full Time, you can fully immerse yourself in the Word for 8 months in a grace-filled family atmosphere, or join Part Time on weekends, or study the CBC material at home through Correspondence!

We invite you to take the step of faith and join our CBC family !

Contact us for further information:

Chennai: 72-D, Nandhini Mahal • First Floor • Velachery Main Road
Velachery, Chennai • 600 042 • INDIA. Ph: (044)-4202 1820

Hyderabad: 42-343/1/188 • Near Flora Hotel • Maruthi Nagar
A S Rao Nagar • Hyderabad 500 040 • INDIA. Ph: (040)- 40280718

Mumbai: Bethel, Plot No 305/E • Mith Chowky • Near Girdhar Park
Malad (W) • Mumbai 400 064 • INDIA. Ph: +91 8976549515

info@charisbiblecollegeindia.org www. charisbiblecollegeindia.org

शिष्यता सुसमाचार प्रचार

(Discipleship Evangelism Course)

द्वितीय स्तर (Level 2)

लेखक
एन्ड्रयू वॉमक और डोन क्रो

Copyright © 2012, Andrew Wommack
Permission is granted to duplicate or reproduce for discipleship purposes on the condition that it is distributed free of charge.

Andrew Wommack Ministries
P.O. Box 3333
Colorado Springs, CO 80934-3333
www.awmi.net

Unless otherwise noted, all biblical quotations were taken from the King James Version of the Bible, revision 1960.

The Complete Discipleship Evangelism 48-Lesson Course © 2012
LEVEL 2
Andrew Wommack Ministries India
info@awmindia.net   www.awmindia.net

Item Code: HI 417-2/3

अनुक्रमणिका

द्वितीय स्तर (Level 2)

अध्याय	1	आत्मकेन्द्रित्ताः सब प्रकार के दुःख की जड़	05
अध्याय	2	परमेश्वर के वचन पर मनन कैसे करें	11
अध्याय	3	मन का नवीनीकरण	15
अध्याय	4	मसीह की कलीसिया का महत्व	21
अध्याय	5	छुटकारा	31
अध्याय	6	विश्वासी का अधिकार	38
अध्याय	7	प्रायश्चित्त में चंगाई	46
अध्याय	8	चंगाई में बाधा	54
अध्याय	9	दूसरों को क्षमा करना	63
अध्याय	10	विवाह (भाग 1)	73
अध्याय	11	विवाह (भाग 2)	80
अध्याय	12	परमेश्वर के प्रेम के प्रकार (भाग 1)	90
अध्याय	13	परमेश्वर के प्रेम के प्रकार (भाग 2)	98
अध्याय	14	वित्त (भाग 1)	106
अध्याय	15	वित्त (भाग 2)	113
अध्याय	16	क्या करें जब आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलता प्रतीत नहीं होता	119

द्वितीय स्तर

अध्याय १

आत्मकेन्द्रित्ता

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

हम जो कुछ भी अनुभव करते हैं उसका मुख्य स्त्रोत आत्मकेन्द्रियता है। नीतिवचन अध्याय 13 में एक पद है जिसे आपको अपनी ही बाइबल में पढ़ना होगा, आप उस पर तब तक विश्वास नहीं करेंगे जब तक आप उसे स्वयं अपनी ही बाइबल में ना पढ़ें। पद 10 कहता है कि, *"झगड़े रगड़े केवल अहंकार ही से होते हैं, परन्तु जो लोग सम्मति मानते हैं, उनके पास बुद्धि रहती है।"* कई लोग इस बात पर एक मुद्दा उठा लेंगे और कहेंगे, जरा ठहरे। अहंकार मात्र से ही झगड़े रगड़े नहीं होते। नीतिवचन 17:14 कहता है झगड़े रगड़े अहंकार की ुरूआत है। अतः झगड़े रगड़े के घमण्ड के अलावा भी कई कारण होते हैं। इसका कारण यह है कि फंला–फंला ने मेरे साथ यह किया। अन्य लोग कहेंगे,"आप नहीं समझ सकते, मैं इसी प्रकार का व्यक्ति हूँ।" नहीं पवित्रशास्त्र कहता है, कि 'केवल' घमंड से झगड़े रगड़े होते हैं। वह प्रमुख कारणों में से एक नही है बल्कि एक प्रमुख कारण है। कुछ अन्य लोग इसका फिर मुद्दा बनायेंगे और कहेंगे, मैं इसी प्रकार का व्यक्ति हूँ। मेरा आत्म सम्मान, इतना कम है कि कोई मुझे घमण्डी होने का दो ा नहीं लगा सकता।"

हमें घमण्ड को पुनःपरिभाि ात करने की आवश्यकता है। यह मात्र यह सोचना नहीं है, कि आप किसी दूसरे, से बेहतर हैं, पर साधारण ाब्दों में, जो कि आपको अपने आप को सभी चीजों के केन्द्र के रूप में देखना है। आत्मकेन्द्रियता सब प्रकार के घमंड की जड़ है। गिनती 12:2 में मूसा की बहन और भाई हारून और मरियम उसके विरोधी हो गये थे, और अर्न्तरजातीय विवाह करने के कारण यह कहते हुये उसकी आलोचना की। *"क्या यहोवा ने केवल मूसा ही के साथ बातें की हैं? क्या उस ने हम से भी बातें नहीं की?"* फिर पवित्रशास्त्र के पद 3 में कहता है, मूसा तो पृथ्वी भर कें रहने वाले सब मनु यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था। उन्होंने जो कुछ कहा, उस पर झगडने के बजाये वह उनके लिये मध्यस्थता की प्रार्थना करने लगा।

वचन कहता है, कि मूसा तो पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनु यों से बहुत अधि ाक नम्र स्वभाव का था। इस पर ठहर कर जरा विचार करें। हम यह नहीं जानते कि कितने लोग इस पृथ्वी पर थे पर सम्भवतः करोडों लोग होंगे और मूसा उन सभी में से नम्र स्वभाव का था। क्या उसे एक अदभुत कथन बनाता है, वह यह है कि उसी ने उसे लिखा था। अधिकांश लोग यह सोचते हैं, कि यदि आप वास्तव में नम्र और दीन हो तो इसका आपको पता भी नहीं चलेगा। यह एक झूठी अभिव्यक्ति है, कि अक्खड़पन, घमंड क्या है। इसका कोई अर्थ नहीं है यदि आप यह सोचे, कि आप किसी और से बेहतर हैं, या किसी और से बुरे हैं, आप पूर्णतः आत्म केन्द्रित हैं, यह ऐसा है मानों कि आप लकड़ी लिए हुये हों जिसके एक तरफ नीचे दर्जे का आत्म सम्मान हो और दूसरी तरफ उदण्डता आप केवल अपने वि ाय में सोचते हैं। एक ही चीज की विपरीत अभिव्यक्ति है पर दोनों ही एक ही लकड़ी पर विद्यमान है, जो कि आत्मकेन्द्रियता है। इसका कोई मतलब नहीं कि आप हर किसी से बेहतर हों या हर किसी से बुरे हों। आप पूर्णतः आत्मकेन्द्रित हैं। हर चीज उसके द्वारा छानी जाती है। एक डरपोक, र्मिला व्यक्ति बड़ा घमंडी और आत्मकेन्द्रित होता है और वह अपने बारे में ही सोचता है।

जिस बात को मैं स्प ट करना चाहता हूँ कि आत्म केन्द्रियता वास्तव में सब प्रकार के घमण्ड की जड़ है, और यदि आप नीतिवचन 13:10 *''झगड़े रगड़े केवल अहंकार ही से होते हैं''* / यह वचन इस प्रकार कहता है, कि हमारी स्वयं की आत्मकेन्द्रियता है जो हमें क्रोधित बनाता है, ये नहीं की लोग हमारे प्रति क्या करते हैं। यह हमारी स्वयं की आत्मकेन्द्रियता है जिसके कारण हमें लोगों के प्रति प्रतिक्रिया करने को मजबूर करती है, कि वह क्या करते हैं। आप लोगों को गलत रीति से आप पर प्रहार करते हुये नहीं रोक सकते हैं; ऐसा नहीं हो सकता है। विश्वास दूसरे लोगों को नियंत्रित करने के लिये नहीं है पर आपको अपने आप से जूझने में सहायता करता है, और उन चीजों से जूझने में सहायता करता है जो आपके भीतर है। अतः इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, कि लोग आपके साथ क्या करते हैं।

जब यीशु मसीह क्रूस पर चढ़ाया जा रहा था, तब यीशु स्वयं उन्हीं लोगों की ओर मुड़कर जो उसे क्रूस पर चढ़ा रहे थे कहा, "पिता, इन्हें क्षमा करें क्योंकि यह नहीं जानते हैं कि वो क्या कर रहे हैं।" उसने उन लोगों को नियंत्रित नहीं किया पर उसका अपने आप पर नियंत्रण था। आत्मकेन्द्रियता हमें क्रोधित कर देती है। यीशु मसीह अपने लिये इस संसार में नहीं आया, पर उसने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि वह संसार में हमारे लिये

आया। उसने क्रूस पर लटके हुये अपनी माता के बारे में सोचा और अपने एक शि य से उसकी देख भाल करने के वि ाय में कहा। घोर दुःख, अन्याय और जो कुछ उसके रास्ते में आया इस सब के बीच यीशु मसीह क्षमा कर प्रेम पूर्ण व्यवहार कर सका क्योंकि वह आत्म केन्द्रित नहीं था।

आपकी स्वयं की आत्म केन्द्रियता है जो आपको क्रोधित करती है, इसके बावजूद पवित्रशास्त्र कहता है, कि आपको अपने प्रति मृत होना चाहिए। यदि मेरे सामने किसी का मृत ारीर पड़ा हो तो मैं उसकी बेइज्जती कर सकता हूँ, उसे लात मार सकता हूँ, उस पर थूक सकता हूँ, या उसकी अवहेलना कर सकता हूँ, पर यदि वह वास्तव में मृत देह हो तो, वह आपको प्रतिउत्तर नहीं देगी। आपकी आस पास की चीजों के प्रति आप जिस प्रकार का उत्तर देते हैं यह उस बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करता, पर इस पर निर्भर है, कि आपके भीतर क्या है। आप विश्वास में इतने मजबूत नहीं होंगे, कि आप सारे व्यवधान को और वह हर एक चीज को दूर कर सकते हैं जो आपको परेशान करें पर आप अपने आप से जूझ सकते हैं। आप एक ऐसे स्थान पर आ सकते हैं, जिसमें आप यीशु मसीह को अपने जीवन का प्रभु बना सकते हैं और उससे और उसके राज्य को और अन्य लोगों को अपने स्वयं से ज्यादा प्रेम कर सकते हैं। आप यह देख सकते हैं कि जब आप ऐसा करते हैं और अपने स्वयं से जूझते हैं तब आप के जीवन का अहंकार और झगड़े रगड़े समाप्त हो जायेंगे।

उनको लागू करने की महान कुँजी है, आपके जीवन में यह सब जो प्रभु ने किया है उसको जान लेना है, कि उसने राज्य को स्वार्थी उद्देश्य से नहीं दिया है। उसने यह सब इसलिये नहीं किया ताकि, आपकी हर आवश्यकता की पूर्ति हो सके, आप को यह सीखने की आवश्यकता है, कि स्वयं के लिए मर कर और अपने जीवन को खोकर ही आप यह वास्तव में जानना ारू कर सकेंगे कि जीवन क्या है। दूसरे लोगों से और परमेश्वर से अपने से ज्यादा प्रेम करने के द्वारा ही आप अपने क्रोध और जख्म को और जो कुछ भी आपके भीतर है, उसे बाहर निकालना ारू करते हैं।

मैं प्रार्थना करता हूँ, कि परमेश्वर इन छोटी छोटी बातें जो मैंने कहीं हैं को लेकर आपके दिल को खोले ताकी आप यह जान सकें, कि आपकी आत्मकेन्द्रियता ही सब प्रकार के झगड़े रगड़े की जड़ है। इल्ज़ाम कहीं और लगाने के बजाये, आपको उस

जवाबदारी को स्वीकार करना चाहिए, उसका सामना करना चाहिए, परमेश्वर के सामने अपने आप को दीन बनाना चाहिए, उसे अपने जीवन में आने को और आपके जीवन में उसे बड़ा बनाने को कहना चाहिए। विजय के मार्ग पर चलने का यही तरीका है।

शिष्यता के प्रश्न

1. मरकूस 9:33–34 कफरनहूम के रास्ते में शि य किस बात पर विवाद कर रहे थे?

2. क्या यह हम सब में स्वार्थता को प्रतिबिम्बित करता है?

3. मरकूस 9:35 पवित्रशास्त्र के इस वचन के अनुसार यदि किसी को पहले होना है तो उन्हें क्या बनना चाहिए?

4. लूका 22:24–27. में वर्णित यीशु की शिक्षा को विस्तार से समझाईये?

5. नीतिवचन 13:10. वह एक मात्र चीज क्या है जिससे झगड़े रगड़े उत्पन्न होते है?

6. गलतियों 2:20. हमें अपना जीवन कैसे जीना चाहिए?

7. मत्ती 7:12. आत्म केन्द्रितता के लिये अचूक दवा क्या है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

मरकुस 9:33–34 – *"33 फिर वे कफरनहूम में आए; और घर में आकर उस ने उन से पूछा कि रास्ते में तुम किस बात पर विवाद करते थे? 34 वे चुप रहे, क्योंकि मार्ग में उन्हों ने आपस में यह वाद–विवाद किया था, कि हम में से बड़ा कौन है?" "35 तब उस*

ने बैठकर बारहों को बुलाया, और उन से कहा, यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो सब से छोटा और सब का सेवक बने।"

लूका 22:24–27 – *"24 उन में यह वाद–विवाद भी हुआ, कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता है? 25 उस ने उन से कहा, अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं। 26 परन्तु तुम ऐसे न होना; बरन जो तुम में बड़ा है, वह छोटे की नाई और जो प्रधान है, वह सेवक के नाई बने । 27 क्योंकि बड़ा कौन है; वह जो भोजन पर बैठा या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है? पर मैं तुम्हारे बीच में सेवक की नाई हूं।"*

नीतिवचन 13:10 – *"झगड़े रगड़े केवल अहंकार ही से होते हैं,परन्तु जो लोग सम्मति मानते हैं, उनके पास बुद्धि रहती है।''*

गलतियों 2:20 – *"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित हैः और मैं ारीर में अब जो जीवत हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया। ''*

मत्ती 7:11 – *''इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनु य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भवि यद्वक्ताओं की शिक्षा यही है।''*

उत्तर निर्देशिका

1. मरकुस 9:33–34 कफरनहूम के रास्ते में शि य किस बात पर विवाद कर रहे थे?

   वे इस बात पर विवाद कर रहे थे कि उनमे से कौन बड़ा है।

2. क्या यह हम सब में स्वार्थता को प्रतिबिम्बित करता है?

   हाँ।

3. मरकुस 9:35 पवित्रशास्त्र के इस वचन के अनुसार यदि किसी को पहले होना है, तो उन्हें क्या बनना चाहिए?

   सबका सेवक होना चाहिए।

4. लूका 22:24–27. में वर्णित यीशु की शिक्षा को विस्तार से समझाईये?

"२४ उन में यह वाद-विवाद भी हुआ, कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता है? २५ उस ने उन से कहा, अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं । २६ परन्तु तुम ऐसे न होना; बरन जो तुम में बड़ा है, वह छोटे की नाई और जो प्रधान है, वह सेवक के नाई बने। २७ क्योंकि बड़ा कौन है; वह जो भोजन पर बैठा या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है? पर मैं तुम्हारे बीच में सेवक की नाई हूं।''(लूका २२:२४:२७)

5. नीतिवचन 13:10. वह एक मात्र चीज क्या है जिससे झगड़े रगड़े उत्पन्न होते है?

घमण्ड।

6. गलतियों 2:20. हमें अपना जीवन कैसे जीना चाहिए?

यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास द्वारा (या यीशु मसीह में विश्वास द्वारा)।

7. मत्ती 7:11. आत्म केन्द्रितता के लिये अचूक दवा क्या है?

परमेश्वर पर केन्द्रित होना या दूसरों पर केन्द्रित होना। दूसरों के साथ ठीक उसी प्रकार व्यवहार करें जैसा दूसरों से आप अपने प्रति व्यवहार चाहते हैं।

द्वितीय स्तर

अध्याय २

परमेश्वर के वचन पर मनन कैसे करें

लेखक – डोन क्रो

मनन करने का अर्थ है "चिंतन करना, ध्यान देना, ध्यान पूर्वक देखना, मन में योजना बनाना, उद्देश्य तय कर लेना ग्रीक भा ा में इस ाब्द का अर्थ है, ''मन में किसी बात को बार बार दोहराना,'' इसका अनुवाद *'कल्पना'* भी हुआ है।

बाइबल आधारित मनन दो कारणों से किया जाता है ''सही ज्ञान पर गहराई से सोचने के लिये, मन का नवीनीकरण कर साथ ही परमेश्वर का उसके वचन के पीछे क्या है, जानने के लिये उससे संपर्क करना है।'' यह संपर्क प्रार्थना, स्तुति के द्वारा किया जाता है। उदाहरण के लिये उसे ध्यानपूर्वक देखना, उसके बारे मे गम्भीरता से विचार करना, और उसके वि ाय में सोचना।

मनन वि ायवार अध्ययन कर किया जा सकता है। मनन करने के लिये वि ाय का चुनाव करना। उदाहरणः बपतिस्मा। इब्रानी यूनानी या किसी और ाब्दको ा से इसकी इसकी परिभा ा दे। उस मूल ाब्द की खोज करे जहाँ से यह आया है। पद के संदर्भ पर विचार और मनन करें जो आपको इसके सम्बंध में अन्य वि ायों के अध्ययन की ओर लेकर जायेगा। जैसे मन फिराव, (प्रेरितों 2:38) पश्चाताप (प्रेरितों 2:38) विश्वास (मरकूस 16:16) मन विवेक (1 पतरस 3:21), प्रभु का नाम लेने के द्वारा (प्रेरितों 22:16) आदि।

आपको उन प्रश्नों पर विचार करना होगा जो आपके मन में है, या वह प्रश्न जो आपके जो पवित्र ाास्त्र उठाता है, जैसे क्या इन योग्यताओं को बपतिस्मा के पूर्व प्राप्त करना आवश्यक है? बपतिस्मा का उद्देश्य क्या है? यह कब कब किया जाता था। किस समयावधि में किया जाता है?

उदाहरण के लिये मनन विस्तृत व्याख्या द्वारा अध्ययन करके किया जा सकता है बाइबल की पुस्तकों के पद दर पद–अध्ययन के द्वारा इस प्रकार के मनन करने का

सबसे लोकप्रिय तरीका है, कि किसी पुस्तक पर तब तक विचार और मनन किया जाये जब तक कि आप उसकी वि ाय वस्तु (पद दर पद) से परिचित ना हो जाये।

  ाब्द अध्ययन के द्वारा मनन किया जा सकता है। कुछ विशे ा ाब्दो का क्या अर्थ है? विश्वास करने का क्या अर्थ है? *प्रभु* ाब्द का क्या अर्थ है? *यीशु* ाब्द का क्या अर्थ है? *ख्रीस्त* ाब्द का क्या अर्थ है? न्यायोचित ाब्द का क्या अर्थ है आदि?

आप बाइबल के अनुच्छेदों में से मनन कर सकते है। अनुच्छेद विचारों की श्रंखला की लिखित ईकाई है, जिसमें कई वाक्य होते हैं? जब एक लेखक अपने लेखन में अपने जोर देने वाले वि ाय को बदलना चाहता है, तो वह नया अनुच्छेद ुरू करता है।

पवित्रशास्त्र के जरिये मनन करने के द्वारा विराम चिन्ह जैसे प्रश्न चिन्ह को देखें। यह प्रश्न क्यों पूछा जा रहा है? यह संदर्भ के साथ किस प्रकार संबंधित है इत्यादि?

बाइबल के अनुसार मनन ाब्दों को देखना मात्र नहीं है, पर ाब्द के पीछे परमेश्वर को देखना है।

शिष्यता के प्रश्न

1. "मनन" ाब्द का क्या अर्थ है?

2. बाइबल के अनुसार मनन के दो कारण क्या है?

3. वि ायवार अध्ययन क्या है? अध्ययन और उस पर विचार करने के लिये बाइबल में से एक वि ाय को चुनना।

4. पवित्र ाास्त्र का व्याख्यात्मक अध्ययन क्या है?

5. लूका 6:46 प्रभु ाब्द का क्या अर्थ है?

6. पढ़ें मत्ती 1:21 आप क्या समझते है, कि यीशु ाब्द का क्या अर्थ है?

7. पढ़ें लूका 23:1–2 आप क्या समझते हैं कि ख्रीस्त ाब्द का क्या अर्थ है?

8. अनुच्छेद का क्या अर्थ है?

9. बाइबल आधारित मनन ाब्दों को देखना मात्र नहीं है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

लूका 6:46 – *“जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कहते हो?*

मत्ती 1:21 – *“वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उन के पापों से उद्धार करेगा।”*

लूका 23:1–2 – *“तब सारी सभा उठकर उसे पीलातुस के पास ले गई। 2 और वे यह कहकर उस पर दो ा लगाने लगे, कि हम ने इसे लोगों को बहकाते और कैसर को कर देने से मना करते, और अपने आप को मसीह राजा कहते हुए सुना है।”*

उत्तर निर्देशिका

1. “मनन” ाब्द का क्या अर्थ है?

   “चिंतन करना, ध्यान देना, ध्यान पूर्वक देखना, मन में योजना बनाना, उद्देश्य तय कर लेना ग्रीक भाषा में इस शब्द का अर्थ है, मन में किसी बात को बार बार दोहराना, इसका अनुवाद कल्पना भी हुआ है”।

2. बाइबल के अनुसार मनन के दो कारण क्या है?

सही ज्ञान पर मनन करना (मन का नवीनीकरण करना) परमेश्वर से उसके वचन के पीछे सम्र्पक करना।

3. वि यवार अध्ययन क्या है?

अध्ययन और उस पर विचार करने के लिये बाइबल में से एक विषय को चुनना।

4. पवित्र ाास्त्र का व्याख्यात्मक अध्ययन क्या है?

बाइबल की पुस्तक का पद दर पद अध्ययन।

5. लूका 6:46 प्रभु ाब्द का क्या अर्थ है?

ऐसा कोई व्यक्ति जिसकी हम आज्ञा मानते है जैसे बॉस।

6. पढ़ें लूका 1:21 आप क्या समझते हैं कि यीशु ाब्द का क्या अर्थ है?

एक उद्धारकर्त्ता जो दूसरों को उनके पापों से बचायेगा।

7. पढ़ें लूका 23:1–2 आप क्या समझते है कि ख्रीस्त ाब्द का क्या अर्थ है?

एक व्यक्ति जिसका राजा होने के लिये अभिषेक किया गया है।

8. पद का क्या अर्थ है?

लिखित रूप में विचारों की श्रंखला।

9. बाइबल आधारित मनन ाब्दों को देखना मात्र नहीं है, पर ________________

इन वचनों के पीछे परमेश्वर से संपर्क करना है।

द्वितीय स्तर

अध्याय ३

मन का नवीनीकरण

लेखक - डोन क्रो

आज हम मन के नवीनीकरण के वि ाय में चर्चा करना चाहेंगे। मैं दो पद पढ़ना चाहता हूँ। पहला फिलिप्पियों 4:8 से है निदान, *"हे भाइयों, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरनीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान जो जो सद्‌गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।"* स्वाभाविक है प्रेरित पौलुस हमसे यह कह रहा है, कि ऐसी बातें हैं जिन पर हमें विचार करना चाहिए। दूसरें ाब्दों में हम अपने विचार का चुनाव कर सकते हैं। अब मैं जान गया कि हम सबके विचार होते हैं जो कि कभी कभी परमेश्वर के वचन के विरोध में होते हैं। रोमियों अध्याय 7 पद 22–23 के अनुसार पाप की व्यवस्था जो हमारे भीतर युद्ध करती है हमारे मन को प्रहार करती हैं। पर बाइबल फिलिप्पियों से हमें बताती है, कि हमें वहाँ बैठे रहकर हमारे विचारों का घोंसला नहीं बनने देना है। अर्थात रूकने नहीं देना है, हम इस बात का चुनाव कर सकते हैं, कि हम क्या सोचते हैं। बाइबल कहती है जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है (नीतिवचन 23:7)। अतः यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप क्या सोचते हैं।

रोमियों 12:1 और 2 में बाइबल कहती है, *"1 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर बिनती करता हूँ, कि अपने ारीरों को जीवित और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओः यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। 2 और इस संसार के सदृश्य ना बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।"* बाइबल कहती है, कि हम मन के नवीनीकरण द्वारा बदल सकते हैं। क्या आप जानते हैं, कि जब अपोलो स्पेसयान अंतरिक्ष में गया तब उसके मार्ग में हर 10 मिनट बाद सुधार करना पड़ा? एक प्रकार से वह आड़ी तिरछा (वक्री) मार्ग तय करते हुये अंतरिक्ष तक पहुँचा। और अन्ततः जब वे वहाँ पहुचे तो वे अपने लक्ष्य से निर्धारित 500 मील की दूरी पर गन्तव्य स्थान (नियत स्थान) पर उतरे, और इसके बावजूद पूरी

उड़ान सफल थी। हमें एक दिशा तय करनी है, और प्रभु यीशु मसीह पर एक जीवित बलिदान के रूप में पूर्ण समर्पण करना है। जीवित बलिदान के साथ यह समस्या होती है कि कभी कभी वह वेदी से खिसक जाना चाहता है, अतः हमें अपने विचारों की दिशा में सुधार करना चाहिए। हमारे पास एक ऐसा दिल होना चाहिए जो यह कहे,"परमेश्वर मैं तुझे चाहता हूँ और तेरे मार्ग चाहता हूँ।"

हमें न केवल पूर्ण समर्पण करने की आवश्यकता है, पर एक जयवन्त मसीही जीवन जीने की आवश्यकता है, कि हम अगला कदम उठायें और अपने मन के नवीनीकरण के द्वारा बदलते जायें। हम संसार के समान नहीं सोच सकते, यदि हम संसार के समान परिणाम नहीं चाहते। जब हम फिलिप्पियों 4:8 पढ़ते हैं, तब हम इस बात का चुनाव कर सकते हैं कि हम किस बारे में सोचें। *"निदान, हे भाइयों, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान जो जो सद्‌गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।"* पुराने नियम के समय वे वचन को लेते थे और अपनी चौखटों पर और अपने वस्त्रों पर लगाते थे। वह निरंतर उनके सामने रहता था। परमेश्वर ने उन्हें आदेश दिया था कि वह उसके वचन पर दिन और रात मनन करें ताकि वह वो कर सकें जो कहा गया है। उन्हें यह सब बाते अपनी संतानों को भी बतानी थी। हम जो सोचते हैं यह बड़ा ही महत्वपूर्ण है। एक जयवन्त जीवन जीने के लिये यह अतिमहत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर के वचन को अपने सामने रखें। परमेश्वर की आदरनीय, उचित, सुहावनी, मनभावनी, सद्‌गुण और प्रशंसा से भरी बात के वि ाय में विरूध सोचने का अर्थ है, परमेश्वर के वि ाय में न सोचना ना संसार के ना तो आत्मा के वि ाय में सोचना। रोमियों 8:6 कहता है, *'' ारीर पर मन लगाना तो मृत्यु है,''* पर इस पद का अगला भाग कहता है *''परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और ान्ति है।''* परमेश्वर की आत्मा की चीजों के वि ाय में सोचना, जीवन और ान्ति है। पर यदि हम व्याभिचार, संसार की चीजों, पैसा, धन, लोलुपता आदि पर विचार करें, क्या आप जानते हैं कि हमारे जीवन का क्या होगा? यह हमारा जीवन बर्बाद कर देगा। हम उन चीजों के साथ व्यवहार करने लगते हैं और यह हमारे जीवन को बर्बाद कर देगा! आप देख सकते हैं कि एक विश्वासी के लिये सच्चा आत्मिक युद्ध सारे समय ैतान का साम्हना करना नहीं है, यद्यपि ऐसे कुछ अवसर आते हैं जब हमें ऐसा करना पड़ता है। पर आत्मिक युद्ध इस बात पर निर्भर करता है, कि हम क्या सोच रहे हैं या किस पर स्थिर हैं।

आप देखें बाइबल यशायाह 26:3 में कहती है, कि परमेश्वर उस व्यक्ति को पूर्ण ाान्ति में रखेगा जिसका मन उसमें है। दिन में कई समय होते हैं जिसमें हमें समायोजन करने की आवश्यकता पड़ती है, जैसा रोमियों 12 कहता है। हमें यह कहने की आवश्यकता पड़ती है, "वो गलत विचार थे, मुझे पीछे मुडकर अपने मन का नवीनीकरण करने कि आवश्यकता है, और उन चीजों के बारे में विचार करने कि आवश्यकता है जो सुहावनी, मनभावनी, प्रशंसा से भरी है।"

अतः यदि आपके पास एक गढ है, यदि आप बंधन में है यदि आप ऐसी चीजें सोच रहे हैं जिन्हें आपको नहीं सोचना चाहिए तो आपको अपनी जाँच करने की आवश्यकता है। *"यदि आप ैतान का साम्हना करोगे तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। परमेश्वर के पास आओ; तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा।"* मेरे जीवन में ऐसे अवसर आते हैं जब मैंने चीजों को खो दिया और अवसाद को बढ़ने दिया है। उन समयों में बाइबल उठाकर उसमें से एक पद लेकर यह कहना होता है, ''कि परमेश्वर क्या यही आप मेरे वि ाय में कहना चाहते हैं। यह आप कहते हैं, कि मैं ऐसा हूँ आप मेरी ाक्ति है।" क्या आप जानते हैं कि आपकी विजय इतनी ही साधारण है? आपको यह कहने की आवश्यकता है कि ''मैं उसका साम्हना करूंगा जो मेरा ात्रु अभी मेरे साथ करना चाहता है। मैं बैठकर अपनी बाइबल खोलूंगा और मैं इन पृ ठों पर मात्र कुछ ाब्दों को नहीं पढूंगा पर इन ाब्दों के पीछे क्या है इस वि ाय में परमेश्वर से जुडुंगा। मैं अपने मन को परमेश्वर पर स्थिर करूंगा। और प्रभु तू मेरे वि ाय में यह कहता है। आप कहते हैं, कि मुझे क्षमा कर दिया गया है। आप कहते हैं कि मैं ुद्ध कर दिया गया हूँ आप कहते हैं कि आपके प्रेम से कोई मुझे अलग नहीं कर सकता है।'' जब आप वहा बैठकर उन सब भले कामों के वि ाय में सोचते हैं, कि परमेश्वर ने आपके लिये क्या किया तो, बहुत कम समय में आप बाकी अन्य चीजों को भूल जायेंगे।

आइये अब मुझे एक उदाहरण देने दें। एक बार मैंने एक व्यक्ति को कहते हुये सुना कि ''मैं तुम्हें प्रोत्साहित कर रहा हूँ कि आप अगले दस मिनट तक गुलाबी हाथी के वि ाय में ना सोचें।'' क्या आप जानते हैं कि क्या हुआ? अगले दस मिनट तक हम सिर्फ गुलाबी हाथी के वि ाय में ही सोचते रहें। फिर उसने पूछा कि ''स्वतंत्रता की मूर्ति स्टेचू ऑफ लीबर्टी का क्या रंग है?'' किसी व्यक्ति ने कहा हरा है। और उसने कहा कि ''मूर्ति का कौन सा हाथ ऊपर उठाया हुआ दिखाया गया है?'' किसी ने कहा कि उसका दाहिना हाथ। फिर उसने यह पूछा की ''मूर्ति के हाथ में क्या है?'' किसी ने कहा

की टार्च है। फिर उस व्यक्ति ने कहा, ''आपके गुलाबी हाथी के बारे में विचार का क्या हुआ?'' वे चले गये। आप देख सकते हैं कि यह बोलने की बात नहीं है। ''अब आप इन विचारों के वि ाय में नहीं सोचे,'' क्योंकि आप जानते हैं कि आप उन विचारों के बारे में सोचे। पवित्रशास्त्र हमें वास्तव में कह रहा है कि हमें उन विचारों को परमेश्वर के विचारों के साथ हस्तांतरित कर देना चाहिए। और जब हम ये सब चीजें अपने विरोध में आते देखें तो हम ऐसा कुछ सोच रहे हैं जो हमें नहीं सोचना चाहिए। हमें जल्द ही अपनी नई पहचान को स्मरण करने की आवश्यकता है। हमें ीघ्र प्रभु की ओर मुड़ने उससे जुड़ने की आवश्यकता है,यह पृ ठों पर ाब्दों से नहीं पर उन ाब्दों के पीछे परमेश्वर से जुडने की आवश्यकता है। और बाइबल हमें रोमियों 8:6 हम से कहता है कि जब हम ऐसा करते हैं तब हम उस परिवर्तन को देखेंगे जो परमेश्वर का जीवन और ाांति हमें प्रदान करती है। जब हमारा मन उस पर और उसकी आत्मा की चीजों पर स्थिर रहता है। मेरे प्रिय भाई इन बातों पर विचार करें और आज उस स्वतंत्रता और आजादी में चले जो मसीह ने आपके लिये खरीदा है।

शिष्यता के प्रश्न

1. रोमियों 12:1 पढ़ें हमें अपने ारीरों के साथ क्या करना चाहिए?

2. रोमियों 12:2 पढ़ें यह पवित्रशास्त्र हम से कहता है कि ____________________

3. प्रेरितों के काम 17:11 पढ़ें हमें अपनी सोच को किसके अनुरूप रखना चाहिए?

4. रोमियों 8:5–6 पढ़ें आत्मिक जगत के होने का अर्थ है, ____________________

5. रोमियों 12:1–2 पढ़ें इस पद के अनुसार कौन सी दो चीजों को हमें करने की आवश्यकता है।

6. यशायाह 26:3 पढ़ें हम पूर्ण ाान्ति में कैसे रह सकते हैं?

7. यशायाह 26:3–4 पढ़ें हम परमेश्वर पर अपना मन कौन कौन से तरीके से रख सकते हैं?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

रोमियों 12:1 – *"इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूं, कि अपने ारीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओं: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।"*

रोमियों 12:2 – *"और इस संसार के सदृश न बनों; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।"*

प्रेरितों के काम 17:11 – *"ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्हों ने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रति दिन पवित्र ाास्त्रों में ढूंढते रहे कि ये बातें योंही हैं, कि नहीं।"*

रोमियों 8:5–6 –*"5 क्योंकि ाारीरिक व्यक्ति ारीर की बातों पर मन लगाते है; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। 6 ारीर पर मन लगाना मृत्यु है, पर आत्मा पर मन लगाना जीवन और ाान्ति है।"*

रोमियों 12:1–2 *"– 1 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूं, कि अपने ारीरो को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओं: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।" 2 "और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।"*

यशायाह 26:3 – *"जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण ाान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।*

यशायाह 26:4 – *''यहोवा पर सदा भरोसा रख, क्योंकि प्रभु यहोवा सनातन चट्टान है।''*

उत्तर निर्देशिका

1. रोमियों 12:1 पढ़ें हमें अपने ारीरो के साथ क्या करना चाहिए?

   अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाना चाहिए।

2. रोमियों 12:2 पढ़ें यह पवित्रशास्त्र हम से कहता है कि हमें ____________________

   संसार से और अविश्वासियों से भिन्न रहना चाहिए।

3. प्रेरितों के काम 17:11 पढ़ें हमें अपनी सोच को किसके अनुरूप रखना चाहिए

   पवित्रशास्त्र परमेश्वर के वचन पर।

4. रोमियों 8:5–6 पढ़े आत्मिक जगत के होने का अर्थ है, ____________________

   जीवन और शान्ति।

5. रोमियों 12:1–2 पढ़ें इस पद के अनुसार कौन सी दो चीजों को हमें करने की आवश्यकता है?

   अपने आप को जीवित और भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाना, और बुद्धि को नया बनाना।

6. यशायाह 26:3 पढ़ें हम पूर्ण ाान्ति में कैसे रह सकते है?

   अपने मन को प्रभु पर लगाने के द्वारा।

7. यशायाह 26:3–4 पढ़ें हम परमेश्वर पर अपना मन कौन कौन से तरीके से रख सकते हैं?

   प्रार्थना, स्तुति, वचन पर मनन धन्यवाद आदि के द्वारा।

द्वितीय स्तर

अध्याय ४

मसीह की कलीसिया का महत्व

लेखक - डोन क्रो

आज हम मसीह की कलीसिया के महत्व के वि ाय में चर्चा करेंगे। मैं इब्रानियों 10:25 से पवित्र ाास्त्र का एक वचन पढ़ना चाहुँगा, जो कहता है, *“और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखों, त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो।”* जब हम मसीह की कलीसिया के महत्व को देखते हैं, तब मेरा प्रश्न यह है कि, “कलीसिया क्या है?”

मैं शि यता सुमाचार कार्यक्रम को कोलोराडो की एक स्थानीय कलीसिया में ले गया। हम ने कलीसिया में लोगों को प्रशिक्षण दिया, कि वे इसे कैसे उपयोग करें, और हम ने इसे कार्यक्षेत्र में इस्तेमाल किया। इस स्थानीय कलीसिया के साथ छह सप्ताह तक काम करने के पश्चात हमने बीस बाइबल अध्ययन की स्थानीय कलीसिया से बाहर स्थापित किए। हम इन लोगों के साथ महिनों तक बाइबल अध्ययन में काम करते रहे। एक दिन पासबान ने वास्तव में मुझे परेशानी में डाल दिया जब उसने कहा, “आप जानते हैं कि बाइबल कहती है कि जो उद्धार पाते थे, उन को प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था।” हम इन लोगों को बाइबल अध्ययन के द्वारा अपनी कलीसिया में आते हुये क्यों नहीं देख रहे हैं?

जब हम लोग कार्यक्षेत्र में थे; तब लोग उद्धार पा रहे थे और वे शि य बनाये जा रहे थे और उन तक वचन पहूँचाया जा रहा था। पर पासबान जो वास्तव मे कहना चाह रहा था। वह यह था, कि ‘‘वे एक साथ एकत्र होने के लिये इस भवन में रविवार की सुबह को क्यों नहीं आ रहे हैं?’’ कलीसिया के वि ाय में मेरी अवधारणा भी थोडी भिन्न थी। जो कुछ पासबान ने कहा उसने मुझे परेशान किया, और मुझे नहीं पता था कि कि मैं क्या करू। मैंने विचार किया कि *क्या शि यता सुसमाचार कार्यक्रम वास्तव में कार्य कर रहा है, कि नहीं? क्या हम वास्तव में लोगों के जीवनों को छू रहे हैं?* मैं जानता था कि

हम बहुत सारे लोगों तक पहुँच रहे हैं पर जिसने मुझे असमंजय में डाल दिया वह यह था कि वह रविवार की सुबह की सभा में क्यों नहीं आ रहे हैं।

मैंने निर्णय लिया, कि ''कलीसिया'' ाब्द का अध्ययन करूंगा। और जो कुछ मैंने पाया उसे इस अध्याय में पाया है। रोमियों 16:3; 1 कुरिन्थियों 16:19; कुलुस्सियों 4:15; फिलेमोन 2; प्रेरितों 5:42 और प्रेरितों 20:20 बाइबल प्रारंभिक रूप से ुरूआती कलीसिया के किसी के घर में मिलने के वि ाय में कहती है। मैं जानता हूँ, कि सब प्रकार की कलीसिया होती है। घर की कलीसिया होती है, छोटी संख्या और बड़ी संख्या की कलीसिया के सदस्यों की कलीसिया होती है, और फिर अत्याधिक बड़ी कलीसिया होती है। पवित्रशास्त्र की वह बात जिसने मेरा ध्यान आकर्ि ात किया वह थी, कि नये नियम की कलीसिया एक साथ लोगों के घर में एकत्र होती प्रतीत हुई।

द एक्सपोसिटरी डिक्शनरी ऑफ बाइबल वर्डस लेखक लारेन्स ओ रिचर्ड (पृ.164) के अनुसार, "कोई भी व्यक्ति इस ाब्द 'कलीसिया' कें अर्थ को समझने के वि ाय में गलतफहमी में पड़ सकता है हम इस ाब्द का कई तरीके से इस्तेमाल करते हैं।" इसका अर्थ एक विशे ा भवन है, (जैसे चौथी सड़क पर स्थित एक कलीसिया), एक सम्प्रदाय या संगठित विश्वास (जैसे अमेरिका की रिफार्म्ड कलीसिया) या (बैपटिस्ट कलीसिया) या रविवारीय सभा (क्या आप आज कलीसिया गये)। इनमें से काई भी उपयोग बाइबल के अनुसार सही नहीं है।'' मैं विचार कर रहा हूँ, *इसका वास्तव में क्या अर्थ है? कलीसिया ाब्द का वास्तव में क्या अर्थ है?* मैं आगे उद्रण देना चाहूँगा। वह कहता है, ''चूँकि कई लोग सोचते हैं कि कलीसिया एक भवन है जहाँ धार्मिक सभायें होती हैं ना कि यह वह स्थान है जहां कलीसिया आराधना करती है इसे कलीसिया ाब्द दे देना गुमराह करने वाला हो सकता है।'' चर्च ''कलीसिया'' के लिये यूनानी ाब्द *इकलिसिया* है। इसका अक्षरशः अर्थ आराधना, प्रार्थना, स्तूति या फिर सिर्फ परमेश्वर की ओर निहारने के उद्देश्य से एकत्रित लोगों का समुह। मैं यहाँ कुछ अन्य बातों को पढूंगा। वह इस प्रकार है, कि ''नये नियम की इकलिसिया में कितनी भी संख्या में लोग हो सकते हैं। इसका उपयोग उन छोटे समुह के लिये किया जा सकता है जो घरों में मिलते हैं या फिर यह बड़े ाहर में रहने वाले लोगों को समाहित कर सकता है। (प्रेरितों 11:22) या फिर बड़े भौगौलिक क्षेत्र को समाहित करता है जैसे एशिया या गलातियों।" यह कहना जारी रहता है, ''कलीसिया की यह विशे ा प्रकार की सभा घरों में होती थी। जब इस प्रकार का समुह एक् होता था 'तब वे भजन, उपदेश, अन्य भा ाा, प्रकाश, अन्य भा ाा का अर्थ

बताना' (1 कुरिन्थियों 14:26)। व्यक्ति विशे ा अपनी बात रखते थे और ो ा लोग वचन को परखते थे (1 कुरिन्थियों 14:29)...विश्वासियों के समुदायों के रूप में कलीसिया का विद्यमान होना अतिआवश्यक है। हर व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह दान दें और अन्य लोगों की सेवा अपने आत्मिक वरदानों द्वारा करें।''

इब्रानियों 10:25 में कहता है, *"और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें।"* कलीसिया यीशु मसीह को निहारने प्रभु की स्तुति करने, प्रभु से दिशा निर्देश पाने, उस दिशा निर्देश पालन करने के उद्देश्य से लोगों का एकत्र होना था। प्रारंभिक नये नियम की कलीसिया का उद्देश्य अध्यात्मिक सुधार था। वे विश्वास में एक दूसरे को बढ़ाने के लिये एकत्र हुआ करते थे।

प्रारंभिक कलीसिया सुसमाचार प्रचार करने वाली कलीसिया थी। लोग यहाँ वहाँ बिखरे हुये थे और यीशु मसीह में अपने विश्वास को बाँटा करते थे, जब वे ऐसा किया करते थे तब लोगों के इस समुह में और भी लोगों को जोड़ देता था, (यहाँ पर आप इसे स्प ट रीति से समझ लें की यहाँ लोगों के समुह में जोडने की बात कही गई है, ना की किसी भवन में।) जो पश्चाताप करते और विश्वास करते थे। फिर वे एक दूसरे के साथ इसलिये एकत्र होते थे, ताकि वे एक दूसरे को प्रोत्साहित करें, अपने आत्मिक वरदानों का उपयोग करें, एक दूसरे की सेवा करें, और एक दूसरे के साथ भोजन को बाँटने के द्वारा सहचर्य का समय व्यतीत कर सकें। जब वे एक दूसरे के साथ एकत्र होते थे, तो वे अपने अध्यात्मिक सुधार के वरदानों का एक दूसरे को सुधारने के लिये उपयोग किया करते थे। फिर वे जाकर वचन का प्रचार करते थे, और फिर से यह क्रम जारी रहता था। वे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया करते थे, और वे एकत्र हुआ करते थे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वे कहां एकत्रित हुआ करते थे। हो सकता है, यह कोई भवन या किसी का घर हो सकता है। हो सकता है, लोग बड़ी संख्या में एकत्र हुये हों या फिर लोगों के घर में एकत्र होने वाला छोटा समुह हो। इससे कोई मतलब नहीं था, कि वे कहाँ एकत्र हुआ करते थे जब तक की वे प्रभु के नाम में और अपने वरदानों का उपयोग करने, एक दूसरे को प्रोत्साहित करने, एक दूसरे के साथ सहचर्य करने के लिये एकत्र हुआ करते थे। जिसका अंतरिम परिणाम समझाना और एक दूसरे की उन्नति करना था।

मैंने यह पाया, कि हम शि यता सुसमाचार प्रचार के तहत हम स्थानीय कलीसिया के द्वारा जिसका मैंने पहले उल्लेख किया जब हम पूरे ाहर में बीस भिन्न भिन्न बाइबल अध्ययन में मिला करते थे। तब हम बीस भिन्न भिन्न कलीसिया में मिला करते थे। इनका रूप कलीसिया के रूप में वैसा नहीं था, जैसा कि आज हम देखते हैं। पर हम कलीसिया के रूप मे सप्ताह में बीस बार मिला करते थे, क्योंकि हम प्रभु यीशु के नाम में एक दूसरे को प्रोत्साहित करने के लिये, एक दूसरे के साथ सहचर्य करने के लिये और प्रभु यीशु की ओर निहारने और परमेश्वर के वचन द्वारा निर्देश पाने और अपने आत्मिक वरदानों का उपयोग करने हेतु उपयोग किया करते थे।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, कि आप किस कलीसिया को जाते हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किसी पंत विशे ा या गैर पंत विशे ा की कलीसिया के सदस्य हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप बहुत बड़ी कलीसिया के सदस्य हैं या आप छोटे गृह समूह के सदस्य हैं। पवित्र ाास्त्र हमसे कहता है कि ज्यों ज्यों उस दिन को आते देखें और पाप बढ़ता जाता है, परमेश्वर का अनुग्रह उतना ही बढता जाता है। परमेश्वर के लोगों कि इस एकत्रित सभा में अनुग्रह बने रहेगा। कलीसिया में जहाँ हर सदस्य के पास यीशु मसीह की कलीसिया की सेवकाई का एक भाग होता है, आप एक दूसरे की सेवा कर सकते हैं, एक दूसरे को प्रोत्साहित कर सकते हैं जब आप अपने आत्मिक वरदानों को एक दूसरे के साथ बाँटते हैं।

इस रीति से विश्वासियों के एक समुह से मिलने पर हम सभी को इसका लाभ होगा। चाहे दो या तीन भी प्रभु के नाम में एकत्रित होते हैं, हमें नियमित रूप से मिलने की आवश्यकता है। यह अच्छा है कि हमें अपने आत्मिक वरदानों का उपयोग करने के लिये, एक दूसरे को प्रोत्साहित करने के लिये, एक दूसरे की उन्नति करने के लिये, एक दूसरे के साथ यीशु की ओर देखना, और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने के लिये एकत्रित होना है। हम कलीसिया के वि ाय में बहुत कुछ कह सकते हैं। हम प्राचीनों ओवरसियर, पासबान और कलीसिया प्रबंधन के वि ाय में चर्चा कर सकते हैं। पर यह आज की हमारी शिक्षा का उद्देश्य नहीं है। हमारी शिक्षा का उद्देश्य कलीसिया के उद्देश्य को जानना और यह जानना, कि हमें अपनी ही दुनिया में नहीं रहना चाहिए। हम इस प्रकार जीवित नहीं रह सकते। जब हम उद्धार पाते हैं तब परमेश्वर हमें मसीह की देह में रखता है, जो विश्वासियों की सार्वभौमिक देह है। हमें मसीह की कलीसिया के रूप में एक दूसरे को प्रोत्साहित करने के लिये, एक दूसरे की उस

आत्मिक वरदानों के साथ सेवा करने के लिये, हमें एक दूसरे के साथ एकत्र होने की आवश्यकता है। मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि परमेश्वर के लोगों के साथ आज ही एकत्र होवें।

शिष्यता के प्रश्न

1. इब्रानियों 10:25 पढ़ें हमें क्या नहीं छोड़ना चाहिए?

2. प्रेरितों के काम 5:42 पढ़ें प्रति दिन मन्दिर में और घर घर में क्या सिखाया और किया जाता था।

3. प्रेरितों के कामं 2:42 पढ़ें प्रारंभिक कलीसिया कौन सी चार बातों को करना जारी रखा?

4. प्रेरितों के काम 5:44–45 पढ़ें प्रारंभिक कलीसिया के सदस्यों के वाहन खड़ा करने के लिये पैसा देना जारी रखा। सही या गलत:

5. 1 कुरिन्थियों 12:28 पढ़ें आठ विभिन्न वरदानों की सूची बनायें जो कलीसिया ने अपने सदस्यों को दी है।

6. 1 कुरिन्थियों 14:26 पढ़ें जब परमेश्वर के लोग कलीसिया के रूप में एकत्रित हुआ करते थे तब उन्हें अपने वरदानो को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता थी। उन पाँच बातों का उल्लेख करें जो उनके एकत्रित होने पर घटित हुआ करती थी।

7. प्रेरितों के काम 6:1 नये नियम की कलीसिया ने अपने भोजन को किसके साथ बांटा।

8. याकूब 1:27 एक मात्र भक्ति जिसका परमेश्वर ख्याल करता है, वह है

9. 1 तीमुथियुस 5:9–11 पढ़ें प्रारंभिक नये नियम की कलीसिया में जिन विधवाओं की सुधी ली जाती थी उनकी योग्यताएं क्या थी?

10. 1 कुरिन्थियों 9:14 कलीसिया विधवाओं अनाथों गरीबों की सहायता करने के अलावा और किसकी सहायता करती थी,

11. मत्ती 25:35–40 पढ़ें लोग ऐसा क्यों सोचते हैं कि सिर्फ दान की थाली में दान देना मात्र ही परमेश्वर को देने का एक मात्र तरीका है?

12. प्रेरितों के काम 4:32–35 और नीतिवचन 3:9–10 पढ़े प्रारंभिक कलीसिया के प्राचीन और पासबान धन का क्या करते थे?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

इब्रानियों 10:25 *– "और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे हो समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखों, त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो।"*

प्रेरितों के काम 5:42 *– "और प्रति दिन मन्दिर में और घर घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है न रूकें।*

प्रेरितों के काम 2:42 *– "और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहें।"*

प्रेरितों के काम 2:44–45 *– "44 और वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उन की सब वस्तुएं साझे की थीं। 45 और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिस की आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे।"*

1 कुरिन्थियों 12:28 *– "और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भवि यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार करनेवाले, और प्रधान, और नाना प्रकार की भा ाा बोलनेवाले।"*

1 कुरिन्थियों 14:26 *– "इसलिये हे भाइयों क्या करना चाहिए? जब तुम हकट्टे होते हो, तो हर एक हृदय में भजन, या उपदेश, या अन्य भा ाा, या प्रकाश, या अन्य भा ाा का अर्थ बताना रहता है: सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिये होना चाहिए।"*

प्रेरितों के काम 6:1 *– "उन दिनों में जब चेले बहुत होते जाते थे, तो यूनानी भा ाा बोलनेवाले इब्रानियों पर कुड़कुडाने लगे, कि प्रतिदिन की सेविकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती।"*

याकूब 1:27 *– "हमारे परमेश्वर और पिता के निकट ुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें, और अपने आप को संसार से नि कलंक रखें।"*

1 तीमुथियुस 5:9–11 *– "9. उसी विधवा का नाम लिखा जाए, जो साठ व र्ा से कम की न हो, और एक ही पति की पत्नी रही हो। 10 और भले काम में सुनाम रही हो। जिस ने बच्चों का पालन पो ाण किया हो; पाहुनों की सेवा की हो, पवित्र लोगो के पांव धोए हो, दुखियों की सहायता की हो, और हर एक भले काम में मन लगाया हो। 11 पर जवान विधवाओं के नाम न लिखना, क्योंकि जब वे मसीह का विरोध करके सुख–विलास में पड़ जाती हैं, तो ब्याह करना चाहती है।"*

1 कुरिन्थियों 9:14 *– ''इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया, कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उन की जीविका सुसमाचार से हो।"*

मत्ती 25:35–40 *– ''35 क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया, मैं पियासा था, और तुमने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया। 36 मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए; में बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए। 37 तब धर्मी उस को उत्तर देंगे कि हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया? या पियासा देखा, और पिलाया? 38 हम ने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा देखा, और कपड़े पहिनाए? 39 हम ने कब तुझे बीमार या बन्दी गृह मे देखा और तुझ से मिलने आए? 40 तब राजा उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया,वह मेरे ही साथ किया।"*

प्रेरितों के काम 4:32–35 *– ''32 और विश्वास करनेवालों की मण्डली एक चित्त और एक मन के थे यहां तक कि कोई भी अपनी सम्पत्ति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे का था। 33 और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के ही उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था। 34 और उन में से कोई भी दरिद्र न था; क्योंकि जिन के पास भूमि या घर थे, वे उन को बेचकर, बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते, ओर उसे प्रेरितों के पांवों पर रखते थे। 35 और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार हर एक हो बांट दिया करते थे।''*

नीतिवचन 3:9–10 *"9 अपनी संपत्ति के द्वारा, और अपनी भूमि की सारी पहिली उपज दे देकर यहोवा की प्रति ठा करना; 10 इस प्रकार तेरे खत्ते भरे और पूरे रहेंगे, और तेरे रसकुण्डों से नया दाखमधु उमण्डता रहेगा।"*

उत्तर निर्देशिका

1. इब्रानियों 10:25 पढ़ें हमें क्या नहीं छोड़ना चाहिए?

   विश्वासियों को एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना।

2. प्रेरितों के काम 5:42 पढ़ें प्रति दिन मन्दिर में और घर घर में यीशु मसीह को

   ________________ और ________________ किया जाता था।

   सिखाया और प्रचार

3. प्रेरितों के काम 2:42 पढ़ें प्रारंभिक कलीसिया कौन सी चार बातों को करना जारी रखा?

वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।

4. प्रेरितों के काम 5:44–45 पढ़ें प्रारंभिक कलीसिया ने कलीसिया के सदस्यों के वाहन खड़ा करने का स्थान बनाने के लिये पैसा देना जारी रखा।

गलत

5. 1 कुरिन्थियों 12:28 पढ़ें आठ विभिन्न वरदानों की सूची बनाये जो कलीसिया ने अपने सदस्यों को दी है।

प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार करनेवाले, और प्रधान, और नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले।

6. 1 कुरिन्थियों 14:26 पढ़ें जब परमेश्वर के लोग कलीसिया के रूप में एकत्रित हुआ करते थे तब उन्हें अपने वरदानों को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता थी। उन पाँच बातों का उल्लेख करें जो उनके घटित होने पर हुआ करती थी।

जब वे इकट्टे होते थे, एक के हृदय में भजन, अन्य के पास भाषा का अर्थ बताना, अन्य कोई प्रकाशन बतायेगा जो परमेश्वर ने उन्हें दिया है एक उनमें से अन्य अन्य भाषा में बोलेगा, और कोई अन्य यह समझायेगा कि वह अन्य अन्य भाषा का क्या अर्थ को समझाये।

7 .प्रेरितों के काम 6:1 नये नियम की कलीसिया ने अपने भोजन को किसके साथ बांटा।

विधवाओं के साथ बांटा।

8. याकूब 1:27 एक मात्र भक्ति जिसका परमेश्वर ख्याल करता है, वह है ________

अनाथों और विधवाओं की देखभाल करना।

9. 1 तीमुथियुस 5:9–11 पढ़ें प्रारंभिक नये नियम की कलीसिया में जिन विधवाओं की सुधी ली जाती थी उनकी योग्यतायें क्या थी? उसी विधवा का नाम लिखा जाए

“एक विधवा जिसका नाम सहायता प्राप्त करने की सूची में हो वह एक ऐसी स्त्री होना चाहिए जो कम से कम साठ वर्ष की आयु की हो अपने पति के प्रति विश्वासपूर्ण रही हो। उसने जो भले काम किये हो उसके कारण वह बहुत आदर और सम्मान प्राप्त करती हो” क्या उसने अपने बच्चों का पालन पोषण अच्छे से किया है? क्या वह परदेसियों के प्रति दयालु रही है? क्या उसने दूसरे मसीहों की सेवा दीनता से की है? क्या उसने ऐसे लोगों की सहायता की है जो परेशानी में पड़ें हैं ? क्या वह भले काम करने में हमेशा तैयार रही है? जवान विधवाओं को सूची में नहीं होना चाहिए ...’’(१ तीमुथियुस ५:९-११)

10. 1 कुरिन्थियों 9:14 कलीसिया विधवाओं, अनाथों, गरीबों की सहायता करने के अलावा और किसकी सहायता करती थी,

उनकी जो वचन की सेवा करते थे।

11. मत्ती 25:35–40 पढ़ें लोग ऐसा क्यों सोचते है कि सिर्फ दान की थाली में दान देना मात्र ही परमेश्वर को देने का एक मात्र तरीका है?

क्योंकि इसी की शिक्षा उनको दी गई है।

12. प्रेरितों 4:32–35 और नीतिवचन 3:9–10 पढ़ें प्रारंभिक कलीसिया के प्राचीन और पासबान धन का क्या करते थे?

जैसी जिसे आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार हर एक को बांट दिया करते थे।

द्वितीय स्तर

अध्याय ५

छूटकारा

लेखक - डोन क्रो

आज हम ैतानवाद के वि ाय में चर्चा करेंगे। यीशु मसीह ने इस पृथ्वी पर अपदूतों को निकालते, चंगाई देते, मृतकों को जिलाते, और अन्य चमत्कार करते हुये, सेवकाई की। उसकी सेवकाई का एक चौथाई भाग लोगों में से दु ट आत्माओं का निकालते हुये बीता। बाइबल हमें प्रेरितों 10:38 में शिक्षा देती है, *"कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभि ेक किया; वह भलाई करता, और सब को जो ैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।"* 1 युहन्ना 3:8 कहता है, *"परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ, कि ैतान के कामों को नाश करें।"* ैतानवाद के वि ाय में मैं भिन्न दृ टकोण रखता था, वह यह था कि ैतान, अपदूत, अशुद्ध आत्मा चाहे आप इसे जो भी नाम दें यह केवल भारत में और तृतीय विश्व के देश में ही दिखाई देती थी, जहाँ लोग सच्चे और जीवित परमेश्वर की आराधना नहीं करते थे। वे मूर्तियों की पूजा करते थे। मैं गलत था।

मैं आपको अपने एक अनुभव के वि ाय में बताऊंगा जो मुझे कुछ व ाि पहले डलास टैक्सस की एक कलीसिया में हुआ। सब लोग गा रहे थे जब यह लड़की अचानक गिर पड़ी। ऐसा लगता था मानों वह बेहोश हो गई है। संयोगवश वहां एक चिकित्सक मौजूद था, जिसका नाम डॉ.राईस था। कलीसिया के किसी सदस्य का घर कलीसिया के भवन से एक ब्लाक की दूरी पर था। उस डाक्टर ने कहा कि हम उसे उस घर में ले जायें ताकी वह उसकी जाँच कर सके। जब हम उस लड़की को उस घर में ले गये तब वह गुस्साई हुई बिल्ली! के समान थी। उसकी आंखें फैल गई थी, और कोई मर्दाना आवाज में इस जवान लड़की से बात कर रहा था। यह लड़की सौ पाऊंड से भी कम वजनी थी। अचानक ही यह आवाज मुझे प्रहार करने लगी और कहने लगी, "आप नरक जा रहे है!" मैंने कहा, ''नहीं मैं नहीं जा रहा हूँ?'' मैं बहुत घबरा गया था क्योंकि मैंने यह सब पहले कभी नहीं देखा था। इस आवाज ने कहा, "हाँ तुम नरक जा रहे हो।" और मैंने कहा, ''नहीं, मैं नहीं जा रहा हूँ। नहीं मैं नरक नहीं जा रहा हूँ।" ऐसा प्रतीत होता था कि

मानों वह अधिकार और सामर्थ के साथ मुझ पर हावी हो रही थी, और मैं नहीं जानता था कि मैं क्या करूं या जो चीज इस लड़की में थी उसके साथ कैसे व्यवहार करूं।

मेरा एक प्रिय मित्र इतना भयभीत हो गया था कि वह उसी वक्त चला गया, और वहां मैं अकेला यह सोच रहा था, कि *मैं अब इस संसार में मैं क्या करूँ?* उस लड़की के पास आलौकिक ाक्ति थी, और वह ऐसी भा ा में बोलने लगी जो जर्मन भा ा जैसी थी जो ाायद उसने पहले कभी नहीं सीखी थी। ौतान के सब प्रकार के दु ट प्रगटीकरण उस में से फूट रहे थे। वह दुष्टात्मा–ग्रस्त थी, और यद्यपि मुझे नहीं पता था कि मैं क्या करूं, मैं हमेशा से विश्वास करता था कि बाइबल में सामर्थ है। यह ऐसा था जब मानों आप छोटे थे आप वह डरावनी ड्रेकुला की फिल्मे देखते थे। वेमपायर उस व्यक्ति के निकट आता था, और वह व्यक्ति तुरंत एक क्रूस निकाल लेता था, और वेम्पायर चला जाता था। बाइबल के वि ाय में मैं इसी प्रकार सोचता था। मैं जानता था कि इसमें सामर्थ थी, पर मैं यह नहीं जानता था कि बाइबल में से कैसे सामर्थ निकाली जाये। परमेश्वर के अनुग्रह ने मेरी सहायता की, क्योंकि मैंने इस प्रकार की चीज का पहले कभी अनुभव नहीं किया था। मैंने अपनी बाइबल के नये नियम के भाग को खोला, और फिलिप्पियों के नाम की पुस्तक को खोला और पढ़ना शुरु किया फिलिप्पियों 2 पद 8–11, *"और मनु य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रे ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।"*

ौतान ने कहा,"यह मत कहो! मैं इन ाब्दों का सामना नहीं कर सकता! ऐसा नहीं कहें!" मैंने सोचा *क्या प्रतिक्रिया है!* अतः मैंने कहा, ''यीशु के नाम पर हर घुटना टिकेगा, चाहे स्वर्ग पर हो चाहे पृथ्वी पर हो, चाहे पृथ्वी के भीतर हो।" "ऐसा नहीं कहे! मैं इन ाब्दों का सामना नहीं कर सकता यह ना कहें यह ना कहे उसने चिल्लाया। मैंने सोचा, *यह ौतान लड़की के भीतर बेचैन हो रहा था और मैं मात्र परमेश्वर के वचन को पढ़ रहा था।* अतः मैंने उसे फिर से पढ़ा, *"और मनु य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रे ठ है। जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर*

घुटना टेकें।” एक बार फिर यही प्रक्रिया हुई; “यह नहीं कहे इसका सामना मैं नहीं कर सकता!’’ फिर ैतान ने उस बच्ची को उनके कान से पकड़ा और उसने कहा,“ऐसा मत कहो, मैं इसका सामना नहीं कर सकता! ऐसा मत कहो!” ैतान ने उस लड़की को मेरे सामने पटक दिया, और वह यीशु के नाम पर घुटना टेकने लगी। और मैंने कहा,“कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।”

इसके कुछ क्षण पहले, ैतान का मुझ पर अधिकार और सामर्थ थी। मैंने सोचा कि वह मुझे बेंत से मारेगा, मारेगा और वहाँ से मुझे फेंक देगा मैं नहीं जानता! मैं मात्र यह जानता था कि बाइबल में सामर्थ है, और मैंने उसे खोला और पढ़ने लगा। बाइबल इफिसियों 6:17 में कहती है, *“और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।* ’’ आप देख सकते है कि एक विध्वंसकारी हथियार है जो कि एक तलवार के समान है जो ात्रु को काटेगी और उसे चोट पहुँचायेगी। आत्मा की तलवार है जो परमेश्वर का वचन है। क्या आपको याद है जब यीशु मसीह की परीक्षा हुई थी? ैतान उसके पास आया और कहा, *“हे ैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर”* (मत्ती 4:10)। फिर बार बार ैतान ने उसकी परीक्षा ली और कहा, “लिखा है,... ैतान लिखा है।” और फिर उसने परमेश्वर के वचन का उद्धरण दिया। उसने वचन की तलवार का उपयोग किया, और ैतान उसे छोडकर काफी लम्बें समय तक के लिये चला गया।

 ैतान को हराने का एक मात्र हथियार जो हमारे पास है, वह है आत्मा की तलवार, जो कि परमेश्वर का वचन है। क्या आप जानते हैं कि मैंने इससे क्या सीखा? हर बार जब मैं परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने बैठता, मैं सोचता कि मैं कितना भूखा हूँ और मैं खाने के लिये कुछ खोजने के लिये जाता हूँ, या फिर मैं उन चीजों के वि ाय में सोचता जो उस दिन मैंने नहीं किया। मैं जानता हूँ कि जो लोग इस शि यता की कक्षा में आये हैं उनके पास कक्षा में ना आने के कई बहाने होंगे। मैंने अन्ततः खोज लिया कि ऐसा क्यों है। बाइबल में ऐसा कुछ है जो परमेश्वर हमे बताना चाहता है, और ैतान नहीं चाहता की हम जानें। अतः हर बार जब आप परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने या शि यता की कक्षा में आते हैं, तब परमेश्वर के वचन में ऐसा कुछ होता है, जो ैतान नहीं चाहता कि आप जाने, वह नहीं चाहता कि आप उस परमेश्वर को जाने जो कि इस वचन के पीछे है।

अंधकार का राज्य है, और परमेश्वर के प्रिय पुत्रों का राज्य है। कुलुस्सियों 1:13 में पौलुस कहता है कि, *"उसी ने हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया।"* आप किस राज्य में है? एक राज्य वह होता है जिसमें किसी का राज्य और ासन हो। यीशु मसीह एक राजा है। क्या कभी आपने अपना जीवन उसे दिया है? क्या आप आज उसका अनुसरण कर रहे हैं, या फिर आप अपने जीवन में अन्य चीजों को प्राथमिकता दे रहे हैं? यीशु ने इसे लूका 6:46 में कहा, *"जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे हे प्रभु हे प्रभु कहते हो?"* वह आपके जीवन में सर्वश्रे ठ स्थान, प्रथम स्थान रखना चाहता है। आपके जीवन का वह स्थान जहाँ वह राज्य करता है। इसका कारण यह है कि उस सर्वश्रे ठ स्थान पर दुश्मन कब्जा करना चाहता है। यीशु की ओर अपने सारे हृदय के साथ आज मुड़े और यह जान लें कि एक दुश्मन है। उसका नाम ैतान है और उसके पास ैतानी ाक्तियाँ है। पर बाइबल कहती है कि हमारा उस पर अधिकार है।

यीशु मसीह ने मत्ती 10:8 में कहा, *"बीमारों को चंगा करो; मरे हुओं को जिलाओं: कोढ़ियों को ुद्ध करो: दु टात्माओं को निकालो: तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो।"* राज्य के सुसमाचार का प्रचार करों और जब आप जाते हैं, आपके पास दुश्मन पर अधिकार होगा। परमेश्वर के पास आपके जीवन के लिये जो कुछ है उसे ैतान को ना लेने दें। यीशु मसीह को आपके जीवन का प्रभु होने दें आप ऐसा कर कभी नहीं पछतायेंगे।

शिष्यता के प्रश्न

1. इफिसियों 6:12 पढ़ें। ैतानी ाक्तियों के साथ हमारे आत्मिक युद्ध को यह पद किस प्रकार वर्णित करता है?

2. मरकूस 16:17 पढ़ें, यह पद विश्वासी के अधिकार के वि ाय में क्या शिक्षा देता है?

3. याकूब 4:7 पढ़ें, ैतान से ग्रस्त छुटकारा पाने के लिये एक व्यक्ति को क्या करना चाहिए?

4. याकूब 1:14 पढ़ें, ैतान हमें किस प्रकार चीजो को भ्रमित कर के दिखाता है, ताकि हम दु ट चीजों को चाहने वाली चीजों के रूप में देखे?

5. रोमियों 6:13 पढ़ें, यदि एक व्यक्ति अपने आप को मसीह चीजों से भरता है, ैतान गड़बड़ा जायेगा और अपने आप ही चला जायेगा। यह पद हमें क्या करने को कहता है?

6. रोमियों 13:14 पढ़ें, ैतान ारीर के कामों के द्वारा पो ाण पाते हैं, अतः परमेश्वर के प्रेम और ाुद्धता के मार्ग पर चल कर उन्हें भूखा मार दें। हमें ारीर के लिये कोई ____________________ नहीं रखना है।

7. लूका 10:17–19 पढें, यीशु ैतान को निकालने के लिये उससे प्रार्थना करने को नहीं कहता पर वह हमें अधिकार देता है। यह पद कहता है कि हमें उस पर अधिकार और शक्ति है।

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

इफ़िसियों 6:12 – *"क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दु टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है।"*

मरकुस 16:17–18 – *"17 और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दु टात्माओं को निकालेंगे। 18 नई नई भा ाा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उन की कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे। ''*

याकूब 4:7 – *"इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओं; और ैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।"*

याकूब 1:14 – *''परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिला ाा से खिंचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है। ''*

रोमियों 6:13 – *"और ना अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपों, पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपों, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपों।"*

रोमियों 13:14 – *"बरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और ारीर के अभिला ाों को पूरा करने का उपाय न करो।"*

लूका 10: 17–19 – *"17 वे सत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, हे प्रभु तेरे नाम से दु टात्मा भी हमारे वश में है। 18 उस ने उन से कहा; मैं ैतान को बिजली की नाई स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था। 19 देखो, मैं ने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और त्रु की सारी सामर्थ का अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी ।"*

उत्तर निर्देशिका

1. इफिसियों 6:12 पढ़ें। ैतानी क्तियों के साथ हमारे आत्मिक युद्ध को यह पद किस प्रकार वर्णित करता है?

   इसे मल्लयुद्ध कहकर वर्णित करता है।

2. मरकुस 16:17 पढ़ें। यह पद विश्वासी के अधिकार के वि य में क्या शिक्षा देता है?

   हमें यीशु मसीह के नाम में शैतान को निकालने का अधिकार है।

3. याकूब 4:7 पढ़ें ैतान से ग्रस्त छुटकारा पाने के लिये एक व्यक्ति को क्या करना चाहिए?

   परमेश्वर के आधीन हो जाना चाहिए; और शैतान का साम्हना करना चाहिए।

4. याकूब 1:14 पढ़ें ैतान हमें किस प्रकार चीजों को भ्रमित कर के दिखाता है ताकि हम दु ट चीजों को चाहने वाली चीजों के रूप में देखें?

वह हमारी अभिलाषा के साथ कार्य करता है (ताकी बुरी चीजों को चाहने वाली चीजों के रूप में दिखाये)।

5. रोमियों 6:13 पढ़ें यदि एक व्यक्ति अपने आप को मसीह चीजों से भरता है, ैतान गड़बड़ा जायेगा और अपने आप ही चला जायेगा। यह पद हमें क्या करने को कहता हे?

अपने आप को पाप को ना सौंपे पर परमेश्वर को सौंपे, अपने अंगो को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपों।

6. रोमियों 13:14 पढ़ें ैतान ारीर के कामों के द्वारा पो ाण पाते हैं, अतः परमेश्वर के प्रेम और ुद्धता के मार्ग पर चल कर उन्हें भूखा मार दें। हमें ारीर के लिये कोई ________________ नहीं रखना है।

प्रावधान

7. लूका 10:17–19 पढ़ें यीशु ैतान को निकालने के लिये उससे प्रार्थना करने को नहीं कहता पर वह हमें अधिकार देता है। यह पद कहता है कि ______________________________

हमें शत्रु की सारी सामर्थ का अधिकार दिया गया है।

द्वितीय स्तर

अध्याय ६

विश्वासी का अधिकार

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

आज की चर्चा में मैं उस अधिकार के बारे मे चर्चा करना चाहूँगा जो परमेश्वर ने हमें एक विश्वासी के रूप में दी है। इस बात पर चर्चा करने के लिए न सिर्फ हमें उस अधिकार को देखना होगा जो हमारे पास हैं, पर ौतान के अधिकार को भी देखना होगा। उसे बीच से हटा दिया गया है। मसीहियों को ऐसा विश्वास करने के लिये प्रेरित किया गया है कि मानों हम एक जीवित प्राणी से युद्ध कर रहे हैं जिसके पास हम से ज्यादा ताकत है। और हम उसका सामना बड़ी मुश्किल से कर पा रहे हैं। पवित्रशास्त्र इसकी शिक्षा नहीं देता है। वह इफिसियों 6:12 में कहता है, *"क्योकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्ध ाकार के हाकिमों से, और उस दु टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है।"* अतः ौतान एक तात्विक है; वह वास्तव में विद्यमान हैं। ौतान का प्रधानों और अधि ाकारियों पर अधिकार है। जिसका सामना हम कर रहे हैं। पर इसके ठीक एक पद पहले वह कहता है, कि हमें ौतान की युक्तियों का साम्हना करना होगा। ौतान के पास हमारे विरूद्ध जो एकमात्र ाक्ति है वह है धोखा देना। उसके पास हम पर विजय पाने की सामर्थ नहीं है।

उत्पत्ति 3 में हम देखते हैं कि जब आदम और हव्वा के साम्हने पहली परीक्षा आई तब ौतान उनके साम्हने कोई अत्याधिक ाक्तिशाली रूप में नहीं आया उदाहरण के लिये मैमथ या हाथी के रूप में नहीं, कि वह आदम के सिर पर अपना पाँव रखे, उसे ध ामकाते हुये कहे "मेरी सेवा कर अन्यथा," उसने साँप का रूप धरा, परमेश्वर द्वारा सृजी गई सबसे सूक्ष्म बारीक जीव का रूप धरा। ''जो की कुशाग्र, चपल, और होशियार अर्थ भी रखता है।'' ौतान साँप का रूप धर कर इसलिये आया क्योंकि उसके पास आदम और हव्वा को कुछ करने के लिये दबाव डालने के लिये कोई ाक्ति नहीं थी। वह मात्र धोखा दे सकता था। उसने परमेश्वर के गुण और स्वाभाव का विरोध कर उसकी यह कहते हुये आलोचना की है कि ''परमेश्वर आपसे प्रेम नहीं करता वह आपसे बहुत सी

चीजें छुपा रहा है।" परमेश्वर के विरूध पाप करने के लिये आदम और हव्वा को उकसाने के लिये उसने धोखे का इस्तेमाल किया। उन्हीं के पास सारा अधिकार था, और जिस कारण ौतान को ऐसा करना पड़ा क्योंकि कि उसके पास परमेश्वर के विरूध जाने की सामर्थ नहीं थी।

बहुत सारी बातें हैं जिस पर विचार करने के लिये मेरे पास समय नहीं है, परन्तु एक बात जिसे मैं सामने लाना चाहूँगा, वह विश्वासियों के अधिकार के संबंध में है, आपको यह जान लेना चाहिए कि ौतान के पास आपके ऊपर जरा भी अधिकार नहीं है। वह हारा हुआ शत्रु है। उसके पास सिर्फ इसी की ाक्ति है, कि वह आपके सामने झूठ और धोखे के साथ आये। यदि आपका जीवन न ट होता है तो आप कह सकते हैं कि "शैतान ही है जो मुझ पर प्रहार कर रहा है'', पर आप ही हैं जो उसे सब प्रकार के हथियार मुहैया करा रहे हैं। आप ही को उसके झूठ और धोखे का प्रतिउत्तर देना है। यदि आप ौतान का साम्हना करते हैं, तो उसके पास आपके भीतर प्रवेश करने के लिये रास्ता और ाक्ति नहीं होगी। 2 कुरिन्थियों 10:3–5 कहता है, *"क्योंकि यद्यपि हम ारीर में चलते फिरते हैं, तौभी ारीर के अनुसार नहीं लड़ते। क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार ाारीरिक नहीं पर गढ़ों को ढ़ा देने के लिये परमेश्वर के द्व ारा सामर्थी है। सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है,खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।"* पवित्रशास्त्र आप के लड़ाई के हथियार के वि ाय में बात कर रहा है। हर हथियार जिसका उल्लेख किया गया है, उसका संदर्भ आपके मन और विचार से है। धोखा देने के माध्यम के अलावा आपके साथ ौतान कुछ भी नहीं कर सकता।"

मैं ाीघ्र ही कुछ बातों को प्रस्तुत करना चाहुंगा। प्रारंभ में परमेश्वर, को सारा अधिकार दिया गया था। सारा सामर्थ और अधिकार को परमेश्वर की ओर से आना था क्योंकि वही है जिसके पास अपने आप में सामर्थ है। बाकी हर चीज उसी के द्वारा है। जब उसने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की उसके पास सारा सामर्थ और अधिकार था। फिर उत्पत्ति 1:26 में जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा की सृ ट की, उसने कहा, *"फिर परमेश्वर ने कहा हम मनु य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।"* इसे भजन संहिता 115:16 के साथ रखे जो कहता है, *"स्वर्ग तो यहोवा का*

हैं, परन्तु पृथ्वी उस ने मनु यों को दी है।" एक सृजनहार होने के नाते परमेश्वर के पास सारा अधिकार है, पर उसने यह अधिकार पृथ्वी पर ारीरिक मनु यों को दिया। ैतान को कभी भी पृथ्वी पर ासन करने के लिये अधिकार और सामर्थ नहीं दिया गया। मनु य से पाप कराने के धोखे के द्वारा उसने हथिया लिया। परमेश्वर ने यह सामर्थ मनु य जाति को दी थी, और जब मनु य का पतन हुआ, तब उसने परमेश्वर द्वारा दिया गया सारा अधिकार और सार्मथ ैतान को दे दिया। परमेश्वर द्वारा ैतान को यह अधिकार कभी नहीं दिया गया था कि वह मनु य का ो ण करे या पृथ्वी पर ासन करे।

पवित्र ास्त्र कहता है कि ैतान संसार का ईश्वर है, यह इसलिये नहीं की परमेश्वर ने उसे संसार का ईश्वर बना दिया है। परमेश्वर ने मनु य जाति को संसार के ऊपर नहीं रखा। उसने मनु य जाति को इस पृथ्वी पर अधिकार दिया। जिस कारण ैतान मनु य जाति का दमन कर सके, उस पर आधिपत्य कर सका या उसके जीवन में समस्याएं ला सका वह यह है, कि उसने परमेश्वर द्वारा प्रदत्त अधिकार को ैतान के हाथों में सौप दिया है। इसने परमेश्वर के सामने एक बड़ी समस्या खड़ी कर दी, क्योंकि वह एक आत्मा था, और उसने इस पृथ्वी पर ारीरिक मनु य को अधिकार दे दिया था। केवल वे लोग जिनके पास ारीर था, उन्हीं के पास इस पृथ्वी पर ासन करने और उसे प्रभावित करने का अधिकार था। ैतान को हमारे पास आना था और हमसे अनुरोध करना था कि हम उसे अधिकार दें। इसी वजह से वह एक ारीर में वास करना चाहता है। पवित्र ास्त्र में ैतान को एक ारीर में वास करने की आवश्यकता थी क्योंकि ैतान को कार्य करने के लिये मानव ारीर की आवश्यकता पड़ती है। चूंकि परमेश्वर आत्मा था और उसने ारीरिक मानव को अधिकार दिया था अतः इस रीति से अब उसके हाथ बंध गये थे। यह इसलिये नहीं था, कि परमेश्वर के पास अधिकार और सामर्थ नहीं था, पर उसकी नि ठा के कारण यह था। उसने ारीरिक मनु य को अधिकार दिया था, और अपने वचन पर अडिग रहने के कारण वह उसे वापिस लेकर यह नहीं कह सकता था ''यह वह तरीका नहीं जैसा मैं चाहता हूँ, समय हो गया, रूक जाओं हम इसे खत्म कर देना चाहते हैं।'' परमेश्वर अपने ही वचनों से बंधा था। पूरे इतिहास वह ऐसे लोगों की खोज में था जो उसका अनुसरण करें पर समस्या यह थी कि सारी मानव जाति भ्र ट थी और ैतान के हवाले अपने आप को कर दिया था। अतः उसे क्या करना था?

अन्ततः परमेश्वर ने क्या किया, कि वह इस पृथ्वी पर आये और मनु य बने। यह बड़ा ही अदभुत है, जब आप इसे समझते हैं, क्योकि अब ैतान बहुत बड़ी मुसीबत में

पड़ गया था। वह मनु य जाति की ाक्ति का उपयोग कर रहा था, इस सब समस्या को निपटाने के लिये परमेश्वर सीधा हस्तक्षेप नहीं कर सकता था। क्योंकि मनु य, स्वेच्छा से वैधानिक रीति से अपना सारा अधिकार ौतान को दे दिया था। ौतान जो कुछ उसने किया वह गलत था पर मनु य ने उसे अपने जीवन में कार्य करने की ाक्ति और वह अधिकार प्रदान किया जो उसका था। और अब परमेश्वर आया और अब वह आत्मा रूप में नहीं था, पर वह ारीरिक रूप में था। इसने ौतान को बुरी स्थिति में डाल दिया, क्योंकि परमेश्वर का न सिर्फ स्वर्ग में अधिकार था पर मनु य बनने के कारण पृथ्वी पर भी उसका अधिकार हो गया था। यीशु मसीह ने यूहन्ना 5:26–27, *"क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता हैं, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखें। बरन उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिये कि वह मनु य का पुत्र है।''* वह अपने ारीरिक देह की ओर संकेत कर रहा था।

यीशु ने आकर परमेश्वर द्वारा दिये गये अधिकार को उपयोग किया। ौतान ने उसकी परीक्षा ली, और यीशु मसीह उसके अधीन कभी नहीं हुआ। यीशु मसीह के साथ ौतान अपना हर युद्ध हार गया। फिर यीशु मसीह ने हमारे पापों को लिया उसके लिये मरा, अधोलोक में उतरा और उसने फिर मत्ती 28:18 में कहा *"स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।"* उसने उस अधिकार को फिर से वापिस जीत लिया जो परमेश्वर ने मनु य जाति को दी थी, जिसका उसने दुरूपयोग किया, और परमेश्वर के देह रूप में, और जो यीशु के पास स्वर्ग और पृथ्वी पर पूरा अधिकार था। अगले पद में वह कहता है, "अब तुम जाओ, और यह सब करो।" दरअसल वह यह कह रहा था कि अब मेरे पास स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है, और मैं इसे आपके साथ बांट रहा हूँ। तथापि इस वक्त परमेश्वर द्वारा दिये गये अधिकार में एक विशि ट फर्क है, जो परमेश्वर ने हमें विश्वासी के रूप में दिया है। यह हमारे और प्रभु यीशु मसीह के साथ संयुक्त अधिकार है। यह हमें पूर्ण रीति से नहीं दिया गया जैसे वह आदम और हव्वा को दिया गया था। वे अधिकार वापिस दे सकते थे, ौतान को अनुमति दे सकते थे, कि वह उनका दमन करें, और मूल रूप से आशाहीन हो जाये, पर आज हमारा अधिकार यीशु मसीह के साथ बाँटा गया है। यह मानों संयुक्त बैंक खाते के समान है जिसमें दोनों खातेदारों के हस्ताक्षर की आवश्यकता है ताकि वह चेक की रकम निकाल सकें। हमारा अधिकार प्रभु यीशु मसीह के साथ बांटा गया है और उसका अधिकार कलीसिया के साथ बांटा गया है।

यद्यपि हम असफल हो जायेंगे, परमेश्वर ैतान को फिर से वापिस यह अधिकार नहीं देगा। ैतान ाक्तिहीन है। वह जिसके लिये आपको धोखा दें सके या वह जिसके लिये आप स्वेच्छा से अपने आप को परीक्षा में पड़ने के लिये दे दें, के अलावा उसके पास आपके साथ कुछ भी करने की योग्यता नहीं है। आप उसे अपने जीवन में अधिकार दे सकते हैं, आप व्यक्तिगत रूप से उसकी वजह से पीड़ा सहन कर सकते हैं पर, परमेश्वर द्वारा जो अधिकार मनु य को दिया गया था वह फिर से ैतान को हस्तांतरित नहीं होगा। यह हमारे और प्रभु के बीच में बांटा गया है। आपको यह जानने की आवश्यकता है, कि आपके पास वह अधिकार और सामर्थ है। ैतान विचारों के साथ आपसे लड़ रहा है, और आपके हथियार ऐसे हैं, कि आप इन विचारों को कैद कर सकते हैं। आप यह पहचान सकते हैं, कि ैतान के लिये यह गलत है कि वह आपको भौतिक रूप से दबाये और यह खोजे की पवित्रशास्त्र चंगाई के बारे मे क्या कहता है। यूहन्ना 8:32 में कहता है, *"और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र कर देगा।"* आप ही के पास सामर्थ और अधिकार है। परमेश्वर ने आपको दिया है, एक मात्र चीज जो आपको उसका उपयोग करने से रोकती है वह यह है, कि आपने अपने विचारों पर नियंत्रण नहीं पाया है। आपने इन आत्मिक हथियारों को अपने मन के नवीनीकरण और यह जानने के लिये उपयोग नहीं किया कि आपके पास क्या है। यह जान लेना प्रोत्साहन योग्य है कि आपके पास अधिकार और सामर्थ है।

मैं प्रार्थना करता हूँ, कि आप इसे लेंगे इस पर मनन करेंगे, और परमेश्वर आपको वह प्रकाशन देगा, कि आपको ही देखकर ैतान थरथराता है। आपको ैतान पर नहीं थरथराना चाहिए, क्योंकि आपके पास परमेश्वर द्वारा प्रदत्त सामर्थ और अधिकार है। यदि तुम ैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा (याकूब 4:7)।

शिष्यता के प्रश्न

1. उत्पत्ति 3:1 पढें ैतान वास्तव में विद्यमान है पर उसकी असली ाक्ति सिर्फ हमें धोखा देने तक के लिये सीमित है। (साँप ैतान ने हव्वा से क्या प्रश्न करने कि कोशिश की?

2. उत्पत्ति 3:1 पढें आप क्या सोचते है ैतान ने धोखे का इस्तेमाल किया?

3. उत्पत्ति 1:26,28 पढें मनु य को उसका अधिकार किसने दिया?

4. भजन संहिता 8:4–8 पढें परमेश्वर ने मनु य का सृजन कैसे किया?

5. 2 कुरिन्थियों 4:4 पवित्र ाास्त्र का यह पद किस घटना को दर्शाता है?

6. मत्ती 4:8–9 पढ़ें। क्या यह पद इस बात को मजबूती प्रदान करते हैं?

7. मत्ती 28:18 पढ़ें यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूथान के बाद अब किसके पास स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार है?

8. मत्ती 28:18–19 पढ़ें इस पद के अनुसार किसको अधिकार दिया गया है?

9. इफिसियों 1:19 पढें परमेश्वर के सार्मथ की महानता किसके प्रति है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

उत्पत्ति 3:1 – *"यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उस ने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना?"*

उत्पत्ति 1:26 – *"फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनु य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों ओर आकाश के पक्षियों और घरेलु पशुओं और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।"*

उत्पत्ति 1:28 – *"और परमेश्वर ने उनको आशी ा दी: और उन से कहा, फूलो–फलो, और पृथ्वी में भर जाओं, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।"*

भजन संहिता 8:4–8 –*"4 तो फिर मनु य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले? 5 क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है। 6 तू ने उसके हाथों के कार्यों पर प्रभुत्ता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है। 7 सब भेड़–बकरी और गाय–बैल और जितने वनपशु हैं, 8 आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियां, और जितने–जीवजन्तु समुद्रों में चलते फिरते हैं।"*

2 कुरिन्थियों 4:4 – *"और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।"*

मत्ती 4:8–9 – *"8 फिर ैतान उसे एक बहुत ऊंचें पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका विभव दिखाकर। 9 उस से कहा, कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।*

मत्ती 28:18 –*''यीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।''*

मत्ती 28:19 – *''इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। ''*

इफ़िसियों 1:19 – *"और उस की सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उसकी ाक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार।"*

उत्तर निर्देशिका

1. उत्पत्ति 3:1 पढें ैतान वास्तव में विद्यमान है पर उसकी असली ाक्ति सिर्फ हमें धोखा देने तक के लिये सीमित है। साँप (ैतान) ने हव्वा से क्या प्रश्न करने की कोशिश की?

क्या सच है, कि (परमेश्वर ने कहा?)

2. उत्पत्ति 3:1 पढें आप क्या सोचते है ौतान ने धोखे का इस्तेमाल किया?

वह उन पर दबाव डालकर आज्ञा उल्लंघन नही करा सकता था। अतः उसने अपने अधिकार को त्याग देने के लिये उन्हे धोखा दिया।

3. उत्पत्ति 1:26,28 पढें मनु य को उसका अधिकार किसने दिया?

परमेश्वर ने।

4. भजन संहिता 8:4–8 पढें परमेश्वर ने मनु य का सृजन कैसे किया?

उसके हाथों के कार्यों पर प्रभुता के साथ।

5. 2 कुरिन्थियों 4:4 पवित्र ास्त्र का यह पद किस घटना को दर्शाता है?

शैतान ने मनुष्य का अधिकार ले लिया और संसार (व्यवस्था या युग का) का ईश्वर बन गया।

6. मत्ती 4:8–9 पढ़ें क्या यह पद इस बात को मजबूती प्रदान करते हैं?

हाँ।

7. मत्ती 28:18 पढ़ें यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूथान के बाद अब किसके पास स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार है?

यीशु मसीह के पास।

8. मत्ती 28:18–19 पढ़ें इस पद के अनुसार किसको अधिकार दिया गया है?

विश्वासी को।

9. इफिसियों 1:19 पढें परमेश्वर के सामर्थ की महानता किसके प्रति है?

हमारे प्रति जो विश्वास करते हैं।

द्वितीय स्तर

अध्याय ७

प्रायश्चित्त में चंगाई

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

आज का हमारा सत्र चंगाई के बारे में है, और इस वि ाय के बारे में है जो यीशु मसीह ने हमारे लिये खरीदा है। मरकूस 2; लूका 5 में यीशु मसीह एक भीड़ भाड़ वाले घर में प्रचार कर रहा था, कि लोगों को एक लकवे से ग्रस्त व्यक्ति को उस घर की छत से उस स्थान पर उतारना पड़ा जहाँ यीशु बैठा था,और यीशु मसीह ने चमत्कारी रूप से उसे चंगा किया। मत्ती 8:14–16 यीशु मसीह द्वारा लोगों को चंगा करने के पश्चात बाइबल कहती है, *"14. और यीशु पतरस के घर में आकर उस की सास को ज्वर में पड़ी देखा। 15 उस ने उसका हाथ छुआ और उसका ज्वर उतर गया; और वह उठकर उसकी सेवा करने लगी 16 जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिन में दु टात्माएं थीं ओर उस ने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया।''* फिर पद 17 ऐसा होने का कारण बताता है: *"ताकि जो वचन यशायाह भवि यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि उस ने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।"* इस अवसर पर यीशु कई लोगों को चंगा कर रहा था। वह विशे ा रूप से पिछला संदर्भ देते हुये यशायाह 53:3–5 का उल्लेख करता है।*''वह तुच्छ जाना जाता और मनु य का त्यागा हुआ था;* (यह प्रभु यीशु के वि ाय में भवि यवाणी है) *वह दु:खी पुरू ा था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हमने उसका मूल्य ना जाना। निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया: हमारी ही ाान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाए।"* (को टक में दिये गये वाक्यांश मेरे है।)

यह पवित्र ाास्त्र के बड़े ही ाक्तिशाली पद हैं। कुछ लोग इसे लेकर कहेंगे,"जरा ठहरे यह तो आत्मिक दृ टकोण में बात कर रहा है, जिस कलीसिया मैं पला बढ़ा उसमें

ाारीरिक चंगाई के वि ाय में विश्वास नहीं किया जाता था। वे इस प्रकार के वचन को लेंगे और उसे आत्मिक कर देते या इसका यह कहने के लिये उपयोग करते, कि हम भावनात्मक रूप से चोट खाये हुये हैं, और जब हम अपना जीवन प्रभु यीशु को समर्पित कर देते हैं, वह हमें चंगाई देता है। पर यदि हम इस पद को उस पद के साथ रखें जिससे हम ने ाुरूआत की थी। यह हमेशा के लिए इस पवित्रशास्त्र को लागू करना समाप्त कर देता है। यह सच है कि यीशु मसीह आपको भावनात्मक रूप से और अन्य रूप से चंगाई देगा, पर यह पद आपके ारीर की भौतिक चंगाई के वि ाय में चर्चा कर रहा है। हम यह देखते हैं क्योंकि मत्ती 8:17 कहता है कि ये चंगाईयां जो हुई वह यशायाह भवि यद्वक्ता की भवि यवाणी का पूर्ण होना था। हमने अभी अभी पढ़ा, *"उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए हैं"* वह यह कहता हे कि यह इस बात का पूर्ण होना है कि उसने स्वयं हमारे रोगों को सह लिया और हमारे दु:खों को उठा लिया। यह भौतिक बीमारी चोट और दर्द के वि ाय में चर्चा करता है। यीशु मसीह ने लोगों को ारीरिक रूप से चंगा किया ताकि पवित्रशास्त्र का वह वचन पूरा हो सके कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो गये।

बाइबल 1 पतरस 2:24 में कहना जारी रखती है, *"वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।''* यह भूतकाल में है। यीशु आया जो काम वह करने के लिये आया था, उसमें से एक भाग आपको ाारीरिक चंगाई देना था। यह महत्वपूर्ण है, पापों की क्षमा एक द्वार के समान है, जो सब चीजों में प्रवेश करने के लिये है। वह आपके सिर्फ पापों को क्षमा करने के लिये नहीं आया वह आपको ाारीरिक चंगाई देने के लिये आया। ग्रीक में उद्धार ाब्द के लिये नये नियम में *सोजों* ाब्द का इस्तेमाल किया गया है। एक ऐसा ाब्द जो अपने आप में कई चीजों को समेटे हुये है। पर यदि उसको आप देखें तो उसका अनुवाद "चंगाई हुआ है।" याकूब 5:14 कहता है, *"यदि तुम में से कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिये प्रार्थना करें। और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उस को उठाकर खड़ा करेगा; और यदि उस ने पाप भी किए हों ,तो उन की भी क्षमा हो जाएगी।"* उद्धार के लिये यूनानी भा ाा में ग्रीक ाब्द ''सोजों'' है, और यह बीमाारों के भौतिक रूप से चंगाई की बात कर रहा है। वही

ाब्द जो नये नियम में पापों की क्षमा हजारों बार अनुवाद हुआ है वह चंगाई के रूप में अनुवाद किया गया है।

मत्ती 10 मे जब यीशु मसीह ने अपने चेलों को भेजा, उसने जो आज्ञा दी वह थी कि बीमारों को चंगा करो, कोढ़ियों को ुद्ध करें, मृतकों को जिलाये, दु टात्माओं को निकाले सुसमाचार का प्रचार करें। एक ही सांस में जैसा उसने सुसमाचार का प्रचार करने को कहा उसने यह भी कहा कि बीमारों को चंगा करो, कोढ़ियों को ुद्ध करो, दु टात्मा को निकालो। चंगाई भी पापों की क्षमा के समान उसी कार्य का एक भाग है। जो यीशु मसीह आपके जीवन में पूरा करने के लिये आया।

इसी प्रकार से आप ऐसा कभी नही सोच सकते, कि प्रभु आपको शिक्षा देने के लिये चाहेगा कि आप एक पाप करें, ताकि आप उस पाप के द्वारा कुछ सीख सकें। वह नहीं चाहेगा कि आप बीमारी में रहें परमेश्वर आपके जीवन में बीमारी का कर्त्ता नहीं है। कभी कभी लोग ऐसा कहते हैं, "यह बीमारी परमेश्वर की ओर से एक आशी ा है, क्योंकि इसने मुझे उसकी ओर मोड़ा।" यह सत्य है कि परीक्षा की घड़ी में लोग ईश्वर की ओर मुड़ते हैं, पर वह आपको शिक्षा देने के लिये बीमारी को नहीं भेजता। वह अब कभी नहीं करेगा कि आप के ऊपर पाप ड़ाले। यदि आप पाप में जीते हैं? तो क्या आप इससे कभी कुछ सीख सकते हैं? यदि आप व्याभिचार या समलैंगिकता का जीवन जीते हैं और आपको कोई रोग हो जाता है, तब क्या आप सीख सकते हैं कि आपकी जीवन ैली गलत थी। हाँ निश्चय ही आप सीख सकते हैं। पर परमेश्वर नहीं चाहता कि आप इस प्रकार की जीवन ैली जीयें। परमेश्वर ने आपके जीवन में पाप नहीं डाला, पर इसके बावजूद आप पाप से सीख सकते हैं। आप अपने सिर को दीवार से टकरा कर यह सीख सकते हैं कि इसे नहीं करना चाहिए, पर आप ारीरिक रूप से अपने सर को दीवार से टकराये बिना भी यह सीख सकते हैं। आप हमेशा हर चीज को ठोकर खाकर नहीं सीख सकते। बीमारी को परमेश्वर आपके जीवन में नहीं डालता कि आपको दीन बनाये या आपको कोई शिक्षा दें। यीशु मसीह आपको आपके पापों से क्षमा करने के लिये मरा साथ ही, आपकी बीमारी को चंगा करने के लिये मरा। उसने आपकी बीमारी को अपने ऊपर लिया, और उसके कोड़े खाने से आप चंगे हुये।

परमेश्वर की आलौकिक दिव्य चंगाई हम सब के लिये उपलब्ध है, यह उस प्रायश्चित्त का भाग है जिसे यीशु देने के लिये मरा। यदि आप अपनी चंगाई नहीं प्राप्त कर रहे हैं तो परमेश्वर आप से परेशान नहीं है। परमेश्वर से प्रेम करने के लिए आपको चंगा होने कि आवश्यकता नहीं है। आप परमेश्वर से सारे हृदय से प्रेम करते हुये, चंगाई पर भले ही विश्वास ना करने के बावजूद भी आप स्वर्ग जा सकते हैं। सम्भवतः आप और भी जल्दी पहुँच जायेंगे क्योंकि आप स्वस्थता में चलना नहीं जानते। पर आप जानते हैं कि आपके लिये क्या उपलब्ध है। यीशु मसीह इसे उत्पन्न करने के लिये मरा। परमेश्वर आपको भला चंगा चाहता है।

शिष्यता के प्रश्न

1. मत्ती 8:16–17 पढ़ें यीशु मसीह ने कितने लोगों को चंगा किया?

2. यशायाह 53:3–5 पढ़ें यह पद किस प्रकार की चंगाई के वि ाय में चर्चा कर रहे हैं?

3. मत्ती 8:17 पढ़ें हमारी दुर्बलताओं और बीमारियों का क्या हुआ?

4. 1 पतरस 2:24 यह पद कौन सी दो बातें बताता है जो यीशु मसीह ने हमारे लिये किया है?

5. याकूब 5:14–15 पढ़ें पद 15 में जो ाब्द बचाया ग्रीक ाब्द सोजों है जिसका की अनुवाद “छुडाना, सुरक्षा देना, चंगा करना, सुरक्षित रखना, पूर्ण होना है।” यह वही पद है, जिसे बाइबल उद्धार का संदर्भ देती है, इस पद के अनुसार और ‘‘उद्धार’’ की यूनानी परिभा ा के अनुसार ‘‘उद्धार’’ में क्या ामिल है?

6. मत्ती 10:7 जब यीशु मसीह ने अपने चेलों को भेजा तो उसने क्या कहने को कहा?

7. मत्ती 10:8 यीशु मसीह ने उनसे क्या करने को कहा?

8. मरकूस 16:15 पढ़ें यीशु मसीह ने अपने चेलों से क्या करने को कहा?

9. मरकूस 16:16 पढ़ें जो सुसमाचार का प्रतिउत्तर देते है वो क्या करेंगे?

10. मरकूस 16:17 पढ़ें विश्वास करने वालों के लिये क्या चिन्ह होंगे?

11. मरकूस 16:17 पढ़ें विश्वासियों के लिये और कौन कौन से चिन्ह होंगे?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

मत्ती 8:16–17 – *"16 जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिन में दु टात्माएं थीं ओर उस ने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया । 17 ताकि जो वचन यशायाह भवि यद्वक्ता के द्वारा कहा गया वह पूरा हो, कि उस ने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया ओर हमारी बीमारियों को उठा लिया।"*

यशायाह 53:3–5 – *"3 वह तुच्छ जाना जाता और मनु य का त्यागा हुआ था; वह दुःखी पुरू । था, और रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हम ने उसका मूल्य न जाना। 4. निश्चय उस ने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। 5 परन्तु वह हमारे ही अपराध ाों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही ाान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाए।"*

मत्ती 8:17 – *"ताकि जो वचन यशायाह भवि यद्वक्ता के द्वारा कहा गया वह पूरा हो, कि उस ने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।"*

1 पतरस 2:24 – *"वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया ,जिस से हम पापों के लिये मर कर के धार्मिकता के लिए जीवन बिताएंः उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।"*

याकूब 5:14–15 – *"14 यदि तुम में कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिये प्रार्थना करें। 15 और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उस को उठाकर खड़ा करेगा; और यदि उस ने पाप भी किए हों, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी।"*

मत्ती 10:7 – *"और चलते चलते प्रचार कर कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।"*

मत्ती 10:8 – *"बीमारों को चंगा करोः मरे हुओं को जिलाओः कोढ़ियों को ुद्ध करोः दु टात्माओं को निकालोः तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो।"*

मरकुस 16:15 – *"और उस ने उन से कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृ ट के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।"*

मरकुस 16:16 – *"जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दो ी ठहराया जाएगा।"*

मरकुस 16:17 – *"और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दु टात्माओं को निकालेंगे।"*

मरकुस 16:18 – *"नई नई भा ा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उन की कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे जो जाएंगे।"*

उत्तर निर्देशिका

1. मत्ती 8:16–17 पढ़ें यीशु मसीह ने कितने लोगो को चंगा किया?

   सब बीमारों को चंगा किया।

2. यशायाह 53:3–5 पढ़ें यह पद किस प्रकार की चंगाई के वि ाय में चर्चा कर रहे है?

सब प्रकार के रोग (जिसमे भौतिक रोग भी शामिल है)।

3. मत्ती 8:17 पढ़ें हमारी दुर्बलताओं और बीमारियों का क्या हुआ?

यीशु ने उसे उठा लिया।

4. 1 पतरस 2:24 यह पद कौन सी दो बाते बताता है जो यीशु मसीह ने हमारे लिये किया है?

उसने हमारी बीमारी को उठा लिया और हमारी चंगाई के लिये कोड़े खाये।

5. याकूब 5:14–15 पढ़ें पद 15 में जो ाब्द बचाया ग्रीक ाब्द सोजों है जिसका की अनुवाद "छुडाना, सुरक्षा देना, चंगा करना, सुरक्षित रखना, पूर्ण होना है।" यह वही पद है जिसे बाइबल उद्धार का संदर्भ देती है इस पद के अनुसार और उद्धार की यूनानी परिभा ा के अनुसार उद्धार में क्या ाामिल है?

चंगाई।

6. मत्ती 10:7 जब यीशु मसीह ने अपने चेलों को भेजा तो उसने क्या कहने को कहा?

स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।

7. मत्ती 10:8 यीशु मसीह ने उनसे क्या करने को कहा?

बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओं, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालों।

8. मरकूस 16:15 पढ़ें यीशु मसीह ने अपने चेलो से क्या करने को कहा?

तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि कें लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।

9. मरकूस 16:16 पढ़ें जो सुसमाचार का प्रतिउत्तर देते हैं वो क्या करेगे?

विश्वास करेंगे और बपतिस्मा लेंगे।

10. मरकूस 16:17 पढ़ें विश्वास करने वालों के लिये क्या चिन्ह होंगे?

दुष्टात्माओं को निकालेंगे और नई नई भाषा बोलेंगे।

11. मरकूस 16:17 पढ़ें विश्वासियों के लिये और कौन कौन से चिन्ह होंगे?

बीमारों पर हाथ रखना और उन्हे चंगे होते देखना।

द्वितीय स्तर

अध्याय ८

चंगाई में बाधा

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

हमने पिछले अध्याय में इस तथ्य के वि ाय में चर्चा की, कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि आप चंगे हो जायें, चंगाई छुटकारे का एक भाग है। और बहुत कुछ कहा जा सकता है, क्योंकि यदि आप इसे स्वीकार भी कर लेते हैं, और इसे पवित्रशास्त्र में आपने इसे देखा है, यह अब भी बहुत सारे प्रश्न उठाता है जैसे "यदि चंगा करना परमेश्वर की इच्छा तो है सब लोग चंगे क्यों नहीं होते?" कई कारण हैं और मैं सिर्फ उनकी सतह को ही स्पर्श कर रहा हूँ। जिनकी जानकारी मुझे है। ऐसी बहुत सी जानकारी है जिसको मैं यहाँ दे नहीं पा रहा हूँ, पर यदि यह परमेश्वर की इच्छा है, कि आपको चंगा करे, मैं उस भाग को संबोधित करना चाहूँगा, कि क्यों लोग चंगे नहीं होते। इसमें से एक कारण अज्ञानता है। आप वह कार्य नहीं कर सकते जो आप नहीं जानते या समझ नहीं सकते हैं, और मेरे जीवन में निश्चित रूप से यह सत्य था।

मुझे इस प्रकार प्रशिक्षण दिया गया था, कि परमेश्वर की इच्छा स्वतः ही पूर्ण हो जाती है। और उसमें मेरा कोई अधिकार या ाक्ति नहीं होती, और मैं उसके संबंध में कुछ नहीं कह सकता। अतः अपनी अज्ञानता के कारण कई चीजें घटित हुई। मेरे पिता की मृत्यु हो गई थी, जब मैं बारह व र्ा का था, और मेरे इक्कीस व र्ा की आयु के होते होते दो या तीन लोग मेरे सामने मर चुके थे। मैं उन सभी लोगों की चंगाई के लिये प्रार्थना कर रहा था। मैंने चंगाई को प्रगट होते हुये नहीं देखा ऐसा इसलिये नहीं कि यह परमेश्वर की इच्छा है पर मेरी ओर से अज्ञानता के कारण था। अज्ञानता के कारण ही बहुत सारी बातें होती हैं, पर यह एक बहाना नहीं है। यह गुरूत्वाक र्ाण के नियम के समान है। एक व्यक्ति कहेगा ''मुझे यह नहीं पता था, कि यदि मैं दस मंजिल की एक ईमारत पर चढ़कर कूद जाउंगा इससे मैं नहीं मरूंगा।'' आपको इसे जानने की आवश्यकता नहीं ताकि व्यवस्था का पूरा प्रभाव आपके विरूध कार्य कर सके। परमेश्वर

की व्यवस्था के विरूध लोग अनजान हैं। वे नहीं जानते कि उसकी चंगाई व्यवस्था कैसे कार्य करती है, अतः अज्ञानता कई लोगों को मार रही है।

एक अन्य चीज जो हमें चंगाई प्राप्त करने से रोकती है वह है पाप। जब आप लोगों से यह कहते है, तो यह लोगों को परेशान कर देता है, क्योंकि आप जो कुछ भी कहते हैं, उसकी व्याख्या वह यह कहते हुये करते हैं कि, सब प्रकार की बीमारी हमारी ओर से किसी न किसी पाप का परिणाम है, जो कि सत्य नहीं है। यह मैं नहीं कह रहा। यूहन्ना 9 में एक ऐसा अवसर था जब यीशु मसीह मंदिर से बाहर आ रहा था, और उसके चेलों ने एक व्यक्ति की ओर इशारा किया जो कि जन्म से अंधा था। उसके चेलों ने पद 2 में कहा, *"रब्बी किसने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा?"* दूसरे ाब्दों में वह उसकी बीमारी को सीधे पाप से जोड़ना चाह रहे थे, और यह पूछ रहे थे कि यह उसका पाप था या उसके माता पिता का पाप था, जिसके कारण यह बीमारी उसके ऊपर आई। यीशु ने उत्तर दिया कि उनमें से किसी ने भी पाप नहीं किया था। यह कहने का अर्थ यह नहीं कि ना तो उसके माता पिता ने उसके पुत्र ने पाप किया, पर यह कि उनका पाप नहीं था, जिसके कारण उसके जीवन में अंधापन आया। यह कहना असत्य है कि सारी बीमारी पाप से संबंधित है। पर यह भी कहना असत्य है कि उनमें से पाप भी एक तथ्य नहीं है।

यूहन्ना 5 में एक घटना है जब यीशु मसीह बैतसदा के कुण्ड़ में था, और उसने आलौकिक रूप से एक व्यक्ति को चंगा किया। उस स्थान पर बहुत भीड़ थी, पर सिर्फ एक व्यक्ति चंगा हुआ। अध्याय का बाकी भाग बताता है, कि वह व्यक्ति यह नहीं जानता था कि किसने मुझे चंगा किया जब यहूदियों ने उससे पद 12 में पूछा, कि किसने उसे चंगा किया, *"उन्होनें उस से पूछा वह कौन मनु य है जिस ने तुझ से कहा; खाठ उठाकर चल फिर। परन्तु जो चंगा हो गया था, वह (जानता था) नहीं जानता था वह कौन है; क्योंकि उस जगह में भीड़ होने के कारण वह व्यक्ति वहां से हट गया था। इन बातों के बाद वह यीशु को मन्दिर में मिला, तब उस ने उस से कहा, देख, तू तो चंगा हो गया है; फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इस से कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।"* (को टक में दिये गये ाब्द मेरे हैं।) यीशु ने यही पर ठीक कहा कि पाप उसके जीवन में लकवे से ज्यादा बुरा और कुछ ला सकता है। उसने बीमारी के परिणाम को पाप से जोड़ा। उसने यूहन्ना 9 में कहा, किसी व्यक्ति के पाप के कारण वह व्यक्ति अंध ाा पैदा नहीं हुआ।

कुछ चीजें प्राकृतिक रूप से घटित होती हैं, पर ऐसे अवसर भी होते हैं, जब बीमारी, रोग या समस्याएं सीधे पाप का परिणाम होती हैं। इन परिस्थितियों में भी इसका यह अर्थ नहीं कि परमेश्वर यह सब चीजें हमारे लिये कर रहा है। उदाहरण के लिये एक ऐसे व्यक्ति को ले जो समलैंगिक जीवनशैली जीता है, जो कि प्राकृतिक स्वभाव से भिन्न है। मानव ारीर ऐसा जीवन जीने के लिये नहीं तैयार किया गया है। यौन रोग इसी प्रकार की जीवन ैली से आते हैं। परमेश्वर इन सब रोगों का कर्ता नहीं है। यह मात्र स्वाभाव का विरोध है, क्योंकि वह इस प्रकार जीने के लिये तैयार नहीं की गई है। उदाहरण के लिये यदि आप बाहर जाकर गलत भोजन खा लें, तो आपका ारीर इसका जवाब देगा, और यह परमेश्वर आपके साथ नहीं कर रहा है। यहाँ पर प्रकृतिक तत्व और प्रकृतिक नियम हैं। अतः यह सत्य है, कि पाप एक कारण हो सकता है, जिसके कारण लोग चंगे नहीं होते हैं।

यदि आपके जीवन में ऐसा कुछ पाप हैं, जिसे आप जानते हैं, और आप परमेश्वर पर चंगाई के लिये विश्वास करते हैं, तो आपको पाप को रोकना होगा। क्योंकि इसके द्व ारा आप ैतान को सीधा मौका दे रहे हैं, जो आपको अपने जीवन में वह पाने से रोक रहा है, जो परमेश्वर आपके जीवन में कर रहा है। रोमियों 6:16 कहता है, *"क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की तुम आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाईं सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो, चाहे पाप के जिस अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धार्मिकता है?"* इसका यह कहना नहीं है कि ैतान इस दृि ट से स्वामी बन जाता है, कि आप अपना उद्धार खो दें, और नरक चले जायें। पर इसका यह अर्थ है, कि चाहे आप मसीही हैं, या नहीं यदि आप पाप में जी रहे हैं, तो आपने ैतान को अपने जीवन मे प्रवेश करने दे दिया है। यूहन्ना 10:10 कहता है, कि चोर चोरी करने, हत्या करने, नाश करने के अलावा और किसी उद्देश्य से नहीं आता। पर यीशु मसीह इसलिये आया, कि आपको जीवन मिले। अतः आपके पास यीशु है, जो अपना जीवन और स्वास्थ्य आपके जीवन में लाना चाहता है, पर आपके पास ैतान भी है, जो आपको बीमार करने की कोशिश करता है। पाप के द्वारा आप अपने आप को ैतान के हाथो में सौंप रहे हैं। आप उसको अधिकार दे रहे हैं, और अपने जीवन में अवसर दे रहे हैं। आप प्रार्थना करके परमेश्वर से जो भी चंगाई चाहिये मांग सकते हैं, पर आपके क्रिया कलाप ैतान को अंदर आने और बीमारी लाने की अनुमति दे रहे हैं। अतः यदि आप पाप में जी रहे हैं, तो आपको इसे रोकना होगा।

मुझे यहाँ इस बात को कहने की आवश्यकता है, कि आप इतने अन्तराभिमुखी हो सकते हैं कि आप कहेंगे "मैं उस स्थान से बहुत पीछे हूँ जहाँ मुझे होना चाहिए।'' और ऐसे स्थान में पहुँच जाये जहाँ आप विश्वास करते हैं, कि परमेश्वर चंगा कर सकता है, आप यह मान लेते हैं कि वह नहीं करेगा, क्योंकि आप इसके हकदार नहीं हैं। परमेश्वर ने अभी तक अपने कार्य के लिये किसी को योग्य नहीं पाया, अतः परमेश्वर को आपके प्रदर्शन आपकी पवित्रता के आधार पर आपके जीवन में कार्य करने के लिये परमेश्वर को जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। इसे यीशु ने आपके जीवन में क्या किया, और आपका उसके प्रति विश्वास पर आधारित होना चाहिए। इसी समय आप जो कुछ कार्य करते हैं, उसे बिना रोके उसकी अवहेलना कर, अपने आप को ौतान के हवाले नहीं कर सकते हैं। आप देखेंगे कि चंगाई बड़ी आसानी से और बेहतर रीति से आयेगी, यदि आप पश्चाताप करें, और ऐसी कोई चीज करना छोड़ दें, जो ौतान को आपके जीवन में आने का रास्ता खोल देती है।

चंगाई के वि ाय में एक अन्य तथ्य है, जिसके वि ाय में कुछ लोग ज्यादा नहीं सोचते वह हैं नकारात्मकता और अविश्वास जो आपको प्रभावित कर सकती है, इसका एक श्रे ठ उदाहरण मरकुस 6 में है, जहाँ यीशु अपने गृह नगर में था, और लोग उसका आदर नहीं करते थे, क्योंकि उन्होंने उसे एक लड़के के रूप में देखा था। वे उसके माता, पिता, भाई बहन को जानते थे, और उसका उस रीति से आदर और सम्मान नहीं करते थे, जिस रीति से उसका कुछ लोग सम्मान करते थे। वे उसके विरोध में खड़े हो गये और उसकी आलोचना करने लगे। मरकूस 6:4–6 कहता है, *"यीशु ने उस से कहा, कि भवि यद्वक्ता अपने देश और अपने कुटुंब और अपने घर को छोड़ और कहीं भी निरादर नहीं होता। और वह वहां कोई सामर्थ का काम न कर सका, केवल थोड़े बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया। और उस ने उन के अविश्वास पर आश्चर्य किया और चारों ओर के गांवों में उपदेश करता फिरा।"* यह पद यह नहीं कहता की यीशु मसीह कोई बड़े आर्श्चयकर्म नहीं करेगा। पर यह कि वह नहीं कर सका। यहाँ पर यीशु है, परमेश्वर का पुत्र जो इस संसार में मनु य रूप में आया, जिसके पास विश्वास की कमी नहीं थी।और निश्चित ही उसके जीवन में पाप के प्रवेश करने का कोई स्थान नहीं था। इसके वावजूद उनके अविश्वास के कारण वह दूसरों के लिये क्या कर सकता था इसकी सीमा थी। इसे मत्ती 13:58 के साथ एक साथ रखें जहाँ वह कहता है, *"और उस ने वहां उन के अविश्वास के कारण बहुत सामर्थ के काम नहीं किए।"* और

हम देखते हैं, कि यीशु मसीह जिसके पास अपने स्वयं में कोई सीमाएं नही थीं, और निश्चय ही कोई पाप नहीं था, कि वह ौतान को अपने जीवन में प्रवेश करने दें, (बोलने का मौका दें) उसके आस पास के लोगों के कारण जो वह कर सकता था इसकी कुछ सीमा थी।

यह समझना महत्वपूर्ण है, जो मैं कह रहा हूँ, कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि सभी लोगों को सब समय चंगा करें। यदि आप ऐसा करते हैं, और आप संभवतः किसी अस्पताल जाने की गलती करते हैं, और उस में से हर बीमार व्यक्ति को खाली करने की कोशिश करते हैं, क्योंकि आप जानते हैं कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि वे चंगे हो जायें। पर वह उनकी इच्छा के विरूध काम नहीं करेगा। परमेश्वर उनके बीमार रहने के अधिकार की रक्षा करेगा, पर उनके स्वयं की इच्छा के विरूध वो कार्य नहीं करेगा, और किसी और के विश्वास के कारण वह चंगे नहीं हो सकते। उन्हें चंगा होने के लिए कोई भी दबाव नहीं डाल सकता। वे किसी और के विश्वास के कारण चंगे नहीं हो सकते। किसी और का विश्वास उनकी सहायता कर सकता है, यदि वह संघ र्ा कर रहे हैं, पर कोई भी उनके लिये नहीं कर सकता। आप किसी कार को तब ही धक्का लगा सकते हैं जब वह न्यूटल में हो, पर आप तब धक्का नहीं लगा सकते जब वह पार्किंग में या रिवर्स स्थिति में हो। यदि कोई व्यक्ति चंगा होने की इच्छा नहीं रखता हो, तो आप उसे चंगा नहीं कर सकते। इस कारण से आप किसी अस्पताल को खाली नहीं कर सकते या किसी कलीसिया की सभा में जाकर यह नहीं देख सकते, कि हर व्यक्ति उनके सहयोग के बिना चंगा हो गया हो।

और भी बहुत कुछ इस बारे में कहा जा सकता है, जब यीशु लोगों को चंगा करता यहाँ तक की वह मरे हुओ को जिलाता था, वह किसी के पास जाकर यह कहता था, "रो मत" वह एक माँ से कहता रो मत और फिर उसके बाद उसके बेटे को वह जीवित कर देता। किसी के विश्वास को किसी जगह इस्तेमाल होना है। हमारी ओर से विश्वास होना है, और भी कई चीजें हैं, जो चंगाई में ाामिल है। आज मैंने उन में से कुछ ही की चर्चा की है, और आशा है की यह आपकी सहायता करेगा। पर एक मुख्य बात जिससे आपको बाहर आने की आवश्यकता है, कि परमेश्वर विश्वासपूर्ण है। यह उसकी इच्छा है कि आप चंगाई पायें, पर आपको उसके साथ सहयोग करना सीखना चाहिए। आपके लिए वह नहीं कर सकता। उसे इसे आपके जरिये करना है। यह आपके भीतर से आयेगा।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह बातें आपको अपने आप को उसे समर्पित करने, और परमेश्वर की सामर्थ को आपके जरिये बहने, और अपने आलौकिक स्वास्थ्य में चलने की अनुमति दे।

शिष्यता के प्रश्न

1. मत्ती 8:17 पढ़ें हमारे लिये चंगाई प्राप्त करने के लिये यीशु मसीह ने क्या किया?

2. होशे 4:6 पढ़ें कुछ लोग चंगाई किस कारण से नहीं पाते।

   क. अज्ञानता (ज्ञान की कमी के कारण।)

   ख. वे कलीसिया को नहीं जाते।

   ग. वे पर्याप्त अच्छे नहीं हैं।

3. यूहन्ना 9:1–3 पढ़ें शि यों ने क्या सोचा यह मनु य का अंधापन किस कारण से है?

   क्या उनकी सोच सहीं थी?

4. यूहन्ना 5:14 पढ़ें पाप बीमारी के लिये द्वार खोलता है पर हमेशा नहीं खोलता। पाप बीमारी के अलावा एक व्यक्ति में क्या उत्पन्न कर सकता है?

5. रोमियों 5:12–14 यदि पाप हमेशा से बीमारी का कारण नहीं है तो, अन्य संभावित कारण क्या हो सकता है? पतन (उत्पत्ति 3)।

6. प्रेरितों 10:38 पढ़ें प्रेरितों 10:38 के अनुसार किस कारण से बीमारी हो सकती है?

7. मत्ती 13:58 पढ़ें चंगाई में व्यवधान किस से आ सकता है?

8. याकूब 5:15 पढ़ें बीमारी से रक्षा कौन कर सकता है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

मत्ती 8:17 – *"17 ताकि जो वचन यशायाह भवि यद्वक्ता के द्वारा कहा गया वह पूरा हो, कि उस ने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।"*

होशे 4:6 – *"मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई; तू ने मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है, इसलिये मैं तुझे अपना याजक रहने के अयोग्य ठहराऊंगा। और इसलिये कि तू ने अपने परमेश्वर की व्यवस्था को तज दिया है, मैं भी तेरे लड़केबालों को छोड़ दूंगा।"*

यूहन्ना 9:1–3 – *''1 फिर जाते हुए उस ने एक मनुष्य को देखा, जो जन्म का अन्धा था। 2 और उसके चेलों ने उस से पूछा, हे रब्बी, किस ने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने या उसके माता पिता ने, 3 यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इस ने पाप किया था, न इसके माता–पिता ने; परन्तु यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के काम उसमें प्रगट हों।''*

यूहन्ना 5:14 – *"इन बातों के बाद वह यीशु को मन्दिर में मिला, तब उस ने उस से कहा, देख, तू तो चंगा हो गया है; फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इस से कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।"*

रोमियों 5:12–14 – *"12 इसलिये जैसा एक मनु य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनु यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया। 13 क्योंकि व्यवस्था के दिए जाने तक पाप जगत में तो था, परन्तु जहां व्यवस्था नहीं, वहां पाप गिना नहीं जाता। 14 तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उस लोगों पर भी राज्य किया, जिन्हों ने उस आदम के अपराध की नाई जो उस आनेवाले का चिन्ह है, पाप न किया!"*

प्रेरितों के काम 10:38 – *"कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभि ेक किया; वह भलाई करता, और सब को जो ैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।"*

मत्ती 13:58 – *"और उस ने वहां उन के अविश्वास के कारण बहुत सामर्थ के काम नहीं किए।"*

याकूब 5:15 – *"और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उस को उठाकर खड़ा करेगा; और यदि उस ने पाप भी किए हों, तो उन की भी क्षमा हो जाएगी।"*

उत्तर निर्देशिका

1. मत्ती 8:17 पढ़ें हमारे लिये चंगाई प्राप्त करने के लिये यीशु मसीह ने क्या किया?

   उस ने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।

2. होशे 4:6 पढ़ें कुछ लोग चंगाई किस कारण से नही पाते।

   क. अज्ञानता (ज्ञान की कमी के कारण।)

3. यूहन्ना 9:1–3 पढ़ें शि यों ने क्या सोचा यह मनु य का अंधापन किस कारण से है?

   पाप। क्या उनकी सोच सही थी? नहीं।

4. यूहन्ना 5:14 पढ़ें पाप बीमारी के लिये द्वार खोलता है पर हमेशा नहीं खोलता। पाप बीमारी के अलावा एक व्यक्ति में क्या उत्पन्न कर सकता है?

   पाप से ज्यादा बुरी चीज उत्पन्न कर सकता है, हाँ मृत्यु भी (रोमियों ६:२३)।

5. रोमियों 5:12–14 यदि पाप हमेशा से बीमारी का कारण नहीं है तो, अन्य संभावित कारण क्या हो सकता है?

   पतन (उत्पत्ति ३)। आदम ने अपनी आज्ञा उल्लंघन के द्वारा मानव जाति में पाप और बीमारी की शुरूआत की।

6. प्रेरितों के काम 10:38 पढ़ें प्रेरितों 10:38 के अनुसार किस कारण से बीमारी हो सकती है?

शैतान के सताने के कारण।

7. मत्ती 13:58 पढ़ें चंगाई में व्यवधान किस से आ सकता है?

अविश्वास की प्रार्थना।

8. याकूब 5:15 पढ़ें बीमारी से रक्षा कौन कर सकता है?

विश्वास की प्रार्थना।

द्वितीय स्तर

अध्याय ९

दूसरों को क्षमा करना

लेखक – डोन क्रो

आज हम मत्ती 18:21–22 में वर्णित क्षमा के वि ाय को देखेंगे, *"तब पतरस (यीशु) के पास आकर, उस से कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं, क्या सात बार तक? यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार बरन सात बार के सत्तर गुने तक।"* (को टक में दिये गये ाब्द लेखक के है।) मैं सोचता हूँ कि पतरस ने सोचा होगा, कि वह यह पूछने में बड़ा उदारवादी होगा कि वह किसी व्यक्ति को कितनी बार क्षमा करें जिसने उसने विरूध पाप किया होगा। "क्या आप सोचते हैं दिन में सात बार?" यीशु ने कहा,"सात बार बरन सात बार के सत्तर गुने तक।" इसका अर्थ हुआ 490 बार पर इसका अर्थ यह नहीं, कि 490 बार के बाद आपको किसी को क्षमा करने की आवश्यकता नहीं है। यीशु मसीह ने कहा कि एक व्यक्ति के साथ एक दिन में असंख्य बार अपराध होंगे। वह कह रहा था, कि पाप क्षमा का कार्य निरंतर चलना चाहिए। क्षमा करना एक मसीही का सच्चा दृ टकोण होना चाहिए। यीशु मसीह ने लूका 23:34 में कहा, *"हे पिता इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं?* और साथ ही स्टीफन यातना देने वाले को भी, यीशु मसीह ने प्रेरितों 7:60 में कहा, *"हे प्रभु यह पाप उन पर मत लगा।"* हर व्यक्ति क्षमा नहीं प्राप्त करेगा, पर एक मसीह के दिल में हमेशा से यह दृ टकोण रहना चाहिए कि वह क्षमा करें।

यीशु मसीह पाप क्षमा के वि ाय में एक दृ टान्त बताता है जब वह मत्ती 18:23 में कहना जारी रखता है, *"इसलिये स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने दासों से लेखा लेना* (हिसाब किताब लेना) *चाहा। और जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके साम्हने लाया गया जो जो दस हजार तोड़े* (लिविंग बाइबल कहती है यह राशी मानों दस मिलियन डालर के समान है) *धरता था। जब कि चुकाने को उसके पास कुछ न था, तो उसके स्वामी ने कहा, कि यह और इस की पत्नी और लड़केबाले और जो कुछ इस का है सब बेचा जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए। इस पर उस दास ने गिरकर उसे प्रणाम किया, और कहा; हे स्वामी, धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा।''*

(को टक में दिये गये वाक्यांश लेखक के हैं।) अब यहाँ वास्तविक स्थिति है। एक व्यक्ति है जिसके पास अपने स्वामी का दस मिलियन डालर का उधार था। ऐसा कोई भी तरीका नहीं कि वह उसे अदा कर सके। वह जानता है, कि वह नहीं कर सकता। स्वामी भी यह बात जानता है, कि वह यह नहीं कर सकता है। उन दिनों में दिवालिया होने का दावा नहीं किया जा सकता था, जैसा कि संयुक्त राज्य अमेरिका में किया जा सकता है। जहाँ वो आपने आप को बेच देते, आपनी पत्नी, और बच्चों को और जो कुछ आपके पास था बेच देते, और फिर आप गुलामी में चले जाते। आप तब तक बंदीगृह में रहते जब तक आप का पूरा पैसा चुकता नहीं हो जाता, और यदि वह चुकता नही होता, तो आप अपने पूरे जीवन भर बंदीगृह में रहते। इस व्यक्ति ने बंदीगृह में केवल वही किया, जो वह करना जानता था। उसने घुटने टेके और, और दया कि मांग की, "इस पर उस दास ने गिरकर उसे प्रणाम किया, और कहा हे स्वामी, धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा।" नोट करें कि पद 27 में क्या हुआ,"तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका उधार क्षमा किया।"

हमारा भी एक उधार था, जिसे हम चुका नहीं सकते। बाइबल कहती है, कि पाप की मजदूरी मृत्यु है (रोमियों 6:23) जो कि ाश्वत काल के लिये परमेश्वर से अलग होना संसार का सारा सोना चाँदी हमारा उद्धार नहीं कर सकता है। परमेश्वर ने तरस से भर कर हमें देखा और अपने अनुग्रह में उसने अपने पुत्र यीशु को इस पृथ्वी पर भेजा कि वह वो सारा कर्ज चुका सके, जो हम नहीं चुका सकते। परमेश्वर ने हमें अपने तरस और दया में देखा, और कहा, "मैं तुम्हारा वह उधार क्षमा करता हूँ।"

यह व्यक्ति जिसका अभी अभी दस मिलियन डालर उधार क्षमा हुआ, वह स्वयं अपने साथी दास का 10 मिलियन डालर धरता था। उसने उसे खोजा ओर कहा,"मेरा हाल ही में दस मिलियन डालर का कर्ज माफ हुआ तो फिर बीस डालर क्या है? मैं चाहता हूँ कि आप भी उतने ही स्वतंत्र हो जितना की मैं हूँ। जाने दे ठीक है, क्योंकि मेरे दस मिलियन डालर क्षमा हुये!" यही होना चाहिए था, पर ऐसा नहीं हुआ। आइये अब वह पढ़ें जो मत्ती 28–31 में क्या हुआ। *"परन्तु जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासों में से एक उस को मिला, जो उसके सौ दीनार धरता था; उस ने उसे पकड़कर उसका गला घोंटा, और कहा; जो कुछ तू धारता है भर दे। इस पर उसका संगी दास गिरकर, उस से बिनती करने लगा; धीरज धर मैं सब भर दूंगा। उसने न माना, परन्तु जाकर उसे बन्दीगृह में डाल दिया; कि जब तक कर्ज को भर न दे, तब तक वहीं रहे।*

उसके संगी दास यह जो हुआ था देखकर बहुत उदास हुए, और जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया।" उसने उस व्यक्ति को बीस डालर के लिये बन्दीगृह में डाल दिया था जब कि उसका दस मिलियन डालर क्षमा किया जा चुका था। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं?

पद 32–34 कहता है, *"तब उसके स्वामी ने उस को बुलाकर उस से कहा, हे दु ट दास, तू ने जो मुझ से बिनती की, तो मैं ने तो तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा किया। सो जैसा मैं तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नहीं चाहिए था? और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देनेवालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्जा भर ना दे,''* इस व्यक्ति को अपने संगी दास के साथ किये गये व्यवहार के कारण बन्धीगृह में डाल दिया गया। इस प्रकार वह अपने मूल क्षमा के अधिकार से वंचित हो गया। पद 35 में कहा *"इसी प्रकार यदि तुम मे से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है तुम से भी वैसा ही करेगा।"* तब तक उनके हाथ में रहें" क्या यह मूर्ख्रता नहीं है, कि आप क्षमा करने से इन्कार करें? जबकि आपके सारे पाप जिसकी मजदूरी मृत्यु और अनन्तकाल तक परमेश्वर से अलग होना है क्षमा हो चुके हैं। हम परमेश्वर से यह कहते हुये अनुनय करते हैं कि, "मुझे क्षमा करें, और यीशु मसीह के द्वारा मुझ पर दया करें।'' क्षमा प्राप्त करें, और फिर पीछे मुड़े और किसी और को उस छोटे से काम के लिये क्षमा करने से इंकार करें, जो आप सोचते हैं, कि इतना बड़ा है। परमेश्वर कहता है, कि यह दु टता है।

मैं कुछ समय पहले, एक कलीसिया का पासबान था, और कलीसिया में एक युवा स्त्री थी, जो भवि य को देख सकती थी। वह एक दिन मेरे पास आई और उसने कहा, क्या यह पवित्र आत्मा है जो आने वाली चीजों को बता रही हैं और भवि य की चीजों को दिखा रही है? मैं जानता हूँ जब लोग मरेंगे और जब किसी की कार दुर्घटनाग्रस्त होगी और इस प्रकार की चीजें जब घटित होंगी।" तब मैंने कहा ''आप मेरा उत्तर पसंद नहीं करोगे पर, मेरा यह मानना है, कि यह पवित्र आत्मा नहीं है। मैं विश्वास करता हूँ की यह भावी कहलाने वाली आत्मा थी। यह वही आत्मा है, जिसने प्रेरित पौलुस का पीछा प्रेरितों 16 में किया था। उसने उसे आज्ञा दी कि वह उस लड़की से बाहर आये और उसने फिर भवि य बताने की क्षमता खो दी।'' मैंने आगे बढकर उससे कहा कि मैं परमेश्वर नहीं हूँ और कहा, "मैं जानना चाहता हूँ कि आप यीशु के पास जायें और

उससे पूछे,'प्रभु कौन है, जो मेरे उद्धार प्राप्त करने के पहले ही मुझे ये चीजें बता रहा है और मुझे जानकारी दे रहा है, क्या यह आपकी पवित्र आत्मा है या फिर कुछ और?' वह मेरे पास एक दिन वापिस आई और उसने कहा,"मैंने प्रभु से इस वि ाय में बात की और मैं सोचती हूँ कि सब कुछ ठीक है।" मैंने कहा "जो कुछ प्रभु कहता है–सही है मैं महान चरवाहा नहीं हूँ।"

यह 1986 के प्रारंभिक व र्ा का समय था, और क्या आपको मालूम है कि सन् 1986 में क्या हुआ? स्पेस ाटिल चैलैन्जर में आठ लोग अंतरिक्ष में गये। उनमें से एक महिला स्कूल की शिक्षिका थी। जब यह स्त्री टेलिविजन देख रही थी, उसने उस स्त्री को यह कहते हुये सुना कि, "कल मैं चैलंजर में जा रही हूँ। और इसके वि ाय में चर्चा कर रही थी। एक आत्मा ने उससे बोला और कहा, "वह मर जायेगी, वह मर जायेगी।'' अगले दिन चैलेनजर ने उडान भरी, और वह फट गया, और दल के सारे सदस्य मारे गये। वह युवा स्त्री मेरे पास आई और कहने लगी, "भाई डान, मैं सोचती हूँ कि जो मुझसे बात कर रही थी, और मुझे जानकारी दे रही थी, वह पवित्रआत्मा नहीं हो सकती। क्या आप मेरे लिये प्रार्थना कर सकते हैं?। उस रात को सभा के बाद जब सब कोई चले गये, मैंने उसे छुआ और कहा, "हे भावी बताने वाली अशुद्ध आत्मा इस में से बाहर निकल!" कुछ भी नहीं हुआ। यीशु मसीह के चेलों ने एक बार एक अशुद्ध आत्मा को एक जवान लड़के से निकालने की कोशिश की पर वह नहीं कर पाये" यीशु मसीह ने कहा उस जवान लड़के को मेरे पास ले आओ। मैंने कहा "प्रभु मैं जानता हूँ, की यहाँ पर क्या हो रहा था। पर मैं इस स्त्री को तेरे पास लाता हूँ।" कृपया हमें बतायें कि क्या चल रहा था। मेरी पत्नी हमारे साथ प्रार्थना कर रही थी, और परमेश्वर ने उसे एक ज्ञान का ाब्द दिया। उसने कहा इसका संबंध उसकी माता से है।" मैंने उस स्त्री से कहा, क्या तुम अपनी माँ को क्षमा करोगी?" जिस क्षण मैंने उससे ऐसा कहा एक आवाज उसके भीतर पुकार कर कह उठी नहीं! उसने मुझे दे दिया!" फिर मैंने कहा "हे अशुद्ध आत्मा मैं तुम्हे बांध देता हूँ। और फिर उस स्त्री से पूछा कि क्या वह अपनी माँ को क्षमा कर सकती है।" फिर उसने उसे क्षमा किया, और उसकी माता को आजाद किया, और उसे परमेश्वर के अनुग्रह और सहायता में जाने दिया। क्षमा करने के निर्णय लेने के द्वारा उसने अपनी माँ को आजाद कर सकी, और परमेश्वर के अनुग्रह और सहायता से उसे जाने दिया, और फिर उसने अपना छुटकारा और आजादी पाई।

मत्ती 18 में जैसे यीशु मसीह ने एक दृ टान्त में कहा, मैं यह कह रहा हूँ यदि हम अपने हृदय से क्षमा ना करें, जबकि हमारा इतना बड़ा कर्ज स्वर्गीय पिता द्वारा माफ कर दिया गया है। तो हम सताव देने वालों के हाथों में सौप दिये जायेंगे। वे किसी भी प्रकार की चीजें हो सकती हैं, जैसे ैतानी गढ़, दमन, सताव, बीमारी, हताशा और कई अन्य चीजें। इस सब चीजों की जड़ क्षमा ना करना है। हमें क्षमा किये जाने के बाद दूसरों को क्षमा ना करना ैतान को हमारे जीवन में पैर जमा लेने देता है। बाइबल कहती है, कि हमें क्षमा करने का निर्णय लेना है। प्रभु की प्रार्थना में (मत्ती 6:9–11), यीशु मसीह ने हमसे कहा कि हम भी दूसरों को क्षमा करें, जैसे हमें क्षमा किया गया है।

मरकूस 11:25–26 कहता है कि जब हम प्रार्थना करें, यदि हमारे मन में किसी के भी विरूध कुछ भी है, तो हमें क्षमा करना चाहिए। इसका क्या अर्थ है, क्षमा ना करने कि स्थिति को हमारे मन में कब तक बने रहना चाहिए? केवल तब तक, जब तक हम प्रभु के पास जायें और प्रार्थना ना कर लें। यदि हमारे हृदय में किसी के भी प्रति क्षमा ना करने कि स्थिति बनी रहती है, तो हमें उन्हें क्षमा कर देना चाहिए और कहना चाहिए, "परमेश्वर पिता में उन्हें जाने देता हूँ, मैं उन्हे क्षमा करता हूँ। मैं यह निर्णय इसलिये ले रहा हूँ, क्योंकि आपने मेरा इतना बड़ा उधार क्षमा किया।"

हे प्रभु, मैं प्रार्थना करता हूँ, कि जो कोई यह पाठ पढ़ रहा हो, जिसके हृदय में किसी को क्षमा ना करने की प्रवृत्ति हो, तो वो आज इसी क्षण निर्णय ले, कि वह उस व्यक्ति को क्षमा करें, चाहे वे जीवित हैं या मर चुके हैं। मैं प्रार्थना कर रहा हूँ, कि वे उसे क्षमा करेंगे और आपकी सामर्थ और अनुग्रह से आज ही वो चंगे हो जायेंगे। हे प्रभु मैं यीशु मसीह के नाम पर आपको धन्यवाद देता हूँ। आमीन

शिष्यता के प्रश्न

1. मत्ती 18:21 पढ़ें पतरस ने कितनी बार क्षमा करने का प्रस्ताव रखा?

2. मत्ती 18:22 पढ़ें यीशु मसीह ने क्या कहा हमें कितनी बार क्षमा करना चाहिए?

3. मत्ती 18:23–24 पढ़ें यह दास अपने स्वामी के कितने तोड़े धरता था?

4. मत्ती 18:25 पढ़ें चूँकिं यह व्यक्ति दिवालिया होने के लिये आवेदन नहीं कर सकता था, अतः क्या होता?

5. मत्ती 18:26 पढ़ें दास का निवेदन क्या था?

6. मत्ती 18:27 पढ़ें स्वामी ने अपने दास के प्रति क्या दृ टकोण प्रदर्शित किया?

परमेश्वर ने हमारे प्रति और हमारे कर्ज (पाप) के प्रति क्या दृ टकोण प्रदर्शित किया।

7. मत्ती 18:28 जिस दास को क्षमा किया जा चुका था उसका एक संगी दास था जिसका वह कितना धरता था?

8. मत्ती 18:28 पढ़ें इस दास का अपने संगी दास के प्रति क्या दृ टकोण था?

9. मत्ती 18:29–30 पढ़ें इस दास ने अपने संगी दास के साथ क्या किया?

10. मत्ती 18:31–33 पढ़ें ना क्षमा करने वाले संगी दास को स्वामी ने क्या कहकर पुकारा?

11. मत्ती 18:31–33 पढ़ें स्वामी ने दास से क्या कहा, कि उसे क्या करना चाहिए था?

12. मत्ती 18:34 पढ़ें जब उसके स्वामी को यह पता चला, कि क्या घटित हुआ तो इस बात ने उसकी मनोभावनाओं को कैसे प्रभावित किया?

13. मत्ती 18:34 पढ़ें क्या इस क्षमा ना करने वाले दास ने अपने क्रिया कलापों से (या अपने निर्णय से) उस क्षमा का परित्याग कर दिया जो मूल रूप से उसे प्रदान की गई थी?

14. मत्ती 18:35 पढ़ें इस दृ टान्त का उद्देश्य क्या है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

मत्ती 18:21 *– "तब पतरस के पास आकर, उस से कहा, हे प्रभु ,यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं, क्या सात बार तक?"*

मत्ती 18:22 *– "यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ से यह नहीं कहता, कि सात बार बरन सात बार के सत्तर गुने तक।"*

मत्ती 18:23–24 *– "23 इसलिये स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने दासों से लेखा लेना चाहा। 24 जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके साम्हने लाया गया जो दस हजार तोडे धरता था।"*

मत्ती 18:25 *– "जब कि चुकाने को उसके पास कुछ न था, तो उसके स्वामी ने कहा, कि यह और इस की पत्नी और लड़केबाले और जो कुछ इस का है सब बेच जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए।"*

मत्ती 18:26 *– "इस पर उस दास ने गिरकर उसे प्रणाम किया, और कहा; हे स्वामी, ध ीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा।"*

मत्ती 18:27 *– "27 तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका धार क्षमा किया ।"*

मत्ती 18:28 *– "28 परन्तु जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासों में से एक उस को मिला, जो उसके सौ दीनारग धारता था; उस ने उसे पकड़कर उसका गला घोंटा, और कहा; जो कुछ तू धारता है भर दे।"*

मत्ती 18:29–30 *– "29 इस पर उसका संगी दास गिरकर, उस से बिनती करने लगा; धीरज धर मैं सब भर दूंगा । 30 उसने न माना, परन्तु जाकर उसे बन्दीगृह में डाल दिया; कि जब तक कर्ज को भर न दे, तब तक वहीं रहे।"*

मत्ती 18:31–33 *– "31 उसके संगी दास यह जो हुआ था देखकर बहुत उदास हुए, और जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया । 32 तब उसके स्वामी ने उस को बुलाकर उस से कहा, हे दु ट दास, तू ने जो मुझ से बिनती की, तो मैं ने तो तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा किया । 33 सो जैसा मैं ने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नही चाहिए था?"*

मत्ती 18:33 *– "सो जैसा मैं ने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नही चाहिए था?"*

मत्ती 18:34 *– "34 और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देने वालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्जा भर न दे, तब तक उन के हाथ मे रहे।"*

मत्ती 18:35 *– "इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग मे है, तुम से भी वैसा ही करेगा।"*

मत्ती 18:35 *– (मैसिज बाइबल के संस्करण अनुसार यह पद) "और ठीक यही मेरा स्वर्गीय पिता आप में से हर एक के साथ करेगा जो बिना किसी र्त के दूसरों को क्षमा नहीं करते जो दया की मांग करते हैं।"*

उत्तर निर्देशिका

1. मत्ती 18:21 पढ़ें पतरस ने कितनी बार क्षमा करने का प्रस्ताव रखा?

   सात बार

2. मत्ती 18:22 पढ़ें यीशु मसीह ने क्या कहा हमें कितनी बार क्षमा करना चाहिए?

चार सौ नब्बे बार। (या इतनी बार जिसका कोई अंत ना हो, निरन्तर)

3. मत्ती 18:23–24 पढ़ें यह दास अपने स्वामी के कितने तोड़े धरता था?

दस हजार तोड़े या दस मिलियन डालर (एक ऐसी राशि जो शायद कोइ्र अदा ना कर सके)।

4. मत्ती 18:25 पढ़ें चूँकिं यह व्यक्ति दिवालिया होने के लिये आवेदन नहीं कर सकता था, अतः क्या होता?

वह उसके बच्चे उसकी पत्नी और जो कुछ उसका था उसे निलामी के बाजार में बेचकर उसका कर्जा चुकाया जाना था।

5. मत्ती 18:26 पढ़ें दास का निवेदन क्या था?

कि स्वामी उस पर दया करें और वह उसका सारा कर्जा चुका देगा। क्या वह अपना कर्ज चुका पाता? संभवतः नहीं।

6. मत्ती 18:27 पढ़ें स्वामी ने अपने दास के प्रति क्या दृि टकोण प्रदर्शित किया?

दया और तरस का दृष्टिकोण प्रदर्शित किया।

परमेश्वर ने हमारे प्रति और हमारे कर्ज (पाप) के प्रति क्या दृि टकोण प्रदर्शित किया।

दया और तरस का दृष्टिकोण प्रदर्शित किया।

7. मत्ती 18:28 जिस दास को क्षमा किया जा चुका था उसका एक संगी दास था जिसका वह कितना धरता था?

सौ तोड़े (एक दिन की मजदूरी)

8. मत्ती 18:28 पढ़ें इस दास का अपने संगी दास के प्रति क्या दृि टकोण था?

अधीरता हिंसा और क्षमा ना करना।

9. मत्ती 18:29–30 पढ़ें इस दास ने अपने संगी दास के साथ क्या किया?

उसे बंदीगृह में तब तक डाल रखा, जब तक की वह अपना छोटा सा कर्ज ना चुका दे।

10. मत्ती 18:31–33 पढ़ें ना क्षमा करने वाले संगी दास को स्वामी ने क्या कहकर पुकारा?

"हे दुष्ट दास।"

11. मत्ती 18:31–33 पढ़ें स्वामी ने दास से क्या कहा, कि उसे क्या करना चाहिए था?

उसे अपने संगी दास के प्रति तरस खाना चाहिए था जैसे उस के स्वामी ने उस पर दया की। उसे छोड़ देना और क्षमा कर देना चाहिए था।

12. मत्ती 18:34 पढ़ें जब उसके स्वामी को यह पता चला, कि क्या घटित हुआ तो इस बात ने उसकी मनोभावनाओं को कैसे प्रभावित किया?

वह क्रोधित हो गया।

13. मत्ती 18:34 पढ़ें क्या इस क्षमा ना करने वाले दास ने अपने क्रियाकलापों से (या अपने निर्णय से) उस क्षमा का परित्याग कर दिया जो मूल रूप से उसे प्रदान की गई थी?

हाँ।

14. मत्ती 18:35 पढ़ें इस दृ टान्त का उद्देश्य क्या है?

इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा। (मत्ती १८:३५, संदेश)

(मैसिज बाइबल के संस्करण अनुसार यह पद) "और ठीक यही मेरा स्वर्गीय पिता आप में से हर एक के साथ करेगा जो बिना किसी र्त के दूसरों को क्षमा नहीं करते जो दया की मांग करते हैं।"

दूसरा स्तर

अध्याय १०

विवाह (भाग १)

लेखक - डोन क्रो

आज हम विवाह के बारे में चर्चा करेंगे। पहले तो, मैं आपको कुछ आँकड़े देना चाहुँगा 75 प्रतिशत परिवारों को किसी ना किसी प्रकार के विवाह परामर्श की आवश्यकता होगी। दो में से एक विवाह तलाक में बदल जाते हैं। 50 प्रतिशत विवाह में कोई न कोई साथी पहले पाँच व र्षों में अविश्वासपूर्ण रहेगा। 30 प्रतिशत सेवक कलीसिया में किसी ना किसी के साथ अनउपयुक्त संबंध में ामिल होंगे। मुझे ऐसा प्रतीत होता है, की ायद हम स्वाभाविक रीति से बाइबल के सिद्धांत को नहीं समझ पायें, यदि ये आंकड़े किसी भी रीति से इसके निकट है, तो हम विवाह के वि ाय में और कुछ बातों को देखेंगे, कि परमेश्वर इसके वि ाय में क्या कहता है। कैसे आज अपने वैवाहिक जीवन को मजबूत बना सकते हैं।

पहले तो, मैं यह कहना चाहुँगा, कि विवाह परमेश्वर का विचार था। उसने इसे स्थापित किया। उत्पत्ति 2:18 *"फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उस से मेल खाए।"* उत्पत्ति 1:31 कहता है *"तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, ते क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठंवा दिन हो गया।"* आपको यह याद रखना है, कि यह एक पूर्ण सृ ट थी। परमेश्वर आया और उसने मनु य के साथ सहचर्य किया। उसका उसके साथ एक अदभुत संबंध था। हर दिन वे दिन के ठंडे पहर (संध्या को) आदम के साथ सहचर्य करने के लिये आता था। कभी कभी हम सोचते हैं, कि यदि हमारा परमेश्वर के साथ परिपक्व संबंध रहता, तो हमें किसी और चीज की आवश्यकता नहीं होती। पर यह सत्य नहीं परमेश्वर ने उत्पत्ति 1:31 में इसके संबंध में कहा,*"तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।"* पहली बात जो परमेश्वर को अच्छी नहीं लगी वह उत्पत्ति 2:18 में पाई जाती है। *"आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं"* अतः विवाह परमेश्वर का विचार था, ताकि पुरू ा की आवश्यकता पूरी हो, वह पुरू ा को जो वो भवि य में अकेलेपन की

समस्या से जूझने वाला था, उसके लिए एक सहायक देना चाहता था। यदि हम विवाह के सही दिशा निर्देश का पालन करें, और उसका उसी रीति से उपयोग करें, जैसा परमेश्वर चाहता है, तो इसका उद्देश्य खुशी देने का था न कि दुःख।

उत्पत्ति 2:24 पहली पहली बार बाइबल में वास्तव में विवाह के बारे मे चर्चा करता है। वह कहता है, *"इस कारण पुरू ा अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे।"* विवाह सब प्रकार के संबंध को छोड़कर अपने जीवन में किसी और व्यक्ति पर पुनःध्यान केन्द्रित करना है। परमेश्वर ने इसे इसी प्रकार तैयार किया है। यह एक प्रकार का त्रिएक संबंध है। मैं नहीं समझ सकता, कि जो मैं कहना चाहता हूँ, आप उसे समझ पा रहे हैं। पर विवाह के संबंध में जब आदम और हव्वा को परमेश्वर ने एक साथ बुलाया, तब यह सिर्फ आदम का ही मात्र परमेश्वर के साथ संबंध नहीं था, ना ही हव्वा का ही मात्र परमेश्वर के साथ संबंध नहीं था। अब यह आदम और हव्वा का एक ईकाई के रूप में था। जिनके परमेश्वर के साथ संबंध में एकता थी। बाइबल 1 पतरस 3:7 में कहती है, *" वैसे ही हे पतियों, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिस से तुम्हारी प्रार्थनाएं रूक न जाएं।"* उत्पत्ति 5:1–2 भी वास्तव में एक महान पवित्र ाास्त्र का वचन है, *"आदम की वंशावली यह है। जब परमेश्वर ने मनु य की सृ ट की तब अपने ही स्वरूप में उसको बनाया; उस ने नर और नारी करके मनु यों की सृ ट की और उन्हें आशी ा दी, और उनकी सृ ट के दिन उनका नाम आदम रखा।"* नोट करेंः की आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा, पर परमेश्वर ने आदम और हव्वा को एक ईकाई के रूप में बुलाया आदम। अतः विवाह के संबंध में यह परमेश्वर और मैं नहीं या वह स्त्री और परमेश्वर नहीं पर मैं और मेरी पत्नी एकरूपता में है। अनुग्रह के जीवन के अनुसार उसकी संतान जिसे एक उद्देश्य के साथ परमेश्वर की सेवा करने के लिये बुलाया गया है। उसके साथ एक एकता में होकर चलने के लिये बुलाया गया है।

उत्पत्ति 2:24, जिसे हमने अभी अभी पढ़ा कहता है, इस कारण पुरू ा अपने माता और पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक तन बने रहेंगे। ाब्द मिला रहेगा का अर्थ है चिपके रहना या अधीन होना, एक हो जाना, उद्देश्य में एक हो जाना है। यदि आपको अपने विवाह संबंध में आज समस्या है, तो मुझे कुछ प्रश्न पूछने दें। क्या जो आप कर रहे हैं, अपने पति या पत्नी के साथ जिस प्रकार आप व्यवहार

कर रहे हैं, जो बातें आप उनसे कहते हैं क्या आपको उनके और नजदीक लाती है, और आपको उनको साथ एक करती है? या फिर यह कड़वाहट या दूरी पैदा कर रही है। पवित्र ाास्त्र में विवाह के संबंध में यह आज्ञा है मिले रहना, चिपके रहना। तो क्या वह चीजें जो आप कर रहे हैं, आपके संबंधों को और मजबूत बना रही है, या फिर उसे तोड़ रही है? आपको इन सब चीजों को देखने की आवश्यकता है।

लोग सोचते हैं, कि प्रेम सिर्फ एक भावनात्मक अनुभव हैः “मैं तुम से प्रेम करता था, पर अब मैं नहीं करता – मैं अब और तुम से प्रेम नहीं करता हूँ।'' मान लीजिए आप सामान्य ढंग से काम करने की क्षमता के अभाव की विकृति (डायसफंक्शनल) वाले परिवार से आते हैं। आप एक पादरी, अगुवे के पास जाते या फिर आप न्यायधीश के पास जाते; यदि आप कोर्ट मैरिज कर रहे हों, तो आप न्यायधीश के पास जाते हैं, तब आप अपने जीवन को उस व्यक्ति के समक्ष समर्पित कर देते हैं। आप चाहते हैं, कि यह मृत्यु तक बना रहे। जब मृत्यु के कारण आप एक दूसरें से अलग होते हैं। पर अपने डायसफंक्शनल परिवार के कारण आपने अपने परिवार में कभी प्रेम को अभिव्यक्त होता हुआ नहीं देखा, आपने अपने माता पिता को गर्मजोशी के साथ आपस में प्रेम को बाँटते हुये नहीं देखा। हो सकता है, कि आपकी पत्नी एक ऐसे परिवार से आई हो जो अत्याधि ाक प्रेम अभिव्यक्त करता हो, पर आप यह नहीं जानते कि यह कैसा है। यद्यपि आप इस व्यक्ति जिसके प्रति आप समर्पण करना चाहते हैं, प्रेम करना चाहते हैं, पर आप स्वयं अपने आप में इतने डायसफंक्शनल है, कि आपने कभी भी प्रेम को इससे पहले अभिव्यक्त होता हुआ नहीं देखा, अतः आप असफल हो जायेंगे। संभावना यह बनती है, की आप कुछ व ाों पश्चात परामर्शदाता के पास जायेंगे और कहेगें,“हमारी एक दूसरे के साथ नहीं बन रही है, हम एक दूसरे के साथ चल नहीं पा रहे हैं।” बहरहाल आज मेरे पास आपके लिये एक ाुभसमाचार है। यदि आपके जीवन में समस्याएं हैं, तो कुछ है, जो इसे सही कर सकता है।

जब आप एक नया रेफ्रिजिरेटर खरीदते हैं, और जब उसके साथ कोई समस्या आती है, तो आप जानते हैं, कि आपको दिशानिर्देश की पुस्तक पढ़नी चाहिए। दिशा निर्देश पुस्तिका आपको बताएगी, कि क्या हुआ है, या कि आप इसे सर्विस सेंटेर ले जायें। एक ऐसी ही दिशानिर्देश पुस्तिका आपके विवाह के लिये है, जो आपकी विवाह की समस्या को सुलझायेगी। यह परमेश्वर का वचन कहलाती है। बाइबल हमें तीतुस 2:4 में बताती है, कि प्रेम ऐसा कुछ है जिसे सिखाया जा सकता है। प्रेम ऐसा कुछ है, जिसे

सीखा जा सकता है। यदि आप डायसफंक्शनल परिवार से आते हैं, और नहीं जानते कि अपनी पत्नी या पति को कैसे प्यार करें, तो आपका विवाह टूट रहा है, पर एक अच्छा समाचार है। 1 यूहन्ना 5:3 कहता है, *"और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और उस की आज्ञाएं कठिन नहीं।"* यीशु मसीह की आज्ञा अनुसार जो हमें यह दिखाता है, कि किस प्रकार प्रेम करें, किस प्रकार दयालुता और उदारता को प्रदर्शित करें। और अपने वैवाहिक संबंध में दूसरे साथी की किस प्रकार भलाई चाहें, परमेश्वर आपके लिये उस परिस्थिति को आपकी भलाई में बदल सकता है।

यह तो विवाह वि ाय पर एक परिचय है। हम इस वि ाय पर अन्य अध्याय जारी रखेंगे और मैं मात्र यह कहना चाहता हूँ, "जैसे आप यह अध्ययन जारी रखते हैं परमेश्वर" आपको आशी ा दे। हम विश्वास करते हैं, कि परमेश्वर आपको ज्यादा ज्ञान और बुद्धि देना चाहता है, जैसे जैसे आप इस वि ाय को देखते हैं।

शिष्यता के प्रश्न

1. इफिसियों 5:31–32 पढ़ें इफिसियों 5:31; उत्पत्ति 2:24 का उद्धरण है। इफिसियों 5:32 को देखने के द्वारा आप क्या सोचते हैं, कि परमेश्वर इस पद में किस के वि ाय में बात कर रहा है?

2. पढ़ें याकूब 4:4–5 यह पद क्या शिक्षा दे रहा है?

3. पढ़ें 1 पतरस 3:7 हमें अपनी पत्नी और पति के साथ एकता और प्रेम में क्यों चलना चाहिए?

4. पढ़ें यूहन्ना 15:5 मसीह को अपने जीवन का प्रभु बनाये बिना क्या आपका जीवन सफल हो सकता है?

5. पढ़ें तीतुस 2:4 प्रेम मात्र भावना नहीं है। पवित्रशास्त्र के अनुसार प्रेम

6. पढ़ें 1 यूहन्ना 5:3 के अनुसार जब हम परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार चलते हैं तो हम में चलते हैं।

7. पढ़ें मत्ती 7:12 यदि हमारे विवाह में समस्या है तो इसका यह अर्थ है, कि कोई ना कोई में नहीं चल रहा है।

8. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 13:4 प्रेम है।

   क. भावनात्मक

   ख. एक गर्मजोशी भरी भावना

   ग. दयालु

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

इफिसियों 5:31–32 *– "इस कारण मनु य माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। 32 यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के वि ाय में कहता हूँ।"*

याकूब 4:4–5 *– "4 हे व्यभिचारिणियों, क्या तुम नहीं जानती, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है। 5 क्या तुम यह समझते हो, कि पवित्र ाास्त्र व्यर्थ कहता है? जिस आत्मा को उस ने हमारे भीतर बसाया है, क्या वह ऐसी लालसा करता है, जिस का प्रतिफल डाह हो?"*

1 पतरस 3:7 *– "वैसे ही हे पतियों, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिस से तुम्हारी प्रार्थनाएं रूक न जाएं।"*

यूहन्ना 15:5 – *"मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"*

तीतुस 2:4– "ताकि वे जवान स्त्रियों को चितौनी देती रहें, कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें।"

1 यूहन्ना 5:3 *– "और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और उस की आज्ञाएं कठिन नहीं।"*

मत्ती 7:12 *– "इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनु य तुम्हारे साथ करे, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भवि यद्वक्ताओं की शिक्षाएं यही है।"*

1 कुरिन्थियों 13:4 *– "प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बढ़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं है।"*

उत्तर निर्देशिका

1. इफिसियों 5:31–32 पढ़ें, इफिसियों 5:31 उत्पत्ति 2:24 का उद्वरण है। इफिसियों 5:32 को देखने के द्वारा आप क्या सोचते हैं, कि परमेश्वर इस पद में किस के वि ाय में बात कर रहा है?

   मसीह और उसकी कलीसिया के बीच संबंध (जो विवाह संबंध से जुडा हैं।)

2. पढ़ें याकूब 4:4–5 यह पद क्या शिक्षा दे रहा है?

   परमेश्वर हम से प्रेम करता है और चाहता है कि हम उसके प्रति वफादार रहें।

3. पढ़ें 1 पतरस 3:7 हमे अपनी पत्नी और पति के साथ एकता और प्रेम में क्यों चलना चाहिए?

   ताकि हमारी प्रार्थनाएं रूक न जाएं।

4. पढ़ें युहन्ना 15:5 मसीह को अपने जीवन का प्रभु बनाये बिना क्या आपका जीवन सफल हो सकता है?

   नहीं।

5. पढ़ें तीतुस 2:4 प्रेम मात्र भावना नहीं है। पवित्रशास्त्र के अनुसार प्रेम __________

सिखाया भी जा सकता है।

6. पढ़ें 1 यूहन्ना 5:3 के अनुसार जब हम परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार चलते हैं तो हम ____________________ में चलते हैं।

प्रेम

7. पढ़ें मत्ती 7:12 यदि हमारे विवाह में समस्या है तो इसका यह अर्थ है, कि कोई ना कोई ______________________ में नहीं चल रहा है।

प्रेम

8. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 13:4 प्रेम हैः ____________________ है।

स. दयालु

द्वितीय स्तर

अध्याय ११

विवाह (भाग २)

लेखक - डोन क्रो

आज हम विवाह के वि ाय में एक बार फिर से देखेंगे, और प्रश्न है, "विवाह क्या है" क्या आपने इसके वि ाय में कभी सोचा है? बाइबल के अनुसार, विवाह का स्वरूप तैयार करना परमेश्वर का विचार था। विवाह एक दूसरे से जुड़ जाना, एकता में जुड़ना, एक हो जाना। उत्पत्ति 2:24 कहता है, *"इस कारण पुरू ा अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे।"* (वे एक दूसरे से मिल जायेंगे और वह अपनी पत्नी से मिला रहेगा।)" वफादार होना (को ठक में दिये गये ाब्द मेरे हैं।) क्या आप जानते हैं, की विवाह का अर्थ सिर्फ जुड़ना मात्र नहीं है, वह एक होने से ज्यादा है। उदाहरण के लिये 1 कुरिन्थियों 6:15–6 कहता है, यदि मैं बाहर जाऊं और अपने आप को किसी वेश्या से जोड़ लूँ, तो मैं उसके साथ एक तन हो जाता हूँ। इसके बाद विवाह के संबंध में उत्पत्ति 2:24 में वर्णित उद्धरण पर विचार करें। अपने आप को वेश्या से जोड़ना मुझे स्वतः ही अपनी पत्नी से तलाक नहीं दिलवायेगा या मुझे वेश्या से विवाहित करा देगा, चूँकि मैंने उसके साथ संबंध बना लिया है। अतः विवाह क्या है? यदि विवाह एक होना है, यदि वह एक दूसरे से जुड़ जाना है, यदि यह एक तन होना है, तो फिर इसका और वेश्या के पास जाने के बीच क्या संबंध है? स्वाभाविक है, कि यदि आप वेश्या के पास जाते हैं, तो आप उसके साथ एक तन हो जाते हैं।

बाइबल कहती है, कि विवाह एक होना, एक दूसरे से जुड़ जाना, एक दूसरे के साथ एक हो जाना है, पर यह इससे अधिक और कुछ है। यह ''वाचा'' के साथ एक दूसरे से जुड़ जाना है। हीब्रू में वाचा को *''कैरिथ''* कहते हैं, जिसके भीतर एक दूसरे को जोड़ने की विचार धारा है। यह एक व्यक्ति का अंतिम समर्पण है, जिसे सिर्फ मृत्यु ही अलग कर सकती है। अब, मैं यदि वेश्या के पास जाता हूँ, यदि मैं उसके प्रति इतना घिनौना अपराध करता हूँ, तो मेरा उसके प्रति कोई भी समर्पण नहीं होगा। विवाह का सार है, कि सब लोगों का त्याग कर दें। बाइबल कहती है, कि आप अपने माता पिता को छोडकर अपनी पत्नी के साथ मिले रहेंगे। यहेजकेल कहता है, *"तुम मेरे हो।"* इसका अर्थ है, इसे एक

के लिये बाकी सब का त्याग करना। अपने आप को इसे एक के लिये समर्पित करना। स्वाभाविक है, यदि आप ादीशुदा होकर किसी अनैतिक रीति से किसी दूसरे के पास जाते हैं, तो यह विवाह के सिद्धांत को तोड़ देगा। जो वाचा या समर्पण और एकरूपता द्वारा आती है। यहेजकेल 16:8 इसे विवाह की वाचा कहता है। इफिसियों पाँचवे अध्याय में हम यह सीखते हैं, कि विवाह में पति को अपनी पत्नी के साथ प्रेम करना है, जैसा मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया है। अतः यह प्रेम की वाचा है। यह प्रेम की वाचा है, क्योंकि प्रेम विवाह को चलाने वाला सबसे प्रमाणिक सिद्धांन्त है।

विवाह एक होने की वाचा है। 1 पतरस 3:7 कहता है, यदि मैं अपनी पत्नी की निर्बल पात्र जानकर सराहना ना करूं, और यह ना मानु कि हम एक साथ अनुग्रह के जीवन के वारिस हैं, तो हमारी प्रार्थना नहीं सुनी जायेंगी। इस बारे में सोचें कि हमारा आत्मिक जीवन बाधित होगा, यदि हम परमेश्वर द्वारा तैयार किये गये विवाह संबंध में एकता और सौहार्दता के साथ ना चलें, तो हमारा आत्मिक जीवन बाधित होगा। नीतिवचन 2:16–17 पराई स्त्री के बारे में चर्चा करता है, जो अपने विवाह की वाचा को भूल जाती है। अपनी जवानी के निर्देशक को भूल जाती है, और यह भूल जाती है, कि विवाह संबंध उसके अपने परमेश्वर से साथ वाचा है। यह बहुत ही गम्भीर बात है। यह एक वाचा है, जो हम एक व्यक्ति विशे ा के साथ बाँधते हैं, पर इसके अतिरिक्त यह ऐसी भी वाचा है, जो परमेश्वर के साथ बांधी जाती है। मैं जितना लोगों के बीच सेवकाई करना, पसंद करता हूँ परमेश्वर की भी प्राथमिकता है, और यह है कि वह हमारे विवाह पर केन्द्रित है। विवाह वास्तव में अपने जीवन का केन्द्र दूसरे को बनाना है। जैसा मैंने कहा इसमें प्रेम के सिद्धांत की प्रधानता है।

मत्ती 7:12 कहता है "जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनु य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भवि यद्क्ताओं की शिक्षा यही है।" यही सिद्धांत है, जिसे विवाह में ासित होना चाहिए। यह स्वार्थीपन नहीं है, स्वयं के लिये नहीं है। इसका यह वि ाय नहीं, कि यह व्यक्ति आपको क्या दे सकता है। बाइबल 1 कुरिन्थियों 13:4 में कहती है, प्रेम कृपालु है। वह दूसरों की भलाई खोजता है। कृपालु और दयालु होता है, और हमेशा दूसरों की सर्वश्रे ठ की चाह रखता है। जिस कारण से विवाह कि व्यवस्था इस रीति से की गई है, क्योंकि यह एक उदाहरण है एक प्रारूप है, कि परमेश्वर के साथ सही संबंध कैसा होना चाहिए। उसने स्वाभाविक रीति से एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। उसने हमें बताया है, कि एक अच्छा उत्तम विवाह हम कैसे

बनाये रख सकते हैं। एक श्रे ठ विवाह कैसे बनाये रख सकते हैं। क्योंकि वह इसका एक प्रारूप बताना चाहता है, कि उसके साथ सच्चा ाश्वत् संबंध क्या होता है। विवाह तब तक के लिये है जब तक मृत्यु उसे हम से अलग ना कर दें। यह एक अल्पकालिक व्यवस्था है। बाइबल कहती है, कि पुनरूथान में ना तो विवाह करते हैं, ना तो विवाह में दिये जाते है। परमेश्वर चाहता है कि हम एक अच्छे वैवाहिक जीवन को समझें। प्रेम के सिद्धांत को समझें, निःस्वार्थ भाव से दूसरे को देने के सिद्धांत को समझें। वह कहता है, कि वास्तव में आपको जो समझाना चाहता हूँ। वह यह है कि ''मैंने तुमको अपने साथ वैवाहिक संबंध के लिये बुलाया है– यह कोई साधारण संबंध नहीं है, ऐसा संबंध नहीं जो कुछ ही व ों तक चलेगा, और फिर खत्म हो जायेगा, पर यह ाश्वत् संबंध है जहां मेरा सारा प्रेम सदा सदा के लिये प्रकट होगा।''

अब मुझे विवाह के कुछ सिद्धांतों को बताने दें। विवाह एक साझेदारी नहीं पर एक विलय (मिलना, मिल जाना) है। बाइबल इसके वि ाय में उत्पत्ति 4 में जानना कहती है और 1 पतरस 3:7 जीवन के वरदान के वारिस कहकर पुकारती है। विवाह का अर्थ वाचा है, जिसका अर्थ है एक व्यक्ति इससे बंधा हुआ होता है; इसमें एक समर्पण ामिल होता है। पाप ने पहली कलीसिया में प्रवेश नहीं किया, पर उसने पहले विवाह में प्रवेश किया। इसी वजह से हमें विवाह के संबंध में निर्देश पुस्तिका और दिशानिर्देश चाहिए। और प्रेम के सिद्धांत को अपने जीवन में लागू करना है। हम यह भी पूछते है,"कि प्रेम क्या है?" प्रेम की परिभा ा वास्तव में निःस्वार्थता का भाव है। यशायाह 53:6 कहता है हम तो सब भेड़ों की नाई थें, भटक गये थे, जिन्होंने अपना अपना मार्ग लिया। पर विवाह में हम दूसरे व्यक्ति पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं, और उसकी भलाई की खोज करते हैं।

इफिसियों में बाइबल हमें बताती है, कि अपनी पत्नी को प्रेम करना अपने स्वयं से प्रेम करना है। हम पतियों को अपनी पत्नी का आदर सम्मान करना चाहिए, जो परमेश्वर ने हमें दिया है। जिसका अर्थ उसकी सराहना करना है। अपनी देह से प्रेम करने का अर्थ है, कि आप उसके पास उसका हाथ पकड़ कर बैठें, उसे थप थपाये और कहें।" ओह मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।" यह ऐसा नहीं है। अपने आप से प्रेम करने का अर्थ है, अपनी रक्षा करना, अपना पो ण करना अपनी देखभाल करना। हमें अपनी पत्नी को ऐसे ही नहीं लेना चाहिए, हमें उसकी कमजोरी को दूसरों के सामने प्रकट नहीं करना चाहिए। उसका मजाक नहीं उड़ना चाहिए। ऐसा कुछ काम नहीं करना चाहिए जिससे उसे चोट पहुँचे। हमें उसे उसी प्रकार प्रेम करना चाहिए जैसे हम अपने आप से प्रेम करते हैं।

मैं परमेश्वर की ओर उसको प्रार्थना में उठाना चाहता हूँ, पहले तो उसको आप से प्रेम करने के लिये धन्यवाद। दूसरी बात जो मैं चाहता हूँ, कि आप उसे अपने साथी के लिये धन्यवाद दें वह साथी जो उसने आपको दिया है। यह समस्या का एक भाग है। आपने अपनी पत्नी की कभी सराहना नहीं की आपने उसे नीचा गिरा दिया, और बाइबल कहती है, कि यह स्वार्थपन है और यह पाप है। इफिसियों 5 में वचन कहता कि यीशु जल के द्वारा अपने वचन से कलीसिया को धो दिया, जो उसने कलीसिया से कहा। जब आप अपनी पत्नी से कुछ बोलते हैं, तो यह उस स्तर पर पहुंच जायेगी, कि यह उस स्तर तक पहुँच जायें जो आप बोलते हैं। यदि आप यह कहें कि, तुम किसी काम की नहीं हो, ''तुम बदसूरत हो, बहुत मोटी हो'' तो आप अपने विवाह को दबा देंगे, एकता नहीं पर विक्षेद और अलग होना है। पर यदि आप दयालुता के ाब्द बोले जैसे, "प्रिय, मैं आपकी सराहना करता हूँ जो चीजें आप करती हों, मैं तुम से प्रेम करता हूँ, " और इसके बाद अपने कार्यों से उसकी सहायता करता हूँ, और आपका साथी आपके उस ाब्दों के स्तर तक बढ़ेगा।

क्या आप देख सकते हैं, कि आपके विवाह की अधिकांश समस्या उन ाब्दों से होती है जो आप बोलते हैं? आपने अपनी पत्नी को ऊपर चढ़ाने के बजाये उसे नीचे गिरा दिया है। मैं प्रोत्साहित करता हूँ कि आप अपनी पत्नी से अच्छे ाब्द बोलें। प्रेम एक भावना नहीं है। आपके चाहे जो भी अनुभव हो इसके बावजूद दूसरे की भलाई और लाभ की खोज करना। आज ही भलाई के कामों से इसकी ुरूआत करें; जैसे एक लकड़ी के टुकड़े पर लाख की कई परते चढ़ाई जाती है। प्रेम इसी प्रकार निर्मित होता है। प्रेम छोटे छोटे भलाई के कार्यों से निर्मित होता है। आप प्रोत्साहन, आदर, मूल्यवान, और प्रेम भरें ाब्द अपने साथी से बोलें, और आप फर्क देखेंगे। परमेश्वर आपको आशी ा दे जैसे जैसे आप यह सिद्धांत लागू करते हैं।

शिष्यता के प्रश्न

1. नीतिवचन 18:22 विवाह :

   क. एक अच्छी बात

   ख. भयानक

   ग. परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला।

2. इब्रानियों 13:4 पढ़ें विवाह में यौन संबंध (या विवाह का बिछौना) :

क. पाप

ख. गंदा और बुरा

ग. नि कलंक रहे

3. सभोपदेशक 9:9 पढें, ईश्वर के अनुरूप विवाह आपके इस जीवन के लिये ईश्वर की ओर से एक पुरस्कार है। सही या गलत

4. 1 यूहन्ना 3:18 न्यायधीश फिलिप्प गिलियन ने कहा कि ''बाल अपराध के 28000 चल रहे मामलों में से जिसका उसने न्याय किया है, माता पिता के बीच आपसी प्रेम का ना होना ही बाल अपराध का प्रमुख कारण था जिसे वह जानता था।'' *(टूगेदर फारेवर पृ.152)*। हमें किस प्रकार प्रेम प्रदर्शित करना चाहिए?

5. इफिसियों 5:28 पढ़ें मुझे अपनी पत्नी की अनदेखी नहीं करनी चाहिए ठीक जिस प्रकार मैं अपने ारीर की अनदेखी नहीं करता हूँ। सही या गलत

6. 1 यूहन्ना 3:16 पढ़ें ाब्द ''मैं तुम से प्रेम करता हूँ,'' सुन्दर हो सकता है यदि उसके साथ कार्य भी किये जायें। अपने जीवन को देने के द्वारा यीशु मसीह ने अपने वचन को प्रमााणित किया। हमें भी अपने साथी के लिये जितने भी संभव व्यवहारिक तरीकों से प्रेम करना चाहिए।

सही या गलत कुछ व्यवहारिक तरीकों को सुझायें जिससे कारण आपको प्रेम किया जाना चाहिए। वे हैं

7. इफिसियों 5:25–26 पढ़ें मेरी अपनी पत्नी से चाहे जो कुछ कहुँ वह मेरे अधीन रहेगी। मैं चाहे उससे जो कुछ कहुँ मैं उसे सहन करने की क्षमता तक ले आता हूँ। सही या गलत।

8. रोमियों 8:38:39 और 1 यूहन्ना 4:19 पढ़ें। हम उन गहरे ाब्दों द्वारा प्रेम किये जाते हैं जो हम कार्य के साथ बोलते हैं। परमेश्वर ने हमें अपने प्रेम पत्र से बड़े आत्मिय ाब्द बोलने के द्वारा प्रेम किया है, जो की पवित्र ाास्त्र में वर्णित है। सही या गलत।

9. 1 यूहन्ना 5:3 और 2 यूहन्ना 6 पढ़ें प्रेम कैसे अभिव्यक्त किया जाये यह यीशु की आज्ञाओं द्वारा जाना जाता है। हम प्रेम के इन सिद्धांतों को परमेश्वर के वचन से सीख सकते हैं। सही या गलत

10. पढ़ें यूहन्ना 14:15 प्रेम भावनाओं की बात नहीं पर आपकी इच्छा की बात है। पवित्रशास्त्र की हर आज्ञा मनु य की इच्छा पर निर्भर है, ना कि उसकी भावनाओं पर। परमेश्वर यह कभी नहीं कहता कि कैसे अनुभव किया जाये, पर यह कहता है, कि किस प्रकार कार्य किया जाये। सही या गलत

11. गलतियों 5:22–23 पढ़े प्रेम प्राकृतिक नहीं है। उसे सीखना और मनु य में उसे पवित्र आत्मा के द्वारा जन्म लेना चाहिए। प्रेम निम्न में से किस का फल है:

क. मनु य की सोच का

ख. मनु य के स्वाभाव का

ग. आत्मा का फल है।

12. इफिसियों 5:31–32 पढ़ें एक अच्छा विवाह किस चीज का लघु स्तर का प्रारूप है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

नीतिवचन 18:22 – *"जिस ने स्त्री ब्याह ली, उस ने उत्तम पदार्थ पाया, और यहोवा का अनुग्रह उस पर हुआ है।"*

इब्रानियों 13:4 – *"विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना नि कलंक रहें; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।"*

सभोपदेशक 9:9 – *"अपने व्यर्थ जीवन के सारे दिन जो उस ने सूर्य के नीचे तेरे लिये ठहराए हैं अपनी प्यारी पत्नी के संग में बिताना, क्योंकि तेरे जीवन और तेरे परिश्रम मे जो तू सूर्य के नीचे करता है तेरा यही भाग है।"*

सभोपदेशक 9:9 – (न्यू अमेरिकन स्डेंडर्ड वर्जन का हिन्दी अनुवाद) *"उस स्त्री से जिससे तू प्रेम करता है उसके साथ परमेश्वर ने जितने सूर्य के नीचे द्रुतगति से बीतने वाले दिन दिये हैं, उसके साथ जीवन का आनंद उठा, क्योंकि जीवन में जो तू सूर्य के नीचे परिश्रम करता है, उसके लिये यही तेरा पुरस्कार है।"*

1 यूहन्ना 3:18 – *"हे बालकों हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।"*

1 यूहन्ना 3:18 – *(न्यू सेंचुरी वर्जन का हिन्दी अनुवाद) "मेरे वालकों हमें लोगों से वचनों और बातचीतों से नहीं, पर कार्यों और सच्ची देखभाल द्वारा प्रेम करना चाहिए।"*

इफिसियों 5:28 – *"इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखें, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है वह अपने आप से प्रेम रखता है।"*

इफिसियों 5:25–26 – *"25 हे पतियों, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उनके लिये दे दिया। 26 कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से ुद्ध कर के पवित्र बनाएं।"*

रोमियों 8:38–39 – *"38 क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भवि य, न सामर्थ, न ऊंचाई, 39 न गहिराई और ना कोई और सृ ट, हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।।"*

1 यूहन्ना 4:19 – *"हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहिले उसने हम से प्रेम किया।"*

1 यूहन्ना 5:3 – *"और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और उस की आज्ञाएं कठिन नहीं।"*

2 यूहन्ना 6 – *"और प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं के अनुसार चलें : यह वही आज्ञा हे, जो तुम ने आरम्भ से सुनी है और तुम्हें इस पर चलना भी चाहिए।"*

यूहन्ना 14:15 – *"यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोंगे।"*

गलतियों 5:22–23 – *"22 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द मेल, धीरज, 23 कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।"*

इफिसियों 5:31–32 – *"31 इस कारण मनु य माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। 32 यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के वि ाय में कहता हूं।"*

उत्तर निर्देशिका

1. नीतिवचन 18:22 विवाह क. एक अच्छी बात और:

   ग. परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला।

2. इब्रानियों 13:4 पढ़ें विवाह में यौन संबंध (या विवाह का बिछौना):

   ग. निष्कलंक रहे।

3. सभोपदेशक 9:9 पढें ईश्वर के अनुरूप विवाह आपके इस जीवन के लिये ईश्वर की ओर से एक पुरस्कार है।

   सही

4. 1 यूहन्ना 3:18 न्यायधीश फिलिप्प गिलियन ने कहा कि ''बाल अपराध के 28000 चल रहे मामलों में से जिसका उसने न्याय किया है, माता पिता के बीच आपसी प्रेम का ना होना ही बाल अपराध का प्रमुख कारण था जिसे वह जानता था।'' (टूगेदर फारेवर पृ.152)। हमें किस प्रकार प्रेम प्रदर्शित करना चाहिए?

   कार्यो और सच्ची देखभाल द्वारा प्रेम करना चाहिए।

5. इफिसियों 5:28 पढ़ें मुझे अपनी पत्नी की अनदेखी नहीं करनी चाहिए ठीक जिस प्रकार मैं अपने ारीर की अनदेखी नही करता हूँ।

सही

6. 1 यूहन्ना 3:16 पढ़ें ाब्द मैं तुम से प्रेम करता हूँ सुन्दर हो सकता है, यदि उसके साथ कार्य भी किये जायें। अपने जीवन को देने के द्वारा यीशु मसीह ने अपने वचन को प्रमााणित किया। हमें भी अपने साथी के लिये जितने भी संभव व्यवहारिक तरीकों से प्रेम करना चाहिए।

सही कुछ व्यवहारिक तरीकों को सुझाये जिससे कारण आपको प्रेम किया जाना चाहिए।

7. इफिसियों 5:25–26 पढ़ें मेरी अपनी पत्नी से चाहे जो कुछ कहुँ वह मेरे अधीन रहेगी। मैं चाहे उससे जो कुछ कहुँ मै उसे सहन करने की क्षमता तक ले आता हूँ।

सही। ग्रीक शब्द जिसका इफिसियों ५:२६ में उपयोग किया गया है वह रहेमा है जिसका अर्थ "बोले गये शब्द हैं।"

8. रोमियों 8:38:39 और 1 यूहन्ना 4:19 पढ़ें हम उन गहरे ाब्दों द्वारा प्रेम किये जाते हैं, जो हम कार्य के साथ बोलते हैं। परमेश्वर ने हमें अपने प्रेम पत्र से बड़े आत्मिय ाब्द बोलने के द्वारा प्रेम किया है, जो की पवित्र ाास्त्र में वर्णित है।

सही। परमेश्वर का वचन हमारे प्रति प्रेम पूर्ण शब्दों से भरा हुआ है।

9. 1 यूहन्ना 5:3 और 2 यूहन्ना 6 पढ़ें प्रेम कैसे अभिव्यक्त किया जाये यह यीशु की आज्ञाओं द्वारा जाना जाता है। हम प्रेम के इन सिद्धांतों को परमेश्वर के वचन से सीख सकते हैं।

सही

10. पढ़ें यूहन्ना 14:15 प्रेम भावनाओं की बात नहीं, पर आपकी इच्छा की बात है। पवित्रशास्त्र की हर आज्ञा मनु य की इच्छा पर निर्भर है, ना कि उसकी भावनाओं पर। परमेश्वर यह कभी नहीं कहता कि कैसे अनुभव किया जाये, पर यह कहता है, कि किस प्रकार कार्य किया जायें।

सही

11. गलतियों 5:22–23 पढ़ें प्रेम प्राकृतिक नहीं है। उसे सीखना और मनु य में उसे पवित्र आत्मा के द्वारा जन्म लेना चाहिए। प्रेम निम्न में से किस का फल है:

ग. आत्मा का फल है।

12. इफिसियों 5:31–32 पढ़ें एक अच्छा विवाह किस चीज का लघु स्तर का प्रारूप है?

मसीह और उसकी कलीसिया का है।

दूसरा स्तर

अध्याय १२

परमेश्वर के प्रेम के प्रकार (भाग १)

लेखक - डोन क्रो

आज हम परमेश्वर के प्रेम के प्रकार के वि ाय में चर्चा करेंगे 1 कुरिन्थियों 13:13 में वचन इस प्रकार से कहता है,*"पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इन में सबसे बड़ा प्रेम है।"* 1 कुरिन्थियों 14:1 कहता है, *"प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो विशे ा करके यह, कि भवि यद्वाणी करो।"* बाइबल हमसे प्रेम का अनुसरण करने उसके पीछे हो लेने और उसे अपना सबसे उच्चतम लक्ष्य बनाने को कहती है। कुछ अनुवाद इसे अपनी सबसे बड़ी खोज कहकर पुकारते हैं। यही एक मात्र चीज है जिसे हम इस जीवन से   ाश्वत् जीवन में लेकर जायेंगे। हम अपनी कार, अपना घर, अपना पैसा लेकर स्वर्ग नहीं जायेंगे पर वह प्रेम लेकर जायेंगे जो प्रभु यीशु मसीह ने हमारे हृदय मे पवित्र आत्मा के द्वारा रोपा है। प्रेम का ही अनंत मूल्य और तात्विक अर्थ है।

प्रेम का वास्तविक अर्थ क्या है? मैं कहता हूँ, मैं अपनी पत्नी से प्रेम करता हूँ, मैं आईसक्रीम पसंद करता हूँ। मुझे एप्पल पाई पसंद है। अंग्रेजी भा ा में प्रेम का वर्णन करने के लिये सिर्फ एक ही   ाब्द है। मैं कहता हूँ मैं अपनी पत्नी से प्रेम करता हूँ। फिर कहूँ कि मैं बिल्ली से प्रेम करता हूँ, तब क्या मैं अपनी पत्नी को प्रभावित कर सकता हूँ? नहीं बिल्कुल नहीं। क्या आप देखते हैं, कि मैं क्या कह रहा हूँ। जब आप प्रेम   ाब्द का इस्तेमाल करते हैं, तो कुछ लोग सोचते हैं कि यह सैक्स है, कुछ लोग कहेंगे कि यह गहरी गर्मजोशी की भावना है। लोगों के पास प्रेम की सब प्रकार की परिभा ा है। ग्रीक भा ा में 4 प्रमुख   ाब्द हैं। उनमें से एक *इरोस*   ाब्द है जिसका की वास्तव में बाइबल में इस्तेमाल नहीं किया गया है, और इसे यौन आक ाण या यौन प्रेम के रूप में परिभाि ात किया गया है। परमेश्वर ने इस प्रकार के प्रेम को तब आशीि ात किया जब उसने कहा कि इस कारण पुरू ा अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बने रहेंगे। बाइबल में सुलैमान के श्रे ठगीत नामक पुस्तक यौनाचार के प्रेम को विवाह संबंध तक सीमित किया गया है। बाकी के सब प्रकार के

प्रेम का उपयोग करने के लिये हर कोई आजाद है, पर इरोस को सिर्फ विवाह संबंध तक सीमित किया गया है।

एक अन्य प्रकार का प्रेम जो प्राकृतिक बंधन है या पारिवारिक संबंधों में प्रेम भावना कहलाता है वह है *स्टोरिज* । फिर ाब्द *फिलियो* आता है। जो मूल ाब्द फिलिया से आता है। इस ाब्द का लगभग 72 बार नये नियम में इस्तेमाल किया गया है और इसका अर्थ गर्मजोशी की भावना है, जो कि बड़ी तीव्रता के साथ आती और जाती है। अधिकांश लोग जो प्रेम के वि ाय में बात करते हैं, वह सोचते हैं कि यही वास्तव में प्रेम है, अतः आप, "प्रेम में पड़ते हैं, और प्रेम से बाहर हो जाते हैं।" यदि आपका विवाह इस प्रकार के प्रेम पर आधारित है, तब ऐसा समय होगा जब आप इसके चरमोत्क ि पर होंगे और कभी तो बहुत निचले स्तर पर चले जायेंगे। आप इसके आधार पर आप प्रेम में पड़ सकते हैं, और प्रेम से बाहर हो सकते हैं।

बाइबल कहती है कि हम एक दूसरे से परमेश्वर के प्रेम के अनुसार प्रेम करें, जो कि *अगापे* प्रेम है। *"अगापे"* प्रेम क्या है? इसके कई पक्ष है, और 1 कुरिन्थियों 13 इसकी पूरी परिभा ा देता है कि प्रेम में क्या ामिल है। यूहन्ना 5:3 में वह कहता है, *"और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और उस की आज्ञाएं कठिन नहीं है।"* यीशु की आज्ञायें हमें प्रेम की अभिव्यक्ति को बतलाती है, पर यदि मैं इसे संक्षेप में प्रस्तुत करना चाहूँगा, तो मैं मत्ती 7:12 का उपयोग करना चाहूंगा, *"इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनु य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भवि यद्वक्ताओं की शिक्षा यही है।"* इसका कोई औचित्य नहीं कि कलीसिया के वे सभी लोग मुझसे प्रेम नहीं करते, मेरी चिन्ता नहीं करते, या यह या वह नहीं बाइबल कहती है। आप जैसा चाहते हैं कि लोग आपके साथ करें आप भी उनके साथ पहले वैसा ही व्यवहार करें। यही प्रेम है। यह हमारी देह के विपरीत, हमारे प्राकृतिक स्वभाव के विपरीत है कि हम अपनी भलाई छोड़कर दूसरे की भलाई करने कि चिन्ता करें। इसमें परमेश्वर की आवश्यकता होती है। यह ना सोचे कि यह परमेश्वर के बिना प्रकट हो सकता है। बाइबल कहती है, कि आत्मा का फल प्रेम है, और परमेश्वर प्रेम है। वही प्रेम का स्त्रोत है, और वही हमें उसकी आज्ञाओं के अनुसार प्रेम करना दिखायेगा। वही है जो हमे ाक्ति देगा, चाहें हम ारीरिक रूप में भी क्यों ना हों, कि हम सही निर्णय ले सही चुनाव करें और सही सिद्धांतों पर कार्य करें।

मैं एन्ड्रयू वॉमक सेवकाई में काम करता हूँ, और कुछ व ों पहले एक दिन मैं प्रार्थना करना चाहता था, जैसा कि मैं अक्सर आपने काम के बाद किया करता हूँ। मैं एक पार्क में था, और मैंने कहा, "परमेश्वर आज वास्तव में मैं किसी के साथ वचन बाँटना चाहता हूँ।" वह कुछ गरम दिन था, और मैंने एक छोटे लड़के और लड़की को झूले पर बैठे देखा। झूला खुला हुआ था और मैं भी जाकर उस झूले में बैठ गया। मैं उस छोटी लड़की की ओर मुड़ा और मैंने कहा, "बहुत अच्छा दिन है, है ना?" उसने कहा, "मुझे अंग्रेजी भा ा नहीं आती।" मैंने फिर उससे पूछा की, "कि तुम कहाँ से आती हो?" उसने कहा कि वह रोमेनिया से आई है। मैं जानता था कि उस क्षेत्र में कुछ रोमेनिया वासी रहा करते थे। मैंने देखा कि यह लोग बड़े ही आश्चर्यजनक रीति से मेरी ओर देख रहे थे। संभवतः वह इस बात पर आश्चर्य कर रहे थे कि मैं उनके बच्चों से क्यों बात कर रहा हूँ। मैं उनके पास गया और मैंने उनसे कहा,"मैं आपकी सहायता करना चाहता हूँ।"उन्होंने कहा कि, "क्या आप हमारी सहायता करना चाहते हैं। आप क्यों हमारी सहायता करना चाहते हैं। आप तो हमें जानते भी नहीं है!" मैंने कहा,"क्योंकि परमेश्वर आपकी सहायता करना चाहता है।" 1 यूहन्ना 3:18 में वर्णित प्रेम के सिद्धांत पर मनन कर रहा था जहां वो इस प्रकार कहता है,*"हे बालकों, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।"* हम मुहँ के वचनों से ही नहीं पर अपने कार्यों द्वारा भी प्रेम करना है। यद्यपि मैं अपने साथ कुछ पैसा नहीं रखता पर उस दिन मेरे पास कुछ पैसा था। मैंने आगे बढ़कर कहा कि,"यह आपके लिये है।" और मैंने वह पैसा दे दिया। चूकि मैं उस दिन उपवास रखे हुए था, अतः मेरे पास कुछ भोजन था अतः मैंने उससे कहा कि, "यह आपके और आपके परिवार के लिये कुछ भोजन है।" इस बात ने उनके दिल को स्पर्श किया और उन्होंने मुझ से कहा,"कि आप कौन है?। मैंने उनसे कहा कि, "परमेश्वर ने आपसे मिलने के लिये आज का दिन नियुक्त किया है, और मैं फिर से आपसे मिलूंगा।"

मैं घर गया और उन रोमेनियावासियों से मुलाकात होने के वि ाय में अपनी पत्नी से बताया। मैंने फ्रीजर में रखा हुआ गोश्त निकाला और उसे पकाया। अगले दिन मैंने प्लेट का एक डिब्बा खरीदा जो मैंने गैराज सेल से लिया, और अपनी पत्नी के साथ फिर से पार्क में गया। वे रोमेनियावासी और उनका परिवार वहां था। और मैंने कहा,"मैं आपके लिये उपहार लाया हूँ वह बहुत वजनी है, और मेरी कार में है अतः मैं चाहता हूँ कि यदि आप मुझे बता दें कि आप कहाँ रहते हैं तो मैं उसे आपके घर पहुँचा दूं।" जब

मैं उनके एक बैडरूम वाले घर पहुंचा, तब मैंने एक एक कर प्लेटों को निकालना ाुरू किया जो सब मैचिंग थी, और मैंने उन लोगों को एक एक कर देना ाुरू किया। जब मैं उन्हें देने लगा तब उस घर की स्त्री ने कहा मैं रो पडूंगी! मैं रो पडूंगी! मैंने उनसे कहा सोमवार की रात्रि को मेरे निवास स्थान पर बाइबल अध्ययन रखा गया है और मैं आप लोगों को इस बाइबल अध्ययन के लिये सादर आमंत्रित करना चाहता हूँ।" उन्होंने कहा "हम वहा आना चाहते हैं," पर मैंने कहा, "मैं नही ंचाहता कि आप इस वजह से आये कि मैंने आपको उपहार दिया है।" उन्होंने कहा कि "नहीं, हम आकर आपके मित्रों से मिलना चाहते हैं।"

चूँकि उनके पास परिवहन का कोई साधन नहीं था, अतः मैं उनके पास गया और उनको अपनी कार मे अपने साथ अपने घर ले गया। बहुत देर ना लगी और परमेश्वर ने उनको स्पर्श करना ाुरू किया। मैं अग्रेजी भा ाा में अच्छी तरह बोल नहीं सकता था पर प्रभु ने उनको स्पर्श किया जब मैंने उनके लिये प्रार्थना की। परमेश्वर का प्रेम उन पर प्रकट होने लगा। थोडे ही समय में हम एक अन्य रोमेनियावासी जोड़े से मिले और हमने पहले जोडे से कहा, "क्या आप अन्य रोमेनियावासी जोड़ों से मिलने में मेरी सहायता करोगे?" वे इस बात से सहमत हो गये, और एक दिन मुझे उनसे फोन काल आया, "श्रीमान डान हमने आपके बारे में सुना है। हमारे पास *'लोनिलाईस बेड'* है, और हम आपसे मिलना चाहते हैं।" अतः मैं अपने रोमेनियावासी मित्रों को लेकर उनसे मिलने गया। मैंने उनके लिये भोजन वस्तु और सब प्रकार के उपहार लेकर अपने साथ गया। जब मैं ऐसा करते हुये उनसे बार बार मिलने जाया करता था, सब कुछ ठीक चल रहा था, जब तक की पहले रोमेनियावासी जोडे में से एक ने कहा, "आपको बाइबल अध्ययन के लिये जाना चाहिए। वे यीशु के बारे में बात करते हैं, और यह अद्‌भुत है!" उन्होंने कहा, जरा एक मिनट ठहरे! हम एक नास्तिक देश से आये हैं, और नहीं जानते कि ईश्वर भी है। हमें इस यीशु नाम की चीज नहीं चाहिए।"

मैंने उनसे कहा, "मुझे आपका एक मित्र होने दें," मैं उन्हें सप्ताहांत में बाहर ले जाने लगा और उनके लिये कपड़े कोट और उनकी जरूरत का समान खरीदने लगा। वे बहुत ार्मसार थे और हिचकिचा रहे थे। "क्या तुम्हें कोट की आवश्यकता नहीं है?" "हाँ हाँ मुझे इसकी आवश्यकता है पर ..." "तो फिर ये कोट हम आपके लिये खरीदते हैं।" मैं उनसे कार्य रूप में प्रेम करने लगा, पर वे तब तक बाइबल अध्ययन में नहीं आया, जब तक कि

मैंने उनसे न कहा, कि उस अध्ययन में कुछ अमेरिका वासी हैं, जो आपको नौकरी प्राप्त करने में सहायता प्रदान कर सकते हैं।" यह सुनने पर वह सीधे बाइबल अध्ययन में आ गये। उस रात, बाइबल अध्ययन में मैंने प्रभु से कुछ मूर्खतापूर्ण कहा, "प्रभु आपको मुझे आज रात अन्य अन्य भा   ा का मौलिक वरदान देना होगा, क्योंकि देखिये हम एक दूसरे से अच्छी तरह बात भी नहीं कर पाते हैं।" उस बाइबल अध्ययन में कुछ अमेरिकावासी थे जिन्होंने अपनी गवाहियाँ दी। जब मैंने बोलना   ुरू किया तब दूसरा रोमेनियन जोड़ा उत्सुक दिखाई देने लगा, और मैं जानता था, कि कुछ घटित हो रहा है। अध्ययन के पश्चात मैंने कहा मुझे आपके लिये प्रार्थना करना चाहता हूँ। जब हमने प्रार्थना की तब परमेश्वर ने अचानक ही उनको छूआ और कमरे के सारे माहौल को अपने प्रेम से भर दिया। फिर स्त्री ने कहा, "आप जानते हैं, कि जब अमेरिकावासी लोग बोल रहे थे। तब जो कुछ भी वह कह रहे थे, मैं वह समझ नहीं पा रही थी, पर जब आप खड़े होकर यीशु के वि   ाय में, उसके हमारे प्रति प्रेम, और उन्होंने क्या किया, कि हम उसके साथ एक अच्छा संबंध रख सकें, के वि   ाय में बोलना   ुरू किया। मैं आपके द्वारा बोला गया हर   ाब्द समझ पाई! मैं इसे बहुत अच्छी तरह समझ पाई! यह जरूर परमेश्वर होगा! परमेश्वर होगा!" इसके परिणाम स्वरूप ना सिर्फ रोमेनियनवासी बदल गये, परन्तु उनका जीवन भी बदल गया।

अब मुझे बताने दें, कि उस रात के बाद क्या हुआ। मेरा घर सोमवार की रात्रि को अन्तरा   ट्रीय लोगों से भरने लगा, जैसे रोमेनियावासी, बल्गेरियावासी और रूस के लोग थे। परमेश्वर उनके जीवनों को बदल रहा था, और वे जानते थे, कि हम उनसे प्रेम करते थे। हमारे पास अफ्रिका के भी लोग थे। यद्यपि हम एक दूसरे से   ाायद ही बात कर पाते थे, पर एक बात वे जानते थेः कि जब हम प्रार्थना करते थे, तब परमेश्वर अपने आप को उन पर प्रकट करता था। वे यह भी जान गये कि मैं उनके लिये कुछ भी कर सकता हूँ, और मैं उनसे प्रेम करता था। परमेश्वर ने उनके और कई लोगों के जीवनों को बदला, और मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यह कैसे हुआ। यह इसलिये हुआ, कि एक दिन पार्क में मैंने किसी और रा   ट्रीयता और रंग के लोगों को देखा। मैंने उनके प्रति बड़े लगाव की भावना का अनुभव नहीं किया पर मैं जानता था, यही प्रेम था। आप जो चाहते हैं कि दूसरे लोग आपके साथ करें, आप वैसा ही उनके साथ करें। मैंने अपनी सोच की परवाह ना करते हुये उनकी भलाई और लाभ की खोज की, आप जानते हैं क्या हुआ? उन्होंने इसकी सराहना इसलिये कि जो उनके मन में मेरे प्रति उभरा वह था *फिलिया* प्रेम। वह

प्रेम जिसमे भावनायें होती हैं, और उन्होंने यह कहना ाुरू कर दिया कि, "मैं तुम से प्रेम करता हूँ।" वे मुझे गले लगाने लगें और मुझे चूमने लगें। इसने मेरे दिल मे उनके प्रति वो भावना को जगाया। यदि आपको अपने जीवन में ऐसा प्रेम चााहिए जिसमे भावनायें हों तो फिर अगापे प्रेम का अभ्यास करें। आपको चाहे जो भी लगता हो इसकी सोचे बिना आप दूसरों की भलाई और लाभ की खोज करें, और यह आप में ऐसा प्रेम उत्पन्न करेगा जिसमें भावनायें हों।

शिष्यता के प्रश्न

1. यूहन्ना 5:3 पढ़ें परमेश्वर का प्रेम उसकी द्वारा दर्शाया गया है।

2. रोमियों 13:9–10 पढ़ें यह समझायें, कि प्रेम इन पदों में कैसे प्रदर्शित होता है।

3. रोमियों 12:19–21 पढ़ें हम अपने दुश्मनों से कैसे प्रेम कर सकते हैं चाहे हमें ऐसा करने की इच्छा भी ना हों?

4. तीतुस 2:4 पढ़ें यह पद हमें प्रेम के बारे में क्या दर्शाता है?

5. 1 कुरिन्थियों 13:4–8 प्रेम के सिद्धांतों का विस्तारपूर्वक वर्णन करें। (कनटेम्पररी इंगलिश वर्जन का हिन्दी अनुवाद)

6. 1 यूहन्ना 3:18 हम प्रेम का अभ्यास कैसे करें?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

1 यूहन्ना 5:3 – *"और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं।"*

रोमियों 13:9–10 – *"9 क्योंकि यह कि व्यभिचार न करना, हत्या न करना; चोरी न करना; लालच ना करना; और इन को छोड़ और कोई भी आज्ञा हो तो सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। 10 प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिये प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है।"*

रोमियों 12:19–21 – *"19 हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु क्रोध को अवसर न दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा। 20 परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो, तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा। 21 बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।"*

तीतुस 2:4 – *"ताकि वे जवान स्त्रियों को चितौनी देती रहें, कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें।"*

1 कुरिन्थियों 13:4–8 – *"4 प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। 5 वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। 6 कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। 7 वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। 8 प्रेम कभी टलता नहीं;"*

1 कुरिन्थियों 13:4–8 – *(कनटेम्परारी इंगलिश वर्जन) "प्रेम धीरजवन्त और दयालु है, ई या, बड़ाई नहीं करता, फूलता नहीं है। प्रेम स्वर्थी और जल्दी से क्रोधित होने वाला नहीं है। वह दूसरे के द्वारा किये गये गलत कामों का हिसाब नहीं रखता। प्रेम सत्य में आनंदित होता है, बुराई में नहीं। प्रेम हमेशा सहारा देने वाला ईमानदार आशावान और भरोसेमंद है। प्रेम कभी नहीं टलता।"*

1 यूहन्ना 3:18 – *"हे बालकों, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।"*

उत्तर निर्देशिका

1. यूहन्ना 5:3 पढ़ें परमेश्वर का प्रेम उसकी __________ द्वारा दर्शाया गया है।
   आज्ञाओं

2. रोमियों 13:9–10 पढ़ें यह समझायें, कि प्रेम इन पदों मे कैसे प्रदर्शित होता है।
   प्रेम अपने पड़ोसी की बुराई नहीं करता। हर आज्ञा यह दर्शाते हुये प्रेम का प्रदर्शन करती है कि हम अपने पड़ोसी को प्रतिउत्तर किस प्रकार दे।

3. रोमियों 12:19–21 पढ़ें हम अपने दुश्मनों से कैसे प्रेम कर सकते हैं चाहे हमें ऐसा करने की इच्छा भी ना हो?
   यदि हमारा दुश्मन भूखा हो तो उसे खाना खिलाये; यदि प्यासा हो, तो उसे कुछ पीने के लिये दे। हमें चाहे जो लगे हमें दूसरों की भलाई की खोज करना चाहिए।

4. तीतुस 2:4 पढ़ें यह अनुच्छेद हमें प्रेम के बारे में क्या दर्शाता है?
   प्रेम कोई भावना नहीं है। प्रेम सिखाया भी जा सकता है।

5. 1 कुरिन्थियों 13:4–8 प्रेम के सिद्धांतों का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।
   (कनटेम्पररी इंगलिश वर्जन का हिन्दी अनुवाद) "प्रेम धीरजवन्त और दयालू है, डाह बढ़ाई नहीं करता, फूलता नहीं रूड नहीं है। प्रेम स्वार्थी और जल्दी से क्रोधित होने वाला नहीं है। वह दूसरे के द्वारा किये गये गलत कामों का हिसाब नहीं रखता। प्रेम सत्य में आनंदित होता है बुराई में नहीं। प्रेम हमेशा सहारा देने वाला ईमानदार आशावान और भरोसेमंद है। प्रेम कभी नहीं टलता।"

6. 1 यूहन्ना 3:18 हम प्रेम का अभ्यास कैसे करें?
   हमें वचन से ही नहीं पर काम से भी प्रेम करना चाहिए।

दूसरा स्तर

अध्याय १३

परमेश्वर के प्रेम के प्रकार (भाग २)

लेखक – डोन क्रो

''परमेश्वर की तरह प्रेम'' (भाग 1) में मैंने आपको रोमेनियावासी जोड़े के बारे में बताया था, जिनसे मेरी मुलाकात पार्क में हुई थी। मैं आपको कुछ और भी बताना चाहता हूँ, कि क्या हुआ, पर इससे पहले कि मैं बतांऊ, मैं कुछ चीजों का पुनर्रावलोकन करना चाहूँगा जो हमने परमेश्वर के प्रेम के बारे में कहा। यीशु मसीह इस पृथ्वी पर आने वाली प्रेम कि अभिव्यक्ति में सबसे महान अभिव्यक्ति था। पर जहाँ तक बाइबल में उल्लेख का सवाल है, उसने कभी नहीं कहा, कि ''मैं तुम से प्रेम करता हूँ।'' क्या आप जानते हैं क्यों? क्योंकि प्रेम ाब्दों से कहीं अधिक है। यह कार्य रूप में परिणित होना है। मान लीजिए मैं अपनी पत्नी से कहूँ कि ''मैं तुम से प्रेम करता हूँ'' और बाहर जाकर उसके विरूध व्याभिचार करूं? तो क्या वह मेरे वचनों पर विश्वास करेगी, या मेरे कार्यों पर विश्वास करेगी? वह मुझ पर मेरे कार्यों के अनुसार विश्वास करेगी, क्योंकि 95 प्रतिशत प्रेम अमौखिक है। यह उन बातों में नहीं जो आप कहते हैं; पर उन बातों में है जो आप करते हैं।

1 यूहन्ना 3:18 में हम पढ़ते है, *"हे बालकों, हम वचन और जीभ ही से नहीं, (मात्र आपने मुख से बोले गये ाब्दों से ही नहीं) पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।"* प्रेम क्रियात्मक ाब्द है। मत्ती 25:35–36, में यीशु मसीह के प्रेम का वर्णन उन क्रियाओं द्वारा वो यह कहते हुये प्रेरित करता है, ''मैं भूखा था तुम ने मुझे खिलाया, मैं प्यासा था तुमने मुझे कुछ पीने को दिया, मैं नंगा था और तुम ने मुझे कपड़े पहनाये, मैं बीमार था और तुमने मेरी देखभाल की।" फिर पद 40 में वो कहता है, ''मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया है।'' आप देख सकते हैं, कि प्यार क्रिया है; यह ऐसा कुछ है, जो आप कर सकते हैं। इब्रानियो 6:10 कहता है कि *"क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं, कि तुम्हारे काम, और उस प्रेम को भूल जाए, जो तुम ने उसके नाम के लिये इस रीति से दिखाया, कि पवित्र लोगों की सेवा की, और कर भी रहे हो।"* मत्ती पद 22 में जब यीशु मसीह से यह

पूछा गया, कि महान आज्ञा क्या थी। उसने उनसे कहा कि, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और सारे प्राण और सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख और अपने पडोसी से अपने समान प्रेम रख। ये दो आज्ञाएं वास्तव में एक ही हैं, यदि आप इसे वास्तव में समझ लें तो। जब आप इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ प्रेम प्रदर्शित करते हैं, तो आप मेरे साथ प्रकट करते हो। बाइबल यह शिक्षा दे रही है, कि दूसरों को प्रेम करने के द्वारा हमें यीशु मसीह को व्यवहारिक रीति से प्रेम करने का अवसर प्राप्त होता है।

मेरे पिछले अध्याय में, मैंने आपसे रोमेनियावासियों के वि ाय में चर्चा की जिनसे मैं ने पार्क में मुलाकात की थी। उनका जीवन बदल गया था क्योंकि मैंने उनकी भलाई और लाभ चाहा चाहे मुझे कैसा भी क्यों ना लगे। वे भिन्न रंगो और रा ट्रीयता वाले व्यक्ति थे। शिक्षा दी पर मैं जानता था कि परमेश्वर का प्रेम तभी अपने आप को अभिव्यक्त करता है, जब हम आगे बढ़े और दूसरों की भलाई और लाभ की खोज करें, जैसा यीशु मसीह ने किया है। उसे क्रूस पर जाने की इच्छा नहीं थी। उसने कहा कि, "मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।" यीशु ने चाहे उसे जैसा भी लगे हमारी भलाई और लाभ के वि ाय में सोचा।

एक दिन मुझे रोमेनिया वासियों से कॉल आया। वे आँसु बहा रहे थे। वे संयुक्त राज्य अमेरिका में साढ़े सात व ों से रह रहे थे। वे अब कनसास में रह कर काम कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ''हमारे ारणार्थी होने के कागजात पर एक टिप्पणी दी है, कि आपको तीस दिन का अपील करने का समय दिया जाता है, फिर आपको आपके देश वापिस भेज दिया जायेगा।'' इस देश में लोगों को राजनैतिक ारण पाने के लिये 2 से 5 प्रतिशत मौका मिलता है। वे एक वकील के पास गये, और उसने उनसे कहा कि उनके पास लगभग कोई मौका नहीं है। मैंने उनसे कहा कि हम प्रार्थना करेंगे और उनकी सहायता करने की कोशिश करेंगे। कैसे करेंगे, यह नहीं पता था पर मैंने सोचा कि यह बड़ा अन्याय होगा यदि हम उन्हें वापिस भेजे जहाँ उनके बच्चे रोमेनियन भा ा बोल भी नहीं पाते थे।

मेरे एक मित्र ने हमारे कोलोराडो कांग्रेसमैन को फोन किया, जिसने कहा कि वह कनसास में सेनेटर सैम ब्राऊनबेक से केनसास में संपर्क कर लें, चूँकि रोमेनिया के वासी कानसेसे में रहते थे। यह बड़ी अच्छी बात थी, क्योंकि मेरा एक मित्र जिसका नाम किम

है कानसेस था वह सिनेटर ब्राऊन बैक के लिये काम करता था। मैंने किम से संपर्क करने की कोशिश की। और उसने वाशिंगटन डी.सी. में चार लोगों का पता लगाया जो इस मामले में काम कर रहे थे। सबलैटी कानसस में रोमेनिया वासी के पीछे पड़ गये कि वे हस्ताक्षरों के निवेदनों पर दस्तखत करें, जिसमे यह कथन था, कि वे चाहते हैं कि रोमेनियन वासी भी यहा रहें। वे अच्छे लोग हैं, वे टैक्स अदा करते हैं, और वे कठोर परिश्रम करते हैं। हम उन्हें यहां चाहते हैं। जो कुछ घटित हुआ उसकी पूर्ण कवरेज हुई और इसके बारे में विस्तारपूर्ण रीति से छापा गया। यह एक चमत्कार था, चूँकि हमारी सरकार में उच्च अधिकारी थे, जो इस बात को समझते थे, कि क्या हो रहा है रोमेनियों वासिया को यह कहते हुये एक पत्र प्राप्त हुआ कि निर्णय बदल दिया गया है, और अब वह सयुक्त राज्य अमेरिका में रह सकते हैं।

मैं सबलेटी, कानसेस में गया। मेरे मित्र नहीं जानते थे कि मैं आ रहा हूँ, और जब मैं वहाँ पहुँचा तब वे फोन पर सेनेटर ब्राउनबेक को उनके राजनैतिक ारणार्थी के लिये सहायता करने के लिये धन्यवाद दे रहे थे। वो वहां नहीं आ सका था क्योंकि वह रा ट्रपति किलिन्टन की महाभियोग की सुनवाई का आखरी दिन था। पर ए.बी.सी. और एन.बी.सी. समाचार सेवा के लोग भी वहाँ अपने कैमरे के साथ थे। जैसे ही वो वहाँ तैयार हुये, उन्होंने दौड़ कर मुझे गले लगा लिया। उन्होंने कहा "आप कौन हैं, और आप इन लोगों के बारे मे कैसे जानते हैं?" मैंने उसे पूरी कहानी बताई, कि मैं उनसे कैसे मिला और परमेश्वर के कारण उनकी भलाई और लाभ चाहा और मैंने यह भी बताया की यीशु मसीह ने मत्ती 7:12 में क्या कहा।

फिर हम व्यायाम ाला गये, जहाँ पूरे मैदान में लाल, सफेद, और नीले गुब्बारे थे, और देशभक्ति गीत गाये जा रहे थे। जब मेरे मित्र वहाँ आये तो सभी जन चिल्लाने लगे, और वे रो रहे थे। ाहर के मेयर ने कहा, "आज फरवरी 12 को रोमेनिवासियों के सम्मान में जूकन फेमिली डे घोि ात किया जाता है।" उन्होंने एक अमीरिकी ध्वज लिया जिसे सेनेटर ने राजधानी वाशिंगटन डीसी में उनके सम्मान में फहराया था। उसने उन्हें वह कागजात भी सौंपे जिसमे यह बात कही गई, कि वह कानूनी तौर पर अपने बाकी के सारे जीवन वहाँ रह सकते हैं। उन सभी लोगों ने वहाँ एक गवाही दी फिर उन्होंने मुझ से प्रार्थना करने को कहा, मैंने कहा, "एक ऐसा व्यक्ति जिसे हमने पर्याप्त धन्यवाद नहीं दिया है, वह है परमपिता परमेश्वर। साढ़े सात व ाि पहले कोलोराड़ो स्प्रिंग सी ओ के एक पार्क में मैं परमेश्वर की खोज कर रहा था, मैं उससे कह रहा था कि मैं उसके

प्रेम के साथ किसी और तक पहुँचना चाहता हूँ। मेरी अगुवाई इन रोमेनिया वासियों की ओर हुई।" मैंने कहानी को दोहराया और कहा,"परमेश्वर आपकी सहायता करना चाहता है– यू.एस.ए. में आपका स्वागत है।"

जिस तरीके से यह सब हुआ वह एक चमत्कार था। मैं सही लोगों को, सही स्थान पर सही समय पर जानता था। इन सब घटनाओं कें एक व र्ा पूर्व मेरे मित्र किम ने सेनेटर ब्राउन बैंक से मुझसे ऐन्ड्रयू वोमैक सेवकाई में आकर मिलने के लिये व्यवस्था की थी। उसने कहा, "आपको डान क्रो से मिलने की आवश्यकता हैं।" मैं नहीं जानता था कि मैं इतना बेचैन क्यों था। मैं इस वि ाय में बहुत कम जानता था, कि परमेश्वर इन सब बातों कि व्यवस्था कर रहा था कि वह एक परिवार की सहायता करना चाहता था। उसने अपने आपको और अपने प्रेम को यीशु मसीह की इस आज्ञा अनुसार प्रकट किया था, कि जैसा तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ करे तुम भी वैसे ही किया करो। यह एक चमत्कार है, जो वे कभी नहीं भूलेंगे और वे आज आपसे कहेंगे, "यह परमेश्वर के कारण है। रोमेनिया महिला अनका ने कहा, "मेरा विश्वास डगमगा गया, पर परमेश्वर विश्वासयोग्य है, और उसने हमे अमेरिका मे रहने की अनुमति दी।"

असंख्य लोग अभी हैं, जो प्रेम के लिये प्रभु को पुकार रहे हैं। एक मात्र तरीका जिससे आप यह प्राप्त कर सकते हैं, जब आप और मैं परमेश्वर के वचन से प्रेम के सिद्धांतों को समझने का निर्णय लें। प्रेम दयालू है, प्रेम दूसरो की भलाई चाहता है, ठीक उसी प्रकार जैसे यीशु ने दूसरो की भलाई चाही जब वह क्रूस पर था। परमेश्वर आपको आशी ा दे जब आप इन सिद्धांतों को और भी ज्यादा देंखें कि परमेश्वर के प्रेम के साथ प्रेम करने का क्या अर्थ है।

शिष्यता के प्रश्न

1. मत्ती 7:12 पढ़ें अपने ाब्दों में यह बतायें की स्वर्ण नियम क्या है?

2. मत्ती 7:12 पढ़ें प्रेम की खोज की कोशिश में कई लोग सही व्यक्ति की खोज करते हैं। क्या आपको सही व्यक्ति की खोज करना चाहिए या खुद ही सही व्यक्ति बन जाना चाहिए?

3. 1 यूहन्ना 5:3 पढें. क्या प्रेम एक भावना है, या प्रेम ऐसा कुछ है, जो आप करते है?

4. 1 यूहन्ना 3:18 पढ़ें यदि आप अपनी पत्नी या पति से कहते है कि, "मैं आपसे प्यार करता हूँ!" और बाहर जाकर व्याभिचार करें, तो क्या वो या वह आपके ाब्दों पर या कार्यों विश्वास करेंगे?

5. रोमियों 5:6–8 पढें. क्या आपको लगता है, कि यीशु को मरने की इच्छा हुई?

6. गलतियों 5:22 पढ़ें. परमेश्वर को अपने जीवन का केन्द्र बनाये बिना क्या हम प्रेम कर सकते है?

7. 1 यूहन्ना 4:8 पढ़ें. जिस कारण से हमें दूसरों से प्रेम करने के लिये परमेश्वर से सहायता की आवश्यकता है, वह इसलिये है कि वही वह है जो

8. 1 कुरिन्थियों 13:5 पढ़ें. निम्न ाब्दों में से चुनाव करें कि प्रेम क्या नहीं है? क्षमाहीन, कठोर, स्वार्थी,

9. 1 कुरिन्थियों 13:8 पढ़ें. ऐसी कौन सी चीज है जो आप इस जीवन से अगले जीवन में या कब्र से परे लेकर जायेंगें?

10. नीतिवचन 10:12 पढ़ें. 1 कुरिन्थियों 13:5 कहता है प्यार कितने पापों को ढाँप लेगा?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

मत्ती 7:12 – *"इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनु य तुम्हारे साथ करे, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भवि यद्वक्ताओं की शिक्षा यही है।"*

1 यूहन्ना 5:3 – *"और परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और उस की आज्ञाएं कठिन नहीं।"*

1 यूहन्ना 3:18 – *"हे बालकों, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।"*

रोमियों 5:6–8 – *"6 क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। 7 किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनु य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। 8 परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।"*

गलतियों 5:22 – *"पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।"*

1 यूहन्ना 4:8 – *"जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।"*

1 कुरिन्थियों 13:5 – *"वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता।"*

1 कुरिन्थियों 13:5 – बाइबल के न्यू लिविंग अनुवाद में इस प्रकार है, *"प्रेम कठोर नहीं है। वह अपनी राह चलने की माँग नहीं करता। वह झुंझलाता नहीं और वह इसका कोई हिसाब नहीं रखता कि उसके साथ कब गलत किया गया है।"*

1 कुरिन्थियों 13:8 – *"प्रेम कभी टालता नहीं; भवि यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी; भा ाएं हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।"*

1 कुरिन्थियों 13:8 – बाइबल के न्यू लिविंग अनुवाद में इस प्रकार है, *"प्रेम सदा बना रहेगा, पर भवि यद्वाणियां और अन्य अन्य भा ा में बोलना और विशे ा ज्ञान समाप्त हो जायेगा।"*

नीतिवचन 10:12 – *"बैर से तो झगड़े उत्पन्न होते हैं, परन्तु प्रेम से सब अपराध ढंप जाते हैं।"*

उत्तर निर्देशिका

1. मत्ती 7:12 पढ़ें. अपने ाब्दों में यह बताये की स्वर्ण नियम क्या है?

   जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो।

2. मत्ती 7:12 पढ़ें. प्रेम की खोज की कोशिश में कई लोग सही व्यक्ति की खोज करते है। क्या आपको सही व्यक्ति की खोज करना चाहिए या खुद ही सही व्यक्ति बन जाना चाहिए?

   सही व्यक्ति बन जाना चाहिए।

3. 1 यूहन्ना 5:3 पढ़ें. क्या प्रेम एक भावना है, या प्रेम ऐसा कुछ है, जो आप करते है?

   यह ऐसा कुछ है जो हम परमेश्वर के सिद्धांतों (आज्ञाओं) मे चलने के द्वारा करते है।

4. 1 यूहन्ना 3:18 पढ़ें. यदि आप अपनी पत्नी या पति से कहते है कि, "मैं आपसे प्यार करता हूँ!" और बाहर जाकर व्याभिचार करें, तो क्या वो या वह आपके ाब्दों पर या कार्यों विश्वास करेंगे?

   आपके काम आपके वचन से ज्यादा तेज बोलेंगे।

5. रोमियों 5:6–8 पढ़ें. क्या आपको लगता है कि यीशु को मरने की इच्छा हुई?

   नहीं। इस सब के बावजूद भी उसने हम सबकी भलाई चाही चाहे वह कुछ भी अनुभव कर रहा था।

6. गलतियों 5:22 पढ़ें. परमेश्वर को अपने जीवन का केन्द्र बनाये बिना क्या हम प्रेम कर सकते है?

   नहीं।

7. 1 यूहन्ना 4:8 पढ़ें. जिस कारण से हमे दूसरो से प्रेम करने के लिये परमेश्वर से सहायता की आवश्यकता है, वह इसलिये है, कि वही वह है, जो ____________ है।

प्रेम

8. 1 कुरिन्थियों 13:5 पढ़ें. निम्न ाब्दों में से चुनाव करें कि प्रेम क्या नहीं है:

ये सारे शब्द वर्णित करते हैं कि प्रेम क्या नहीं है। वह अपनी भलाई नहीं चाहता, स्वार्थी, क्षमा ना करने वाला।

9. 1 कुरिन्थियों 13:8 पढ़ें. ऐसी कौन सी चीज है जो आप इस जीवन से अगले जीवन में या कब्र से परे लेकर जायेंगें?

प्रेम सदा बना रहेगा।

10. नीतिवचन 10:12 पढ़ें. 1 कुरिन्थियों 13:5 कहता है ''प्यार कितने पापों को ढाँप लेगा?''

सभी पापों को ढाँप लेगा।

दूसरा स्तर

अध्याय १४

वित्त (भाग १)

लेखक - एन्ड्रयू वॉमक

आज मैं इस बात को आपके साथ बाँटना चाहता हूँ, कि परमेश्वर आपको किस प्रकार वित्त के क्षेत्र में आशीि ात करना चाहता है। यह ऐसा कुछ है, जो सब के लिये महत्वपूर्ण है। जीने के लिये, अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिये, और दूसरों के लिये आशी ा बनने के लिये पैसे की आवश्यकता होती है। परमेश्वर ने हमें इस क्षेत्र में अकेला छोड़ कर यह नहीं कहा की, "मैं आपके आत्मिक भाग के वि ाय में चिन्तित हूँ। पर आपके आर्थिक भाग के वि ाय में मुझे कोई चिन्ता नहीं है... आप अपने ही हाल पर है।" नहीं, वह आपको हर तरह से प्यार करता है, आत्मा प्राण और देह और उसने आपके लिये प्रावधान रखा है। अधिकांश लोग इस बात की मांग करते हैं, कि कुछ हद तक आर्थिक सम्पन्नता आवश्यक है, पर धार्मिकता ने मूल रूप से अत्याधिक पाने के वि ाय मे मनाही करता है।

परमेश्वर का वचन भिन्न भिन्न रीति से लालच ना करने के विरोध में शिक्षा देता है, पर यह भी स्प ट करता है, कि धन एक आशी ा है। 2 यूहन्ना 3:2 में प्रेरित यूहन्ना कहता है *"हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है; कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है, वैसे ही तू सब बातों से उन्नति करे, और भला चंगा रहे।"* कितना ठोस कथन। यूहन्ना कहता है, *"सब बातों से इस सब से बढ़कर!"* वह चंगाई,भावनाओं, सम्बंधों और आर्थिक वि ाय में चर्चा कर रहा हैं। परमेश्वर चाहता है कि आप सब बातों से बढ़कर स्वस्थ और सम्पन्न रहे। वह चाहता है, कि आप आत्मा प्राण और देह में संपन्न हों। यह आपके लिये उसकी इच्छा है।

कई धार्मिक लोग कहते हैं कि परमेश्वर वास्तव में चाहता है कि आप गरीब रहें, कि गरीब रहना परमेश्वर की ओर से है, आप जितना निर्धन रहते हैं, आप उतने ही धार्मिक रह सकते हैं। मैं इस प्रकार की सोच के साथ पाला गया की प्रचारकों के पास अधिक नहीं होना चाहिए। मसीह एक ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसे बिना किसी वस्तु के काम चलाना चाहिए। इसका पवित्रशास्त्र के साथ कोई तालमेल नहीं है। अब्राहम

अपने समय का सबसे धनवान मनु य था, वह इतना धनवान था कि उसके समय के राजा उससे कहने लगे कि वहाँ से चला जायें, क्योंकि उसकी धनसम्पन्नता उनके देश की धनसमपन्नता को प्रभावित कर रही थी। यही इसाहक और याकूब के बारे में भी सच था। युसुफ एक ऐसा व्यक्ति था, जो संपन्न बना और जिसके पास संपूण र्ा मात्रा में सब कुछ था। दाऊद के स्वयं अपने खजाने से मंदिर के निर्माण के लिये 2.5 बिलियन डालर मूल्य का सोना और चाँदी दिया। दाऊद का पुत्र सुलैमान पृथ्वी पर रहने वाला सबसे ज्यादा संपन्न मनु य था। जब आप इसे पवित्रशास्त्र की नज़र से देखें, तो यह पाते हैं, कि वे लोग जिन्होंने परमेश्वर की सेवा की है, वह वित्तीय रूप से आशीि ात हुये हैं।

ऐसा उदाहरण है जिन्होंने बहुत संघ र्ा किया और इसके बिना ही रहे। पौलुस ने फिलिप्पियों 4:13 में कहा, कि वह मसीह के द्वारा सब कुछ कर सकता है और उसने उन सारी परिस्थितियों में संपन्न रहना सीखा जिसमें भी वह था। उसने कहा कि वह जानता था कि वह किस प्रकार घटी में रहना, अधीकता में रहना जानता था। ऐसा समय आया जब परमेश्वर के दास गरीबी और परेशानी से गुजरें, पर पवित्र ाास्त्र में ऐसा नहीं है कि आप जितने गरीब होंगे, आप उतने ही ईश्वरीय होंगे। यह सत्य नहीं है, और आप सड़कों पर जायें और इसे असत्य साबित होता हुआ पायेंगे। अतः यहाँ एक सत्य है, कि लालच करना बुरा है। 1 तीमुथियुस 6:10 में वचन कहता है, *"रूपये का लोभ सब प्रकार की बुराई की जड़ है।"* कुछ लोग इसे अपना कर कहेंगे कि रूपया सब प्रकार की बुराई की जड़ है। पर वचन कहता है, कि रूपये का लोभ सब प्रकार की बुराईयों की जड़ है। जो लोग पैसे से प्यार करते हैं, उनके पास एक पैसा नहीं होता, और जिनके पास पैसा होता है,वह पैसे से प्रेम नहीं करते हैं। वह सिर्फ इसका उपयोग करते हैं।

व्यवस्थाविवरण 8:18 यह बताता है कि आर्थिक संपन्नता का वास्तविक उद्देश्य क्या है। परमेश्वर इस्त्रालियों से बातचीत कर रहा था, जो कि प्रतिज्ञा देश में प्रवेश करने वाले थे। वे धन संपन्नता का इस कदर अनुभव करने जा रहे थे, जैसा उन्होंने पहले कभी नहीं अनुभव किया था। उसने उनसे कहा, *"परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना, क्योंकि वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्त करने का सामर्थ्य इसलिये देता है, कि जो वाचा उस ने तेरे पूर्वजों से ापथ खाकर बांधी थी उसको पूरा करे, जैसा प्रगट है।"* पवित्रशास्त्र के पद के अनुसार संपन्नता का उद्देश्य अपने स्वार्थपूण र्ा उपयोग के लिये चीजों की बहुतायत का होना नहीं है। पर इसलिये है कि आप

परमेश्वर के राज्य को इस पृथ्वी पर स्थापित करे। दूसरे ाब्दों में, परमेश्वर आपको आशी ा देगा ताकि आप बदले में किसी दूसरे के लिये आशी ा का कारण बन सकें। उत्पत्ति 12:2 में परमेश्वर ने अब्राम से कहा, *"और मै तुझ से एक बड़ी जाति बना बनाऊंगा, और तुझे आशी ा दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशी ा का मूल होगा।"* किसी और के लिये आशी ा बनने के पहले आपको स्वंय आशीि ात होना चाहिए।

आपको कुछ खास चीजों की आवश्यकता होगी, जिसकी पूर्ति परमेश्वर चाहता है, कि आप करें। पर यह स्वार्थ से परे हैं। वह आपको आशीि ात करना चाहता है, ताकि वह आपसे धन वापिस पा सके, ताकि आप आशी ा बन सके। 2 कुरिन्थियों 9:8 में वह कहता है की *"और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय सब कुछ तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।"* यह इस बात को बताता है, कि परमेश्वर आपको क्यों संपन्न बनाता है। ताकी हर भले काम के लिये तुम्हारे पास कुछ हो। यह वास्तव में सम्पन्नता की पवित्रशास्त्र की परिभा ाा जैसी है। समपन्नता क्या हैं? क्या यह अच्छे घर का होना है, एक अच्छी कार का होना है, अच्छे कपड़ों का होना, या आपकी मेज पर भोजन का होना है? इस पद के अनुसार इसका अर्थ यह है, कि आपकी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये होना, ताकि हर भले काम के लिये आपके पास कुछ हो। यदि आपको ऐसा लगता है, कि आपको परमेश्वर ने किसी चीज के लिये छूआ है, और आप उस चीज के लिये नहीं दे पा रहे हैं, यदि आप किसी के लिये आशी ा का कारण होना चाहते हैं, पर हो नहीं पा रहे हैं, तो फिर आप पवित्रशास्त्र के अनुसार आर्थिक रूप से संपन्न नहीं है। परमेश्वर कहता है, वह आपको इस हद तक आशी ा देगा की आप की सारी आवश्यकता पूरी हो और आपके पास हर भले काम के लिये बहुत कुछ होगा।

बाइबल के अनुसार सच्ची संपन्नता आपकी आवश्यकता की पूर्ति होना मात्र नहीं है। पर ऐसा होना है, कि आप दूसरों के लिये आशी ा का कारण बन सकें। जो व्यक्ति सिर्फ अपने बारे में सोचता है वह दरअसल स्वार्थी है। यदि कोई कहता है "मैं परमेश्वर से ओर पाने के लिये विश्वास करता हूँ तो।" तो अन्य लोग सोचेंगे कि वह लालची या स्वार्थी है, पर यह उद्देश्य पर निर्भर करेगा। यदि आप परमेश्वर से और चाह रहे हैं, ताकी आप बड़ा घर या बेहतर कार पा सकें, तो फिर यह पवित्रशास्त्र के अनुसार सही दृ टकोण नहीं है। पर आप यह विश्वास कर रहे हैं, कि आपने

यह देख लिया है, कि आप अपनी आवश्यकता पूरी कर चुके हैं, और दूसरों के लिये आशी ा का कारण होना चाहते हैं; आपके पास इस प्रकार का दृ टकोण होना चाहिए। वह आपको सम्पन्न बनाना चाहता है। उसकी इच्छा आपके लिए है कि आप समपन्न हों।

मत्ती 6 इस वि ाय में चर्चा करता है कि हमें किन चीजों की आवश्यकता है। फिर वह हमसे यह कहता है कि यदि हम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करें, तो यह सारी चीजें आपको यूंही मिल जायेंगी। जब आप परमेश्वर को प्रथम स्थान देने लगते हैं, तो वह यह सारी चीजें आपको प्रदान करने लगता है। आपकी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, और आप दूसरों के लिये आशी ा का कारण होते हैं। निश्चय ही परमेश्वर चाहता है कि आप सम्पन्न हों, पर यह वास्तव में आपके उद्देश्य और आपके इस क्षेत्र में किये गये क्रियाकलापों पर निर्भर करता है।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि इसने आपको चुनौती दी है और आज आप परमेश्वर से उसके सर्वोत्तम के लिये विश्वास करना ुरू कर दें, जो की आपकी संपन्नता के लिये है।

शिष्यता के प्रश्न

1. 2 कुरिन्थियों 8:7–8 पढ़ें जब आप दूसरों की आवश्यकता के लिये देते हैं, तब यह एक तरीका है जिसके द्वारा आप यह साबित कर सकते हैं?

2. 2 कुरिन्थियों 8:13–14 पढ़ें. जब हम में से प्रत्येक देने के लिये एकत्र होते हैं, परमेश्वर चाहता है कि इसमें किसी प्रकार का क्या होना चाहिए?

3. 2 कुरिन्थियों 8:13–14 पढ़ें. सब लोगों की आवश्यकता कैसे पूरी होगी?

4. इफिसियों 4:28 पढ़ें. वह व्यक्ति जो अब तक चोरी करता था, वह अब चोरी ना करें पर काम करें और अपने रोजी रोटी कमाएं। इफिसियों 4:28 क्या कहता है कि इसके अतिरिक्त क्या करना चाहिए?

5. उत्पत्ति 13:2 और 12:2 परमेश्वर अब्राहम को सम्पन्नता देने का भरोसा कर सकता था। क्योंकि अब्राहम अपने बारे में नहीं सोच रहा था पर वह दूसरों के लिये ________________________ था।

6. 1 तीमुथियुस 6:17–18 पढ़ें। धनवानों को अपने धन के साथ कौन से तीन काम करना चाहिए?

7. क्या आपको परमेश्वर धन देकर भरोसा कर सकता था?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

2 कुरिन्थियों 8:7–8 – *"7 सो जैसे हर बात में अर्थात् विश्वास, वचन, ज्ञान और सब प्रकार के यत्न में, और उस प्रेम में, जो हम से रखते हो, बढ़ते जाते हो, वैसे ही इस दान के काम में भी बढते जाओं।" "8 मैं आज्ञा की रीति पर तो नहीं, परन्तु औरों के उत्साह के तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को परखने के लिये कहता हूं।"*

2 कुरिन्थियों 8:7–8 – बाइबल का न्यू लिंविंग अनुवाद इसे इस प्रकार प्रस्तुत करता है *"चूँकि आप कई बातों मे प्रवीण हो, आपके पास इतना विश्वास है, आपके पास वरदान प्राप्त वक्ता है, ऐसा ज्ञान है, ऐसा उत्साह है, और हमारे प्रति ऐसा प्रेम है, अब मैं चाहता हूँ कि आप देने की अनुग्रहकारी सेवा में भी प्रवीण हो जाओ। मैं यह नहीं कह रहा कि आपको इसे करना चाहिए, यद्यपि अन्य कलीसिया इसे करने को उत्सुक है। यह इस बात को साबित करने का एक तरीका है कि आपका प्रेम वास्तविक है।"*

2 कुरिन्थियों 8:13–14 – *"13 यह नहीं, कि औरों को चैन और तुमहें क्लेश मिले। 14 परन्तु बराबरी के विचार से इस समय तुम्हारी बढ़ती उनकी घटी में काम आए, ताकि उनकी बढ़ती भी घटी में काम आए, कि बराबरी हो जाए।"*

2 कुरिन्थियों 8:13–14 – बाइबल का न्यू लिंविंग अनुवाद इसे इस प्रकार प्रस्तुत करता है *"स्वाभाविक है, मैं नहीं चाहता, कि आप इतना दें की आप के पास कम मात्रा में होने की पीढ़ा सहें। मैं मात्र यही कहना चाहता हूँ, कि कुछ समानता होनी चाहिए। 14 इस*

वक्त आपके पास बहुतायत में है, और आप उनकी सहायता कर सकते हैं। ताकि बाद में किसी अन्य समय वे आपके साथ वह बाँट सकें जब आपको इसकी आवश्यकता हो। इस तरह से सब की आवश्यकता पूरी होगी।"

इफिसियों 4:28 – *"चोरी करनेवाला फिर चोरी न करें; बरन भले काम करने में अपने हाथों से परिश्रम करें; इसलिये कि जिसे प्रयोजन हो, उसे देने को उसके पास कुछ हो।"*

उत्पत्ति 13:2 – *"अब्राम भेड़–बकरी, गाय–बैल, और सोने–रूपे का बड़ा धनी था।"*

उत्पत्ति 12:2 – *"और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशी ा दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशी ा का मूल होगा।"*

1 तीमुथियुस 6:17–18 – *"17 इस संसार के धनवानों को आज्ञा दें, कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिये सब कुछ बहुतायत से देता है। 18 और भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें; और उदार और सहायता देने में तत्पर हों।"*

1 तीमुथियुस 6:17–18 – *बाइबल का न्यू लिविंग अनुवाद इसे इस प्रकार प्रस्तुत करता है ,"इस संसार के धनवानों से कह दें कि वे घमंड ना करें और अपने धन पर भरोसा ना करें, जो कि जल्द ही समाप्त हो जायेगा। पर उनका भरोसा जीवित परमेश्वर पर होना चाहिए, जो हमें आनंद उठाने के लिए हमारी आवश्यकता के अनुसार हमे बहुतायत से देता है। 18 उनसे कह कि वे अपने धन का उपयोग भलाई के कामों के लिये करे। उन्हे भले कामों में धनवान होना चाहिए, और जिनको आवश्यकता हो उन्हे उदारता से देना चाहिए। और परमेश्वर ने उन्हें जो कुछ दिया है, उसे दूसरों के साथ बाँटने के लिये हमेशा तैयार रहना चाहिए।"*

उत्तर निर्देशिका

1. 2 कुरिन्थियों 8:7–8 पढ़ें जब आप दूसरो की आवश्यकता के लिये देते है, तब यह एक तरीका है जिसके द्वारा आप यह साबित कर सकते है?

कि आपका प्रेम वास्तविक है।

2. 2 कुरिन्थियों 8:13–14 पढ़ें. जब हम में से प्रत्येक देने के लिये एकत्र होते हैं, परमेश्वर चाहता है कि इसमें किसी प्रकार का क्या होना चाहिए?

समानता, हर एक को वह त्याग देना चाहिए जो वह त्याग सकते है।

3. 2 कुरिन्थियों 8:13–14 पढ़ें. सब लोगों की आवश्यकता कैसे पूरी होगी?

आप जो कुछ दें सकें, जब भी दे सकें।

4. इफिसियों 4:28 पढ़ें. वह व्यक्ति जो अब तक चोरी करता था, वह अब चोरी ना करें पर काम करें और अपने रोजी रोटी कमाएं। इफिसियों 4:28 क्या कहता है कि इसके अतिरिक्त क्या करना चाहिए?

गरीबों को दें और उनको जिनको इसकी आवश्यकता है।

5. उत्पत्ति 13:2 और 12:2 परमेश्वर अब्राहम को सम्पन्नता देने का भरोसा कर सकता था। क्योंकि अब्राहम अपने बारे में नहीं सोच रहा था पर वह दूसरों के लिये ____________________था।

आशीष

6. 1 तीमुथियुस 6:17–18 पढ़ें। धनवानों को अपने धन के साथ कौन से तीन काम करन चाहिए?

भलाई करें, जिन्हें जरूरत हो उन्हें उदारता से दें, जो कुछ उनके पास है उन्हें दूसरों के साथ बांटे।

7. क्या आपको परमेश्वर धन देकर भरोसा कर सकता था?

दूसरा स्तर

अध्याय १५

वित्त (भाग २)

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

आज मैं आपके साथ वित्त के वि ाय में और कुछ बाँटना चाहूँगा। मैंने यह पिछले सत्र में समझाया कि यह परमेश्वर की इच्छा थी, कि आप सम्पन्न हों। अब मैं आपको कुछ कुँजिया देना चाहूँगा, कि यह कैसे कार्य करता है। लूका 6:38 कहता है, *"दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा; लोग पुरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाम से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।"* कई सिद्धांत इसमें ाामिल हैं। आप सम्पन्नता के बारे में तब तक बात नहीं कर सकते हैं जब तक कि आप देने के बारे में बात ना करें।

जब आप अर्थिक सम्पन्नता की बात करते हैं, तब कई लोग कहते हैं, अच्छा तो परमेश्वर मुझे संपन्न बनाना चाहता है, पर मेरे पास उसे देने के लिये कुछ भी नहीं है।" बाइबल में आप उस विधवा के बारे में देख सकते हैं, जिसने आखरी दो दिनार दान में डालने के वि ाय में यीशु चर्चा करता है। उसने धनवानों को बहुत सा धन दान की पेटी में डालते हुये देखा था, इसके बावजूद उसने अपने शि यों को बुलाया और कहा इस विधवा ने उन सब से ज्यादा दिया। उसने ऐसा इसलिये कहा क्योंकि उन्होंने अपनी बहुतायत से दिया, जबकि विधवा ने अपनी कंगाली में से दिया। परमेश्वर आपके दान का मूल्यांकन आपके दान की धन संबंधी मूल्य के आधार पर नहीं करता, पर उस प्रतिशत के आधार पर मूल्यांकन करता है जिसे आपको देना है। जब एक व्यक्ति कहता है कि, "मेरे पास देने को कुछ भी नहीं है, तो यह सत्य नहीं होता है।" यदि आपके पास देने को कुछ भी नहीं है, और आप एक कपड़े का टुकड़ा ले लें जो आपके पास हो आप उसे ही दे सकते हैं। हर एक के पास देने के लिये कुछ ना कुछ होता है। दरअसल जिस समय आपके पास देने के लिये बहुत थोड़ा हो, उसी समय आपका देना किसी भी समय आपके देने के प्रतिशत से कहीं ज्यादा होगा। एक व्यक्ति जिसके पास दस डालर देने को है और उसमें से उसने पाँच डालर दे दिया है, तो उसने उस व्यक्ति से भी बढ़कर

दिया, जो दस मिलियन डालर देता है और उसके पास कई बिलियन बचा रहता है। परमेश्वर ने इसे इस प्रकार व्यवस्थित किया की हर एक व्यक्ति दे सके।

परमेश्वर ने हमें देने को क्यों कहा? इसमें बहुत सी चीजें ामिल हैं, पर इसमें से एक उद्देश्य यह है, कि परमेश्वर चाहता है, कि आप अपने जीवन के हर क्षेत्र में परमेश्वर पर भरोसा रखें। यदि कोई परमेश्वर नहीं है, और उसका वचन सत्य नहीं, जब वह इस प्रकार कहता है कि "दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा।" तो आपके पास जो कुछ है उसे दे देना सबसे मूर्खतापूर्ण कार्य है, जो आप कभी कर सकते हैं। अपनी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लक्ष्य की ओर बढ़ने के बजाये आप दरअसल उससे दूर हो रहे हैं, यदि परमेश्वर ने आपको आशीि ात करने की प्रतिज्ञा ना की है। जिस रीति से परमेश्वर देने को कहता है उस रीति से देने के लिये विश्वास की आवश्यकता होती है। इसी कारण उसने आपसे ऐसा करने को कहा।

लूका 16 में एक भण्डारी के वि ाय में एक दृ टान्त है, जिसने अपने स्वामी को धोखा दिया। जिसका सार यह है यदि तुमने अधर्म के धन के वि ाय में (धन के वि ाय में चर्चा करते हुये कहा।) विश्वासयोग्य नहीं रहे तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौपेगा? यदि आपने धन जैसी छोटी सी चीज पर परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया, तो फिर आप आत्मिक मूल्यों जैसी और भी महत्वपूर्ण चीजों पर कैसे भरोसा कर सकेंगे? इस प्रकार के पवित्रशास्त्र धन को भंडारीपन को सबसे निम्न स्तर पर लाकर रख देते हैं। यदि आप अपने धन के वि ाय में परमेश्वर पर भरोसा नहीं कर सकते तो आप अपने ाश्वत् गन्तव्य के वि ाय में उस पर कैसे भरोसा कर सकते हैं? आप इस बात पर कैसे विश्वास कर सकते हैं, कि यीशु मसीह ने आपके सारे पाप क्षमा किये हैं, और आप अपना अनन्तकाल स्वर्ग में बितायेंगे? इसकी तुलना में परमेश्वर पर जिन आत्मिक चीजों के लिये हम संभवतः भरोसा करते हैं, वह धन से ज्यादा महत्वपूर्ण है। धन सबसे छोटी चीज है, पर परमेश्वर पर भरोसा करने के लिये यह सबसे पहली सीढ़ी है। नीतिवचन 11:24 कहता है, कि कुछ लोग ऐसे हैं जिनके बारे में यह प्रतीत होता है, कि वह आवश्यकता से ज्यादा दे देते हैं। और वे फिर भी सम्पन्न रहते हैं। अन्य लोग हैं जा कुछ भी उनके पास है जमा रख लेते हैं, जिससे उनके भीतर सिर्फ गरीबी ही आती है।

यदि आप परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की पहले खोज करें, तो यह सारी चीजें वह आपको जोड़ देगा। यदि आप चाहते हैं कि परमेश्वर आपको आपके धन

के क्षेत्र में मदद करें, और आप उसकी सहायता के लिये प्रार्थना कर रहे हैं, पर पहले उसके राज्य की खोज नहीं कर रहे हैं, तो आप विश्वास का पहला कदम नहीं उठा रहे हैं, और उस पर अपने धन के लिये भरोसा नहीं करते हुये दे रहे हैं – तो फिर आप वास्तव में उस पर भरोसा नहीं कर रहे हैं।

शिष्यता के प्रश्न

1. यूहन्ना 3:16 पढ़ें परमेश्वर को देने के लिये क्या प्रेरित किया?

2. 1 कुरिन्थियों 13:3 पढ़ें देने के संबंध में हमारी प्रेरणा क्या होनी चाहिए?

3. याकूब 2:15–16 पढ़ें इस पद का अर्थ समझाये।

4. लूका 6:38 पढ़ें यह पद आपसे क्या कह रहा है?

5. इफिसियों 1:7 पढ़ें क्या परमेश्वर ने अपनी सम्पन्नता में से दिया या सम्पन्नता के अनुसार दिया? इसके अंतर को समझाएं?

6. नीतिवचन 19:17 पढ़ें जब आप गरीबों को देते हैं तब आप क्या कर रहे होते?

   क्या परमेश्वर आपको वापिस देगा?

7. भजन संहिता 41:1–3 उन पाँच चीजों का वर्णन करों जो परमेश्वर उनके लिये करता है जो गरीबों को देते हैं।

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

यूहन्ना 3:16 – *"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करें, वह नाश ना हों, परन्तु अनंन्त जीवन पाएं।"*

1 कुरिन्थियों 13:3 – *"और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूं, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं।"*

याकूब 2:15–16 – *"15 यदि कोई भाई या बहिन नंगे उघाड़े हों, और उन्हें प्रति दिन भोजन की घटी हो। 16 और तुम में से कोई उन से कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो; पर जो वस्तुएं देह के लिये आवश्य हैं वह उन्हें न दे, तो क्या लाभ?"*

लूका 6:38 – *"दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा; लोग पुरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।"*

लूका 6:38 बाइबल का न्यू लिविंग अनुवाद इसे इस प्रकार प्रस्तुत करता है–*"यदि आप देओगे, तो आप पाओगे। आपका दान आपको पूरी मात्रा में आपको लौटाया जायेगा जो दबा दबाकर हिला हिलाकर और समाने की जगह बनायेगा, और उमड़ पड़ेगा। आप देने के लिये जिस माप का प्रयोग करेंगे बड़ा या छोटा वह आपको लौटाने के लिये उपयोग किया जायेगा।"*

इफिसियों 1:7 – *"हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।"*

नीतिवचन 19:17 – *"जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह यहोवा को उधार देता है, और वह अपने इस काम का प्रति फल पाएगा"*

भजन संहिता 41:1–3 – *"1 क्या ही धन्य है वह, जो कंगाल की सुधि रखता है! विपत्ति के दिन यहोवा उसको बचाएगा। 2 यहोवा उसकी रक्षा करके उसको जीवित रखेगा, और वह पृथ्वी पर भाग्यवान होगा। तू उसको ात्रुओं की इच्छा पर ना छोड़। 3 जब वह व्याधि के मारे सेज पर पड़ा हो, तब यहोवा उसे सम्भालेगा; तू रोग में उसके पूरे बिछौने को उलटकर ठीक करेगा"*

न्यू लिविंग अनुवाद इसे इस प्रकार प्रस्तुत करता है – *"ओह् उन लोगों का क्या आनंद जो कंगालों की सुधी लेते हैं, विपत्ति के समय यहोवा उन को छुडाता है 2 यहोवा उनकी रक्षा करता और उनको जीवित रखता है। वह उन्हें संपन्नता प्रदान करता है, और उन्हें उनके त्रुओं से छुडाता है। 3 बीमारी के सयम यहोवा उनकी देखभाल करता है, और उनके दर्द और पीड़ा को दूर करता है।"*

उत्तर निर्देशिका

1. यूहन्ना 3:16 पढ़ें परमेश्वर को देने के लिये क्या प्रेरित किया?

   उसके प्रेम ने।

2. 1 कुरिन्थियों 13:3 पढ़ें देने के संबंध में हमारी प्रेरणा क्या होनी चाहिए?

   प्रेम; अर्थात चाहे हमें जैस भी लगे अपनी चिन्ता ना करते हुये दूसरों की भलाई और लाभ के विषय में चिन्ता करना (मत्ती ७:१२)।

3. याकूब 2:15–16 पढ़ें इस पद का अर्थ समझाये।

   सब प्रकार के प्रेम का पंचानवे प्रतिशत् अमौखिक होता है। यह उस पर आधारित नहीं रहता जो हम कहते हैं पर उन बातों पर आधारित रहता है, जो हम करते हैं।

4. लूका 6:38 पढ़े यह पद आपसे क्या कह रहा है?

   देते समय आप जो भी मात्रा का इस्तेमाल करते हैं, चाहे वह (बड़ा या छोटा हो), उसी का उपयोग आपको वापिस देने के लिये किया जायेगा।

5. इफिसियों 1:7 पढ़ें क्या परमेश्वर ने अपनी संपन्नता में से दिया या संपन्नता के अनुसार दिया?

   उसने अपने धन के अनुसार उसने अपने एकलौते पुत्र को हमारे छुटकारे के लिये दिया।

6. नीतिवचन 19:17 पढ़ें जब आप गरीबो को देते है तब आप क्या कर रहे होते है?

आप परमेश्वर को उधर दे रहे है।

क्या परमेश्वर आपको वापिस देगा?

हाँ।

7. भजन संहिता 41:1–3 उन पाँच चीजों का वर्णन करों जो परमेश्वर उनके लिये करता है जो गरीबों को देते हैं?

विपत्ति के दिन वह मुझे बचायेगा। उसकी रक्षा करेगा। वह उसे संपन्नता देगा। शत्रुओं से उसकी रक्षा करेगा। वह उसे चंगा करेगा अर्थात जब किसी व्याधि के मारे सेज पर पड़ा हो तो, तब यहोवा उसे सम्भालेगा।

दूसरा स्तर

अध्याय १६

क्या करें जब आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलता प्रतीत नहीं होता

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

आज मैं इस वि ाय पर चर्चा करना चाहुँगा, कि क्या करें जब आपकी प्रार्थना का उत्तर नहीं मिलता हुआ ''प्रतीत'' होता है। मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूँ, कि आपकी प्रार्थना का उत्तर नहीं मिलता प्रतीत होता है। सत्य यह है कि, परमेश्वर हमेशा, हमेशा ही हमारी उन प्रार्थनाओं का उत्तर देता है, जिनको हम उसके वचन के अनुसार विश्वासपूर्ण रीति से करते हैं। 1 यूहन्ना 5:14–15 में वचन कहता है, *"14 और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं तो वह हमारी सुनता है। 15 और जब हम जानते हैं, कि जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमारी सुनता है। तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हम ने उस से मांगा, वह पाया है।"*यह तो अत्याधिक भरोसा हुआ। परमेश्वर हमेशा हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। पर ऐसा प्रतीत नहीं होता कि वह हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। मत्ती 7:7–8 *"7 मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढों, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। 8 क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है? और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।"* ये पद यह कह रहे हैं, कि परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर देता है, इसके बावजूद हम में से प्रत्येक अपने जीवन के ऐसे समय के बारे में सोच सकता है। जब हमने ऐसी कोई चीज माँगी जो हम विश्वास करते थे कि वे सही है, भली वस्तु है, पूर्ण रूप से स्वार्थी नहीं है या परमेश्वर की इच्छा से बाहर नहीं है, तब भी हमें प्रार्थना का उत्तर देखने नहीं मिला।

परमेश्वर का वचन कहता है कि हम माँगे, और वह हमें दिया जायेगा; पर हमारा अनुभव कहता है, कि हम ने माँगा पर हमने नहीं पाया। क्या सत्य है? इसका उत्तर आपको आश्चर्य चकित कर देगा। पर सत्य यह है कि दोनों ही संभवतः सत्य है। अधि ाकांश लोग सोचते हैं, *अब जरा रूकें, परमेश्वर का वचन कहता है कि वह उत्तर देगा*

और मैंने ऐसा होते हुये नहीं पाया। यूहन्ना 4:24 कहता है *"परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करनेवाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।"* परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देने के लिये आत्मिक जगत में कार्य करता है, पर उसे प्रकट करने के लिये हमारी ओर से विश्वास की आवश्यकता होती है। विश्वास आत्मिक जगत से चीजों को उठाकर उन्हें भौतिक जगत में डाल देती है। यही मूलतः इब्रानियों 11:1 कहता है, *"अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।"* यह ऐसा नहीं कहता कि विश्वास उन चीजों का साक्ष्य है, जो विद्यमान नहीं है। वो वास्तव में विद्यमान है, पर वह दृश्यमान भौतिक जगत में नहीं है, पर अदृश्य, आत्मिक क्षेत्र में विद्यमान है। विश्वास आत्मिक क्षेत्र में जाकर चीजों तक पहुँचकर उसे संसारिक क्षेत्र में खींच कर लाता है।

यह रेडियो सिग्नल के समान है। रेडियों और टेलिविजन स्टेशन निरंतर प्रसारण कर रहे हैं। आप एक ऐसे कमरे में रह सकते हैं जहाँ आप उन्हें देख और सुन नहीं सकते हैं, पर इसका यह अर्थ नहीं कि वो वहाँ नहीं है। आपको रेडियों को आन करना होगा और उस आवृत्ति पर उसे लगाना होगा, जिस पर आपको कार्यक्रम सुनना है। फिर वह रेडियों उस क्षेत्र से जिससे आप उसे सुन नहीं सकते उस क्षेत्र में लायेगा, और उस क्षेत्र में उसे पुनः प्रसारित करेगा। जिस क्षेत्र में हम उसे अपने मानवीय कान से उसे सुन सकते हैं। परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर इसी रीति से देता है। वह चीजों को आत्मिक क्षेत्र में देता हैं, और विश्वास के द्वारा आपको उसे अपने भौतिक जगत में लाना होगा। भौतिक और आत्मिक जगत एक दूसरे के समानान्तर में चलते हैं, परमेश्वर आपकी प्रार्थना का उत्तर देता है, पर आप उसे अपनी भौतिक जगत में उसे प्रगट होता हुआ तब तक नहीं देंखेगे जब तक कि आप विश्वास को उस दूरी को जिस दूरी में हम आत्मिक क्षेत्र और भौतिक क्षेत्र के बीच रह रहे हैं पाटने ना दें।

उदाहरण के लिये दानिय्येल जो परमेश्वर का एक जन था, परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था और उससे एक प्रकाशन की मांग कर रहा था। समय की पबंदी के चलते इस कहानी को संक्षिप्त में प्रस्तुत करूंगा। परमेश्वर ने जिब्राइल स्वर्गदूत को भेजा ताकि वह प्रकट होकर उसकी प्रर्थाना का उत्तर दे। दानिय्येल 9:22–23 कहता है, *"उस ने मुझ से कहा, हे दानिय्येल मैं तुझे बुद्धि और प्रवीणता देने को अभी निकल आया हूं। जब तू गिड़गिड़ाकर बिनती करने लगा, तब ही उसकी आज्ञा निकली, इसलिये मैं तुझे बताने आया हूं, क्योंकि तू अतिप्रिय ठहरा है; इसलिये उस वि ाय को समझ ले और दर्शन की*

बात का अर्थ बूझ ले।" यही बात समझने योग्य है, जिब्राईल ने दानिय्येल की प्रार्थना के ुरू में कहा परमेश्वर की आज्ञा उसकी ओर से उसके लिये उत्तर लेकर आई। यदि आप पढ़ें की उत्तर लाने के लिये कितना वक्त लगा तो लगभग तीन मिनट का समय लगा परमेश्वर की आज्ञा और उसे भौतिक रूप से प्रकट करने के बीच तीन मिनट का समय।

हम बहुत सी बातें मान लेते हैं, कि यदि परमेश्वर वास्तव में परमेश्वर है, और यदि उसकी कोई इच्छा है, तो फिर यह चुटकी बजाने के समय मात्र में पूरा हो जायेगी; पर वास्तव में ऐसा नहीं है। इस परिस्थिति में परमेश्वर ने आज्ञा दी, और जिब्राईल को उस रास्ते को पूरा करने के लिये तीन मिनट का वक्त लगा। मेरे पास इस सब के लिये सारे कारण नहीं हैं। और यह आवश्यक भी नहीं है। जिस बात को मैं यहाँ कहना चाहता हूँ वह यह है कि जिस क्षण परमेश्वर ने यह आज्ञा दी और उसके लागू करने के बीच तीन मिनट के समय का अंतराल था। अब हम यह मानकर चलें कि किसी प्रार्थना का उत्तर पाने के लिये यह सबसे लम्बी अवधि है, तो हम में से अधिकांश लोग इसे थामें रहेंगे, पर हमेशा से यह ऐसा नहीं रहा है।

दानिय्येल 10 में हम पाते हैं, कि वही प्रार्थना दूसरा व्यक्ति करता है, और इस वक्त उत्तर आने में तीन सप्ताह का समय लगा। कई लोग जो इसे पढ़ेंगे वो कहेंगे कि, "परमेश्वर ने दानिय्येल की प्रार्थना का उत्तर देने में तीन मिनट लगाये, जबकि दूसरी प्रार्थना सुनने के लिये तीन सप्ताह लगाये?" दानिय्येल 10:11–12 कहता है, *"तब उस ने मुझ से कहा, हे दानिय्येल, हे अति प्रिय पुरू ।, जो वचन मैं तुझ से कहता हूं उस समझ ले, और सीधा खड़ा हो, क्योंकि मैं अभी तेरे पास भेजा गया हूं। जब उस ने मुझ से यह वचन कहा, तब मैं खड़ा तो हो गया परन्तु थरथराता रहा।"* यह इस बात को दर्शाता है कि परमेश्वर ने संदेशवाहक को दानिय्येल की प्रार्थना के प्रथम दिन से ही आज्ञा दे दी थी। पर इस उत्तर को प्रकट होने में तीन सप्ताह लग गये, पर परमेश्वर विश्वासयोग्य है। पवित्रशास्त्र कहता है, "यीशु मसीह कल और आज युगानुयुग एकसा है" (इब्रानियों 13:8)।

यदि आप अध्याय 9 और 10 को एक साथ रखें, तो मैं यह मानता हूँ कि परमेश्वर ने दोनों ही प्रार्थनाओं का उत्तर तुरन्त ही दे दिया था। एक को तीन मिनट लगे, तो दूसरे को तीन सप्ताह लगे। पर परमेश्वर परिवर्तनशील नहीं था। यहाँ पर वह बात हैः परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। वह बहुत से कामों को करता है, पर प्रार्थनाओं का उत्तर देने और उसके प्रकट होने के बीच बहुत सी चीजें बदल सकती हैं।

आपको विश्वास करना होता है; विश्वास को आत्मिक क्षेत्र तक जाना होता है, और उस उत्तर को भौतिक क्षेत्र में लाना होता है। अतः विश्वास एक महत्वपूर्ण घटक है।

साथ ही, दानिय्येल अध्याय 10 के पद 13 में आप देख सकते हैं, कि *"फारस के राज्य का प्रधान इक्कीस दिन तक मेरा साम्हना किए रहा; परन्तु मीकाएल जो मुख्य प्रधानों मे से है, वह मेरी सहायताह के लिये आया, इसलिये मैं फारस के राजाओं के पास रहा।"* यह भौतिक व्यक्ति के बारे में नहीं पर ौतानी बाधा के वि ाय में चर्चा कर रहा है। इस प्रक्रिया में ौतान एक अन्य अपरिवर्तनिय है। कभी कभी परमेश्वर हमारी प्रार्थनओं का उत्तर देता है, पर ौतान अन्य लोगों के द्वारा उसे रोकता है। उदाहरण के लिये, यदि आप वित्तीय प्रबंध के लिये परमेश्वर पर विश्वास कर रहे हैं, तो परमेश्वर आपको व्यक्तिगत रूप से आकर धन नहीं देगा। वह अमेरिका या किसी भी अन्य देश की मुद्रा लेकर नकली मुद्रा नहीं बनायेगा। वह पैसा बनाकर उसे स्वर्ग से बरसा कर, उसे आप की जेब में नहीं ला कर डालेगा। लूका 6:38 कहता है, *"दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा; लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।"* परमेश्वर कार्य करेगा और आपकी प्रार्थना का उत्तर देगा, पर यह लोगों के द्वारा आयेगा। कुछ लोग लालच के बंधन में बंधे हुये होते हैं, और यदि वे आप से गुस्सा है, या फिर आप ऐसे कुछ कार्य कर रहे हैं, जिससे वो आपसे नराज रहते हैं। तो फिर ौतान उनके द्वारा आपकी प्रार्थना को प्रकट होने से रोक देगा। जब आप प्रार्थना कर रहे होते हैं, और विशे ा रूप से आप वित्त के लिये प्रार्थना कर रहे होते हैं, तो आपको यह पहचान लेना चाहिए कि दूसरे लोग आपके वित्तीय चमत्कार के एक भाग हो सकते हैं, और आपको उनके लिये प्रार्थना करनी चाहिए।

परमेश्वर विश्वासयोग्य है। उसने ऐसी कोई सी भी प्रार्थना का उत्तर देने में असफल नहीं हुआ है, जो विश्वास से ना की गई हो और उसके वचन पर आधारित ना हों। वह हमेशा प्रार्थनाओं का जवाब देता है, पर आप उसे प्रकट रूप में अस्थिरता के कारण नहीं देख पाते होंगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह आपका विश्वास बढायेगा और आपको यह जानने में मदद करेगा कि परमेश्वर आपकी प्रार्थनाओं का हमेशा उत्तर देता है।

शिष्यता के प्रश्न

1. मत्ती 7:7–8 पढ़ें यदि हम मांगते है तो परमेश्वर से क्या आशा कर सकते है?

2. मत्ती 7:7–8 पढ़ें यदि हम परमेश्वर की खोज करते हैं तो हम क्या आशा कर सकते हैं?

3. मत्ती 7:7–8 पढ़ें यदि हम खटखटाते हैं तो क्या आशा कर सकते हैं?

4. यूहन्ना 10:35 पढ़ें क्या परमेश्वर उससे कुछ कम देगा जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अपने वचन में की है?

5. याकूब 4:1–3 पढ़ें परमेश्वर से पाने के लिये इन लोगों को किस बात ने रोक रखा था?

6. 1 पतरस 3:7 पढ़ें यदि आप अपने पति या अपनी पत्नी से बुरा व्यवहार कर रहे हो तो आपके प्रार्थना के जीवन में इसका परिणाम क्या होगा?

7. 1 यूहन्ना 5:14–15 पढ़ें आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर पाने की कुँजी क्या है?

8. मरकुस 11:24 पढ़ें जब आप प्रार्थना करें तब आपको क्या करना चाहिए?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

मत्ती 7:7–8 – *"7 मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढों, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। 8 क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है? और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।*

यूहन्ना 10:35 – *"यदि उस ने उन्हें ईश्वर कहा जिन के पास परमेश्वर का वचन पहुंचा (और पवित्र ास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती)"*

याकूब 4:1–3 – *"तुम में लड़ाइयां और झगड़े कहां से आ गए? क्या उन सुख–विलासों से नहीं जो तुम्हारे अंगों में लड़ते–भिड़ते है। तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं; तुम हत्या और डाह करते हो, और कुछ प्राप्त नहीं कर सकते; तुम झगड़ते हो; तुम्हे इसलिये नहीं मिलता, कि मांगते नहीं। तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिये कि बुरी इच्छा से मांगते, ताकि अपने भोग–विलास में उडा दें।"*

1 पतरस 3:7 – *"वैसे ही हे पतियों, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिस से तुम्हारी प्रार्थनाएं रूक न जाएं।"*

1 युहन्ना 5:14–15 – *"14 और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं तो वह हमारी सुनता है। 15 और जब हम जानते हैं, कि जो कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हम ने उस से मांगा, वह पाया है।"*

मरकुस 11:24 – *"इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो, तो प्रीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा।"*

उत्तर निर्देशिका

1. मत्ती 7:7–8 पढ़ें यदि हम मांगते है तो परमेश्वर से क्या आशा कर सकते है?

   हम उसे दिये जाने की आशा कर सकते है।

2. मत्ती 7:7–8 पढ़ें यदि हम परमेश्वर की खोज करते हैं तो हम क्या आशा कर सकते हैं?

उसे पाने की।

3. मत्ती 7:7–8 पढ़ें यदि हम खटखटाते हैं तो क्या आशा कर सकते हैं?

कि वह हमारे लिये खोला जायेगा।

4. यूहन्ना 10:35 पढ़ें क्या परमेश्वर उससे कुछ कम देगा जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अपने वचन में की है?

नहीं।

5. याकूब 4:1–3 पढ़ें परमेश्वर से पाने के लिये इन लोगों को किस बात ने रोक रखा था?

उनका उद्देश्य और मन गलत था। सब चीजें उनके बारे में और उन्हीं के लिये थी।

6. 1 पतरस 3:7 पढ़ें यदि आप अपने पति या अपनी पत्नी से बुरा व्यवहार कर रहे हों तो आपके प्रार्थना के जीवन में इसका परिणाम क्या होगा?

आपकी प्रार्थना रूक जायेगी।

7. 1 यूहन्ना 5:14–15 पढ़ें आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर पाने की कुँजी क्या है?

उसकी इच्छा के अनुसार मांगना।

8. मरकुस 11:24 पढ़ें जब आप प्रार्थना करें तब आपको क्या करना चाहिए?

आपको मान लेना चाहिए कि आपने पा लिया और आप पा लेंगे।

CONTACT DETAILS

<u>CHENNAI</u>

Andrew Wommack Ministries India
72-D, Nandhini Mahal, First Floor,
Velachery Main Road Velachery,
Chennai • 600 042, INDIA.
Ph: (044)-4202 1820

<u>HYDERABAD</u>

Andrew Wommack Ministries India
42-343/1/188, Near Flora Hotel,
Maruthi Nagar A S Rao Nagar,
Hyderabad 500 040, INDIA.
Ph: (040)- 40280718

<u>MUMBAI</u>

Andrew Wommack Ministries India
Bethel, Plot No 305/E, Mith Chowky,
Near Girdhar ParkMalad (W),
Mumbai 400 064, INDIA.
Ph: +91 8976549515

info@awmindia.net www.awmindia.net

Charis Bible Colleges

And the things that thou hast heard of me among many witnesses, the same commit thou to faithful men, who shall be able to teach others also. 2 Tim 2:2

> *You can learn from the 'school of hard knocks,' I certainly have. But I don't recommend it! There's a better way to learn; it's Charis Bible College.*
>
> Andrew Wommack,
> President & Founder

The Lord led Andrew to start Charis Bible College (CBC) to equip the saints for the work of ministry with a profound message emphasizing God's Unconditional Love and the balance of Grace and Faith. CBC equips the students giving them rich teaching of God's Word as well as practical hands-on ministry experience.

CBC is not just another bible college, it's a school for life! It is for people from all walks of life whether you are a preacher, businessman, mum, dad or grandparent.

There are three course options to match your own schedule: Full Time, Part Time and Correspondence. In Full Time, you can fully immerse yourself in the Word for 8 months in a grace-filled family atmosphere, or join Part Time on weekends, or study the CBC material at home through Correspondence!

We invite you to take the step of faith and join our CBC family !

Contact us for further information:

Chennai: 72-D, Nandhini Mahal • First Floor • Velachery Main Road
Velachery, Chennai • 600 042 • INDIA. Ph: (044)-4202 1820

Hyderabad: 42-343/1/188 • Near Flora Hotel • Maruthi Nagar
A S Rao Nagar • Hyderabad 500 040 • INDIA. Ph: (040)- 40280718

Mumbai: Bethel, Plot No 305/E • Mith Chowky • Near Girdhar Park
Malad (W) • Mumbai 400 064 • INDIA. Ph: +91 8976549515
info@charisbiblecollegeindia.org www. charisbiblecollegeindia.org

शिष्यता सुसमाचार प्रचार

(Discipleship Evangelism Course)

तृतीय स्तर (Level 3)

लेखक

एन्ड्रयू वॉमक और डोन क्रो

Copyright © 2012, Andrew Wommack
Permission is granted to duplicate or reproduce for discipleship purposes on the condition that it is distributed free of charge.

Andrew Wommack Ministries
P.O. Box 3333
Colorado Springs, CO 80934-3333
www.awmi.net

Unless otherwise noted, all biblical quotations were taken from the King James Version of the Bible, revision 1960.

The Complete Discipleship Evangelism 48-Lesson Course © 2012

LEVEL 3

Andrew Wommack Ministries India
info@awmindia.net www.awmindia.net

Item Code: HI 417-3/3

अनुक्रमणिका

तृतीय स्तर (Level 3)

अध्याय	1	पवित्र बहाव	05
अध्याय	2	सेवकाई के लिए वरदानों का उपयोग	12
अध्याय	3	आश्चर्यकर्म से परमेश्वर की महिमा	23
अध्याय	4	ईश्वरीय संबंधों की सामर्थ	32
अध्याय	5	सताव	37
अध्याय	6	राजा और उसका राज्य	44
अध्याय	7	बचाने वाले विश्वास की विषयवस्तु या उद्देश्य	56
अध्याय	8	परमेश्वर की व्यवस्था का सही उपयोग	62
अध्याय	9	व्यवस्था के अधीन नहीं परन्तु अनुग्रह के अधीन	72
अध्याय	10	पाप की अधिक चेतना नहीं	79
अध्याय	11	मुझे प्रेम किया गया, मैं सुन्दर हूँ	89
अध्याय	12	उद्धार का फल (भाग 1)	97
अध्याय	13	उद्धार का फल (भाग 2)	106
अध्याय	14	शिष्यता के लिये बुलाहट	113
अध्याय	15	अपनी गवाही का उपयोग कैसे करें	121
अध्याय	16	प्रत्येक के वरदानों को शिष्यता में उपयोग करना	131

तृतीय स्तर

अध्याय १

पवित्र बहाव

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

मैं आपके साथ इस बारे में कुछ बाँटना चाहता हूँ जिससे आप परमेश्वर के बहाव को, अपने द्वारा दूसरे लोगों में, किस तरह से सेवकाई कर सकते हैं। आप के पास परमेश्वर का सामर्थ और अभि ोक है, लेकिन आप कैसे दूसरे लोगों में इसको प्रकट कर सकते हैं? ऐसे बहुत सारे वचन हैं, जिससे हम ुरू कर सकते हैं, जैसे फिलेमोन की पहली पत्री का 6वाँ वचन में पौलुस प्रार्थना कर रहे हैं, कि *''तेरे विश्वास में सहभागी होना तुम्हारी भलाई की पहचान में, मसीह के लिए प्रभावशाली है'*। इसमें पहला कदम यह है कि, परमेश्वर की सामर्थ आपके द्वारा दूसरे लोगों में बहे, वह यह कि उन सब अच्छी बातों को जो तुम्हारे पास नहीं है। लेकिन जब आप जान जाते हैं कि आपके पास क्या है, सब बातें अपने आप होने लगती हैं। तुम अपनी उत्सुकता को दूसरे लोगों में बाँटना आरम्भ कर देंगे, इस बात की गवाही दो कि परमेश्वर ने आपके जीवन में क्या किया है। अपने आप से कुछ लोगों को मदद मिल जायेगी।

1 यूहन्ना 4:7–8 में कहता है, *''हे प्रियों सब आपस में प्रेम रखें क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है और जो कोई प्रेम करता है वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।''* किसी भी समय आप महसुस करते हैं, कि आप में किसी दूसरे व्यक्ति के लिए प्रेम बह रहा है, तो वह परमेश्वर आप में से उनकी तरफ बह रहा है। सच में ग्रीक भा ा में ''प्रेम'' के लिए 4 बड़े ाब्द हैं, सब से बड़ा *अगापे* प्रेम, परमेश्वर का अलौकिक प्रेम। आपको इस परमेश्वर के अलौकिक प्रेम को किसी के प्रति आक ण व इच्छा में फर्क को पहचानना है। किसी भी समय आपका विवेक आपको यह दिखाता है, कि किसी अन्य व्यक्ति के लिए आपके मन में परमेश्वर का प्रेम उमड़ रहा है, तो यह स्वयं सेवा नहीं है। तो आप इसको जाँचने के लिए 1 कुरिन्थियों 13:4–6 वचन में देख सकते हैं, जो परमेश्वर के इस प्रकार के प्रेम को प्रतिबिंम्बित करता है। जो ई ालू नहीं है, स्वार्थी नहीं है, स्वयं सेवा करनेवाला नहीं है, आसानी से उत्तेजित नहीं होता इत्यादि! आपको यह विशले ण करना है, कि आप

प्रेम को क्या कहते हैं और यह निश्चित करना है, कि यह सचमुच में परमेश्वर का प्रेम है, जो कि स्वार्थी नहीं है, और स्वयं सेवक नहीं है – आप किसी व्यक्ति को इसलिए नहीं प्रेम करते हैं, कि वह आप के लिए क्या कर सकता है। जब आप इस प्रकार के प्रेम में बढते हैं, तब गहराई से आपको इसका विवेक होता है, कि यह परमेश्वर का प्रेम है और आप ऐसा महसुस करते हैं, कि यह आपके द्वारा उमड़ रहा है, किसी अन्य व्यक्ति के लिए तो वह आपमें परमेश्वर का प्रेम जो उमड़ रहा है, यह परमेश्वर आप के आगे बढ़ रहा है! एक बार जब आपको ऐसा विवेक होता है, कि परमेश्वर का प्रेम आपके द्व ारा किसी के लिए उमड रहा है तो आपको यह करना है, कि उत्साहित ाब्दों व कार्य के द्वारा उनको प्रकट करना है–कुछ करना है।

ऐसे भी कुछ पल जुडे हैं, जब मैं प्रार्थना कर रहा था कि ऐसा व्यक्ति मेरे मन में आया, कि मेरे मन में उस व्यक्ति के प्रति परमेश्वर का प्रेम और कृपा उत्पन्न हो गई। इसका कोई कारण नहीं था; यह अलौकिक था। अभी मैंने यह सीखा है, कि उस व्यक्ति को फोन के द्वारा बुलाऊँ या चिट्ठी लिखूं या किसी जरिये उससे सम्पर्क करूँ! लगभग हर समय उन व्यक्तियों ने कहा, ''अरे वाह! यह तो परमेश्वर तुम्हारे जरिये बोल रहा है, और उन्होंने मुझे इसके द्वारा स्पर्श किया!'' आपको मालुम है यह कैसे हुआ? यह इसलिए हुआ क्योंकि मैंने उस प्रेम को महसुस किया, वह परमेश्वरीय कृपा जो मेरे जरिये, उस व्यक्ति के प्रति बह रही थी। जब मैं यह महसुस करता हूँ, तब मैं यह पहचानता हूँ कि यह मैं नहीं, परंतु वह परमेश्वर है। परमेश्वर प्रेम है, और जब मैं दूसरे व्यक्तियों से प्रेम करता हूँ, तब परमेश्वर मेरे द्वारा दूसरे लोगों को प्रेम करता है। प्रभु यीशु ने इस प्रकार सवकाई की, मती 14:14 में कहता है, *''उस ने निकलकर बड़ी भीड़ देखी; और उन पर तरस खाया; और उसने उन के बीमारों को चंगा किया।''* परमेश्वर की सामर्थ तब बही, जब प्रभु यीशु ने उन लोगों के प्रति प्रेम और दया को महसूस किया, जिन लोगों की वह सवकाई कर रहे थे। मत्ती 8:2–3 में एक कोढी व्यक्ति जो अशुद्ध था, या जिसे यहूदी नियम के अनुसार छूआ नहीं जा सकता था, (कोई भी उस व्यक्ति से संपर्क नहीं कर सकता था, नहीं तो वे भी दू ात हो जाते और अपने आपको अशुद्ध कर लेते) उसने अपनी आवाज उठाई और प्रभु यीशु को दूर से पुकारा, *''हे प्रभु, यदि तू चाहे, तो मुझे ुद्ध कर सकता है। यीशु ने हाथ बढाकर उसे छूआ, और कहा मैं चाहता हूँ, तू ुद्ध हो जा और वह तुरंत कोढ से ुद्ध हो गया।''* प्रभु यीशु दया से उस कोढ़ी व्यक्ति के ओर मुडे और उस व्यक्ति को स्पर्श

किया। जैसे आप परमेश्वर के वचनों का अभ्यास करेंगे, तब आप इस दया और इस परमेश्वरीय प्रेम को अन्य जगहों में पायेंगे। ये महज भावना नहीं है, परंतु दया है जो हमारे जरिये से बहती है।

जब यीशु को क्रुस पर लटकाया जा रहा था, तब उन्होंने अपने चारों ओर खड़े लोगों को इतना प्रेम किया कि उन्होंने कहा, *''हे पिता, इन्हें क्षमा कर क्योंकि यह नहीं जानते यह क्या करते हैं।''* (लूका 23:34) यह लोग बहुत साधारण लोग थे, जिन्होंने उन्हें क्रुस पर लटकाया था, फिर भी उनको उन पर दया आयी और परमेश्वर से कहा, इन्हें क्षमा कर। हमें पता है कि यह उसके पास बदले का कथन नहीं था। एक मात्र संवेग नहीं था, और न केवल एक भावना, यह चुनाव था। फिर भी उसने (यीशु) इसे महसुस किया और दूसरे लोगों पर छोड़ दिया। आप में से हर एक जो नया जन्म ले चुका है, उसके अन्दर परमेश्वर जीवित है। वचन के अनुसार ुरू करते हैं, इस तरह, 1 यूहन्ना 4:8, परमेश्वर – प्रेम है, और वह चाहता है कि यह आपके जरिये अन्य लोगों में पहुँचे। मैं ऐसा करता हूँ, कि वह यह दया बहायेगा। आप इसको अपने अन्दर से महसूस करेंगे, दूसरे लोगों की तरफ, जब आप यह करते हैं, तो आपको इसका प्रतिक्रिया देनी है।

आपको हमेशा कुछ विशे ा नहीं करना है। परन्तु ऐसा नहीं है, ''ऐसा प्रभु कहते हैं''। जब कभी भी आप दूसरों के प्रति दया महसुस करते हैं, जरा उनके पास जायें और अपने बाहों को उनके ऊपर डाल कर कहिये, ''परमेश्वर आपको प्रेम करता है और वैसे ही मैं भी।'' मुझे मालुम है, एक बार यह काम आया जब मैं इसे पाने ही वाला था, एक ऐसी परिस्थिति में, जब मुझे एक कलीसिया से निकलना पड़ा था। लोगों ने मेरे बारे में झूठ भी बोला और एक मनु य ने तो मुझे जान से मारने की धमकी भी दी। मैं बहुत हतोत्साहित महसुस कर रहा था कि ''परमेश्वर, क्या फायदा है? किसी ने भी नहीं सराहा, कि मैं क्या करने की कोशिश कर रहा हूँ।'' मैं ैतान से, इस लडाई को लड़ रहा था, और मेरे एक दोस्त ने दूर से मुझे बुलाया। उसने कुछ क्षण, तक मुझ से बात की और मैंने कहा, ''अच्छा, आपने मुझे क्यों बुलाया?'' उसने कहा, मैं आपको बुलाना चाहता था कि आप जाने कि मैं आप से प्रेम करता हूँ। मैं प्रार्थना कर रहा था और परमेश्वर का प्रेम तुम्हारे, लिए महसुस किया। मैं आपकी सराहना करता हूँ।'' उसने बस इतना ही कहा। वह उस स्थिति को नहीं जानता था जो मेरे जीवन में बीत रही थी, लेकिन परमेश्वर ने

उसका उपयोग किया। मैं जानता था कि यह केवल परमेश्वर ही है, जो मुझे उस व्यक्ति के द्वारा प्रेम कर रहा था, और मुझे सेवकाई में रखा और मेरे जीवन में बदलाव लाया।

इसके लिए किसी महान ाब्द की जरूरत नहीं है। परमेश्वर प्रेम है, और जब कभी भी आप महसुस करें कि प्रेम आपके द्वारा उमड रहा है, तो जान लें कि यह ईश्वरीय प्रेम है परमेश्वर का पवित्र प्रेम। जब आपको महसुस हो, कि आपको इसका अनुसरण करना है, तो जाकर कुछ करिये कुछ कहिये, किसी के लिये आशी ा बन जाइये। परमेश्वर आपके मुँह को वचन से भर देगा। वह आपका उपयोग करेगा, वह लोगों को स्वतंत्र करेगा, जब आप दया से भर कर लोगों की सेवकाई करेंगे, जो आप के चारों ओर है।

शिष्यता के प्रश्न

सूचना : इस पाठ में हम जाँचेंगे कि किस तरह से हम उपयोग करेंगे जो परमेश्वर ने हमारे अन्दर दूसरों के लिए डाला है।

1. फिलेमोन 6 पढ़ें वह कौन सा पहला कदम है जिसे हम परमेश्वर को हमारे अन्दर से उमडने का अवसर दे?

2. यूहन्ना 4:7–8 पढ़ें ऐसा कौन सा जरिया है, जिसके द्वारा दूसरों के प्रति प्रेम के लिये पहुँचा जा सके?

3. सीधा उत्तर दें। ''किसी भी समय आपको लगता है कि आप में से प्रेम उमड रहा है, तो यह परमेश्वर आपके अन्दर बह रहा है।'' 1 यूहन्ना 4:7 में इस उत्तेजना को क्या दर्शाता है?

4. 1 कुरिन्थियों 13:4–8 पढ़ें परमेश्वर के चरित्र में प्रेम के कौन – कौन से गुण हैं?

5. मत्ती 14:14 पढ़ें यीशु कैसे दूसरों की सेवकाई के लिए आगे बढें?

6. मत्ती 25:37–40 पढ़ें जब हम दुसरों की तरफ प्रेम व दया से आगे बढते हैं, सच में, हम किस को प्रेम व दया कर रहे हैं?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

फिलेमोन 6 वचन *– "कि तेरा विश्वास में सहभागी होना तुम्हारी सारी भलाई की पहचान में मसीह के लिये प्रभावशाली हो।"*

1 यूहन्ना 4:7–8 *– "(7) हे प्रिय हम आपस में प्रेम रखें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है। (8) जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है!"*

1 यूहन्ना 4:7 *– हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है, और परमेश्वर को जानता है!*

1 कुरिन्थियों 13:4–8 *– "(4) प्रेम धीरज वन्त है, और कृपालु है, प्रेम डाह नहीं करता प्रेम अपनी बढाई नहीं करता और फूलता नहीं!"(5) वह अनरीति नहीं चाहता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, वह झुझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता!"(6) कुकर्म से खुश नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है!"(7) वह सब बातें सह लेता है सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है!"(8) प्रेम कभी टलता नहीं है, भवि यवाणीयों हो तो समाप्त हो जायेगी, भा ाएँ हो तो, जाती रहेंगी, ज्ञान हो, तो मिट जायेगा!"*

मत्ती 14:14 *– उसने (यीशु) ने निकलकर बडी भीड देखी और उन पर तरस खाया और उसने उनके बीमारों को चंगा किया!*

मत्ती 25:37–40 *– (37) तब धर्मी उसको उत्तर देंगे कि हे प्रभु, हमने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया? या प्यासा देखा और पिलाया?(38) हमने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा देखा और कपडे पहिनाए?"(39) हमने कब तुझे बीमार या*

बन्दीगृह, मैं देखा और तुझसे मिलने आए?''(40) तब राजा उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुमने जो मेरे छोटे से छोटे भाईयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया!''

इब्रानियों 6:10 *''क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं कि तुम्हारे काम और उस प्रेम को भूल जाए, जो तुमने उसके नाम के लिए इस रीति से दिखाया कि पवित्र लोगों की सेवा की।'' और कर भी रहे हो।*

उत्तर निर्देशिका

सूचना : इस पाठ में हम जाँच करेंगे कि कैसे वह जो परमेश्वर ने हमारे अन्दर डाला है दुसरों के लिए उमडेगा।

1. फिलेमोन 6 पढ़ें वह कौन सा पहला कदम है, जिसे हम परमेश्वर के द्वारा हमारे अन्दर से बहने दें?

उन सब अच्छी बातों की गवाही दें, जो उसने यीशु में हमारे अन्दर डाली है।

2. 1 यूहन्ना 4:7–8 पढ़ें वह कौन सा सच्चा जरिया है, जो दूसरों तक प्रेम पहुँचाने का है?

''परमेश्वर, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है'' (१ यूहन्ना ४:८)

3. अन्द्रयास कहते हैं, ''किसी भी समय आप में से प्रेम उमड़ रहा है, तो यह परमेश्वर आपके द्वारा उमड़ रहा है।'' 1 यूहन्ना 4:7 यह पक्की तरह बताता है।

परमेश्वर प्रेम है, (वह ही जरिया है)।

4. 1 कुरिन्थियों 13:4–8 पढ़ें परमेश्वर के प्रेम के कौन – कौन से गुण हैं?

प्रेम धीरज है, गुस्सा करने में धीमा है। यह वर्तमान काल में है, मतलब यह हमेशा इस तरह व्यवहार करता है। प्रेम दयालू है यह अपने में ही दया का कार्य करता है। मतलब ये सदा ऐसा ही व्यवहार करता है। वह डाह नहीं करता, वह अपनी भलाई के लिये दुसरों का अच्छा में खुश होता है। वह अपनी बढाई नहीं करता, फूलता नहीं, वह घमंडी नहीं होता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, वह झगडता नहीं, वह स्वार्थी नहीं है, वह झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता, बुराई नहीं सोचता हमेशा दुसरों का भला चाहता है। वह बुरा काम ब्योरा नहीं रखता, वह अधर्म से खुश नहीं होता, वह सत्य से खुश होता है, हर बात में विश्वास करता है, वह कभी हारता नहीं, प्रेम हमेशा विश्वास करता है, प्रेम असफल नहीं होता। वह हमेशा सहायता करने को तैयार रहता है!

5. मत्ती 14:14 पढ़ें कैसे यीशु दूसरों की सेवकाई के लिए आगे बढें?

वह दया से भरकर लोगों की तरफ बढ़ें, शब्द कोष में 'दया' को सहानुभूति की भावना, कहा है, अर्थात बहुत दया!

6. मत्ती 25:37–40 पढ़ें जब हम प्रेम में दुसरों तक पहुँचाते है, तब सच में हम उनको प्रेम व सेवा कर रहे हैं।

यीशु स्वयं

पढ़ें इब्रानियों 6:10 "परमेश्वर अन्यायी नहीं है कि, तुम्हारे काम और उस प्रेम को भूल जाए जो तुमने उसके नाम के लिए इस रीति से दिखाया कि पवित्र लोगो की, सेवा की, और कर भी रहा है।"

तृतीय स्तर

अध्याय २

सेवकाई के लिए वरदानों का उपयोग

लेखक - एन्ड्रयू वॉमक

आज हम इस बारे में बात करना चाहते हैं, कि जो प्रेम आपने परमेश्वर से प्राप्त किया है उसे कैसे दूसरों में बाँट सकते हैं। और आप कैसे एक प्रभवशाली सेवक, दूसरों के लिए हो सकते हैं। 1 पतरस की पुस्तक 4:11 वचन में कहते हैं, *''यदि कोई बोले तो ऐसा बोले, मानों परमेश्वर का वचन है, यदि कोई सेवा करें तो उस ाक्ति से जो परमेश्वर देता है।''* यह परमेश्वर का वचन इस सलाह को दिखाता है कि वापस पुराने नियम में जिस तरह उन्होंने पवित्रों के पवित्र को उस वाचा के संन्दुक में रखा तो वह कहलाता था *'परमेश्वर का वचन'* तो जब वह कहता है, ''परमेश्वर का वचन बोलो, 'मतलब मानो परमेश्वर के मुख से बोलते हो।'' तो बोलो तो ऐसा, जैसे आप परेश्वर की तरफ से बोल रहे हो।' वचन के अनुसार, *''यदि कोई सेवा करे, तो उस ाक्ति से करे, जो परमेश्वर देता है, जिससे सब बातों मे यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महीमा प्रकट हो महीमा और साम्राज्य युगानुयुग उसी का है,'' अमीन!* यह क्या कहता है, कि तुम्हें अपनी ाक्ति से लोगों की सेवा करने की आवश्यकता नहीं परंतु परमेश्वर के वरदान के द्वारा ही करें, जो वह देता है।

एक सब से बड़ी बात मसीही जीवन के लिये वह यह नहीं है, कि मैं और आप खाली किसी से बात करें या बाँटे, अपनी ही योग्यता के अनुसार, लेकिन परमेश्वर स्वयं हमारे अन्दर आकर वास करता है। वह हमारे द्वारा बोलना ुरू करता है, और हमारे द्वारा बहता है। हम सचमुच में पूरी तरह से परमेश्वर से परिपूर्ण होकर, जिस तरह परमेश्वर की आत्मा हम में बह रही हो। जैस ही हम दूसरों के साथ बाँटना ुरू करते हैं, तो हमें यह याद रखना है, कि यह ही आत्मा का वरदान है, यह इसलिए है कि परमेश्वर एक – एक व्यक्ति को यीशु मसीह की सहभागीता में ले लेता है, और एक विशे ा वरदान देता है। 1 कुरिन्थियों के 12 में यह कहता है, कि हर एक को उसकी इच्छा के अनुसार अलग – अलग वरदान दिये गये हैं। वचन 4–6 में कहता है, ''*(4) वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है।(5) और सेवकाई भी कई प्रकार*

की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है। (6) और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है। जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।'' इसका मतलब है कि परमेश्वर इन सब चीजों को हम सब में करता है। जैसे, वचन 7 में कहता है, *''किन्तु सब के लाभ पहुँचाने के लिए हर एक आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।''* या सभी के लाभ के लिये।

वचन में लिखा है कि परमेश्वर ने हर एक मनु य में आलौकिक योग्यता को डाला है। तुम महसुस नहीं करते, या पता भी नहीं होता है, लेकिन यह परमेश्वर के वचन का वादा है। अगर आप इस प्रेरिताई की श्रृंखला में यहाँ तक पहुँच गए हैं, अगर आपने यीशु को अपना प्रभु बना लिया है, अगर आपने यह सीख लिया है कि कैसे परमेश्वर से प्राप्त करें और अपने जीवन मे क्रियान्वित करें, तो मैं आपको यह वादा कर सकता हूं कि पवित्रआत्मा की ाक्ति आपके अन्दर काम करती है। आपके पास दूसरे मनु य के लिए आश्चर्य कर्म आपके अन्दर है, आपके अन्दर परमेश्वर ने आश्चार्य कर्म करने का बीज दूसरों के लिये डाल दिया है। यह आप पर निर्भर करता है कि आप इसे अपने अन्दर से इस्तमाल करें और उनके जीवन में क्रियान्वित करें। ास्त्र कहता है, कि यह हम सब को आत्मा के द्वारा दिया गया है। एक भी मनु य छूटा नहीं है, 9 ऐसे वरदानों की चर्चा 1 कुरिन्थियों 12 अध्याय में की है, जैसे, बुद्धि का वरदान, ज्ञान का वरदान, आत्माओं के परखने का वरदान, आश्चर्य कर्म करने का वरदान, चंगाई का वरदान इत्यादि! रोमियों की पुस्तक 12 अध्याय में, भी परन्तु, मेरे पास समय नहीं कि में बाँटू। आप को उसका अध्ययन करने की आवश्यकता है और इस बात को जान लेना है, कि हर एक के पास पवित्र आत्मा का विशे ा अभि ोक आपके अन्दर है, और विशे ा योग्यता, जिससे आप दूसरों की सेवकाई कर सकते हैं। हर एक वह सेवा नहीं करेगा, जो मैं करता हूँ, एक क्षण के लिए ाायद आपके पास सीखने का वरदान नहीं है, लेकिन प्रभु की एक देह में हर एक व्यक्ति अपने विश्वास के अनुसार दूसरे व्यकित को सीखा सकता है। ऐसे लोग हैं, जो विशे ा सीखाने का ही काम करते हैं, कुछ लोग कलीसिया में प्रचार का कार्य, एक याजक की तरह करते हैं। अन्य और भी वरदान हैं, जिन्हें रोमियों की पत्री के 12 अध्याय में वर्णन किया है, कि वे लोग भी हैं, जिन्हें दूसरों का आदर भाव करने का वरदान है। आप में से कई लोगों के पास बिना जाने कोई योग्यता, या वरदान होते हैं। आपको केवल अपने मन में इच्छा करनी है कि किसी को भी आशीि ात करना है। आप ाायद इस प्रकार के व्यक्ति हैं, जो जब कमरे में चलते हैं, तो किसी व्यक्ति को बडी

आसानी से उठा लेते हैं, जो बीमार है। आप उनसे सहानुभूति दिखाते हैं, आप जानते हैं कि वह किस समस्या से गुजर रहे हैं, इस तरह आप इच्छा रखते हैं, कि उनको सान्तवना दें। इस तरह की सेवा करते हैं! क्या आप जानते हैं कि यह ही परमेश्वर का आलौकिक वरदान है?

रोमियों की पत्री का 12 वां अध्याय में कहता है कि कुछ लोगों को देने का वरदान मिला है, उनमें योग्यता है, कि वह पैसा कमाएँ और सुसमाचार के प्रचार के लिए खर्च करें। यह उनका वरदान है, उनकी जीवन में बुलाहट, और आप लोगों को इस कार्य के लिये बुलाया गया है। आप में कुछ को दुसरों को उत्साहित करने का वरदान, और कुछ को अच्छा प्रबन्ध करने का वरदान और कुछ को विशे ाकर बुलाया गया मदद करने के लिये। वे बहुत सारी चीजों को कर सकते हैं, न केवल कलीसिया के लिये, परन्तु दिन ब दिन के आधार पर मनु यों के साथ व्यवहार करने के लिये, कुछ लोगों को दूसरों को उत्साहित करने का वरदान दिया गया है, जो लोग निराश हैं, निरउत्साहित हैं उनको उत्साहित करने के लिये। कुछ चीजों को मैं कभी भी नहीं कर सकूंगा, केवल वचन पढ़ाने के जरिये, आपके पास एक आलौकिक योग्यता है, जिससे आप ऊपर आते हैं। अपनी बाहों को किसी के चारों ओर डालिये, और उनको आशी ा दीजिये, और उन्हें काबिल बनाईये। मैं यह बात इस बिन्दु के जरिये कह रहा हूँ, कि आप को इसके स्वाभाविक होने की जरूरत नहीं है। जैसे, ''यह मेरा व्यक्तित्व ही है'' आप अपने व्यक्तित्व की पहचान इस प्रकार कर सकते हैं। लेकिन, आप क्या जानते हैं, यहां परमेश्वर ने आप में आलौकिक योग्यता को आपके अन्दर दे दिया है, ताकि आप अपना वरदान, और विचार धारा जो आपको किसी विशे ा बातों को करने की ओर उकसाती है।

जब आप दूसरों की सेवकाई कर रहे हैं, ाास्त्र कहता है कि आप को उन चीजों की सेवकाई करने की जरूरत है जो परमेश्वर ने आपके अन्दर डाली है। हम सब को सेवक बनने की जरूरत है, चाहे पूरे समय के लिये अपनी नौकरी पर और कहीं पर भी हम हों। अगर तुम इसे अपने पडोसी के साथ करते हो, या किसी दुकान में (स्टोर) आप को उस योग्यता के साथ करना है जो परमेश्वर ने आपको दी है, ना कि अपनी खुद की योग्यता के अनुसार। इसलिए, मैं आपको उत्साहित करता हूँ कि परमेश्वर की खोज करें, उन वरदानों को खोजें अपने अन्दर, जो परमेश्वर ने आपके अन्दर डाले हैं, और उनको आप मत गिनों जिनकी सेवकाई के लिए आप को नहीं बुलाया गया है। इसको

पहचानों, कि प्रत्येक के अन्दर पवित्रआत्मा ने आलौकिक योग्यता को स्थापित किया है। और तब उन वरदानों को दूसरों की सेवा करने में उपयोग करें। आप को उस योग्यता के साथ करना है जो परमेश्वर ने आपको दी है।

यह समय और अभ्यास लेगा। पहली ही बार आप सिद्ध नहीं होंगे, इसलिए अभ्यास करने से डरे नहीं। यदि आपने भूल की, परमेश्वर अपने सिहांसन से नहीं गिरेंगे, और दूसरे लोग आपके मन की ईमानदारी को पहचानेंगे। यदि आप सिद्धत्ता से कुछ करें या न करें, आपका प्रेम उनकी सेवकाई करेगा। दूसरों की सेवकाई करना ुरू करें, पहचानिये कि आपने परमेश्वर के द्वारा वरदान पाया है, और फिर अपनी अलौकिक योग्यता जो परमेश्वर ने आपको दी है, दूसरों के साथ बाँटना ुरू कर दिजिये।

शिष्यता के प्रश्न

1. 1 पतरस 4:11 पढ़ें जिसकी योग्यता हम सेवकाई के लिए उपयोग में लायेंगे।

2. 1 कुरिन्थियों 12:4 पढ़ें ऐसे बहुत से आत्मिक वरदान हैं, उनका जरिया कौन है?

3. 1 कुरिन्थियों 12:6 पढ़ें सही ाब्दों या वचनों को चुनिये –

   (अ) एक तरह के आधे काम।

   (ब) ऐसे बहुत से रास्ते हैं कि परमेश्वर लोगों के जरिये कार्य करता है।

   (स) परमेश्वर केवल प्रचारक के द्वारा ही कार्य करता है।

4. 1 कुरिन्थियों 12:7 पढ़ें हम सब की भलाई के लिए ही, पवित्रआत्मा की उपस्थिति व वरदान दिये गये हैं। सही या गलत

5. 1 कुरिन्थियों 12:8–10 पढ़ें उन सब आत्मिक वरदानों की सूची बनाईयें और वर्णन कीजिये, जो परमेश्वर ने लोगों को दिये हैं।

6. रोमियों का 12:6–8 पढ़ें उन सब आत्मिक वरदानों की सूची बनाईये और उनका वर्णन कीजिये जो परमेश्वर ने लोगों को दिये है।

7. क्या आपने इन वरदानों को महसुस किया जो आपने कार्य कर रहे हैं? ऐसा है तो क्या वरदान है?

8. 1 कुरिन्थियों 12:7 पढ़ें इन वरदानों के द्वारा किन किन को लाभ मिलता है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

1 पतरस 4:11 *– ''यदि कोई बोले तो ऐसा बोले, मानों परमेश्वर का वचन है, यदि कोई सेवा करे तो उस ाक्ति से करे जो परमेश्वर देता है, जिससे सब बातों मे यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रगट हो महिमा और साम्राराज्य युगानुयुग उसी का है। आमीन।''*

1 कुरिन्थियों 12:4 *– ''वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है।''*

1 कुरिन्थियों 12:6 *– ''और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।''*

1 कुरिन्थियों 12:7 *– ''किन्तु सबके लाभ पहुँचाने के लिये, हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।''*

1 कुरिन्थियों 12:8–10 *– ''(8) क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती है, और दूसरे को उसी आत्मा के द्वारा ज्ञान की बातें। (9) और किसी को उसी आत्मा से विश्वास, और किसी उसी आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है। (10) फिर किसी को सामर्थ के काम करने की ाक्ति और किसी को भवि यद्वाणी की*

और किसी को आत्मा को परखने और किसी को अनेक प्रकार की भा ाा और किसी को भा ााओं का अर्थ बताना।''

रोमियों 12:6–8 *– ''(6) और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के है, परन्तु परमेश्वर एक ही है जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। (7) किन्तु सबके लाभ पहुँचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। (8) क्यों एक आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं और दूसरे का उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें।''*

2 तीमुथियुस 4:11 *– ''केवल लूका मेरे साथ है मरकुस को लेकर चला आ, क्यों सेवा के लिये वह मेरे बहुत काम का हे।''*

प्रेरितों के काम 13:1 *– ''अन्ताकिया की कलीसिया में कितने भवि यद्वक्ता और उपदेशक थे, अर्थात बरनवास और शिमौन जो नीगर कहलाता है और लूकियुस कुरेनी और देश की चौथाई के राजा हेरोदेरा का दूध भाई मनाहेम और   ााऊल।''*

प्रेरितों के काम 13:15 *– ''और व्यवस्था और भवि यद्वक्ताओं की पुस्तक से पढ़ने के बाद सभा के सरदारों ने उनके पास कहला भेजा कि हे भाईयों, यदि लोगों के उपदेश के लिये तुम्हारे मन में कोई बात हो तो कहो।''*

नीतिवचन 22:9 *– ''उदार हृदय वाला आशीि ात होगा क्योंकि कंगाल को अपने भोजन में से देता है।''*

प्रेरितों के काम 20:28 *– ''इसलिए अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो, जिसमें पवित्रआत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है।''*

मत्ती 5:7 *– ''धन्य है वे, जो दयावन्त है, क्योंकि उनपर दया की जायेगी।''*

1 कुरिन्थियों 12:7 *– ''किन्तु सबके लाभ पहुँचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।''*

प्रेरितों के काम 27:21–27 *– ''(21) जब वह बहुत उपवास कर चुके तो पौलुस ने उनके बीच में खडे होकर कहा, हे लोगों, चाहिये था कि तुम मेरी बात मान कर क्रेते से न जहाज खोलते और न यह बिपत और हानि उठाते। (22) परन्तु अब में तुम्हें समझाता हूँ, कि ढाढ़स बान्धों, क्योंकि तुम में से किसी के प्राण की हानि न होगी, केवल जहाज की। (23)*

क्यों परमेश्वर जिसका मैं हूँ, और जिसकी सेवा करता हूँ, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा। (24) है पौलुस मत डर; तुझे कैसर के सामने खड़ा होना अवश्य है और देख परमेश्वर ने सबको जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है। (25) इसलिये, हे सज्जनों ढाढ़स बान्धों क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूँ जैसा मुझसे कहा गया है वैसा ही होगा।''

प्रेरितों के काम 9:11–12 *– ''(11) तब प्रभु ने उससे कहा उठ कर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है और यहूदा के घर में ाऊल नाम एक तारसी को पूछ ले, क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है। (12) और उसने हरन्याह नाम एक पुरू ा को भीतर आते और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है ताकि फिर से दृ ट पाए।''*

1 कुरिन्थियों 13:2 *– ''और यदि में भवि यवाणी कर सकूं और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं और मुझे यहाँ तक विश्वास है कि मैं पहाडों को हटा दूँ, और मैं प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं!''*

मरकुस 16:18 *– ''नई नई भा ा बालेंगे, साँपों को उठा लेंगे और यदि नाशक वस्तु भी पी जाएं, तो भी उनको कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जायेंगे।''*

इब्रानियों 2:3–4 *– ''(3) तो हम लोग ऐसे बडे उद्धार से निश्चित रहकर क्यों कर बच सकते हैं, जिसकी चर्चा पहिले पहल प्रभु के द्वारा हुई और सुननेवालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ। (4) और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों और अद्भुत कामों और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों और पवित्र आत्मा के वरदानों के बाँटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा।''*

प्रेरितों के काम 11:27–28 *– ''(27) उन्हीं दिनों में कई भवि यद्वक्ता यरूश्लेम से अन्ताकिया में आए। (28) उनमें से अगबुस नाम एक ने खडे होकर आत्मा की प्रेरणा से यह बताया कि सारे जगत में बडा अकाल पडेगा, वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा।''*

1 कुरिन्थियों 14:3 *– ''परन्तु जो भवि यवाणी करता है वह मनु यों से उन्नति और उपदेश और ान्ति की बातें कहता है।''*

प्रेरितों के काम 16:16–18 *– ''(16) जब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली, जिस में भावी कहलानेवाली आत्मा थी और भावी कहने से अपने*

स्वामीयों के लिए बहुत कुछ कमा लाती थी। (17) वह पौलुस और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगती कि ये मनु य परम प्रधान परमेश्वर के दास है, जो हमें उद्धार के मार्ग की क्या सुनाते हैं। (18) वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही, परन्तु पौलुस दुखित हुआ और मुँह फेर कर उस आत्मा से कहा, मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूँ, कि उसमें से निकल जा और वह उसी घडी निकल गयी।''

प्रेरित के काम 2:4–11 *– ''(4) और वह सब पवित्र आत्मा से भर गए और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य भा ाा बोलने लगे। (5) और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रहते थे। (6) जब वह   ाब्द हुआ तो भीड़ लग गयी और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था कि ये मेरी ही भा ाा में बोल रहे हैं। (7) और वह सब चाकित और अचम्भित होकर कहने लगे देखो ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं? (8) तो फिर क्यों हम में से हर एक अपनी अपनी जन्म भूमि की भा ाा सुनता है? (9) हम जो पारथी और मेदी और एलाने लोग और मिसुपुतामिया और यहूदिया और कप्पदुकिया और पुन्तुस और आसिया। (10) और फ्रूगिया और पमफूलिया और मिस्र और लिबूआ देश जो कुरेने के आस – पास है, इन सब देशों के रहनेवाले और रोमी प्रवासी क्या यहूदी क्या यहूदी मत धारण करनेवाले, क्रेती और अरबी भी है। (11) परन्तु अपनी अपनी भा ाा में उनसे परमेश्वर के बड़े बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं।''*

1 कुरिन्थियों 14:13–14 *– ''(13) इस कारण जो अन्य भा ाा बोल तो वह प्रार्थना करें कि उसका अनुवाद भी कर सके। (14) इसलिए यदि मैं अन्य भा ाा में प्रार्थना करूं तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है। परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती।''*

उत्तर निर्देशिका

1. पढ़ें 1 पतरस का 4 अध्याय 11 वचन (1 पतरस 4:11) – किसकी योग्यता से हम सेवकाई करते हैं?

परमेश्वर की योग्यता से।

2. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 12:4 – आत्मिक वरदानों के बहुत से प्रकार है, लेकिन इनका जरिया कौन है?

परमेश्वर/पवित्रआत्मा।

3. पढ़ें कुरिन्थियों 12:6 – सही ाब्दों/वाक्यों को चुनिये –

बी. बहुत से ऐसे तरीके है, जिनसे लोगों के द्वारा परमेश्वर कार्य करता है।

4. पढ़ें कुरिन्थियों 12:7 – सब की भलाई के लिए पवित्र आत्मा की उपस्थिति व वरदान हर एक को दिये गये है।

सही है।

5. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 12:8–10 – उन सब आत्मिक वरदानों की सूची बनाइये व वर्णन करिए, जिन्हें परमेश्वर लोगों को देता हैं।

बुद्धि का वचन : एक आलौकिक प्रकाश परमेश्वर की ओर से उसके मन व उद्देश्य- जानने के लिये देखिये - प्रेरितों के काम २७:२१-२५।

ज्ञान का वचन : एक सच्चाई / घटना को जानने के लिए परमेश्वर का आलौकिक प्रकाश - देखिए - प्रेरितों ९:११-१२।

विश्वास का वचन : बिना सन्देह के विश्वास के लिए परमेश्वर की आलौकिक यौग्यता देखिए - १ कुरिन्थियों १३:२

चंगाई का वचन : बिना किसी औषधी व मानव सहायता के

परमेश्वर की आलौकिक चंगाई के लिए देखिए - *मरकुस* १६:१८।

चमत्कार के लिए : आलौकिक परमेश्वर की योग्यता और आश्चर्यकर्म के लिए देखिए - इब्रानियों २:३-४।

भविष्यवाणी का वरदान : एक आलौकिक भाषा जो परमेश्वर के द्वारा बतायी जाये, एक जानी हुई जुबान में इसके लिए देखिए - प्रेरितों के काम ११:२७-२८ और १ कुरिन्थियों १४:३।

परखने की आत्मा : परमेश्वर के आलौकिक प्रकाश के जरिये,

यह जान लेना कि कौन सी आत्मा उपस्थित है या कार्य कर रही है, इसको देखिए – प्रेरितों के काम १६:१६–१८।

अन्य भाषा में बात : एक आलौकिक भाषा परमेश्वर के द्वारा बतायी जाय, जो उस व्यक्ति के लिए अनजान है जो उसे बोल रहा है – इसे देखिए – प्रेरितों के काम २:४–११।

भाषा का अनुवाद करने का : एक आलौकिक भाषा जो बोली जाये, परमेश्वर की आत्मा के द्वारा बतायी जाने पर उसका अनुवाद करना। देखिये – १ कुरिन्थियों १४:१३–१४।

6. पढ़ें रोमियों 12:6–8, इन सब वरदानों का वर्णन करिये, जिनकी सूची नीचे दी गई है, भवि यवाणीः एक आलौकिक भा ाा, परमेश्वर द्वारा प्रेरणा मिली, किसी ऐसी भा ाा जो बोलने वाला जानता है।

सेवकाई : दूसरों की सेवा, कार्य के द्वारा सेवा देखिये – २ तिमोथि ४:११

सीखाना : व्याख्या करना, उनको बताना, निर्देश देना। इसके लिए देखिए – प्रेरितों के काम १३:१।

दूसरों को उत्साहित करना : तीव्र याचना, सलाह, उत्साहित करना संतसावना देना, चेताना इस विषय में प्रेरितों के काम १३:१५।

देने का वरदान : खुले दिल से बाँटना, परमेश्वर को और दूसरें लोगों को, देखिए – नीतिवचन २२:९।

अधिकारी : अगुवाई करना – देखिये – प्रेरितों के काम २०:२८।

दया : किसी दु:खी मनुष्य को दया दिखाना, दया करना देखिए – मत्ती ५:७।

7. आपने ऐसा महसुस किया कि इन सब वरदानों में कोई भी आपके अन्दर है? अगर है, तो कौन सा वरदान है?

8. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 12:7 – इन वरदानों के जरिये, किस को लाभ मिलता है?

प्रत्येक को। इन वरदानों का उपयोग दूसरों के लिए करके आप परमेश्वर को अपने अन्दर/जरिये काम करने देते है।

तृतीय स्तर

अध्याय ३

आश्चर्यकर्म से परमेश्वर की महिमा

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

हमनें चर्चा की थी परमेश्वर की ाक्ति उसके दिये गये वरदानों के द्वारा, दूसरे लोगों की सेवकाई करना। मैं उन चीजों को आपके साथ बाँटना चाहता हूँ कि वास्तव में यह किस तरह परमेश्वर की महिमा करते हैं, और परमेश्वर कैसे हम से चाहता है कि उसको इस आलौकिक योग्यता को हम किस तरह उपयोग करें। ऐसे बहत से वचन हैं, इसके बारे में पर मैं केवल कुछ पर प्रकाश डाल सकता हूँ। मत्ती की पुस्तक में 9 अध्याय में, जहाँ यीशु ने एक लकवे के मारे हुये को चंगा किया। उसकी व्याख्या में मरकुस के 2 अध्याय में, मत्ती 9:8 में कहता है, *''लोग यह देख कर डर गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे जिसने मनु यों को ऐसा अधिकार दे दिया है।''* क्या आप को मालूम है? कि आश्चर्यकर्म करने का वरदान, परमेश्वर की महिमा करता है, और इसी कारण उसने हमें आश्चर्य कर्म करने की योग्यता हमें दी है?

जब आप दूसरों के साथ बाँटना ारू करते हैं तो यह स्वाभाविक है कि वह सन्देह करते हैं तथा प्रश्न करना ारू करते हैं। ''अच्छा, मैं कैसे जानूं कि जो आप कह रहे हैं, सही है?'' एक बार मैंने एक प्रसिद्ध प्रचारक टी.एल. ओसबोर्न को सुना, जिसने करोडों लोग को प्रभु यीशु के लिये अगुवाई की, तब उसने अपने अनुभव की चर्चा की जब वह पहली बार अपने मिशन पर था। उसने लोग को गवाही देने की पूरी कोशिश की, पर उन्होंने जरा भी विश्वास नहीं किया कि उसने क्या कहा। अंत में, वह एक बार एक मनु य से बातें कर रहे थे। और कहा ''बाइबल की पुस्तक कहती है,'' तभी उस व्यक्ति ने कहा कि ''आप की काले रंग की पुस्तक से दूसरे काले रंग की पुस्तक में क्या अन्तर दिखाती है?'' तब, टी.एल. ओस्बर्न ने सोचा *यह लोग कैसे जानते हैं कि बाइबल सच है? मुझे विश्वास है कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, लेकिन मैं उन्हें कैसे राजी करूँ?*

उसने मिशन के क्षेत्र से हारकर उसे अनुत्साहित होकर छोड़ दिया, और वापिस घर आ गया और परमेश्वर को खोजने लगा। परमेश्वर ने उससे कहा कि उसे अपनी

आलौकिक योग्यता का इस्तेमाल करना है। चिन्ह और आश्चर्यकर्म परमेश्वर के वचन का महत्व बढ़ाते हैं, जो लोगों के जीवन को बदल सकेंगे। 1 पतरस 1:23 में कहता है, *"क्योंकि तुमने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।"* परमेश्वर का वचन ही है, जो लोगों में जीवन में बदलाव लाता है, लेकिन आप उनको कैसे यह विश्वास दिलाये कि सचमुच में यह परमेश्वर ही बोल रहा है? अच्छा, यही आश्चयकर्म का उद्देश्य है, जब हम यह प्रचार करते हैं कि परमेश्वर की इच्छा मनु य को चंगा करने की है। हम उनके सामने प्रदर्शित करते हैं उनके ऊपर प्रभु यीशु के नाम से बोलने के द्वारा। उनके बहरे कान, अंधी आँखे खुल जाते हैं, और ये यह दर्शाते हैं कि यह परमेश्वर ही है जिसने चंगाई दी है। केवल आश्चर्यकर्म ही लोगों का जीवन नहीं बदलते हैं, यह उनके विश्वास का कारण बनते हैं, कि जो वचन आपने बोला वह है परमेश्वर का वचन।

इसका उदाहरण मरकुस की पुस्तक 2:1–9, में जहाँ पर लकवे के मारे हुए मनु य के बारे में विस्तार से लिखा है, जो चंगा हुआ था: *"और कुछ दिनों के बाद वहां (यीशु) फिर से कफरनहूम में गया, सब को मालूम हो गया कि वह घर में था। और बहुत सारे लोग जमा हो गए और वहाँ कोई कमरा नहीं था उनके लिये बिलकुल नहीं और उसने उनके बीच परमेश्वर के वचन का प्रचार किया। और वे उसके पास आये और लोग झोले के मारे हुए को चार मनु यों से उठवा कर उसके पास लाये, परन्तु जब वह भीड़ के कारण उसके निकट न पहुँच सकें तो उन्होंने उस छत को जिसके नीचे वह था खोल दिया और झोले के मारे हुए व्यक्ति को नीचे लटका दिया। जब यीशु ने उनका विश्वास देखा, तब उसने उस झोले के मारे व्यक्ति से कहा, पुत्र तेरे पाप क्षमा हुए। तब कई एक ास्त्री जो वहाँ बैठे थे, अपने – अपने मन में विचार करने लगे कि ये मनु य को ऐसा कहता है? यह परमेश्वर की निंदा करता है। कौन, पाप क्षमा कर सकता है, केवल परमेश्वर? और जब तुरन्त यीशु ने अपनी आत्मा मे जान लिया कि वे अपने अपने मन में ऐसा विचार कर रहे है तो उसने उनसे कहा, तुम अपने मन में ऐसा विचार क्यों कर रहे हो? सहज क्या है, क्या झोले के मारे से यह कहना कि, तेरे पाप क्षमा हुए या ये कहना कि उठ, अपनी खाट उठा कर चल फिर।"* सच तो यह है कि मनु य के लिये यह दोनों बातें असम्भव है, परंतु परमेश्वर के लिए सम्भव है अगर परमेश्वर यह कर सकता है, निश्चय ही, वह दूसरा भी कर सकता है।

यीशु ने मरकुस 2:10–12 में कहा, *"परन्तु जिससे तुम जान लो कि मनु य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है (उसने उस झोले के मारे हुए से कहा)। मैं तुझ से कहता हूँ, उठ, अपनी खाट उठा कर अपने घर चला जा। और वह उठा और तुरन्त खाट उठा कर और सबके सामने से निकल कर चला गया। इन पर सब चकित हुए और परेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे कि हमने ऐसा कभी नहीं देखा।"* यीशु ने इसे बहुत साफ तरिके से कहा "लेकिन जिससे तुम जान लो कि मनु य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है (उसने झोले के मारे हुए से कहा)"। यीशु ने चंगाई दिखाकर यह दर्शाया कि लोग जाने कि वह अपने वचन के जरिये लोगों को ारीरिक चंगाई दे सकता है, यह लोग देख सकते थे। तब वह आत्मिक चीजें भी, जैसे, पापों की क्षमा भी हुई, यीशु ने आश्चर्यकर्म के जरिये अपने वचन को महत्व दिया।

ये ठीक इस तरह से बातें इब्रानियों की पुस्तक 2:2–3 में कहा है, *"क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के द्वारा कहा गया था जब वह स्थिर रहा और हर एक अपराध और आज्ञा न मानने का ठीक ठीक बदला मिला। तो हम लोग ऐसे बडे उद्धार से निश्चित रहकर क्यों कर बच सकते है? जिस की चर्चा पहिले पहिल प्रभु के द्वारा हुई और सुनने वालों के द्व ारा हमें निश्चय हुआ।"* यह कहता है कि परमेश्वर ने पवित्रआत्मा के द्वारा इस वचन को निश्चित किया। इन सब को एक साथ मरकुस की पुस्तक के 16:20 में देखा जाय, इस तरह! *''और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ साथ होते थे वचन को दृंढ करता रहा। आमीन।"* यह मैं आप को इसलिए कहना चाहता हूँ कि परमेश्वर अपनी आलौकिक योग्यता को दूसरों की सेवकाई के लिये उपयोग करना चाहता है। परमेश्वर उन आश्चर्यकर्मों को जो पवित्रआत्मा के दानों के जरिये होते हैं, वह यह निश्चिय करना चाहता है कि उनके द्वारा परमेश्वर ही बोल रहा है। आखिर में, परमेश्वर चाहता है कि लोग अपने दिलों में स्वतंत्र हों, परन्तु कभी कभी व्यक्ति के दिल तक जाने के लिए उसकी ारीरीक भावनाओं के द्वारा पहुँचना होता है। अगर आप देखते हैं कि इनके उपयोग से व्यक्ति आजाद हो जाता है तब वह खुल जाता है और परमेश्वर को अपने बाकी जीवन को भी अपर्ण कर देते हैं। और उसे (प्रभु) अपने जीवन में कार्य करने देते हैं।

1 कुरिन्थियों 2:1 – पौलुस कुरिन्थियों को लिखता है कि वह कैसे पहले उनके पास आया, *"और भाईयों, जब मैं परमेश्वर का भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास आया तो वचन*

या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया। (2) क्योंकि मैंने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन, क्रुस पर चढायें हुए मसीह को छोड और किसी बात को न जानूँ। (3) और मैं निर्बलता और भय के साथ और बहुत थरथरता हुआ तुम्हारे साथ रहा। (4) और मेरे वचन और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ का प्रमाण था। (5) इसलिए कि तुम्हारा विश्वास मनु य के ज्ञान पर नहीं परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर हो।'' वह इसको साफ कहता है, कि वह इस कारण से नहीं आया, कि केवल ाब्दों को कहे परन्तु आत्मा की सामर्थ को दिखाने के लिये ताकि उनका विश्वास परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर हो, न कि, मनु य के ज्ञान पर।

मसीहियत में एक अद्‌भुत कारण है, एक बार आप सच्चाई जान जाते हैं, तब आप आश्चर्य करते है कि – कैसे आपने इसको पहले नहीं जाना और क्यों हर एक इसको नहीं अपनाता। लेकिन मसीहियत क्या केवल कारण (तर्क मात्र) ही...नहीं है यह एक सच्चा अनुभव है, एक सच्चे परमेश्वर के साथ जोकि वह आज भी जिन्दा है। वह अपने आप को अपने सामर्थ से दिखाना चाहता है, ठीक उसी तरह जैसे उसने अपने वचन में किया। इब्रानियों 13:8 कहता है, ''(8) यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक सा है।'' यीशु आया, और वह मनु य बन कर परमेश्वर के द्वारा हमारे बीच में चिन्ह, चमत्कार दिखाता रहा। प्रेरितों के काम 10:38 में कहता है, ''कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभि ोक किया, वह भलाई करता और सबको जो ौतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।'' निश्चय ही उसका वचन पक्का था, और वह चमत्कार, घंटियों की तरह बजे, उसके वचन की ओर लोगों को खींचने के लिए। उन्होंने परमेश्वर की बढ़ाई की। बहुत से वचनों में कहा है कि ये आश्चर्य कर्मों ने परमेश्वर की महीमा की है और यीशु प्रभु को अगर लोगों के जीवन को बदलने के लिए पवित्र आत्मा की ाक्ति का प्रयोग करना था, तब हम कैसे सोच सकते हैं कि हम उससे अच्छा कर सकते हैं? जो यीशु ने किया। अगर यीशु अपना समाचार लोगों तक पहुँचाने के लिये चमत्कारों का उपयोग करते थे, तब हम कैसे सोच सकते हैं कि सुसमाचार को लोगों तक पहुँचा सकते हैं, बिना चमत्कार व आलौकिक ाक्ति तथा परमेश्वर की सामर्थ के बिना? सच्चाई यह है कि चमत्कार परमेश्वर की महिमा करते हैं। यह घंटियाँ हैं, जो लोगों को खींचती है। यह इस तरह से है, जैसे रात के खाने पर जाने की घंटी बज रही है – यह खाना है जो आप को तृप्त करेगा। लेकिन यह घंटी जो आपका ध्यान खींचती है। बिना घंटी के, कुछ लोगों

को खाना नहीं मिलता है, ठीक उसी तरह बिना परमेश्वर की सामर्थ तथा चमत्कार के बहुत से लोग यह नहीं जान पायेंगे कि परमेश्वर सच है, और वह उनका जीवन बदल सकता है, तथा उनके पाप क्षमा कर सकता है।

मैं आप को उत्साहित करता हूँ, कि अपने अन्दर से उन दोनों को निकलने दीजिये, जो, परमेश्वर चाहता है कि आपके द्वारा कार्य करे और उन चमत्कारों के द्वारा दूसरों के जीवन में कार्य करें। आप में से कुछ कह सकते हैं ''लेकिन वह मुझे प्रभावित करता है। क्या होता है कि अगर मैं एक व्यकित के लिए प्रार्थना करता हूँ वह चंगाई नहीं पाता?'' मैं कैसे जानूँ यह क्या होता है? आप को यह जानना है कि यह आप नहीं है, जो चमत्कार कर रहे हैं, परमेश्वर कर रहा है। आप इसका भार अपने ऊपर मत लीजिए, अगर चमत्कार होता है और व्यक्ति स्वतंत्र हो जाता है, और आप अपने ऊपर दो ा भी मत लीजिये, अगर यह कार्य नहीं होता है। आप केवल प्रार्थना कीजिये, केवल परमेश्वर ही चंगाई देता है, लेकिन उसे आपके द्वारा बहना है। चमत्कार के लिए परमेश्वर आप का उपयोग करना चाहता है। आप को केवल परमेश्वर के वचन में रहना है, देखो, कि यह कैसे दूसरों के लिए कार्य किया, उन बातों को अपने जीवन में लाईये। और परमेश्वर की आलौकिक ाक्ति व चमत्कारों को आपके द्वारा परमेश्वर आज ही बहने देगा।

शिष्यता के प्रश्न

1. चमत्कार क्या है?

2. मरकुस 2:10–12 पढ़ें – यीशु ने क्या चमत्कार करके दिखाया जो उसके पास करने की सामर्थ थी?

3. पढ़ें मरकुस 16:15–18 – विशवासी होने के नाते, हमें क्या करना है?

4. पढ़ें प्रेरितों के काम 8:5–8, 12 – लोगों ने क्या देखा और कैसे उत्तर दिया?

5. पढ़ें प्रेरितों के काम 3:12 – प्रेरित पतरस ने क्या कहा, अपनी स्वयं की पवित्रता के बारे में कि चमत्कार हुए?

6. पढ़ें प्रेरितों के काम 3:16 – चमत्कार कैसे होते हैं?

7. नये करार में, क्या उदारण के लिए, चमत्कार हुए जो प्रेरितों के द्वारा नहीं किये गये?

8. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 1:7 – चमत्कार का दान कब रोक दिया जाता है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

मरकुस 2:10–12 – *"(10) परन्तु जिससे तुम जान लो कि मनु य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है। (11) मैं तुझ से कहता हूँ, उठ, अपनी खाट उठाकर अपने घर चला जा। (12) और वह उठा और तुरन्त खाट उठाकर और सबके सामने से निकलकर चला गया। और वह सब चकित हुए और परमेश्वर की बढ़ाई करके कहने लगे, कि हमने ऐसा कभी नहीं देखा।"*

मरकुस 16:15–18 – *"(15) जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दो ी ठहराया जायेगा। (17) और विश्वास करनेवालों के यह चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दु टात्माओं को निकालेंगे (18) नई भा ा बोलेंगे, सापों को उठा लेंगे, और यदि वह नाशक वस्तु भी पी जाएं – तो भी उनकी कुछ हानि न होगी वे बिमारों पर हाथ रखेंगे और वह चंगे हो जायेंगे।*

प्रेरितों के काम 8:5–8, 12 – *"(5) और फिलिपुस – समारिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। (6) और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था, उन्हें देख देख कर एक चित्त होकर मन लगाया। (7)*

क्योंकि, बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े ाब्द से चिल्लाती हुई निकल गई और बहुत से झोले के मारे हुए और लगड़े भी अच्छे हो गए। (8) और उस नगर में बडा आनन्द हुआ। (12) परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की, जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग क्या पुरू ा क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।''

प्रेरितों के काम 3:12 – *''यह देख कर, पतरस ने लोगों से कहा, हे इस्राएलियों, तुम इस मनु य पर क्यों अचम्भा करते हो और हमारी ओर क्यों इस प्रकार देख रहे हो कि मानों हमने ही, अपनी सामर्थ या भक्ति से इसे चलता फिरता कर दिया।''*

प्रेरितों के काम 3:16 – *''(16) और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है इस मनु य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ दी है और निश्चिय उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसको तुम सबके सामने बिलकुल भला चंगा कर दिया है।''*

मरकुस 9:38–39 – *''(38) तब यूहन्ना ने उससे कहा, हे गुरू, हमने एक मनु य को तेरे नाम से दु टात्माओं को निकालते देखा और हम उसे मना करने लगे क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं हो लेता था। (39) यशु ने कहा, उसको मना मत करो क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ का काम करें।''*

प्रेरितों के काम 8:5–7 – *''(5) और फिलिप्पुस समारिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। (6) और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखता था उन्हें देख देखकर एक चित्त होकर मन लगाया। (7) क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माए बड़े ाब्द से चिल्लाती हुई निकल गई और बहुत से झोले के मारे हुए और लगड़े भी अच्छे किए गये।''*

प्रेरितों के काम 9:10–18 – *''(10) दमिश्क में हनन्याह नाम का एक चेला था, उससे प्रभु ने दर्शन में कहा, हे हनन्याह। उसने कहा हाँ प्रभु। (11) तब प्रभु ने उससे कहा,*

उठ कर, उस गली में जा, जो सीधी कहलाती है और यहूदा के घर में ाऊल नाम का एक तारसी को पूछ ले, क्योंकि देख वह प्रार्थना कर रहा है। (12) और उसने हनन्याह नाम एक पुरू ा को भीतर आते और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है, ताकि फिर से दृभटी पाए। (13) हनन्याह ने उत्तर दिया कि है प्रभु मैंने इस मनु य के वि ाय में बहुतों से सुना है कि इसने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी बड़ी बुराईयां की है। (14) और यहाँ भी इसको महायाजकों की ओर से अधिकार मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं उन सब को बांध ले। (15) परन्तु प्रभु ने उससे कहा कि तू चला जा क्योंकि यह तो अन्य जातियों और राजाओं और इस्त्रालियों के सामने मेरा नाम प्रगट करने के लिए, तेरा चुना हुआ पात्र है। (16) और मैं उसे बताऊँगा कि मेरे नाम के लिए उसे कैसा कैसा दुःख उठाना पडेगा। (17) तब हनन्याह उठ कर घर में गया और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, हे भाई ाऊल प्रभु, अर्थात यीशु जो उस रास्ते में जिससे तू आया है, तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है कि तू फिर दृ ट पाए और पवित्र आत्मा से भर जाए (18) और तुरन्त उसकी आँखों से छिलके से गिरे, वह देखने लगा, और उठकर बपतिस्मा लिया फिर भोजन करके बल पाया।''

1 कुरन्थियों 1:7 – *''यहाँ तक कि किसी वरदान में तुम्हें घटी नहीं और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने की बाट जोहते रहते हो।''*

उत्तर निर्देशिका

1. चमत्कार क्या है?

एक ऐसी घटना जो चमकती या दिखाई देती है तो वह एक आलौकिक शक्ति की प्रकाश मानी जाती है और परमेश्वर की शक्ति का चिन्ह होती है, प्राकृतिक नियम के ऊपर।

2. पढ़ें मरकुस 2:10–12 मरकुस की पुस्तक के 2:10–12 वचनों में, क्या चमत्कार दिखाए कि उसके पास उन्हें करने की ाक्ति थी?

पापों की क्षमा

3. पढ़ें मरकुस 16:15–18 विश्वासी होकर हमें क्या करना है?

वचन का प्रचार, बपतिस्मा, दुष्ट आत्माओं को निकालना, अन्य भाषा में बोलना, और बीमारों को चंगा करना।

4. पढ़ें प्रेरितों के काम 8:5–8, 12 लोगों ने क्या देखा? और कैसे उत्तर दिया?

उन्होंने आश्चर्यकर्म देखे, (७ वचन), यीशु में विश्वास किया और पानी का बपतिस्मा लिया (१२वचन)

5. पढ़ें प्रेरितों के काम 3:12 प्रेरित पतरस ने अपनी पवित्रता के बारे में क्या कहा? चमत्कार करने में?

यह उसकी स्वयं की पवित्रता नहीं थी, उसका सामर्थ नहीं था, व्यक्ति की चंगाई करने में, यह परमेश्वर का सामर्थ था।

6. पढ़ें प्रेरितों के काम 3:16 चमत्कार कैसे हुए?

यीशु के नाम के द्वारा, और यीशु में विश्वास के द्वारा।

7. क्या नए नियम में उदाहरण के चमत्कार हुए जो प्रेरितों के द्वारा नहीं किए गये?

हाँ, यीशु मसीह के एक अनाम चेले (मरकुस ९:३८–३९), फिलिप्पुस (प्रेरितों के काम ८:५–७) हनन्याह (प्रेरितों के काम ९:१०–१८).

8. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 1:7 कब चमत्कारों के वरदान की रोक होगी?

प्रभु यीशु के वापिस आने पर, जब वह लौटेगा।

तृतीय स्तर

अध्याय ४

ईश्वरीय संबन्धों की सामर्थ

लेखक - डोन क्रो

आज हम ईश्वरीय संबन्धों की बात कर रहे हैं। जब आप इसके बारे में सोचते हैं, तब समस्त बाइबल की पुस्तक में इस वि ाय पर चर्चा की है। एक क्षण के लिये, चर्च ाब्द एक ग्रीक ाब्द है *इकलिया* और इसका मतलब है ''एक बुलाया हुआ समुह''। जैसे आप परमेश्वर के वचन में देखते हैं तो आप पाओगे कि चर्च या परमेश्वर के लोगों को एक साथ मिलने के लिये उत्साहित किया जाता है। उन लोगों को हर दिन प्रार्थना करने के लिए तथा एक दूसरे को उत्साहित करने के लिए जमा किया जाता है। जैसे वह एक साथ चलते है, उन्हें ईश्वरीय संबन्धों के द्वारा उत्साहित किया जाता है। अगर आप इसको मानते है, कि 'बड़े लोग' तो इसका वचन में कई प्रयोग किया गया है, इसका वर्णन एक प्राचीन/बड़े मनु य के लिये किया गया है जो आयु में बडा है। वह जो परिपक्व है वह जो मसीही जीवन में चला हो। और जिसने अपने वैवाहिक जीवन तथा परिवार में सफलता प्राप्त की है। अगर मेरे वैवाहिक जीवन में समस्या थी, तो मैं उस व्यक्ति के साथ जाना पसंद करूंगा, जो ईश्वरीय है और जिसमें ईश्वरीय ज्ञान व ों से प्राप्त किया है।

हमें यह भी मानना जरूरी है कि यीशु के ारीर का पवित्रशास्त्र एक ारीरिक तौर पर वर्णन करता है। जिसके पास हाथ है, आँखें है और दूसरे ारीरिक अंग है। हम सब एक दूसरे के अंग है। और एक दूसरे का अंग होने के नाते, एक दूसरे से क्ति प्राप्त करते हैं। प्रत्येक जोड़, कण व हर एक ारीर के भाग का अपना वरदान है, अपनी योग्यता व अपना तरीका है, क्ति और ज्ञान प्रदान करने का।

याकूब की पुस्तक 5:16 *''इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने अपने पापों को मान लो और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ, धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।''* पवित्रशास्त्र में ईश्वरीय संबन्धों का यह एक उदाहरण है। आप जानते हैं, यीशु की देह में एक चीज है जो नहीं पायी जाती

है। मैं सोचता हूँ कि, जो कि हम एक विश्वासी की प्रोहिताई को ज्यादा महत्व देते हैं, यह सीधे परमेश्वर से संबन्ध करते है न कि एक दूसरे से, हम ने कुछ खो दिया है। पवित्रशास्त्र (बाइबल) हम से कहती है, एक दूसरे की गलतीयों को एक दूसरे के सामने कबुल करें। मेरे एक मित्र है जिसका नाम डा.लोरेन लुईस है। एक बुजुर्ग सज्जन हैं और हमने बहुत समय एक साथ बिताया। वे एक ग्रीक के विद्वान हैं और ग्रीक भा ा में ही पढ़ते हैं। जब कुछ वचनों में से मैं कुछ नहीं देख पाता हूँ, तो मैं उनके पास जाऊँगा और पूछूँगा, ग्रीक भा ा में यह क्या कहता है इसके बारे में, मैं उनसे ग्रीक भा ा के काल के बारे में भी पूछता हूँ, वह मेरे बाइबल के अभ्यास में मेरी बहुत मदद करते हैं। मैं घंटों – घंटे इस व्यक्ति के साथ बिताए। बहुत बुद्धिमान मनु य हैं वह एक ईश्वरीय मनु य हैं। उनका वैवाहिक जीवन काफी सफल है। उनके पास एक सुखी व सफल परिवार है। एक ऐसा समय होता है जब हमें अपनी गलतीयों को कबूल करना होता है, मैं ऐसा नहीं कहता कि आपको किसी के सामने अपने पापों को करना है, जैसे, कि वह उन्हें क्षमा कर सकते हैं, क्योंकि हमें सीधे परमेश्वर के सामने जाना है। लेकिन हमें अपने जीवन का हिसाब खूद रखना है।

ईश्वरीय सामर्थ संबन्धों के लिये हमें चाहिये, जिससे कोई हमें ईश्वर को खोजने में हमें उत्साहित करे। इब्रानियों की पुस्तक हमें बताती है कि एक दूसरे को प्रति दिन उत्साहित करो। एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोडें, जिससे एक दूसरे को प्रोत्साहित करें। और जैसे कोई हममें से पापों के कारण धोखे में, अपना हृदय को कठोर करता है तो उसको सतर्क करने के लिए भी जमा हों। इसलिए यहां मैं ईश्वरीय संबन्ध ाों के महत्व को बताने के लिए बोल रहा हूँ। नकारात्मकता से, बाइबल हमें कई बार बिना ईश्वरीय संबन्धों के बारे में चेतावनी देती है, और कैसे, बिना ईश्वरीय संबन्धों के हमारे मन और विचारों पर प्रभाव पड़ सकता है। इसके पहले कि हम इसे जानें, हम उन चीजों में आगे बढ़ जाते हैं, जिनमें हमें नहीं जाना चाहिये, यह इसलिए होता है क्योंकि हमने ईश्वरीय सलाह से अपने को न तो बचाया और न उससे घिरे रहे। (नीतिवचन 11:14; 13:20 और 1 कुरिन्थियों 15:33)। पवित्र बाइबल कहती है (1 कुरिन्थियों 6:14) *''अविश्वासीयों के साथ असमान जूए में न जुतें।''*

जैसे आप एक मसीही जीवन में चलते हैं, अपने आप को ईश्वरीय संबन्धों से घेरे रखिये जिससे आप उत्साहित हों, उन सब से अपने आप को दूर रखिये, जो आप पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। यह बहुत जरूरी है कि हमारे जीवन में ईश्वरीय विश्वासी

हैं जिनके साथ हम अपने को और मजबूत बना सकें (नीतिवचन 27:17) और इसका हिसाब दें। परमेश्वर आप को आशी ा दे, जैसे आप अपने को इन बातों को सोचने और मनन करने में जारी रखते हैं।

शिष्यता के प्रश्न

1. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 15:33 यह वचन हमें संबन्धों के बारे में क्या सिखाते हैं?

2. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 12:12 यह वचन हमें हमारे मसीही जीवन के लिए क्या दिखाते हैं?

3. पढ़ें इब्रानियों 10:24 हम इब्रानियों 10:24 में ईश्वरीय संबन्धों के बारे में क्या सीख सकते हैं?

4. पढ़ें इब्रानियों 10:25 हम संबन्धों के बारे में इन वचनों से क्या सीख सकते हैं?

5. पढ़ें (नीतिवचन 5:22–23) हमें अपने मन की क्यों, बिना ईश्वरीय संबन्धों से रक्षा करनी चाहिए?

6. पढ़ें 2 तीमोथी 2:22 हमें किसके साथ धार्मिकता व विश्वास, प्रेम व ाान्ति में चलना हैं?

7. पढ़ें इब्रानियों 13:7 हमें क्या याद रखना हैं? और इसमें अपना जीवन बनाना हैं?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

1 कुरिन्थियों 15:33 *– ''धोखा न खाना, बुरी संगीत अच्छे चरित्र को बिगाड देती है।''*

1 कुरिन्थियों 12:12 – ''क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस देह के सब अंग बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह है उसी प्रकार मसीह भी है।''

इब्रानियों 10:24 *– ''और प्रेम और भलें कामों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करो।''*

इब्रानियों 10:25 *– ''और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोडे, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो।''*

नीतिवचन 5:22–23 *– ''(22) दु ट को उसके अपने ही दु कर्म फसाएंगे, (23) शिक्षा के अभाव में वह मर जायेगा और अपनी ही मूर्खता की अधिकाई के कारण वह भटक जायेगा।''*

2 तीमुथियुस 2:22 *– ''जवानी की अभिला ाओं से भाग और जो ुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते है उनके साथ धर्म और विश्वास और प्रेम और मेल मिलाप का पीछा कर''*

इब्रानियों 13:7 *– ''जो तुम्हारे अगवे थे और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है उन्हें याद रखें, और ध्यान से उनके चाल – चलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो।''*

उत्तर निर्देशिका

1. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 15:33 यह वचन हमें संबन्धों के बारे में क्या सीखाते हैं?
   बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।''

2. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 12:12 यह वचन हमें मसीही जीवन के बारे में क्या दिखाते हैं?
   जिस प्रकार शारीरिक देह, हम सभी को मसीह के देह में एक दूसरे की आवश्यकता है।

3. पढ़ें इब्रानियों 10:24 में हम इश्वरीय संबन्धों के बारे में क्या सीखते हैं?

प्रेम और भले कामों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करो।

4. पढ़ें इब्रानियों 10:25 हम इन वचनों में संबन्ध के बारे में क्या सीखते हैं?

हमें आवश्यकता है, एक साथ मिलने की, जमा होने की और एक दूसरे को उत्साहित करने की।

5. पढ़ें नीतिवचन 5:22–23 हमें क्यों, अपने दिलों बिना ईश्वरीय संबन्धों से रक्षा करनी चाहिए?

(वचन २३) अपनी मूर्खता की अधिकाई के कारण वह भटक जायेगा।

6. पढ़ें 2 तीमुथियुस 2:22 हमें धर्म, प्रेम, ाान्ति के लिए किस का पीछा/साथ करना है?

जो परमेश्वर को पवित्र मन से पुकारते हैं।

7. पढ़ें इब्रानियों 13:7 हमें किस को याद करना चाहिये व उनके पद चिन्हों पर चलना चाहिए?

आपके अगुवे, जिन्होंने प्रभु का वचन आपको सुनाया।

तृतीय स्तर

अध्याय ५

सताव

लेखक – डोन क्रो

आज हम सताव के वि ाय में बात करने जा रहें हैं और मत्ती की पुस्तक 10:16–23, वह अपने चेलों को सताव के लिए तैयार करना चाहता था। वह उनसे यह चाहता था कि वह जानें कि विरोधी आनेवाला है। वह सब जो आत्मिक जीवन जीते हैं, वह मसीह जीवन में यातनायें उठायेंगे (2 तीमुथियुस 3:12) यहां ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे आप डाँट सकते हैं। लेकिन सताव धार्मिकता के लिये सहना एक भाग है। पवित्र बाइबल कहती है कि जो मसीह में आत्मिक जीवन जीते हैं, वह जरूर सताये जायेंगे। यीशु अपने शि यों को तैयार कर रहे हैं, इन वचनों को कहकर, *''देखो, मैं तुम्हें भेड़ों की नाई भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ''* मत्ती की पुस्तक 10:16 वचन यहां ाब्द 'देखो' कहता है कि ''हे लोगों मेरी सुनों। मैं चाहता हूँ कि तुम यह आओ, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच, भेड़ों की तरह भेज रहा हूँ।'' मैं जानता हूँ, कि भेड़ एक बदला न लेनेवाला जानवर है, और निर्भर रहने वाला है। भेड़ के पास तेज दाँत नहीं हैं, और न ही उसके पास साँप की तरह वि ा है। उसके पास अपने को बचाने को कुछ नहीं है। उसका बचाव केवल उसका चरवाहा है।

चारवाहे का कर्तव्य होता है कि वह भेड़ियों को भेड़ों के झूंड़ से दूर रखें, लेकिन, यीशु इसके बिलकुल उल्ट कहते हैं, ''भेड़ियों के बीच में तुम्हें भेड़ों की तरह भेजता हूँ।'' क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? कारण है, वह कह रहा है कि वह उन्हें विरोध के लिए तैयार कर रहा है। इफिसियों की पुस्तक 6:12 यह कहता है कि, *''क्योंकि हमारा यह युद्ध लोहू और मांस से नहीं, परंतु अधिकारियों से और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से है और दु टता की उन आत्मिक सेनाओं से है जो ऊपर आकाश में हैं।''* वहाँ पर विरोध होगा ही। मसीही जीवन का एक भाग सताव है, यीशु आप को चाहते हैं कि आप इसे जानें। वह आप को ऐसा कहकर तैयार करना चाहते हैं, कि *''सांप की तरह चलाक बनों।'* (मत्ती 10:16)। ''बुद्धिमान'', ाब्द सब परिस्थिती में काम आता है, आप अपनी समस्यों को नहीं बुलाते पर आपके पास बुद्धि होनी चाहिये कि आप कैसे उनका सामना करेंगे। कबुतर की तरह भोले और साँप की तरह चलाक रहो।

वह फिर कहता है, *''मनु यों से सावधान''* (मत्ती 10:17)। त्रु मनु यों का इस्तेमाल करता है। इफिसियों 2:2 – कहता है *''जिससे तुम पहिले इस संसार की रीति पर और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है।''* विरोध के लिए ैतान मनु यों का इस्तेमाल करता है। यीशु मसीह के उद्देश्य के विरोध के लिए वह परमेश्वर के वचन का विरोध करता है। *''परन्तु लोगों से सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें महासभाओं में सौपेंगे और अपनी पंचायत में तुम्हें कोड़े मारेंगे।''* (मत्ती 10:17)। पौलुस ने कहा, *''पांच बार मुझे कोड़े लगे, यीशु के लिए, पांच बार मुझे पीटा गया, 39 कोड़ों के निशानों के साथ–यह सब यीशु के लिए हुआ। और उसके सुसमाचार के लिए।''* (2 कुरिन्थियों 11:23–24)। यीशु ने कहा, कभी तुम्हें यीशु मसीह के विरोध की वजह से गवर्नरों और यहां तक की सरकारों के समक्ष ले जाया जाये। यीशु ने कहा, ''तुम मेरे लिए हाकिमी और राजाओं के सामने और अन्य जातियों पर गवाह होने के लिए पहुँचाए जाओगे।

मैं चैरिस बाइबल कालेज में सीखाता हूँ। मैं सुसमाचार बाँटने की शिक्षा पर सीखा रहा था और मैं छात्रों को दिखा रहा था कि सुसमाचार और अपनी गवाही के द्वारा कैसे खोए हुए लोगों तक पहुँच सकते हैं। एक मैंने खुद किया और इसे भेज दिया पचास से सौ लोगों के पास। कुछ दिनों के बाद मुझे एक फोन आया एक स्त्री के पास से जिसका नाम मेरी एनी था। उसने कहा, ''आप इससे भाग नहीं सकते, तुम मुझे यीशु के बारे में नहीं बता सकते, तुम इससे भाग नहीं सकते, लेकिन तुम्हें मेरा नाम कहाँ से मिला? मैंने कहा, ''अच्छा, मुझे फोन की किताब से मिला'', तब उसने कहा तुम झूठे हो। ''मेरा नाम व पता फोन की किताब में नहीं है।'' मैंने कहा, मुझे वहीं से मिला, उसने कहा, ''कल पुलिस तुम से सम्पर्क करेगी।'' तब मैंने सोचा *''क्या बाइबल एकदम सच है?* और पुलिस ने दूसरे दिन मुझ से सम्पर्क किया और खोजबीन करने में लगभग दो घन्टे बिताये।

आप देखते हैं, मैं क्या कह रहा हूँ? जब गलियों में अपराधी हैं, तो पुलिस ने अपने दो घंटे का समय व्यर्थ किया। क्यों? यीशु मसीह के लिये, सुसमाचार के लिये। क्या परमेश्वर का वचन सच्चा है? अगर आप वचन में स्थिर हों और गवाही देने को बहादूर हों और यीशु का नाम का प्रचार करने में भी बहादूर हों, और धार्मिक जीवन जीने में भी लोगों के समक्ष बहादूर हों तो अवश्य विरोध होगा। बुरी ाक्तियां है, और अच्छी ाक्तियां भी है, यीशु अपने शि यों से चाहते थे कि वे तैयार रहें।

यीशु ने मत्ती की पुस्तक में कहा (10:19) *"जब वे तुम्हें पकड़वायेंगे तो यह चिन्ता न करना कि हम किस रीति से या क्या कहेंगे, क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जायेगा।"* परमेश्वर की आत्मा के द्वारा तुम्हारे पास बुद्धि होगी। जैसे स्टीफन पुराने लोग वह नहीं समझ सके, जो उसने बोला, यीशु वचन 22–23 कहता है – *"मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे, परन्तु जो अन्त तक धीरज रखेगा, उसी का उद्धार होगा। जब वह तुम्हें एक नगर में – सताएँ तो दूसरे को भाग जाना"।* धार्मिकता के विरोध में, सताव यीशु के ध्येय के लिये सताव, यह सत्य है, यदि तुम वचन के करनेवाले हो, न केवल सुनने वाले।

मैं एक बार, एक पार्क से वापिस आया और एक वृद्ध महिला को देखा जो झूले पर बैठी थी। मैंने अपने में सोचा कि *यह हानि करनेवाली नहीं है, यह मुझे हानि नहीं कर सकती है,* मैंने उससे पूछा कि क्या मैं भी उसके साथ झूले पर बैठ सकता हूँ, और मैं बैठ गया और उससे बातचीत करने लगा। मुझे पता चला कि उसका नाम जेन है, मैंने उससे कहा, "जेन आप क्या करती हो?" उसने कहा "ओह, मैं एक वृद्ध महिला हूँ; मैं काम नहीं करती। मैं अवकाश ले चुकी हूँ।" तब उसने मुझ से पूछा "तुम क्या करते हो?" मैंने कहा, "मैं पैराचर्च मिनिस्ट्री संस्था में काम करता हूँ।" तो अचानक उसके चेहरे के भाव बदल गये। उसने कहा, "तुम मुझे परमेश्वर! के बारे में मत बताना। और यीशु ! के बारे में भी मत बताना।" मैंने कहा "ओह! जेन, तुम्हें ऐसे बात नहीं करनी चाहिए" और उसने कहा, "अगर यीशु मसीह मेरे सामने होता, तो मैं उसके मुँह! पर थूक देती।" मैंने कहा, "जेन!, तुम्हें इस तरह बातें! नहीं करनी चाहिए। ऐसा लगता है, कि तुम्हें बहुत से लोगों ने चर्च में चोट पहुँचाई है, इसलिए तुम ऐसे कहती हो, तुम्हें ऐसे बात! नहीं करनी चाहिये, मुझे अपनी परिवार के बारे में तुम्हें कुछ कहने दो।" उसने कहा, "नहीं! मैंने कहा, तुम मुझसे बात नहीं कर सकते, तुम मुझ से यीशु के बारे में ही बात करोगे और तुम्हारे परिवार में यीशु ने क्या किया, और मैं तुम्हें इस पर बात नहीं करने दूंगी। तुम नहीं बोल सकते हो।" मैंने कहा, "कृपया जेन, मुझे तुमसे यीशु के बारे में कुछ कहना है।" उसने कहा, "नहीं! मैं तुम से कह रही हूँ, चुप रहो!"

उसके पास बेल्ट में बाँधा हुआ एक छोटा कुत्ता था, उसने उसे खींचा और आगे बढ़ गई और चली गई। यह एक स्त्री थी जो काबू में नहीं थी, उसमें आज्ञा न माननेवाली आत्मा थी। वह ात्रु के द्वारा बन्धन में थी। मैंने अपने में ही सोचा, *"मुझे ऐसी आदत नहीं थी कि मैं किसी की तेज आवाज सुनूं, लोग मेरे मुँह पर आकर बोले।"* लेकिन मेरे

पास कुछ नहीं था, परन्तु मेरे पास जेन के लिए केवल प्रेम व दया थी। वह अपने आपे से बाहर थी, और मैं पूरी तरह से सधा हुआ था। मैं घर पहुंचा और कहा, ''परमेश्वर, क्या तू जानता है? सबसे बड़ा चमत्कार ये कि मैं नियंत्रण में था। जब कोई मेरे सामने आकर चिल्लाता था, तब मेरे पास कुछ नहीं था, केवल प्रेम व दया थी।''

सताव और विरोध आयेगा जब हम यीशु के नाम से बाहर जायेंगे। हमें पवित्र आत्मा साहस देगी जब हम यीशु की गवाही देने को निकलेंगे, और यही आत्मा धीरज देगी जब हमारा सब तिरस्कार करेंगे यीशु के नाम के लिये अर्थात वही आत्मा हमें ाक्ति व संतावना देगी हर परिस्थिति में।

शिष्यता के प्रश्न

1. पढ़ें 2 तीमुथियुस 3:12 जो लोग धार्मिक जीवन बिताते हैं, उन्हें क्या अनुभव होगा?

2. 'सताव' की परिभा ा आप कैसे देंगे?

3. पढ़ें मरकुस 4:16–17 दु:ख और सताव किस कारण से मिलते हैं?

4. पढ़ें प्रेरितों के काम 8:1,4 'सताव' का यरूश्लेम में क्या फल मिला?

5. पढ़ें मत्ती 5:10–12 जिनको सताव मिलता है, उन पर आशी ा होती है।

6. पढ़ें मत्ती 5:12 जब विश्वासियों को धार्मिकता के कारण, सताव मिलता है? वह भवि य में क्या आशा कर सकते हैं?

7. पढ़ें प्रेरितों के काम 9:4–5 ाऊल कौन था जो सताता था?

8. पढ़ें प्रेरितों के काम 9:1 वास्तव में ाऊल कौन था, जो सताता था?

9. पढ़ें गलतियों 6:12 जडिया गलतियों की पुस्तक में, धार्मिक नियम को मनाने के लिये नियम के अनुसार किया करते थे, उन्होंने किसे वर्जित किया या निकाला?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

2 तीमुथियुस 3:12 – *''पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं, वे सब सताएं जायेंगे''।*

मरकुस 4:16–17 – *''और वैसे ही, जो पथरीली भूमि पर बोए जाते हैं, ये वे है कि जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं। (17) ''परन्तु अपने भीतर जड़ न रखने के कारण वे थोड़े ही दिनों के लिये रहते हैं इसके बाद जब वचन के कारण उन पर क्लेश या उपद्रव होता है, तो वे तुरन्त ठोकर खाते हैं।''*

प्रेरितों के काम 8:1,4 – *''उसी दिन येरूशलेम की कलिसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड सब के सब यहुदिया और समारिया देशो में तितर – बितर हो गये। (4) ''जो तितर–बितर हुये थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।''*

मत्ती 5:10–12 – *''धन्य है वे, जो धर्म के कारण, सताये जाते है, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।'' (11) ''धन्य हो तुम जब मनु य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें और सताए और झूठ बोल बोल कर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। (12) ''आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है, इसलिये कि उन्होंने उन भवि यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे, इसी रीती से सताया था।''*

मत्ती 5:12 – *''आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिए कि उन्होंने उन भवि यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे, इसी रीति से सताया था।''*

प्रेरितों के काम 9:4–5 – *(4) ''और भूमि पर गिर पढ़ा और यह ाब्द सुना कि हे ाऊल, हे ाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?'' (5) उसने पूछा : हे प्रभु तू कौन है? उसने कहा, मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है।*

प्रेरितों के काम 9:1 – *''और ाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था, महायाजक के पास गया''।*

गलतियों 6:12 – *''जितने लोग ारीरिक दिखावा चाहते हैं, वे तुम्हारे खतना करवाने के लिए दबाव देते है, केवल इसलिए कि वे मसीह के क्रुस के कारण सताए न जायें''।*

उत्तर निर्देशिका

1. पढ़ें 2 तीमुथियुस 3:12 जो मसीह जीवन जीते हैं, उनको क्या अनुभव होगा?

   सताव

2. कैसे आप सताव की परिभा ा देंगे?

   विश्वास के लिये, सताया जाना।

3. पढ़ें मरकुस 4:16–17 किस कारण से सताव और दुख आते हैं?

   वचन के कारण, या वचन का प्रचार न करना।

4. पढ़ें प्रेरितों के काम 8:1, 4, यरूशलेम में सताव के लिये, क्या परिणाम हुआ?

   जगह-जगह पर जाकर वचन को फैलाना।

5. पढ़ें मत्ती 5:10–12 जो धर्म के लिए सताये जाते हैं, उन्हें आशी ा मिलती है।

   धार्मिकता के लिये।

6. पढ़ें मत्ती 5:12 जब विश्वासियों को धार्मिकता के लिये सताव मिलता था, तब वह क्या आशा कर सकते हैं, भवि य में?

   स्वर्ग में बड़ा फल।

7. पढ़ें प्रेरितों के काम 9:4–5 ाऊल किसको सता रहा था?

यीशु को

8. पढ़ें प्रेरितों के काम 9:1 वास्तव में, ाऊल कौन था? जो सता रहा था?

यीशु का चेला।

9. पढ़ें गलतियों 6:12 जुडिया गलतियों की पुस्तक में धार्मिक नियम को जोड़ना चाहते थे, ऐसा करने में उन्होंने किसको निकाल दिया?

क्रुस के सताव को, दूसरे शब्दों में उन्होंने सुसमाचार के कारण सताव, उद्धार जो दया से विश्वास से, केवल यीशु में ही मिलता है।

तृतीय स्तर
अध्याय ६
राजा और उसका राज्य
लेखक – डोन क्रो

पुराने नियम, में हम देखते हैं कि इस्राएल जो सब रा ट्रों से अलग था, वह यह है कि वह परमेश्वर की सरकार के द्वारा चलाया जाता था। दूसरे ाब्दों में, ये सीधा परमेश्वर के द्व ारा उसके अधिकार से चलाया जाता था। (यशायाह 43:15) बाद में, इस्राएल के इतिहास में ऐसा है, कि वह पुरे संसार के सब रा ट्रों की तरह बनना चाहते थे। ताकि उनका भी एक राजा हो, जो उनके रा ट्र को चलाये (1 शमूएल 8:5–19)। इसलिये परमेश्वर ने उनकी विनंती सुनी और उनके लिये शाऊल को चुन लिया, एक राजा के रूप में, (1 शमूएल 10:24–25)। बाद में, ाऊल को आज्ञा न मानने की वजह से, परमेश्वर ने दाऊद को, जो परमेश्वर के मन के अनुसार था, राजा चुना। (प्रेरितों के काम 13:21–22 और 1 राजा 15:3)।

राजा एक दिखाई देनेवाला अदृश्य परमेश्वर की ओर से अधिकारी नियुक्त किया गया था (व्यवस्था विवरण 17:14–20)। जब राजा परमेश्वर के पीछे चलने लगा, तब वह और उसके राज्य की उन्नत्ति होगी। जब राजा परमेश्वर के साथ चलने में सफल नहीं हुआ, तब वह और उसका राज्य बन्धवाई में जायेंगे व न ट हो जायेंगे। (1 शमूएल 15:22–23)।

जब प्रभु राजा चुनता है, तब वह एक भवि यद्वक्ता को भेजता है, कि वह उसे तेल से अभि ोक करे। तब पवित्रआत्मा का अभि ोक तथा सामर्थ उस व्यक्ति के ऊपर दर्शाता है, उसे अधिकार देता है, राज्य करने के लिये। इस समय, परमेश्वर का पवित्र आत्मा उस व्यक्ति के ऊपर आता है और उसका मन बदलता है, धार्मिकता से राज्य करने के लिये। क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था (1 शमूएल 10:1;6–7 और 9)। यह राज्य करने का अभि ोक मसीह के द्वारा आता है, ''अभि ोक'' ाब्द का इब्रानी मलतब है, *मशीयाक* (मसीहा) इसका अनुवाद *ख्रीस्टोस,* (ख्रीस्त) यहूदी भा ा में है। पुराने नियम में भवि यद्वक्ताओं ने भवि यवाणी की थी, कि अभि ाक्त मसीहा आनेवाला है, और आकाश

पृथ्वी का परमेश्वर एक राज्य स्थापित करेगा जिसका नाश कभी नहीं होगा, (दानिय्येल 2:44, 7:14 व 27)। अगर आप वचन में यह देखते हैं, कि यीशु ने यहूदियों से ऐसा कभी नहीं कहा कि उसका क्या मतलब है, जब वह राज्य के वि ाय में बोल रहा था। यह पुराने नियम के अनुसार था कि जो वह देख रहे थे। (यशायाह 9:6–6; 11:1–6; दानिय्येल 2:44; 7:13–14, 18 व 27)।

राज्य की प्राथमिक बातों को जाने बिना, यीशु का संदेश समझना असम्भव है। राज्य यीशु का एक संदेश है, जो उसने केवल अपने शि यों को प्रचार करने के लिये सुनाया। (मरकुस 1:14–15; लूक 9:1–2; प्रेरितों के काम 28:23–31; लूका 16:16 व मत्ती 25:14)। और इस संदेश को ''उद्धार'' के रूप में या ''अनन्त जीवन'' के रूप में प्रचार किया गया (इब्रानियों 2:3; मत्ती 16:16; 19:23; प्रेरितों के काम 28:23–24, 28 व 30–31)। इन सब के साथ ''परमेश्वर का राज्य'' एक ऐसे लोगों का समूह है जो परमेश्वर के द्वारा राज्य करते हैं। या उसके अधिकार से राज्य को चलाते हैं। परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिये, कुछ ार्तों का पूरा करना जरूरी है। दिल का बदलना जरूरी है, इस मन के बदलाव को पवित्र बाइबल कहती है, 'पछताना'। यह परमेश्वर के लिये दिल का बदलना ही था, जो ैतान की तरफ से मुंह को मोड़ना था, पाप और इसके रास्ते से मुड़ कर यीशु मसीह के रास्तों पर चलना। जैसे ही कोई इन सबसे प्रभु की ओर मुड़ता है, यीशु उसे अपने लहू के द्वारा पाप की क्षमा, और अनन्त जीवन का दान प्रदान करता है (रोमियों 6:23)। इस ''सुसमाचार'' को कहा गया है, ''अनुग्रह का समाचार'' अथवा ''परमेश्वर के राज्य का समाचार'' (प्रेरितों के काम 20:24–25)। परमेश्वर के राज्य को दर्शाया गया है, जो अनुग्रह से मिलता है (मत्ती 20:1–26) और यह आयेगा शांति और गुप्त रीति से प्रभु की सेवकाई से (मत्ती 13:33)। एक दिन भवि य में यह एक महिमायुक्त होकर दिखाया जायेगा (मत्ती 13:36–43)।

शिष्यता के प्रश्न

1. पढ़ें दनिय्येल 2:44 पुराने नियम के भवि यद्वक्ता ने इस तरह भवि यवाणी की है, कि भवि य में, मसीहा (एक अभि ोक किया हुआ) आयेगा और स्वर्ग का परमेश्वर अपना एक राज्य स्थापित करेगा।

(अ) जिसका अन्त 1,000 व ी तक होगा,

(ब) उसका कभी नाश नहीं होगा,

(स) उसका अन्त न होगा,

2. पढ़ें मत्ती 4:17,23 यीशु का क्या संदेश था?

3. पढ़ें मरकुस 1:14–15 यीशु ने क्या समाचार का प्रचार किया?

4. पढ़ें लूका 4:43 परमेश्वर ने जिस कारण से यीशु को भेजा था, वह था।

5. पढ़ें यूहन्ना 4:25 पवित्रशास्त्र में यीशु ने यहूदी लोगों के सामने कभी यह वर्णन नहीं किया जो उनका तात्पर्य था, जब वह राज्य के वि ाय में बोल रहे थे। यह एक पुराने नियम के अनुसार है कि वे लोग

(अ) थोडा इसके बारे में जानते हैं।

(ब) विचार कभी नहीं आया।

(स) वह पहले से ही उसे खोजते हैं।

6. पढ़ें लूका 9:1–2 वह तीन ऐसी कौन सी चीजें है, जिन्हें 12 शि यों ने किया?

7. पढ़ें लूका 10:1–2, 8–9 यीशु ने उन सत्तर को प्रचार करने के लिये क्या संदेश दिया?

8. पढ़ें लूका 23:2 यहूदियों की अपनी परिभा ा के अनुसार, मसीह ाब्द का मतलब, वह जो एक है

9. पढ़ें प्रेरितों के काम 17:7 रोमन नियम के विरूद्ध भी यहूदियों ने कहा कि, पौलुस ने सिखाया कि और एक दूसरा था ________________________________

एक ____________________

10. पढ़ें प्रेरितों के काम 19:8–10, इफिसिया में पौलुस ने बहादूरी से बोला, जब कि वह बहस करते व अपने धार्मिक नियम दूसरों को बताते थे?

11. पढ़ें प्रेरितों के काम 28:23–41. वचन 31 में, वह क्या था? जिसका पौलुस प्रचार कर रहा था?

12. पढ़ें मत्ती 24:14 क्या संदेश है, जो कि सारे संसार में प्रचार किया गया?

13. पढ़ें प्रेरितों के काम 20:24–25 कभी राज्य के संदेश को कहा गया कि संदेश?

14. पढ़ें लूका 16:16 राज्य की प्रथमिक जानकारी के बिना, यीशु के संदेश को समझना असम्भव है। राज्य एक संदेश था जो यीशु ने प्रचार किया और उसने केवल अपने शि य को सिखाया। इस तरह

(अ) प्रचार करो

(ब) आदर करो

(स) मनन करो

15. पढ़ें मत्ती 6:10 असलीयत में, परमेश्वर का राज्य एक परमेश्वर के अधिकार में है, इन इन वचनों में कैसे व्यक्त किया हैं?

16. पढ़ें कुलुस्सियों 1:13–14 व रोमियों 14:9 अभियक्त करने से, ''परमेश्वर का राज्य'' कुछ लोगों के समुह का विचार है जो इस तरह

(अ) अपने दिलों में यीशु को बुलाओं

(ब) परमेश्वर के अधिकार को स्वीकारो (शैतान को तिरस्कार करो) और यीशु की क्षमा प्राप्त करो।

(स) किसी कलीसिया में सम्मिलित हो जाओ।

17. पढ़ें मत्ती 4:17 परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिये, दिल का बदलना चाहिये। यह दिल का बदलना है, जो बाइबल कहती है

(अ) प्रायश्चित

(ब) नियम का काम

(स) पछतावा

18. पढ़ें प्रेरितों के काम 26:18 क्या आप फिरे हो ____________ ज्योति में, और ____________ ौतान से ____________ और पापों की क्षमा पायें।

19. पढ़ें यहेजकेल 36:26–27 व प्रेरितों के काम 11:15–18 क्या आपको, एक नया दिल, आत्मा दिया गया है, जिससे आप परमेश्वर के रास्तें पर चलें?

20. पढ़ें लूका 18:13–14 क्या अपने पापों की क्षमा के लिये, आपने परमेश्वर को पुकारा?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

दानिय्येल 2:44 – *''और उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा। और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जायेगा वरन् वह उन सब राज्यों को चूर चूर करेगा और उनका अन्त कर डालेगा, वह सदा स्थिर रहेगा।''*

मत्ती 4:17, 23 – *''(17) उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया अपने पापों से मन फिराओं क्योकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।'' (23) और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ, उनके सभाओं में उपदेश करते और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करते रहा।''*

मरकुस 1:14–15 – *''(14) यूहन्ना बपतिस्मादाता के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील प्रदेश में परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया।''(15) और कहा, समय पूरा हुआ है और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओं और सुसमाचार पर विश्वास करो।''*

लूका 4:43 – *''परन्तु यीशु ने उनसे कहा, मुझे और और दूसरे नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है, क्योंकि मैं इसलिये भेजा गया हूँ।''*

यूहन्ना 4:25 – *''स्त्री ने उस से कहा ''मैं जानती हूँ कि मसीह जो'' खीस्त कहलाता है, आनेवाला है, जब वह आयेगा, तब हमें सब बातें बता देगा।''*

लूका 9:1–2 – *''(1) सब्त के दिन यीशु खेतों में हो कर जा रहे थे और उनके बाले तोड – तोड कर और उनको हाथों से मल मलकर खाते जा रहे थे।''(2) तब कुछ फरीसियों ने चेलों से पूछा तुम यह काम क्यों कर रहे हो जो सब्त के दिन करना उचित नहीं।''*

लूका 10:1–2, 8–9 – *''(1) इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर और शि यों को नियुक्त किया। जिस जिस नगर और स्थान यीशु स्वयं जाने वाले थे वहाँ दो – दो करके अपने आगे भेजा। (2) यीशु ने उनसे कहा, ''पक्के खेत बहुत है परन्तु मजदूर थोडे है, इसलिए खेत के स्वामी से प्रार्थना करो कि वह अपने खेत काटने के लिये मजदूरों को भेजे।'' (8) जब तुम किसी नगर में प्रवेश करो और वहाँ के लोग तुम्हारा स्वागत करें, तो जो कुछ तुम्हारे सामने परोसा जाये वही खाओ। (9) उस जगह के बीमारों को स्वास्थ करो और उनसे कहो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।''*

लूका 23:2 – *''वहाँ वह यह कहकर यीशु पर दो । लगाने लगे, ''हमने इसे लोगों को बहकाते हुए पाया है। यह कैसर को कर देने को मना करता है और अपने आपको मसीह कहता है।''*

प्रेरितों के काम 17:7 – *''यासोन ने उन्हें अपने घर में ठहराया है। ये सब कहते है कि यीशु राजा है। ये कैसर की राज्य आज्ञाओं का विरोध करते हैं।''*

प्रेरितों के काम 19:8–10 – *''(8) पौलुस यहूदियों के सभागृह में जाकर तीन महिनें तक साहस के साथ बोलते रहे, वह परमेश्वर के राज्य के वि ाय में वाद विवाद करते और लोगों को समझाते रहे।'' (9) परन्तु कुछ लोगों ने कठोर, होकर उनकी बात नहीं मानी। वे जनता के सामने इस मार्ग को बुरा कहने लगे। पौलुस ने उनको छोड़ दिया। वे चेलों को अपने साथ ले गए। वे प्रतिदिन तुरन्नुस के विद्यापीठ में वाद विवाद किया करते थे। (10) दो व र्ा तक यही होता रहा। यहाँ तक कि आसिया के रहनेवाले यहूदी, यूनानी, आदि सब ने प्रभु का वचन सुन लिया।''*

प्रेरितों के काम 28:23–31 – *''(23) तब उन्होंने पौलुस के लिए एक दिन ठहराया। उस दिन बहुत लोग पौलुस के घर में इकट्ठे हुए। पौलुस ने परमेश्वर के राज्य की गवाही दी। यह मूसा की की व्यवस्था और नबियों की पुस्तकों से यीशु के वि ाय में समझा – समझा कर सवेरे से ाम तक वर्णन करते रहे। (24) तब कुछ लोगों ने उन बातों को मान*

लिया, और कुछ ने विश्वास नहीं किया। (25) जब वे आपस में एक मत न हुए, तब पौलुस उन से बोले, पवित्र आत्मा ने नबी यशायाह के द्वारा तुम्हारे पूर्वजों से सच ही कहा है। (26) जाकर इन लोगों से कह कि तुम सुनते तो रहोगे परन्तु नहीं समझोगे, तुम देखते तो रहोगे, परन्तु नहीं बूझोगे। (27) इन लोगों का मन मोटा और इनके कान भारी हो गए हैं, इन्होंने अपनी आँखे बन्द कर ली है। ऐसा न हो कि वे अपनी आँखे से देखें और कानों से सुने और मन समझे और मेरी ओर लौट आए और मैं उन्हें स्वस्थ कर दूँ। (28) अब तुम जान लो कि परमेश्वर के इस उद्धार की कथा अन्य जातियों के पास भेजी गई है, और वे उसे सुनेंगे। (29) तब पौलुस ने यह कहा यहूदी आपस में बहुत वाद विवाद करने लगे और वहां से चले गये। (30) पौलुस पूरे दो व र्ा तक अपने किराये के मकान में रहे। लोग उनके पास आते थे। वह उन सब से मिलते थे। (31) वह बिना रोक टोक और बहुत निड़र होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाते रहे।''

मत्ती 24:14 – *''परमेश्वर के राज्य का यह सुसमाचार सम्पूर्ण पृथ्वी में प्रचार किया जायेगा कि सब जातियों पर गवाही हो। और तब अंत आ जायेगा।''*

प्रेरितों के काम 20:24–25 – *''(24) परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि मैं उसको प्रिय जानू। मैं तो अपनी दौड़ को और उस सेवा कार्य को पूरा करना चाहता हूँ, जो परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गवाही देने के लिए प्रभु से मुझे प्राप्त हुआ है। (25) देखो, मैं जानता हूँ कि तुम सब मेरा मुँह कभी नहीं देखोगे। मैंने तुम्हारे मध्य परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया है।''*

लूका 16:16 – *''यीशु ने कहा, धर्म व्यवस्था और नबी यूहन्ना तक रहे। उस समय से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है, हर कोई उसमें प्रबलता से प्रवेश कर रहा है।''*

मत्ती 6:10 – *''तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।''*

कुलुस्सियों 1:13–14 – *''(13) उसीने हमें अंधकार के वश से छुडाकर, अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। (14) जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।''*

रोमियों 14:9 – *''मसीह इसलिए मरा, और जी भी उठा कि वह मरे हुओं और जीवितों, दोनों का प्रभु हो।''*

मत्ती 4:17 – *''उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना, आरम्भ किया, ''अपने पापों से मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।''*

प्रेरितों के काम 26:18 – *''कि तू उनकी आँखें खोले और वे अंधकार से परमेश्वर की ओर लौटें और वे पापों की क्षमा तथा उन लोगों के जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किये गये हैं, मीरास पाएं।''*

यहेजकेल 36:26–27 – *''(26) मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर, तुमको माँस का हृदय दूँगा। (27) और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे, और मेरे नियमों को मान कर उनके अनुसार करोगे।''*

प्रेरितों के काम 11:15–18 – *''(15) जब मैं उनसे बातें करने लगा तब पवित्र आत्मा उन पर इस रीति से उतरा, जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था। (16) तब मुझे प्रभु का यह वचन स्मरण आया जो उसने कहा था : यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया परन्तु तुम पवित्रआत्मा से बपतिस्मा पाओगे। (17) जब कि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था तो मैं कौन हूँ, जो परमेश्वर को रोक सकता''? (18) यह सुनकर वे चुप हो गए और परमेश्वर की स्तुति करके कहने लगे, ''परमेश्वर ने अन्य जातियों को भी, जीवन के लिए मन फिराव का दान दिया है।''*

लूका 18:13–14 – *''(13) परन्तु महसूल लेनेवाला दूर खड़ा रहा। उसने स्वर्ग की ओर आँखे उठाना भी न चाहा। वरन्, उसने अपनी छाती पीठ पीठ कर यों, कहा ''हे, परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर''। (14) यीशु ने कहा, मैं तुम से कहता हूँ कि वह दूसरा नहीं परन्तु यही मनु य परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया। क्योंकि जो कोई, अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जायेगा और जो मनु य अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जायेगा।''*

उत्तर निर्देशिका

1. पढ़ें दानिय्येल 2:44 पुराने नियम में भवि यद्वक्ता ने भवि यवाणी की है कि भवि य में मसीहा (या अभि ाक्त) आयेगा, और स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य स्थापित करेगा

ब,जिसका कभी नाश नहीं होगा।

2. पढ़ें मत्ती 4:17–23 यीशु का क्या संदेश था?

पछताओं क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।

3. पढ़ें मरकुस 1:14–15 यीशु ने स्वर्ग के **राज्य का प्रचार किया।**

4. पढ़ें लूका 4:43 यीशु को परमेश्वर की ओर से भेजने का कारण था कि __________

स्वर्ग के राज्य का प्रचार करें।

5. पढ़ें युहन्ना 4:25 पवित्रशास्त्र में यीशु ने यहूदी लोगों से कभी यह वर्णन नहीं किया कि उनका क्या मतलब हैः जब वह राज्य के वि ाय पर बोल रहे थे। यह पुराने नियम का ही मुद्दा थाः

(स) जिसे वह पहले से ही देख रहे थे।

6. पढ़ें लूका 9:1–2 कौन सी तीन चीजों को बारह शि यों ने किया?

दुष्ट आत्माओं को निकाला, बीमारीयों को चंगा किया। स्वर्ग के राज्य का प्रचार किया।

7. पढ़ें लूका 9:10; 1–2, 8–9 यीशु ने उन सत्तर लोगों को क्या समाचार प्रचार करने को कहा?

स्वर्ग का राज्य।

8. पढ़ें लूका 23:2 यहूदियों के अनुसार तथा उनकी अपनी परिभा ा के अनुसार 'ख्रीस्त' ाब्द का मतलब है।

राजा।

9. पढ़ें प्रेरितों के काम 17:7 रोमन नियम के विरोध में यहुदीयों ने कहा, कि पौलुस ने सिखाया है, कि एक दूसरा

राजा है यीशु।

10. पढ़ें प्रेरितों के काम 19:8–10 पौलुस इफिसिया में, ____________________, विश्वास और साहस व बहादूरी के साथ लोगों से बोले।

स्वर्ग के राज्य के विषय में

11. पढ़ें प्रेरितों के काम 28:23–31 वह क्या था? जिसके वि ाय में पौलुस प्रचार कर रहा था?

स्वर्ग का राज्य और यीशु के विषय में, लोगों को सीखा रहे थे।

12. पढ़ें मत्ती 24:14 वह क्या संदेश है, जो पूरे संसार में प्रचार किया गया?

राज्य का सुसमाचार

13. पढ़ें प्रेरितों के काम 20:24–25 कभी कभी राज्य का समाचार, इस तरह बताया जाता है, कि _______________

परमेश्वर का अनुग्रह।

14. पढ़ें लूका 16:16 यीशु मसीह के संदश को समझना असम्भव है, जब तक राज्य को ाुरू से जानें, राज्य का सुसमाचार जो यीशु ने सुनाया और वह केवल अपने शि य को बताया किः

(अ) प्रचार करें।

15. पढ़ें मत्ती 6:10 सामान्यतः स्वर्ग का राज्य, परमेश्वर का ही राज्य है। इसको इन वचन में कैसे व्यक्त किया है?

परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर भी हो, जैसा स्वर्ग में है।

16. पढ़ें कुलुस्सियों 1:13–15 व रोमियों 14:9 एक ाब्द में हम कह सकते हैं कि ''परमेश्वर का राज्य'' कुछ लोगों की सलाह के अनुसार होगा किः

(ब) परमेश्वर को स्वीकार करें, शैतान का तिरस्कार करें और प्रभु की क्षमा प्राप्त करें।

17. पढ़ेंमत्ती4:17प्रभुकेराज्यमेंप्रवेशकेलियेमनबदलावचाहिये।औरमनकेबदलावकोपवित्र ाास्त्र बाइबल कहती है,

स. 'पछताना'।

18. पढ़ें प्रेरितों के काम 26:18 क्या आप **अन्धकार** से **ज्योति** में आए हैं, और ौतान की **शक्ति** से **परमेश्वर** से प्राप्त करें पापों की क्षमा।

19. पढ़ें यहेजकेल 36:26–27 व प्रेरितों का काम 11:15–18 क्या आपको नया आत्मा व नया मन दिया गया है? जिससे आप प्रभु के रास्तों पर चल सकें?

20. पढ़ें लूका 18:13–14 क्या आपने अपने पापों की क्षमा के लिये परमेश्वर को पुकारा?

तृतीय स्तर

अध्याय ७

बचाने वाले विश्वास का उद्देश्य

लेखक - डोन क्रो

मान लीजिये कि एक मनु य अपने विवाह के दिन याजक के सामने खड़ा है, और याजक अचानक इन ाब्दों को कहने लगाःर ''क्या आप इस स्त्री को अपने खानसामा के रूप में लेते हो, या आपका घर साफ करने के लिये, और आपके बर्तन धोने के लिए? क्या आप इससे अपना फर्श या फर्नीचर साफ करने लिये लेते हो, जब तक आप जीते हो?'' और अचानक, उसकी पत्नी ने कहा, ''रूक जाओ! अगर आप मुझे केवल इसलिए चाहते हो कि मैं सिर्फ काम काज करूँ तो आप एक कामवाली को ला सकते हो। मैं चाहती हूँ कि आप मुझे प्यार करें, और मुझे स्वीकारें जो मैं हूँ। अगर आप मुझे स्वीकार करते है, जो मैं हूँ, तो मैं यह सब काम आपके लिए करूँगी, परन्तु मैं चाहती हूँ कि आप मुझे पूरी तरह से स्वीकार करें! मैं नहीं चाहती हूँ कि आप केवल मेरा लाभ उठाये लेकिन मुझे नहीं स्वीकारें।

ए.डब्लू.टोजर ने यह कहा, ''अभी, लगता है कि कुछ शिक्षकों ने यह नहीं महसुस किया कि विश्वास को बचाने के लिए और कुछ नहीं यीशु मसीह स्वयं ही है। यीशु केवल ''बचानेवाला'' या ''प्रभुत्व करनेवाला'' नहीं, परंतु यीशु स्वयं ही हमारे विश्वास का मूल है। परमेश्वर केवल उनको उद्धार का दान नहीं देते जो केवल यीशु के आश्चर्य कर्म, इत्यादि पर विश्वास करते हैं, और न ही एक विश्वास का जरिया बनाकर प्रदान करता है। और न ही हम गवाही देते हैं कि हम उस पर विश्वास करें, लेकिन केवल यीशु पर ही विश्वास करने से हम जानते हैं कि यही एक बचने का तरीका है। जो मसीह ही है। सब आश्चर्यकर्म, गवाही, इत्यादि ये सब मसीह में हमें विश्वास को मजबुत बनाने में मिल जाता है जिसका जरिया केवल मसीह ही है, जो सत्य है! लेकिन यह सब अलग नहीं है, और ना ही, सब इन से अलग हैं। इसके अलावा हम यीशु के कार्यों को स्वीकार करते हैं और किसी को स्वीकार नहीं करते हैं। केवल यीशु ही स्त्रोत है, ज्यादा या कम हमें अधिकार दिया है कि हम यीशु मसीह की दया को स्वीकारें और दूसरे को न स्वीकार करें। एक धार्मिक विश्वास के विचारों के लिये हमें आधुनिक काल में, यह अधिकार दिया

गया है। मैं इसे फिर से दोहराता हूँ, और जैसे दूसरे धर्मों की तरह, इसके गलत असर दिखते हैं, मसीह लोगों के बीच भी दिखते हैं। (धार्मिक व्यक्ति की जड़ (P.P. 84–86)।

क्या तुम्हें इसका उद्देश्य समझ आया? हम क्यों मसीह के कार्यों पर बात करते हैं, (उनके लाभ उठाने) की और मसीह को नहीं? यह ठीक उसी तरह कि एक पत्नी को एक खाना पकाने वाली के रूप में, पर उसको नहीं स्वीकार किया वह क्या है।

शिष्यता के प्रश्न

1. पढ़ें यूहन्ना 1:12 ''जितनों ने __________ ग्रहण किया उसने उन्हे परमेश्वर के बेटे व सन्तान बनने का अधिकार दिया!

 अ. उसे (प्रभु यीशु मसीह)

 ब. यीशु एक उद्धारकर्ता

 स. यीशु प्रभु

 द. यीशु प्रोहित

2. पढ़ें प्रेरितों के काम 16:31 हमें किस पर विश्वास करना है? (वह विश्वास या अविश्वास)।

3. पढ़ें लूका 6:46 'प्रभु' ाब्द में क्या दिखाता है?

4. पढ़ें मत्ती 1:21 'यीशु' ाब्द क्या दर्शाता हैं?

5. पढ़ें लूका 23:2 'खीस्त' ाब्द क्या दिखाता है?

6. पढ़ें रोमियों 1:16 इस वचन के अनुसार सुसमाचार हैं ________________ .

7. पढ़ें रोमियों 1:1–3 परमेश्वर का सुसमाचार का केन्द्र किसके लिय ________________________ उसके बेटे यीशु मसीह से सम्बन्धित सब बातों व गुणों में यीशु की ही चर्चा करता है।

8. पढ़ें यूहन्ना 6:54 जब आप कुछ खाते है तो क्या दर्शाता है?

9. पढ़ें गलतियों 3:27 जब एक व्यकित मसीह में बपतिस्मा लेता है, तो वह किसे ग्रहण करता है? ________________________________

और वह मसीह के किस भाग को पहनते हैं?____________________

10. पढ़ें प्रेरितों के काम 9:5–6 जब ाऊल में बदलाव आया, उसने यीशु से कौन से दो प्रश्न पूछे?

11. पढ़ें रोमियों 7:4 हमनें किससे विवाह किया?

उसके (यीशु) के किस भाग से हमने विवाह किया?

12. क्या आप यीशु ख्रीस्त में विवाह का अच्छा आनंद उठा रहे हैं?

क्या आप उससे बात करते हैं? प्रेम व आराधना व स्तुति करते हैं?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

यूहन्ना 1:12 – *''परन्तु जीतनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया। अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं।''*

प्रेरितों के काम 16:31 – *''उन्होंने कहा, ''प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा परिवार उद्धार पाएगा।''*

लूका 6:46 – *''जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कहते हो?''*

मत्ती 1:21 – *''वह एक पुत्र को जन्म देगी। तू उसका नाम 'यीशु' रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों के दण्ड से बचाएगा।''*

लूका 23:2 – *''वहाँ, वे यह कह कर यीशु पर दो ा लगाने लगे, हमने इसे लोगों को बहकाते हुए पाया है। यह कैसर को कर देने को मना करता है और अपने आप को मसीह कहता है।''*

रोमियों 1:16 – *''मैं सुसमाचार सुनाने से नहीं लजाता क्योंकि सुसमाचार हर एक विश्वास करने वाले के लिये पहले तो यहूदी फिर युनानी के लिए, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।''*

रोमियों 1:1–3 – *''(1) यह पत्र पौलुस की ओर से है, वह यीशु मसीह के सेवक हैं। वह प्रेरित होने के लिए बुलाए गए हैं। वह परमेश्वर के उस वचन के लिए अलग किए गए हैं।'' (2) जिसकी परमेश्वर ने पहले से ही अपने नबियों के द्वारा पवित्रशास्त्र में घो णा की है। (3) अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के वि य में प्रतिज्ञा की थी। यीशु रीर के भाव से तो दाऊद के वंश में उत्पन्न हुए।''*

यूहन्ना 6:54 – *''जो मेरा मांस खाता, और लोहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है और मैं अन्तिम दिन फिर उसे जीवित करूँगा।''*

गलतियों 3:27 – ''तुममें से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहन लिया है।''

प्रेरितों के काम 9:5–6 – *''(5) उसने पूछा, ''हे प्रभु आप कौन हैं? उसने कहा, ''मैं यीशु हूँ, जिसे तू सता रहा है।''(6) परन्तु अब उठ और नगर में जा। जो तुझे करना है वह वहाँ तुझे बताया जाएगा।*

रोमियों 7:4 *– ''हे मेरे भाईयों, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठा ताकि हम परमेश्वर के लिए फल लाए।''*

उत्तर निर्देशिका

1. पढ़ें यूहन्ना 1:12 जितनों ने उसे ग्रहण किया,

   अ. उसे (प्रभु यीशु–मसीह) उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान बनने का अधिकार दिया।

2. पढ़ें प्रेरितों के काम 16:31 हमें अपने वास्ते किस में विश्वास करना है?

   प्रभु यीशु मसीह

3. पढ़ें लूका 6:46 में ाब्द 'प्रभु' क्या दर्शाता हैं?

   – गुरू, राजा, अधिकारी, वह जिसको हमारे जीवनों पर अधिकार करने का अधिकार है। यह शब्द ''देवता'' भी दर्शाता है।

4. पढ़ें मत्ती 1:21 में 'यीशु' ाब्द क्या दर्शाता हैं?

   यीशु एक उद्धारकर्ता।

5. पढ़ें लूका 23:2 में 'मसीह' ाब्द क्या दर्शाता हैं?

   यीशु हमारा राजा और मसीहा (बचानेवाला)

6. पढ़ें रोमियों 1:16 में वचन के अनुसार, ______________________________

   सुसमाचार में यीशु स्वयं ही है, जिसमें सब गुणों का समावेश है।

7. पढ़ें रोमियों 1:1–3 में परमेश्वर का सुसमाचार ____________________________ यीशु की ही चर्चा करता है।

   उसके बेटे यीशु मसीह से सम्बन्धित सब बातों व गुणों मे

8. पढ़ें यूहन्ना 6:54 में जब आप कुछ खाते हैं, वह क्या दिखाता हैं?

कि आप सब ले लें, सही में, जो आप खाते हैं, वह आप का जीवन व बल बन जाता है।

9. पढ़ें गलतियों 3:27 में जब कोई प्रभु यीशु में बपतिस्मा लेता है, वह **यीशु** को पहन लेता है। वह यीशु के किस भाग को पहन लेता है?

पूरा यीशु को पहन लेता है।

10. पढ़ें प्रेरितों के काम 9:5–6 में जब ाऊल का परिवर्तन हुआ तब उसने यीशु से कौन से दो प्रश्न पूछे?

आप कौन हैं? और आप मुझसे क्या चाहते हैं?

11. पढ़ें रोमियों 7:4 में हमने किससे विवाह किया है?

यीशु मसीह से। उसके किस भाग से विवाह किया है? पूरा यीशु मसीह को।

12. क्या आप यीशु के साथ अच्छे विवाह का आनंद उठा रहें हैं? क्या आप उससे बात करते हैं? उससे संबन्ध रखते हैं?

प्रेम व आराधना स्तुति करते हैं?

तृतीय स्तर

अध्याय ८

परमेश्वर की व्यवस्था का सही उपयोग

लेखक – डोन क्रो

एक दिन जो और में एक बड़े दरिया के पास, बिल और स्टीव से बातें कर रहे थे। प्रश्न उठाया गया कि, कैसे, वह लोग परमेश्वर के सामने न्याय के लिए खड़े होंगे जिन्होंने कभी परमेश्वर तथा यीशु ख्रीस्त के बारे में सुना ही नहीं? मैंने कहा, ''बिल, मान लो, तुम स्टीव के घर उससे मिलने गए और वह चला गया था, उसकी पत्नी वहाँ थी। अगर तुम उससे व्यभिचार करने लगे, क्या तुम इस तरह का व्यवहार करने पर, अपने में गलती का आभास महसुस करोगे? यद्यपि तुमने कभी दस आज्ञाएँ तथा पवित्र बाइबल नहीं पढ़ी? कहाँ से यह गलती तथा परमेश्वर को हिसाब देने का विचार आपके मन में आया?''

आप देखते हो कि परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को नियम के अनुसार अच्छा, बुरा महसुस करने की क्षमता प्रदान की है। नियम तथा विवेक अपने को जाँचने का कार्य आप ही जानते हैं, या वह अपने को गलत सोचते हैं और किसी का आदर करते हैं। अपने विवेक से ही ऐसा करते हैं (रोमियों 2:14–15)।

बिल मुझसे इस बारे में कह रहा था, वह कितना अच्छा व्यक्ति था। उसे सच में किसी मुक्ति दाता की आवश्यकता नहीं थी। मैं निर्गमन की पुस्तक खोलकर उसका 20 वा अध्याय बिल के लिए पढ़ने लगा, उसमें से दस आज्ञाएँ। ''बिल, क्या परमेश्वर का हमेशा पहला स्थान रहा है? तुम्हारे जीवन में, और तुम परमेश्वर को संसार की हर वस्तु से ज्यादा प्रेम करते हो? अगर नहीं, ''तो तुमने पहली आज्ञा तोड़ी है'' (निर्गमन 20:3)''। ''क्या तुमने किसी भी चीज को परमेश्वर से अधिक महिमा दी है?'' अगर ऐसा किया है, तो तुमने दूसरी आज्ञा को तोडा है (निर्गमन 20:4)। ''क्या आपने यीशु का नाम केवल चार ाब्दों का ाब्द करके माना हैं?'' ''अगर हाँ तब तुमने तीसरी आज्ञा को तोड़ा है।'' (निर्गमन 20:7)। ''क्या तुमने परमेश्वर की आराधना, आदर व महिमा देने के लिए एक अलग दिन रखा है? अगर नहीं, तुमने चौथी आज्ञा को तोड़ा है।'' (निर्गमन 20:8)। ''क्या तुमने अपनी युवा अवस्था में अपने माता – पिता का आदर किया है? अगर नहीं,

तुमने पांचवी आज्ञा तोड़ी है।'' (निर्गमन 20:12)। ''क्या तुम कभी किसी से बहुत क्रोधित हुए हो? अगर हाँ, तो तुमने छठवीं आज्ञा को तोड़ा है।'' (तुलना करें निर्गमन 20:13 से मत्ती 5:21–22 की)। ''क्या तुमने किसी स्त्री को गलत नजर से देखा, उससे व्यभिचार करना चाहा? अगर हाँ तो तुमने सातवी आज्ञा तोड़ा है। (तुलना करें निर्गमन 20:14 से मत्ती 5:27–28 की)। ''क्या तुमने उस वस्तु को लिया जो तुम्हारी नहीं थी? तो तुमने आठवी आज्ञा तोड़ी।'' (निर्गमन 20:15)। ''क्या तुमने हमेशा सच बोला? अगर नहीं तो तुमने नवी आज्ञा तोड़ी है।'' (निर्गमन 20:16)। ''क्या तुमने कभी उस चीज की इच्छा की जो तुम्हारी नहीं है? किसी और की है। अगर हाँ तो तुमने दसवी आज्ञा तोड़ी है।'' (निर्गमन 20:17)। ''क्या तुम जानते हो कि यीशु ने क्यों कहा कि वह पापियों को बचाने को आया?'' (मरकुस 2:16–17)।

सोचने की समस्या यह है, कि हम बहुत अच्छे हैं, या स्वर्ग जाने के लिए अच्छा बनने की कोशिश कर रहे हैं, सच यह है कि हम सब ने दस आज्ञाओं को तोड़ा है। याकूब 2:10 कहता है कि जो कोई पूरी व्यवस्था का पालन करता है, और एक बात में चूक जाए, तो सब बातों में दो ी ठहरा। व्यवस्था का मतलब आपको धर्मी बनाने का कभी नहीं था, परन्तु तुम्हारे पापों को पहचाने का काम करती है (रोमियों 3:19–20)।

हम सभी को एक मुक्तिदाता! की आवश्कता है, ''मुक्तिदाता'' की आवश्यकता है, मुक्तिदाता का मतलब है कि आपको पाप के दण्ड से बचाए। यीशु उन्हें बचाने आया जो न ट हो रहे हैं, ताकि वह अनन्त जीवन पाएं (मत्ती 1:21)।

स्वर्ग जाने के लिए अच्छा होने के लिए हमें धार्मिकता चाहिए जो की परमेश्वर के बराबर है (2 कुरिन्थियों 5:21)। परमेश्वर का सुसमाचार यह है कि यीशु केवल हमारे पाप क्षमा नहीं करता पर वह मुक्ति देता है, हमें अपनी खुद की धार्मिकता एक दान के रूप में (रोमियों 5:17 : ''जब एक मनु य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक के द्वारा राज्य किया तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं। वे एक मनु य के अर्थात यीशु मसीह के द्वारा अवश्य है अनन्त जीवन में राज्य करेंगे'')।

शिष्यता के प्रश्न

1. पढ़ें मरकुस 2:16–17 यीशु किसे बचाने आया?

2. पढ़ें रोमियों 2:1 जब हम दूसरों पर दो ा लगाते हैं, तब हम अपने से क्या कर रहे हैं?

क्यों?

3. पढ़ें याकूब 2:10 अगर हम ज्यादातर परमेश्वर की व्यवस्था पर चलें लेकिन कुछ चीजों को करने चूक जाएँ, तो हम, किस के दो ी हैं?

4. पढ़ें गलतियों 3:10 अगर हम व्यवस्था रखने से धार्मिक माने जाते है तो हमें कितना व्यवस्था पर चलना है। रखना हैं?

और कितने समय तक यह आज्ञाएँ माननी हैं?

आप देखते हैं, हम क्यों नहीं बच सकते हैं कितनी भी कोशिश हम अच्छा बचने की करें?

5. पढ़ें गलतियों 2:16 – धार्मिक गिना जाना, धार्मिकता का वरदान है, ईश्वर के द्वारा दया हुआ जो मनु य को सही रास्ते पर और परमेश्वर के साथ संबन्ध स्थापित करने में। मदद करें। एक पापी का धर्मी ठहराया जाना तथा यीशु मसीह में विश्वासी के द्वारा हमेशा के लिए यीशु की मृत्यु तथा उसके जी उठने के द्वारा स्थापित किया जाता है। (1 कुरिन्थियों 15:3–4 और रोमियों 4:25)मनु य क्या है? जो धार्मिक नहीं किसी के द्वारा?

मनु य कैसे बचाया गया?

कितने लोग व्यवस्था के द्वारा धार्मिक गिने जायेंगे?

6. पढ़ें रोमियों 6:14 एक मसीही की तरह, आप –

अ. व्यवस्था के आधीन हो।

ब. अनुग्रह के आधीन हो।

7. पढ़ें यहेजकेल 18:20 अगर आप व्यवस्था के आधीन है, तो आप के पापों की क्या सजा मिलेगी?

8. पढ़ें रोमियों 4:6–8 अनुग्रह के अधीन कौन सी तीन चीजें, परमेश्वर आपके पापों के साथ करता है?

9. पढ़ें रोमियों 5:1 अब हम धार्मिक गिने गए, हम किस आनन्द का लाभ उठाते हैं?

10. पढ़ें रोमियों 5:9 अभी हम यीशु के लोहु के द्वारा बचाए गए, हम किससे बचाए जायेंगे?

11. पढ़ें रोमियों 10:4 मसीह ने व्यवस्था का अन्त किया मतलब उसे ग्रहण करने के लिए ______________________ परमेश्वर के सामने।

12. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 1:30 परमेश्वर ने यीशु ख्रीस्त को बनाया हमारा ____________________और ______________________।

13. पढ़ें फिलिप्पीयों 3:9 जब तुम मूसा की व्यवस्था के अधीन हो, तुम अपनी मुक्ति प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हो।

14. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 11:1 मसीहीयों की तरह हम मसीह का व्यवस्था के अधीन है, मसीह की व्यवस्था नियमों का सेट नहीं है आज्ञा मानने के लिये यह एक मनु य को जीवन जीने का उत्तर है, कि वह मनु य

15. पढ़ें रोमियों 8:3 व्यवस्था हमें कभी नहीं बचा सकी, इसलिए नहीं कि व्यवस्था गलत थी, हमारी कमजोरी ____________________________ हम इसे नहीं रख सके!

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

मरकुस 2:16–17 – *"(16) ाास्त्रियों और फरीसियों ने देखा कि यीशु तो पापियों और चुंगी लेनेवालों के साथ भोजन कर रह है। तब उन्होंने यीशु के चेलों से कहा "वह चुंगी लेनेवालों और पापीयों के साथ क्यों खाते हैं?" (17) यीशु ने यह सुनकर उनसे कहा, "भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परन्तु बीमारों को है। मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।"*

रोमियों 2:1 – *"हे दो ा लगानेवाले, तू कोई क्यों न हो, "तू निरूतर है। क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दो ा लगाता है, उसी बात में अपने आप को भी दो ी ठहराता है। क्योंकि तू जो दो ा लगाता है, स्वयं भी वही काम करता है।"*

याकूब 2:10 – *"यदि कोई व्यक्ति सारी व्यवस्था का पालन करता है, परंतु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दो ी ठहरा!"*

गलतियों 3:10 – *"जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा करते हैं, वे सब स्राप के अधीन है, क्योंकि धर्मशास्त्र में लिखा है, जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता वह स्रपित है।"*

गलतियों 2:16 – *"यह जानते हैं कि मनु य व्यवस्था के कामों में नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है। हमने स्वयं भी मसीह यीशु पर विश्वास किया है कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें। व्यवस्था के कामों से कोई भी प्राणी धर्मी न ठहरेगा।"*

रोमियों 6:14 – *"तब तुम पर पाप की प्रभुता नहीं होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन् अनुग्रह के अधीन हो।"*

यहेजकेल 18:20 – *"जो प्राणी पाप करे – वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा, और न पिता पुत्र का धर्मी को अपने ही धर्म का फल और दु ट को अपनी ही दु टता का फल मिलेगा।"*

रोमियों 4:6–8 – *"(6) जिसे परमेश्वर बिना कर्मों के धर्मी ठहराता है, उसे दाऊद भी धन्य कहता है। (7) "धन्य है वे, जिनके पाप क्षमा हुए, जिनके पाप ढांपे गए।" (8) "धन्य है, वह मनु य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए।"*

रोमियों 5:1 – *''जब हम विश्वास से धर्मी ठहराए गए है, तो हमारा अपने यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल मिलाप है।''*

रोमियों 5:9 – *''जब कि हम, अब मसीह के लोहू के कारण धर्मी ठहरे हैं तो, उसके द्व ारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे।''*

रोमियों 10:4 – *''हर एक विश्वास करनेवाले के लिए, धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अंत है।''*

1 कुरिन्थियों 1:30 – *उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, पवित्रता और उद्धार।''*

फिलिप्पियों 3:9 – *''और उस में पाया जाऊं, न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ जो व्यवस्था से है वरन उस धार्मिकता के साथ जो मसीह में विश्वास करने के कारण है, और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है।''*

1 कुरिन्थियों 11:1 – *''तुम मेरी सी चाल चलो – जैसे मैं, मसीह की सी चाल चलता हूँ।''*

रोमियों 8:3 – *''क्योंकि जो काम व्यवस्था ारीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय ारीर की समानता में और पाप की बलि होने के लिए भेजा और इस प्रकार ारीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।''*

उत्तर निर्देशिका

1. पढ़ें मरकुस 2:16–17 यीशु किसको बचाने आया?

   पापियों को।

2. पढ़ें रोमियों 2:1 जब हम दूसरों पर दो ा लगाते हैं, हम अपने को क्या करते हैं?

   दूसरों पर दोष लगाना, माने अपने ऊपर दोष लगाना क्यों? क्योंकि हम दूसरों को दोष लगाते हैं, और वही हम स्वयं करते हैं!

3. पढ़ें याकूब 2:10 यदि कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है, पर एक ही बात में चूक जाता है? तो वह सब बातों में दो ी ठहरा। हम किन चीजों में दो ी ठहरते हैं?

हम सब चीजों में दोषी ठहरते हैं।

4. पढ़ें गलतियों 3:10 अगर हम परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करके धार्मिक ठहरते हैं, हमें उसका कितना पालन करना है?

सारा।

हमें कितने समय तक व्यवस्था की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए?

हमें उनका हमेशा पालन करते रहना चाहिए (बिना चूके)।

क्या तुम जानते हो कि हम क्यों नहीं बच सकते, केवल अच्छा बने रहने से?

हाँ।

5. पढ़ें गलतियों 2:16 धार्मिकता परमेश्वर के द्वारा दिया गया एक वरदान है, जो व्यक्ति को परमेश्वर के साथ मेल–मिलाप व धर्मी ठहराता है। धार्मिकता मसीह पर विश्वास से हम ठहरते है। विश्वास के द्वारा हम मसीह की मृत्यु तथा पुनः जी उठने में भागी, व धर्मी ठहरते है (1 कुरिन्थियों 15:3–4 और रोमियों 4:25)। मनु य किससे धर्मी नहीं ठहरता?

उसके अपने काम, जो व्यवस्था के कार्य।

व्यक्ति कैसे बचता है?

यीशु ख्रीस्त में विश्वास के द्वारा।

कितने लोग व्यवस्था से धर्मी ठहरेंगे?

कोई नहीं। कोई भी नहीं।

6. पढ़ें 6:14 में मसीह में, आप,

अनुग्रह के आधीन हैं!

7. पढ़ें यहेजकेल 18:20 अगर आप व्यवस्था के अधीन है, आपके पापों की क्या सजा होगी?

मृत्यु!

8. पढ़ें रोमियों 4:6–8 अनुग्रह के अधीन परमेश्वर कौन सी तीन चीजें आपके पापों के साथ करता है?

क्षमा करता है, ढ़ांपता है और उन्हें मेरे साथ नहीं जोडता है।

9. पढ़ें रोमियों 5:1 अभी हम धार्मिक ठहराए गए, हम क्या आनंद उठाते हैं?

परमेश्वर के साथ शान्ति।

10. पढ़ें रोमियों 5:9 अभी हम यीशु के लहू के द्वारा बचाए गए, तो हम किससे बच गए?

क्रोध–हमारे पापों का न्याय।

11. पढ़ें रोमियों 10:4 ______________ प्राप्त करने के लिए, मसीह व्यवस्था का अन्त है। परमेश्वर के सामने!

धार्मिकता

12. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 1:30 परमेश्वर ने यीशु मसीह को हमारा ________________

ज्ञान, धार्मिकता, मुक्तिदाता, पवित्रता बना दिया!

13. पढ़ें फिलिप्पियों 3:9 जब आप मूसा की व्यवस्था के अधीन हो, आप अपनी ही

धार्मिकता खोजते हो!

14. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 11:1 हम मसीहियों की तरह अनुग्रह के अधीन व यीशु ख्रीस्त के अधीन होकर जी रहे है। यीशु की व्यवस्था एक नियमों का संग्रह नहीं है केवल आज्ञा मानने के लिए। यह एक जीवता जीवित व्यक्ति है और वह व्यक्ति

यीशु है।

15. पढ़ें रोमियों 8:3 हमें व्यवस्था कभी बचा नहीं सकती थी, इसलिए नहीं कि व्यवस्था गलत थी, लेकिन हम अपनी ______ निर्बलता के कारण, उसे निभा नहीं सके!

शारीरिक

तृतीय स्तर

अध्याय ९

व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के अधीन

लेखक – डोन क्रो

पिछली रात को मैं एक स्त्री के बारे में स्वप्न (सपना) देख रहा था, जो अपने सब पापों के लिए सजा भोग रही थी। जो उसने गलत किया था। एक व्यक्ति उसे चारों ओर से घेर कर चल रहा था और जब भी वह गलती करती, वह अपना सिर हिला कर, अपना चमड़े का पटुका निकाल कर उसे मारता। अगर वह कोई बुरा ाब्द बोलती या बुरा करती, वह उसे दण्ड देता था। वह लंगडा – लंगडा कर चल रही थी, परन्तु वह गलत काम करती जा रही थी जो उसे परेशानी में डालते थे। वह कुछ बड़ी चीजें नहीं थी, लेकिन यह व्यक्ति उसको कोई भी छोटी सी गलती को देखता था, तो उसे मारता था। यह बेकार दिखता था। वह अपने को कई गलत चीजें करने से रोक नहीं सकती थी, जो उसे परेशानी में डालती थी। मुझे याद है, मुझे उसके लिए बहुत खेद हो रहा था। मैं चाहता था कि मैं उस तुच्छ व्यक्ति से उसे छुडाऊँ, जो उसे मार रहा था, तब मैं उठ गया।

मैं परमेश्वर के अनुग्रह के वि ाय में सोचने लगा, बिना कमाया हुआ मिलने के योग्य नहीं, कृपा तथा परमेश्वर की योग्यता। जब हृदय कृपा अनुग्रह से भर जाता है, तब हम अपने लिए परमेश्वर को ग्रहण योग्य बनाने की कोशिश नहीं करते और न ही ऐसा अपने को दिखाते हैं कि हम ग्रहण योग्य हों, और न ही अपनी ाक्ति में और योग्यता में उसकी व्यवस्था का पालन करते हैं। अंत में, हम मार खाने से बच जाते हैं जो हमने परमेश्वर की व्यवस्था न मानने से पायी थी, हम यीशु के द्वारा बचाए गए।

किसी सहायता के हाथ के वि ाय में सोचो, इसका मतलब किसी का सहायक हाथ, मदद और आशी ा। जब आपको किसी की सहायता चाहिए, आप क्या करते हो? आप वह सब करने की कोशिश करते हो, जो उस व्यक्ति को प्रसन्न करे जिसकी आप को मदद चाहिए। और ऐसा कुछ भी नहीं करते जो उन्हें अप्रसन्न करे। यह ठीक कार्य

करता है, हमेशा, क्या ऐसा करना सचमुच सम्भव है? यह उस खीचांव को झूठा मानना है। कुछ समय तक आप कर सकते हो लेकिन अंत में आप हार जाओगे। यह आपसे ज्यादा मजबूत है।

मैंने इसकी तुलना उस स्त्री से की जो मेरे सपने में दिखी, मैंने यह सोचा कि जब मैं कठिन प्रयास करता हूँ वह सब करने के लिए लेकिन थोड़ा सा चूक जाता हूँ, और असफल होता हूँ। मैंने सोचा कि अगर में केवल कर सकता, उसे एक भी दिन बिना चूके, मैं कुछ कर सकता था। लेकिन नहीं, मेरी कमियाँ मुझे हमेशा संपूर्ण बनने में सामने आती है, मैंने सोचा कि मैंने अपने स्वर्गीय पिता को ही अप्रसन्न नहीं किया है, लेकिन मैंने अपने को भी दो ी ठहराया और मारा है। मैं खुद हार गया। मैंने अपनी योग्यता व अयोग्यता पर ही ध्यान दिया। मैंने नहीं सोचा, उस स्तर तक! मुझे आवश्यकता किसी की जो मुझे बचा सके!

परमेश्वर अपनी अपार दया से हमें मदद करते हैं और उनका नाम यीशु है। परमेश्वर ने उसे हमें बचाने के लिए भेजा तथा उसे भेजा हमारे ाक्तिहीन कामों से बचाने व अपनी व्यवस्था को पूरा करने के लिए। यीशु ने सज़ा को उठाया कि जो व्यवस्था हम नहीं पूरी कर सके, ताकि हमें मरना न पडें। परन्तु स्वतन्त्र होकर अनन्त जीवन पाएं, यीशु के साथ। यीशु ने हमें धार्मिकता का वरदान दिया ताकि हम धार्मिक व पवित्र रहें, उस परमेश्वर के सामने और व्यवस्था के सब साधन प्राप्त करें। हमारे पास ाान्ति है, परमेश्वर के साथ जो उसने हमारे लिए अपनी मृत्यु व गाड़े जाने, व फिर से जी उठने के द्वारा दिया है। हमें परमेश्वर की असीम सहायता मिली, जो बिना कमाए, व अयोग्य होकर भी प्राप्त हुई, वह है अनुग्रह।

यह विश्वास करने, से आपके दिल में बिना सन्देह के स्थिरता आयी है, यह जानकर कि उसने (यीशु) ने यह किया, क्योंकि वह आपको प्यार करता है। अपने हृदय को मजबूत तथा सुरक्षित, स्थिर व योग्य उसके अनुग्रह में रखिऐ; जो बन जायेगा बिना प्रश्न, बिना सन्देह जो उसने हमें जीने के लिए वह सब दिया है। एक अनन्त जीवन यीशु के द्वारा।

हम यीशु के अलावा जो हमारे विश्वास का आदि व अन्त है, उन सब चीजों पर ध्यान देते हैं, जैसे हमारी कमियों, गलतीयाँ, पाप तो हमारा दिल, उदास, ाक्तिहीन, रहेगा कि वह जो हम परमेश्वर से प्राप्त कर सकते हैं। यह हम केवल मन से विश्वास

करके प्राप्त करते हैं, उसकी धार्मिकता अनुग्रह। हमारा हृदय पूर्ण रीति से यीशु का ही होना चाहिए। यह हम पूरा करेंगे और आराम करेंगे।

''सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर, क्यों जीवन का मूल स्त्रोत वही है।'' (नीतिवचन 4:23)।

शिष्यता के प्रश्न

1. अनुग्रह का किस तरह वर्णन किया है? इस पाठ में?

2. जब हृदय स्थिर हो जाता है अनुग्रह में, तब हम परमेश्वर की मदद नहीं खोजते, अपनी

3. पढ़ें इब्रानियों 10:14 डान की कमियों हमेशा उसे अपरिपक्व होने का कारण होती है, हम उसे कैसे पूरा करें, इस वचन के द्वारा?

4. पढ़ें रोमियों 5:17 यीशु ने हमें दिया—————————— वरदान धार्मिकता ताकि हम परमेश्वर के सामने धार्मिक ठहराए जाएँ और उसकी व्यवस्था की सब चीजें पा सकें।

5. पढ़ें यशायाह 26:3 अगर हम अपनी कमियों व गलतीयों, पापों पर लगातार नजर रखें और यीशु जो हमारे विश्वास का आदि व अंत है, उसे ध्यान में न रखें तो हमारा मन, दुःखी, ाक्तिहीन होगा विश्वास करने में कि हम परमेश्वर से कुछ पा सकते है? हमें अपना ध्यान व मन किस पर लगाये रखना चाहिए?

6. पढ़ें इफिसियों 3:17 हमारा पूरा ध्यान उसी पर होना चाहिए, यह तब होगा जब हम

7. पढ़ें रोमियों 4:5 क्या उद्धार के लिए हमें कमाना है? या वह परमेश्वर के अनुग्रह का मुफ्त वरदान हैं?

8. पढ़ें रोमियों 5:17 धार्मिकता (सही तौर पर परमेश्वर के साथ रहना) क्या आपको इसके लिए काम करना है?

आप कैसे वरदान पा सकते हो?

9. पढ़ें रोमियों 6:23 इस वचन में परमेश्वर के अनुग्रह का वरदान क्या हैं?

10. पढ़ें तीतुस 3:5 तुम्हारे कितने अच्छे काम व कार्य उद्धार ला सकते हों?

11. पढ़ें 6:14 अपने ाब्दों में व्याख्या कीजिए परमेश्वर के अनुग्रह के अधीन होने का क्या अर्थ हैं?

12. पढ़ें रोमियों 11:6 अगर परमेश्वर की आशी ा हमें अनुग्रह के द्वारा दी गई है तो हमारे द्वारा या हमारे

13. पढ़ें रोमियों 3:24 अपने ाब्दों में इन वचनों की व्याख्या कीजिए?

14. पढ़ें इफिसियों 1:7 हमारे पापों की क्षमा किसके अनुसार।

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

इब्रानियों 10:14 – *''यह असम्भव है कि बैलो और बकरों का लोहू पापों को दूर करें''।*

रोमियों 5:17 – *''जब एक मनु य के अपराध के कारण म त्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया तो जो लोग अनुग्रह और धर्म रूपी वरदान बहुतायात से पाते है वे एक मनु य के अर्थात यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।''*

यशायाह 26:3 – *''जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए है उसकी तू पूर्ण ाान्ति के साथ रक्षा करता है, क्यों वह तुझ पर भरोसा रखता है।''*

इफिसियों 3:17 – *''ताकि विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे ह्रदय में निवास करें मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम प्रेम में जड़ पकड़ कर और उसमें स्थापित होकर।''*

रोमियों 4:5 – *''परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्ति हीन के धर्मी ठहराने वाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है।''*

रोमियों 6:23 – *''क्यों पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।''*

तीतुस 3:5 – *''तो उसने हमारा उद्धार किया। यह धर्म के कामों के कारण नहीं जो हमने स्वयं किए, पूरा उसकी अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।''*

रोमियों 6:14 – *''तब तुम पर पाप की प्रभुता नहीं होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं, वरन् अनुग्रह के अधीन हो।''*

रोमियों 11:6 – *''यदि यह अनुग्रह से हुआ, तो फिर कर्मों से नहीं, नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा।''*

रोमियों 3:24 – *''परन्तु उसके अनुग्रह से छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, बिना मूल्य चुकाए धर्मी ठहराए जाते है।''*

इफिसियों 1:7 – *''हम को उसमें उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात पापों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।''*

उत्तर निर्देशिका

1. इस पाठ में अनुग्रह की किस प्रकार व्याख्या की है?

जो कमाया न जायें, परमेश्वर की बिना मूल्य, मदद, तथा परमेश्वर की योग्यता।

2. जब हृदय अनुग्रह में स्थापित हो गया, तो हमें अपने कार्यों के द्वारा परमेश्वर की स्वीकृती की ______________ नहीं करनी पडती है।

कोशिश

3. पढ़ें इब्रानियों 10:14 डान की कमियां उसक अपूर्ण होने का कारण बनती है, इस वचन के अनुसार, हम कैसे परिपूर्ण होते हैं?

यीशु के बलिदान के द्वारा, उसने हमें उसने हमें हमेशा के लिए सिद्ध किया है।

4. पढ़ें रोमियों 5:17 यीशु ने हमें धार्मिकता का ______________ दिया। ताकि हम धार्मिक ठहराए, ताकि पवित्र ठहराए जाए परमपिता परमेश्वर के सम्मुख। और व्यवस्था की सब आवश्यकताअें को पा सकें।

वरदान

5. पढ़ें यशायाह 26:3 अगर हम अपनी कमियों व गलतीयों, पापों पर लगातार नजर रखें और यीशु जो हमारे विश्वास का आदि व अंत है, उसे ध्यान में न रखें तो हमारा मन, दुःखी, क्तिहीन होगा विश्वास करने में कि हम परमेश्वर से कुछ पा सकते है? हमें अपना ध्यान व मन किस पर लगाये रखना चाहिए?

हमें अपना मन प्रभु यीशु पर लगाना चाहिए।

6. पढ़ें इफिसियों 3:17 हमारा मन पूरा यीशु पर स्थित होना चाहिए।

तब हम परिपूर्ण व आराम में होंगे।

7. पढ़ें रोमियों 4:5 क्या उद्धार कमाया जाता है, या एक गुप्त वरदान जो परमेश्वर के अनुग्रह से मिलता है?

एक मुफ्त वरदान परमेश्वर के द्वारा।

8. पढ़ें रोमियों 5:17 धार्मिकता (सही तौर पर परमेश्वर के साथ रहना) क्या आपको इसके लिए काम करना है?

नहीं।

आप कैसे वरदान प्राप्त करेंगे?

साधारणतः पहुँचकर और प्राप्त करना है।

9. पढ़ें रोयिमों 6:23 इस वचन में परमेश्वर के अनुग्रह का मुफ्त वरदान क्या है?

अनन्त जीवन (न कि अनन्त मृत्यु)

10. पढ़ें तीतुस 3:5 आपके कितने अच्छे काम आपके उद्धार में सहयोगी है?

एक भी नहीं!

11. पढ़ें रोमियों 6:14 अपने ाब्दों में व्याख्या कीजिए—अनुग्रह के अधीन होने का क्या तात्पर्य (मतलब) हैं?

हम वह नहीं पाते, जो हमें पाप के लिए मिलना चाहिए। परन्तु परमेश्वर का सबसे अच्छा यीशु ख्रीस्त के द्वारा - धार्मिकता, स्वीकृत, क्षमा, हमारे लिए है। (ये सब वरदान, परमेश्वर की दया से)

12. पढ़ें रोमियों 11:6 अगर परमेश्वर की आशी ों हमें दी गई है, अनुग्रह से यह हमारे _________________________ के द्वारा नहीं।

कार्यों

13. पढ़ें रामियों 3:24 अपने ाब्दों में वर्णन कीजिए?

इन वचनों का अर्थ धार्मिकता, एक मुफ्त वरदान है, जो परमेश्वर के द्वारा एक विश्वासी को दिया गया है, यीशु के छुटकारे के कामों द्वारा - क्रुस पर।

14. पढ़ें इफिसियों 1:7 हमारे पापों की क्षमा

परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा।

तृतीय स्तर

अध्याय १०

पाप की अधिक चेतना नहीं

लेखक - डोन क्रो

एक दिन उसके रिक्शा में, एक पियक्कड घुस आया, और गलत रास्ते की तरफ चलाने लगा, और एक ओर भरी हुए कार सामने आ गयी और इस घटना में एक अट्ठारह व र्ा की लड़की मारी गयी। इस लडकी के परिवार ने इस मनु य के खिलाफ केस दर्ज किया और 1.5 मिलियन डालर का जुर्माना उसको देने को कहा।

लेकिन यह परिवार पैसा लेने के बजाय, उन्होंने 936 डॉलर उस व्यक्ति को एक विशे ा तरह से पैसा देने को तय किया, यह परिवार उसको जो ाराब पिया था यह सीखाना चाहते थे कि उसने यह क्या किया। उसे एक चेक लिखना था, उस लडकी के नाम का, जिसको उसने मारा था, 1 चेक हर हफ्ते उस परिवार को भेजना था। आप सोचेंगे कि क्या यह अच्छा है, कि 1.5 मिलियन से 936 देना अच्छा है, इसको 1 हर हफ्ते देना असान था, लेकिन कुछ समय के बाद, उसी के नाम, जो लडकी मारी गयी थी, उसको याद दिलायेगा, हर हफ्ते वह एक मानसिक उदासी में जा रहा था, यह सोच कर कि उसने इस लडकी को मार डाला।

एक साल के बाद, उसने पैसा देना बन्द कर दिया। और वह परिवार उसे फिर से न्यायालय ले गया, और उसे यह आज्ञा मिली कि फिर से पैसा देना चालू करें। यह छः या सात सालों में उसे कम से कम चार या पाँच बार पैसा देना बन्द करा। कैसे भी, उसको हर बार न्यायालय ले जाया गया और कहा गया कि पैसे देना ुरू करो।

इस परिवार ने कहा कि वह लोग उससे बिल्कुल नाराज नहीं है, लेकिन वह इतना चाहते हैं कि उसको याद दिलाए कि उसने क्या किया था।

अगर आप इसके बारे में सोचें, कि वह परिवार भी एक बन्धन में है, जैसे कि वह व्यक्ति पैसा का भुगतान कर रहा था। हर सप्ताह जब वह चैक देता था, तो उनको

याद आता है कि उनकी लड़की नहीं है, इस प्रकार वह लोग भी अपनी बेटी को भूला नहीं सकते थे।

यह व्यक्ति अब इस परिवार को ऐसा व्यक्ति जान पड़ा जो ''न्याय के अनुसार निर्दयी व एक अपराधी है।'' वह कहता है कि ''यह उसे मार रहा है! यह मेरा जीवन नाश कर रहा है!, मैं अतीत को पीछे नहीं छोड़ सकता और न जीवन में आगे बढ़ सकता हूँ।''

इस कहानी के प्रकाश में, मैं बहुत ऐसे मसीहियों से मिला जो ऐसा सोचते हैं, कि वह भी इसी तरह के न्याय में हैं। उन्हें कहा गया, कि ''यीशु ने पूरा अदा कर दिया।'' लेकिन अभी तक हफ्ते का पैसा भर उन्हें भरना है, नही ंतो परमेश्वर उनको स्वीकार नहीं करेंगे।

शिष्यता के प्रश्न

1. इस परिवार के साथ यह व्यक्ति किस प्रकार का संबन्ध रख सकता है, जब इस तरह की स्थिति है?

2. पढ़ें इब्रानियों 10:1 न्याय क्या नहीं कर सका?

3. पढ़ें इब्रानियों 10:1 यह ाब्द क्या कहते हैं कि हमें यह दर्शाता है कि पुराने नियम का बलिदान हमें दिखाता है कि हमें परिपूर्ण बनाने में पुराना नियम काफी नहीं है?

4. पढ़ें इब्रानियों 10:2 अगर बलिदान आया कि वह पाप से व्यवहार करें तब आराधना करने वाले के लिये यह क्या करेगा?

5. वह क्या था, जो पियक्कड ड्रायवर को करना पडा?

6. पढ़ें इब्रानियों 10:14 परमेश्वर अपने लोगों को परिपूर्ण करता है, इनके द्वारा

अ. अच्छे काम।

ब. कलीसिया में जाने से।

स. दस आज्ञाओं को मानने से।

द. यीशु के बलिदान के द्वारा।

7. पढ़ें इब्रानियों 10:14 यीशु का बलिदान (विश्वास से प्राप्त) विश्वासी को परिपूर्ण करता है।

अ. जब तक वह दोबारा पाप करे।

ब. उनके पहले पापों से।

स. सदा के लिए।

8. पढ़ें उत्पति 20:1—18 इस कहानी में वह दो कौन से व्यक्ति है, जिनके बारे में लिखा है?

9. पढ़ें उत्पति 20:2,5 इस कहानी में वह कौन सा व्यक्ति है, जिसने झूठ बोला और दूसरे को धोखा दिया?

10. पढ़ें उत्पति 20:7 मुझे निश्चित है कि अब्राहम के कार्यों को परमेश्वर ने स्वीकृति नहीं दी, पर किसको परमेश्वर ने स्वीकृति दी? अब्राहम या अबीमेलेक?________________ और क्यों? पढ़े उत्पति 15:1,18 और याकूब 2:23.________________________________

11. पढ़ें उत्पति 20:7–18 जबकि अब्राहम गलत था। परमेश्वर ने किससे कहा कि दूसरे के लिए प्रार्थना करना चाहिये?

अ. अब्राहम को अबीमेलेक के लिए प्रार्थना करना।

ब. अबीमेलेक को अब्राहम के लिए प्रार्थना करना था।

स. उन्हें एक दूसरे के लिए प्रार्थना करना था।

12. पढ़ें रोमियों 8:31 जबकि हम कई बार असफल होते हैं, हमारी ओर कौन है?

13. पढ़ें रोमियों 4:8 जबकि हम गलती करते है, परमेश्वर ने क्या कहा? वह नहीं करेगा?

14. पढ़ें इब्रानियों 8:12–13 नई वाचा में परमेश्वर ने क्या वादा किया? वह नहीं करेगा?

15. पढ़ें इफिसियों 2:5, 8–9 हम कैसे बचाए गए?

16. पढ़ें तीतुस 3:5 हम कैसे नहीं बचाए गए।

17. पढ़ें इफिसियों 1:6 हम परमेश्वर की महिमा अनन्तकाल तक गायेंगे, हमें बचाने के लिए। उसके क्योंकि____________________उसने हमें बनाया है,————————————— प्रिय यीशु ख्रीस्त में।

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

इब्रानियों 10:1 – *"व्यवस्था आनेवाली, अच्छी वस्तुओं का केवल प्रतिबिम्ब है, उनका असली स्वरूप नहीं। इसलिए वे एक ही प्रकार की बलि के द्वारा, जो प्रति व र्ि नियमित रूप से चढ़ाई जाती है। पास आनेवालों के कदापि सिद्ध नहीं कर सकते।"*

इब्रानियों 10:2 – *''नही तो उनका चढ़ाया जाना बन्द जो जाता। इसलिए जब सेवा करनेवाले एक ही बार ुद्ध हो जाते तो फिर उनका विवेक उन्हें पापी न ठहराता।''*

इब्रानियों 10:14 – *''उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते है, सदा के लिए सिद्ध कर दिया।''*

उत्पति 20:1–18 – *''(1) फिर अब्राहम वहाँ से दक्षिण देश में आकर कादेश और ूर के बीच में ठहरा और गरार में रहने लगा।'' (2) वहाँ अब्राहम ने अपनी पत्नी सारा के विलंब मे कहा, ''वह मेरी बहन है।'' गरार के राजा अबीमेलेक ने दुत भेज कर सारा को बुलवा लिया। (3) रात को परमेश्वर ने स्वप्न में अबीमेलेक के पास आकर कहा, ''सुन जिस स्त्री को तू ने रख लिया है उसके कारण तू मर जायेगा, क्योंकि वह सुहागिन है।'' (4) परन्तु अबीमेलेक उसके पास न गया था। उसने कहा, ''हे प्रभु, क्या तू निर्दो ा जाति को भी घात करेगा? (5) क्या उसी ने स्वयं मुझ से नहीं कहा, कि वह मेरी बहिन है? और उस स्त्री ने भी स्वयं कहा कि वह मेरा भाई है। मैंने तो अपने मन की खराई और अपने व्यवहार की सच्चाई से यह काम किया है। (6) परमेश्वर ने उससे स्वप्न में कहा, ''हाँ, मैं भी जानता हूँ कि अपने मन की खराई से तू ने यह काम किया है और मैंने तुझे रोक भी रखा है कि तू मेरे विरूद्ध पाप न करें, इसी कारण मैंने तुझे उसको छूने नहीं दिया। (7) अब उस पुरू ा को पत्नी उसे लौटा दे क्योंकि वह नबी है और तेरे लिए प्रार्थना करेगा। और तू जीता रहेगा। पर यदि तू उसको न लौटाएगा तो जान रख कि तू, और तेरे जितने लोग है, सब निश्चय मर जायेंगे। (8) सुबह अबीमेलेक तड़के उठहर अपने सब कर्मचारियों को बुलाकार ये सब बाते सुनाई, और वे लोग बहुत ड़र गए। (9) तब अबीमेलेक ने अब्राहम को बुलाकर कहा, तूने हम से यह क्या किया है? और मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था, कि तूने मेरे और मेरे राज्य के ऊपर ऐसा बड़ा पाप डाल दिया है? तू ने मुझ से यह काम किया है, जो उचित न था। (10) फिर अबीमेलेक ने अब्राहम से पूछा, तूने क्या सोचकर ऐसा काम किया? (11) अब्राहम ने कहा, मैंने यह सोचा था कि इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भी भय न होगा, ये लोग मेरी पत्नी के कारण मेरी हत्या करेंगे। (12) फिर सचमुच वह मेरी बहन है, वह मेरे पिता की बेटी तो है, पर मेरी माता की बेटी नहीं, फिर वह मेरी पत्नी हो गयी। (13) ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर ने मुझे अपने पिता का घर छोड़कर निकलने की आज्ञा दी, तब मैंने उससे कहा, इतनी कृपा तुझे मुझ पर करनी होगी कि हम दोनों जहाँ जहाँ जाए वहाँ वहाँ तू मेरे वि ाय में कहना, कि वह मेरा भाई है। (14) तब अबीमेलेक ने भेड़, बकरी, गाय, बैल और दास दासियों लेकर*

अब्राहम को दी और उसकी पत्नी सारा को भी उसे लौटा दिया। (15) और अबीमेलेक ने कहा देख, मेरा देश तेरे सामने है जहाँ तुझे पसंद आए वहाँ रह। (16) और सारा ने उससे कहा, देख, मैंने तेरे भाई को चांदी के एक हजार टुकडे दिए है, देख, तेरे सारे संगियों के सामने वही तेरी आखों का परदा बनेगा और सब के सामने तू ठीक होगी। (17) तब अब्राहम ने प्रभु से प्रार्थना की और प्रभु ने अबीमेलेक और उसकी पत्नी और दासियों को स्वास्थ कर दिया और उनको बच्चे होने लगे। (18) क्योंकि प्रभु ने अब्राहम की पत्नी सारा के कारण अभीमेलेक के घर की सब स्त्रीयों की कोखों को पूरी रीति से बंद कर दिया था। ''

उत्पति 20:2,5 *– ''(2) वहाँ अब्राहम ने अपनी पत्नी सारा के वि ाय में कहा, वह मेरी बहन है। गरार के राजा अबीमेलेक ने दुत भेजकर सारा को बुलवा लिया। (5) क्या उसी ने स्वयं मुझ से नहीं कहा, कि वह मेरी बहन है और उस स्त्री ने भी स्वयं कहा, कि वह मेरा भाई है। मैंने तो अपने मन की खराई और अपने व्यवहार की सच्चाई से, यह काम किया।''*

उत्पति 20:7 *– ''अब उस पुरू ा की पत्नी को उसे लौटा दे, क्योंकि वह नबी है और तेरे लिए प्रार्थना करेगा और तू जीता रहेगा। पर यदि तू न लौटाएगा तो जान रख कि तू और तेरे जितने लोग है, सब निश्चय मर जायेंगे।''*

उत्पति 15:1,18 *– ''(1) इन बातों के पश्चात् प्रभु का यह वचन दर्शन में अब्राहम के पास पहुँचा कि ''हे अब्राहम मत डर, तेरी ढ़ाल और तेरा अत्यंत बड़ा फल में हूँ।'' (18) उसी दिन प्रभु ने अब्राहम के साथ यह वाचा बांधी, मिस्त्र की महानदी से लेकर परात नामक महानदी तक जितना देश है। मैं तुझे और तेरे वंश को दूंगा।*

याकूब 2:23 *– ''पवित्र   ाास्त्र का यह वचन पुरा हुआ, ''अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिए धर्म गिना गया और वह परमेश्वर का मित्र कहलाया।''*

उत्पति 20:7,17–18 *– ''(7) अब उस पुरू ा की पत्नी को लौटा दे, क्योंकि वह नबी है और तेरे लिए प्रार्थना करेगा और तू जीता रहेगा। और यदि तू उसको न लौटाएगा तो जान रख कि तू और तेरे जितने लोग है सब निश्चय मर जायेंगे।'' (18) क्योंकि प्रभु ने अब्राहम की पत्नी के कारण अबीमेलेक के घर की स्त्रियों की कोखों को पूरी रीति से बंद कर दिया था।*

रोमियों 8:31 *– "तो हम इन बातों के वि ाय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?"*

रोमियों 4:8 *– "धन्य है, वह मनु य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए।"*

इब्रानियों 8:12–13 *– "(12) मैं उनके अधर्म के वि ाय में दयावान हूँगा, और उनके पापों को फिर स्मरण न करूंगा।" (13) नई वाचा के स्थापन से उस ने प्रथम वाचा को पुरानी ठहराई। जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो, जाती है, उसका मिट जाना अनिवार्य है।"*

इफिसियों 2:5, 8, 9 *– "(5) जब हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे, तब हमें मसीह के साथ जिलाया। अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है। (8) विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है। यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् – परमेश्वर का दान है। (9) और न कर्मों के कारण है। ऐसा न हो कि कोई घमण्ड़ करें।"*

तीतुस 3:5 *– "तो उसने हमारा उद्धार किया। यह धर्म के कारण नहीं, जो हम स्वयं किए, पर उसकी अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।"*

इफिसियों 1:6 *– "जिससे उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें अपने 'प्रिय' में निःशुल्क दिया है।"*

उत्तर निर्देशिका

1. एक व्यक्ति किस तरह का संबन्ध परिवार के साथ रख सकता है? जब इस तरह की चीजें हो रही है?

   एक संबन्ध जो इन चीजों से भरा हो कड़वाहट, क्षमा न करना, जलन, विद्रोह, इत्यादि।

2. पढ़ें इब्रानियों 10:1 व्यवस्था क्या नहीं कर सकी?

   आराधना, अर्चना को सिद्ध करता है (बिना नियम व व्यवस्था)।

3. पढ़ें इब्रानियों 10:1 यह वचन क्या कहते हैं? कि पुराने नियम के बलिदान हमें सिद्ध करते हैं?

वे लगातार, रोज, सप्ताहिक, महीने पर, चढाये जाते थे, सच यह है कि यह लगातार चढ़ावा बताता है कि इनसे पूरी तरह से सिद्धता नहीं मिलती, पापों की।

4. पढ़ें इब्रानियों 10:2 अगर बलिदान, पापों को दूर करें, तब जो आराधना करते हैं? उनका क्या होगा?

उन्हें अधिक समय तक उनका विवेक पापी न ठहराता।(हमेशा पापी ही होने का विवेक उनके मन में रहता)

5. पियक्कड चालक को हमेशा क्या करना पड़ा?

उसे अपने पापों का हमेशा स्मरण रहता था।

6. पढ़ें इब्रानियों 10:14 परमेश्वर अपने लोगों को सिद्ध करता है।

यीशु के बलिदान के द्वारा।

7. पढ़ें इब्रानियों 10:14 यीशु का बलिदान विश्वास से प्राप्त होता है। विश्वासी को **हमेशा** के लिए सिद्ध करता है।

स. सदा के लिए।

8. पढ़ें उत्पति 20:1–18 निम्न प्रश्नों के उत्तर दोः इस कहानी में यह दो व्यकित कौन है?

अब्राहम व अबीमेलेक?

9. पढ़ें उत्पति 20:2,5 इस कहानी में वह कौन सा व्यक्ति था, जिसने झूठ बोला और दूसरे को धोखा दिया?

अब्राहम।

10. पढ़ें उत्पति 20:7 मुझे निश्चय है कि अब्राहम के कार्य को परमेश्वर ने स्वीकृत नहीं किया। परन्तु किसको परमेश्वर ने सराहा, अब्राहम या अबीमेलेक?

अब्राहम!

क्यों?

पढ़ें उत्पति १५:१,१८ और याकूब २:२३, क्योंकि परमेश्वर ने अब्राहम से वाचा बांधी थी और वह परमेश्वर का मित्र था।

12. पढ़ें उत्पति 20:7, 17, 18 जबकि अब्राहम गलत था, परमेश्वर ने किसको कहा कि वह प्रार्थना करना चाहिए?

अ. अब्राहम को अबीमेलेक के लिए प्रार्थना करना था।

13. पढ़ें 8:31 यद्यपि हम कई बार असफल होते हैं, हमारे साथ कौन है?

परमेश्वर!

14. पढ़ें रोमियों 4:8 यद्यपि हम गलती करते हैं, परमेश्वर ने क्या कहा?

वह नहीं थोपेगा। वह हमारे पापों को क्षमा करता है।

15. पढ़ें इब्रानियों 8:12–13 नई वाचा में, परमेश्वर ने क्या वाचा बाधी, वह क्या करेगा?

वह हमारे पापों को याद नहीं करेगा, न उन्हें अपने मन में रखेगा।

16. पढ़ें इफिसियों 2:5, 8–9 हम कैसे बचे?

अनुग्रह के द्वारा, वह है परमेश्वर का अनुग्रह तथा दया हमारे ऊपर।

17. पढ़ें तीतुस 3:5 हम कैसे नहीं बचे?

धार्मिकता के काम जो हमने किये, हम कैसे बचाए गए? उसकी दया के अनुसार उसने हमें नये जन्म के द्वारा हमें धो दिया। और अपनी पवित्र आत्मा के द्वारा हमें नया बना दिया।

18. पढ़ें इफिसियों 1:6 परमेश्वर ने अपनी ____________________ से हमें बचाया, हम हमेशा के लिए उसकी महीमा करेंगे, क्योंकि उसने हमें अपने 'प्रिय' यीशु ख्रीस्त में हमें ____________________ किया।

अनुग्रह / स्वीकार

तृतीय स्तर

अध्याय ११

मुझे प्रेम किया गया, मैं सुन्दर हूँ

लेखक – डोन क्रो

एक दिन माईकल मेरे दफ्तर में मुझे अपने एक विद्यार्थी की बहुत विश्वसनीय सूचना बताने के लिए आया। जब मैं चैरिस बाइबल कालेज में पढ़ा रहा था, तो मैंने देखा कि पेट्रेशिया अपने लिखने के पैड पर कुछ नोटस् लिख रही थी। उसका लिखा हुआ कुछ इस तरह से था – ''मुझे प्यार किया गया, मैं सुन्दर हूँ।'' इत्यादि। पेट्रेशिया अपने कपड़े इस तरह से पहनती थी कि जिससे लोगों का ध्यान उसकी ओर खींच सकें। असली कारण यह था कि पेट्रेशिया ने अपने को व्यक्त किया, वह सच नहीं था सच यह है कि वह सुन्दर नहीं थी और न ही किसी ने उसे प्रेम किया था। लेकिन उसे किसी ने प्रेम नहीं किया था वरन् उसका तिरस्कार ही किया था।

एक मानव होने के नाते, हम सब के पास प्राथमिक आवश्यकताएं होती हैं। इच्छा प्रेम करने की, स्वीकार करने की और हमें महत्व भी मिले, ठीक इसी तरह कि हम योग्य हैं, यह जानते हैं कि परमेश्वर के साथ भी हमारा सही संबन्ध है। बहुत सारे ऐसे धर्म हैं, जो हमें अनचाहा व प्रेम से वर्जित करते हैं, सबसे ज्यादा और बड़ा मजबूत हथियार जो ौतान इस्तेमाल करता है, वह है, कि गलत महसुस कराना और अपने को दो ी ठहराना, जब हम अपने को इन सब के साथ धर्मी व आत्मिक सोचते हैं।

यहाँ एक प्रश्न है, आप में से कितने ऐसे हैं, जो यीशु के पास पहली बार आए, कहा गया कि यीशु आपसे प्रेम करता है, लेकिन उसको अपने हृदय में स्वीकार करने पर वह आपकी पूरी धार्मिकता? सच में, वह जो धार्मिकता आपको देगा, वह पूरी तरह से आपको यह धार्मिकता चाहिये ही (1 कुरिन्थियों 1:30 कहता है – *''उसी की ओर से तुम मसीह में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा अर्थात् धर्म, पवित्रता और उद्ध ार)''* यह सुसमाचार की अच्छी खबर है, *''मैं सुसमाचार सुनाने से नहीं लजाता, क्योंकि सुसमाचार हर एक विश्वास करने वाले के लिए पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि उस में परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास*

से और विश्वास के लिए प्रकट होती है, जैसा कि पवित्र ाास्त्र में लिखा है, "विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा" (रोमियों 1:16–17)। *"परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहराने वाले पर विश्वास करता है उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है।"* (रोमियों 4:5)। परमेश्वर ने हमें नहीं बुलाया विश्वास की भरपूरी के लिए या विश्वास पर विश्वास करने के लिए, परन्तु उन पर भरोसा करें आत्मविश्वासपूर्ण, विश्वस्त, और आश्रित रहकर।

परमेश्वर आपको प्रेम नहीं कर सकता, जैसे वह पहले ही करता है, परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8)। लेकिन आप और पा सकते हैं, और महसुस कर सकते हो, और अनुभव कर सकते हो परमेश्वर को। जितना आप विश्वास करते हो, उतना ही आप पाओगे कि आप परमेश्वर से प्रेम करते हो। पवित्र ाास्त्र कहता है (1 यूहन्ना 4:19) *"हम उससे प्रेम करते हैं, क्योंकि उसने हमसे पहले प्रेम किया"।* इसको सोचिए, विश्वास कीजिए, और प्राप्त कीजिए!

शिष्यता के प्रश्न

1. प्रेरित पौलुस किसके बारे में बताता है?

2. जब मैं बाइबल कालेज में था। वहां मेरा एक प्रोफेसर मित्र था, जिसने कुछ लिखा हुआ निकाला और दिखाया, जो कि पवित्रता के बारे में था कि पवित्रता एक "न्याय। या नियम है, जबकि परमेश्वर कहता है कि – वह जो विश्वास करता है, धार्मिक नहीं बनता।" जैसे मैंने स्वयं पवित्रशास्त्र का अध्ययन किया, मुझे पक्का विश्वास हो गया कि पवित्रता एक धार्मिकता का वरदान है, जो परमेश्वर के सामने आपको ध ाार्मिक ठहराता है। पढ़ें रोमियों 5:19 यीशु ख्रीस्त के द्वारा आज्ञाकारी होना (व्यवस्था का मानना और क्रुस को स्वीकार करना) बहुत होंगे:

अ. धार्मिक घोि ात

ब. धार्मिक समझेंगे

स. धार्मिक ठहराये जायेंगे

3. पढ़ें 2 कुरिन्थियों 5:21 ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को परमेश्वर ने हमारे लिए पाप ठहराया ताकि, **हम** उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाए।'' ______________

____(जोर मेरा है।)

4. पढ़ें कुलिसियों 1:21–22 यीशु ख्रीस्त इस पृथ्वी पर आया और हमारे पापों के लिए मारा गया। ताकि इसके द्वारा हम परमेश्वर के सामने पवित्र, नि कलंक और निर्दो ा रहें किसमें –

अ. अपने जीवन साथी के सामने

ब. अपने मित्र के सामने

स. परमेश्वर के सामने

5. पढ़ें इफिसियों 1:6 हम समस्त अनन्त काल तक उसकी (यीशु) की स्तुति करेंगे क्यों उसने हमें अनुग्रह के द्वारा बनाया है

6. पढ़ें इब्रानियों 10:14 यीशु ख्रीस्त के क्रुस के बलिदान के द्वारा हमें सिद्ध ठहराया गया कब तक?

अ. जब आप फिर पाप करें।

ब. जब तक आप कलीसिया जायें।

स. सदैव के लिए।

7. पढ़ें इब्रानियों 10:15–17 नयी वाचा में, परमेश्वर की प्रतिज्ञा है हमारे पापों को याद करने को –

अ. जब जब हम पाप करते हैं।

ब. जब हम अपना दशमांश नहीं देते।

स. कभी नहीं।

8. पढ़ें रोमियों 6:1–2 परमेश्वर का अनुग्रह हमारे पापों से कड़ा है। तो क्या हम पाप करते रहें जिससे अनुग्रह अधिक हो?

9. पढ़ें इब्रानियों 9:12 किस तरह का छुटकारा यीशु ने हमें दिलाया? (पापों की सजा से आजादी)

अ सीमित छुटकारा

ब कुछ समय का

स अनंत काल तक

10. पढ़ें रोमियों 8:23 किसी का नाम बताईये जो परमेश्वर के चुनों हुओं के विरूद्ध है।

11. पढ़ें रोमियों 8:34 उस व्यकित का नाम बताईये जो परमेश्वर के लोगों को दो ा लगा सकता है (जो दण्ड लायेगा)

12. पढ़ें रोमियों 8:35 ऐसे व्यक्ति का नाम बताओं जो एक मसीही को परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकता है।

13. पढ़ें रोमियों 8:31 इस प्रेरितों के शिक्षण के पाठ का क्या संराश या क्या अन्त है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

रोमियों 8:38–39 – *''मैं निश्चय जानता हूँ कि न वर्तमान, न भवि य, न स्वर्गदूत न प्रध ाानातएँ न वर्तमान न भवि य, न सामर्थ, ऊँचाई (39) न गहराई, और न कोई और सृभटी हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।''*

रोमियों 5:19 – *''जैसे एक मनु य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे वैसे ही एक मनु य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।''*

2 कुरिन्थियों 5:21 – *''जो पाप से अज्ञात था, उसी को परमेश्वर ने हमारे लिए पाप ठहराया ताकि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।''*

कुलिसियों 1:21–22 – *''और ऐसी विधियों के वश में क्यों रहते हो, यह न छूना, उसे न चखना, इसे हाथ न लगाना?'' (22) क्योंकि यह सब वस्तुएँ काम में लाते लाते नाश हो जाएंगी।''*

इफिसियों 1:6 – *''जिससे उसके उस अनुग्रह को महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें अपने 'प्रिय' में निःशुल्क दिया है।''*

इब्रानियों 10:14 – *''उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते है, सदा के लिए सिद्ध कर दिया है।*

इब्रानियों 10:15–17 – *''(15) पवित्रआत्मा भी हमें यही गवाही देता है, क्योंकि उसने पहले कहा था। (16) कि प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद उनसे बाधूंगा, वह यह है कि अपना नियम उनके हृदय पर लिखूंगा, और मैं उनके विवेक में उनको डालूंगा। (17) फिर वह यह भी कहता है कि मैं उनके पापों को और उनके अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूंगा।''*

रोयिमों 6:1–2 – *''(1) हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो। (2) कदापि नहीं । हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उस में क्यों जीवन बिताएं?''*

इब्रानियों 9:12 – *"बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया।"*

रोमियों 8:33 – *"परमेश्वर के चूने हुओं पर दो ा कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है।"*

रोमियों 8:34 – *"फिर कौन है जो दण्ड़ की आज्ञा देगा? मसीह वह है, जो मर गया वरन् मुर्दो में से जी भी उठा और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठा है, वह हमारे लिए परमेश्वर से निवेदन भी करता है।"*

रोमियों 8:35 – *"कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सकता है? क्या क ट? संकट? उपद्रव? अकाल? गरीबी? जोखिम? या तलवार?"*

रोमियों 8:31 – *"तो हम इन बातों के वि ाय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?"*

उत्तर निर्देशिका

1. पढ़ें रोमियों 8:38–39. प्रेरित पौलुस ने क्या समझाया इसमें?

उसने निश्चय जाना कि परमेश्वर के प्रेम से हमें कोई अलग नहीं कर सकता है न जीवन न मृत्यु, न दूत न आत्मा,न वर्तमान, न भविष्य, न ऊपर की शक्ति,न नीचे की सामर्थ। हमें कुछ भी परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती, जो हमारे प्रभु यीशु में पाया है।

2. जब मैं बाइबल कालेज में था, मेरा एक प्रोफेसर मित्र था जिसने कुछ नोटस् दिये जिनमें लिखा थाः कि "पवित्रता एक न्याय का कानून है, परन्तु परमेश्वर कहता है कि कोई भी धार्मिक है, जो विश्वास करता है, बनाया नहीं जाता धार्मिक"। जैसे मैंने पवित्रशास्त्र का अध्ययन किया, मुझे निश्चय हो गया कि पवित्रता धार्मिकता का वरदान है, जो आपको परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराता है। पढ़ें रोमियों 5:19 "यीशु मसीह के आज्ञकारी होने से बहुत होंगे,

स. जो धर्मी ठहराए गए।

3. पढ़ें 2 कुरिन्थियों 5:21 ''जो पाप से अज्ञात था, उसीको परमेश्वर ने **हमारे** लिए पाप ठहराया ताकि हम

उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाए।

4. पढ़ें कुलस्सियों 1:21–22 ''(21) उसने अब उसकी ाारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया है, जो पहले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे। (22) ताकि तुम्हें अपने सामने पवित्र, नि कलंक और निर्दो ा बना कर उपस्थित करें।''

स. परमेश्वर की दृष्टि में।

5. पढ़ें इफिसियों 1:6 हमारे सारे अनन्त काल तक हम उसकी महिमा करेंगे, उसके अनुग्रह के द्वारा हम उसके

'प्रिय' यीशु में - स्वीकार किए गये।

6. पढ़ें इब्रानियों 10:14 यीशु मसीह के क्रुस के बलिदान के द्वारा हम सिद्ध ठहराए गए, कब तक?

स. सदैव के लिए।

7. पढ़ें इब्रानियों 10:15–17 नई वाचा में परमेश्वर की प्रतीज्ञा हमारे पापों को याद करने की है?

स. कभी नहीं।

8. पढ़ें रोमियों 6:1–2 परमेश्वर का अनुग्रह हमारे पापों से बड़ा है। क्या हम पाप करते रहें कि परमेश्वर का अनुग्रह अधिक हो?

परमेश्वर निषेण करता है, नहीं!

9. पढ़ें इब्रानियों 9:12 किस तरह का उद्धार यीशु ने हमारे लिए प्राप्त किया? (हमारे पापों की क्षमा के लिए दण्ड़)

स. अनन्त तक छुटकारा

10. पढ़ें रोमियों 8:33 उस एक व्यक्ति का नाम बताईये जो परमेश्वर के चुने हुए लोगों के विरूद्ध दो ा लगाए।

ऐसा कोई नहीं है।

11. पढ़ें रोमियों 8:34 किसी एक का नाम बताओ जो दो ा लगा सकता है, जिससे परमेश्वर के लोगों पर दण्ड हो।

ऐसा कोई नहीं।

12. पढ़ें रोमियों 8:35 एक नाम बताईये जो परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सके।

ऐसा कोई नहीं।

13. पढ़ें रोमियों 8:31 इस प्रेरितों के शिक्षण के पाठ का क्या संराश या क्या अन्त है।

"परमेश्वर हमारे साथ है, हमारे विरूद्ध कोई नहीं हो सकता।'

तृतीय स्तर

अध्याय १२

उद्धार का फल (भाग १)

लेखक – डोन क्रो

क्या एक बार विश्वास का कार्य ''बचा'' सकता है, अगर यह लगातार जारी नहीं रहता है? क्या यह रूककर भी वादा पूरा करता है? अब्राहम ने विश्वास किया और वह उसकी धार्मिकता गिना गया, (उत्पति 15:6)। अगर अब्राहम का विश्वास ठहर गया, तो क्या उसकी धार्मिकता भी ठहर जायेगी?

पवित्रशास्त्र से हम जानते हैं, कि ''विश्वास'' एक बार ही के कार्य से (*सामान्य भूतकाल*) पूरा होता है, लेकिन मसीह जीवन में लगातार चालू रहता है, जैसे कि यहूदी *वर्तमान काल* के द्वारा लाया गया। जो *वर्तमान काल* में आज्ञा दी गयी है, उससे यह उम्मीद की जाती है कि यह चालू रहता है या दोहराया जाता है। जब हम *वर्तमान काल* में लागू करते है, अगर हम निम्न ाब्दों का प्रयोग करते है, या बाइबल के वाक्यों का तो हम उसकी समझ को बदल देते है, जो बाइबल के गद्यांश को पढ़ता है। यह ाब्द :**दोहरायें जाते हैं वह है, बार बार, लगातार एक आदत की तरह या यह एक नमूना बन जाता है।**

हम मान लेते हैं कि यहूदी वर्तमान काल का प्रभाव है इन गद्यांशों में:

यूहन्ना 3:16 – परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उसमें विश्वास करें (*वर्तमान काल, विश्वास करता है, विश्वास करना जारी रखता है*), **उसमें नाश नहीं होगा पर अनन्त जीवन पायेगा।**

इब्रानियों 10:14–उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सदा के लिए सिद्ध कर दिया है। (*वर्तमान काल, जो अलग किए गए हैं और जो उसमें अलग बने रहते हैं, वह एक चढ़ावा से हमेशा के लिए सिद्ध किए गए। **नए किंग जेम्स की पुस्तक** में कहता है, "पवित्र किए गए" और **नए इन्टरनेशनल पुस्तक** में कहता है, "शुद्ध किए गए"*)।

1 यूहन्ना 3:9 – जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, पाप नहीं करता (*वर्तमान काल वह पाप करता नहीं रहता, उसके जीवन में*) **पाप करना; क्योंकि उसका बीज बना रहता है** (*वर्तमान काल परमेश्वर का बीज लगातार*) उसमें बना रहता है (*वर्तमान काल और पाप नहीं करता*) (*वर्तमान काल उसका जीवन का स्तर ही बन जाता है*) **क्योंकि वह परमेश्वर से जन्मा है।**

मरकुस 1:15 – और कहता है, समय पूरा हो गया। परमेश्वर का राज्य निकट है। मन फिराओ *(वर्तमान काल मतलब मन फिराओ और लगातार मन फिराते रहो, जब भी आवश्यकता हो)* **और विश्वास करो,** परमेश्वर के वचन में (*वर्तमान काल विश्वास करो निरंतर विश्वास करो*)।

यूहन्ना 5:24 – मैं तुम से सच कहता हूँ जो व्यक्ति मेरा वचन सुनकर विश्वास करता है, *(वर्तमान काल और लगातार विश्वास करता रहता है)* **जिसने मुझे भेजा है, उस पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती वह मृत्यु को पार कर जीवन में प्रवेश कर चुका।**

लूका 15:7 – मैं तुम से कहता हूँ, इसी प्रकार एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना आनन्द होगा, *(वर्तमान काल और लगातार पछतावा करता है)*, **जितना निन्यानवे ऐसे धार्मियों के विषय में नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं है।**

प्रेरितों के काम 17:30 – प्राचीन काल में परमेश्वर ने इस प्रकार की अज्ञानता की उपेक्षा की, किन्तु अब हर जगह सब मनुष्यों को अपने पापों से मन फिराने की आज्ञा दे रहा है (*वर्तमान काल और लगातार मन फिराना*)।

यूहन्ना 6:47 – मैं तुम से सच कहता हूँ, जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है। *(वर्तमान काल लगातार विश्वास)*

रोमियों 4:5 – परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है। *(वर्तमान काल लगातार विश्वास करता है)*

प्रेरितों के काम 26:20 – मैं पहले दमिश्क के फिर यरूश्लेम के रहनेवालों को, तब सारे यहूदा प्रदेश में यहूदियों को और अन्य जातियों को समझाता रहा, कि पापों से मन फिराओं *(वर्तमान काल और लगातार मन फिराओ)* **और परमेश्वर की ओर फिरो** *(वर्तमान काल – लगातार परमेश्वर की ओर फिरो)* **और परमेश्वर की ओर लौट कर मन फिराव के योग्य काम करो।** *(वर्तमान कालः लगातार कार्यों को करना, या कर्मों को, जो सिद्ध करते हैं आपके पछतावे को)*

सरांश – यह है कि *वर्तमानकाल* में सौ बारा ाास्त्र में प्रयोग किया गया है। यह मेरा अभिप्राय नहीं है कि इस वि ाय पर सभी वचनों को दिखाएँ। सच्चाई, विश्वास के वि ाय में यह है कि इसको बचाने में इन दोनों कैलविन के ाास्त्र तथा अरझीनैयिन ाास्त्र में सिखाया गया है। जबकि, वह अलग अलग विचारों से आते हैं।

कैलविन ाास्त्र जो अनन्त जीवन की पक्की सुरक्षा के वि ाय में बताता है, सीखाता है, कि सही विश्वासी गिर सकते हैं, पर इसके बावजूद भी वह मजबूती से मसीह जीवन में बने रहेंगे (1 कुरिन्थियों 1:8)। जो अनन्तकाल की सुरक्षा में विश्वास करते हैं, वह यह भी विश्वास करते हैं कि सच्चे मसीह लोग जो पाप के लिए मर गए, फिर पाप में क्यों जीवन बिताएं (रोमियों 7:1–3)। जो पूरी तरह मसीह से फिर जायेंगे वह यह दिखाते हैं कि वह लोग नया जीवन प्राप्त किए सच्चे विश्वासी नहीं थे (1 यूहन्ना 2:19)।

अरमिनियन ाास्त्र हमें सिखाता है कि सच्चे मसीह भी मसीही विश्वास से गिर सकते हैं। वह साधारणतः ऐसा विश्वास करते हैं, और सिखाते हैं, कि वह जो विश्वास से गिरते हैं, वह कमजोर है, और उद्धार पूरा नहीं मिला है या वह उसे खो देते हैं। उनके पास ऐसा कुछ नहीं है जो उन्हें मसीह कहलाए (जो केवल नाम के लिए) जो केवल पाप में जीते हैं, बिना फल के जो उनके मन के पछतावे को दिखाता है।

जैसा कि प्रेरित यूहन्ना ने कहा, *''अगर हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो हम अपने को धोखा देते हैं,''* (1 यूहन्ना 1:8) लेकिन वह यह भी कहता है, *''जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता है।''* (1 यूहन्ना 3:9) पवित्र ास्त्र में हमारे पास सच्चाई है, लेकिन बदली नहीं जाती है। सब मसीह पाप करते हैं, (1 यूहन्ना 1:8) लेकिन सब मसीह आज्ञा भी मानते हैं (1 यूहन्ना 2:3)। पाप और संसारिक स्वभाव अभी भी मसीहियों,में पाया जाता है, लेकिन पाप उन पर अधिकार नहीं कर सकता (1 यूहन्ना 3:9)। सच्चा पछतावा व विश्वास को मन का परिवर्तन चाहिए, हृदय परिवर्तन दिशा का परिवर्तन यद्यपि यह पूरा नहीं है (प्रेरितों के काम 27:18 और यूहन्ना 1:8) ''फल'' विश्वास को परखने में अभी भी सही और सच है। विश्वास एक पक्का और अलौकिक विश्वास है, जो एक सच्चे विश्वासी को राह पर ले चलता है और उसके आचरण को दर्शाता है। यह इब्रनियों की पुस्तक में विश्वास के उदाहरण दिखाता है (इब्रानियों 11) में जिसका फल कार्यों में दिखता है। दूसरे ाब्दों में, जो हम करते हैं वह दर्शाता है, जो हम विश्वास करते हैं। याकूब 2:18 में कहता है *''मुझे विश्वास दिखाओं बिना कर्म के, मैं अपना विश्वास अपने कामों के द्वारा तुझे दिखाऊँगा''।*

जब प्रेरितों कामों के वि ाय में नकारात्मक बोलते हैं, वह ''व्यवस्था के कामों'' को दिखाते हैं, वह कुछ भी जो वह कमा रहे हैं, कामों से, अपने उद्धार के लिए।

पवित्रशास्त्र भी कहता है उद्धार के परिणाम के वि ाय में, जो कि अच्छे काम या विश्वास के काम वह कार्य जो विश्वास और पछतावे के द्वारा आगे बढ़ते हैं। (प्रेरितों के काम 26:20, मत्ती 3:7–10, 1 थिस्सलुनिके 1:3 और याकूब 2:14–26), यह उद्धार के परिमाण को दिखाते हैं। जो एकता मन फिराव व विश्वास के बीच में दिखती है, उन दोनों का एक ही परिमाण है, अच्छे काम हम लोग अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचाए गए, लेकिन हम अच्छे कामों के लिए बचाए गए। (इफिसियों 2:8–10 इनके बीच में दूविधा होती है, द्वारा या के लिए) कामों से विश्वास की परीक्षा की जाती है, अनुग्रह किसी से कुछ नहीं चाहता और कार्यों को नहीं माना जाता परमेश्वर का अनुग्रह (तीतुस 2:11–12)। यीशु ने सिखया, फल के द्वारा सच्चा विश्वासी पहचाना जायेगा, (मत्ती 3:8, 7:16–20, 25:34–40; यूहन्ना 13:35, 14:23; प्रेरितों के काम 26:20, रोमियों 2:6–11, याकूब 2:14–18 और यूहन्ना 3:10)।

शिष्यता के प्रश्न

1. जो आज्ञा दी गई वर्तमान काल में, उससे आशा की जाती है

2. पढ़ें यूहन्ना 3:16 यहूदी में वर्तमान काल के अनुसार यूहन्ना 3:16 में क्या कहता है?

3. पढ़ें 1 यूहन्ना 3:9 जो परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप नहीं करता, इसका क्या मतलब है?

4. पढ़ें लूका 15:7 एक पापी के लिये स्वर्ग में आनन्द मनाया जाता है।

5. पढ़ें प्रेरितों के काम 17:30 परमेश्वर सब मनु यों को सब जगह आज्ञा देता है।

6. पढ़ें प्रेरितों के काम 26:20 यह वचन क्या कहते हैं?

7. पढ़ें 1 यूहन्ना 2:3 परमेश्वर के साथ स्वयं का संबन्ध रखने से क्या फल है? वह उसको जानना?

8. पढ़ें याकूब 2:18 याकूब कहता है, ''अपना विश्वास मुझे अपने कामों के बिना दिखाओ (जो असम्भव है करना) और मैं तुम्हें दिखाऊँगा अपना विश्वास

9. पढ़ें थिस्सलुनिके 1:3 काम या कार्य, जो विश्वास को दर्शाते हैं वह है _______________

10. पढ़ें गलतियों 2:16–21 व्यवस्था के कार्य जो लोग करते हैं, उद्धार पाने के लिए

____

________________________(वचन 21) वह बचा नहीं सकते, उनमें बचाने की ाक्ति नहीं है।

11. पढ़ें रोमियों 2:7–10 इन वचनों में उन फलों का वर्णन करता है, जो दो समूह के लोगों को?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

यूहन्ना 3:16 – *''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो उस पर विश्वास करे वह न ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाएं।''*

1 यूहन्ना 3:9 – *''जो कोई परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं कर सकता क्योंकि वह परमेश्वर से जन्मा है।''*

लूका 15:7 – *''मैं तुम से कहता हूँ इसी प्रकार एक मन फिरानेवाले पापी के वि ाय में भी इतना आनन्द होगा, जितना निन्यानवे ऐसे धर्मियों के वि ाय में नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं है।''*

प्रेरितों के काम 17:30 – *''प्राचीन काल में परमेश्वर ने इस प्रकार की अज्ञानता की अपेक्षा की, किन्तु अब वह हर जगह सब मनु यों को अपने पापों से मन फिराने की आज्ञा दे रहा है।''*

प्रेरितों के काम 26:20 – *''मैं पहले दमिश्क के फिर यरूश्लेम के रहनेवालों को तब सारे यहूदा प्रदेश में यहूदियों को और अन्य जातियों को समझाता रहा कि पाप से मन फिराओ और परमेश्वर की ओर लौट कर मन फिराव के योग्य काम करो।''*

1 यूहन्ना 2:3 – *''यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे तो अपने इस काम से हम जान लेंगे कि हम उसे जाए गए है।''*

याकूब 2:18 – *"किन्तु कोई व्यक्ति यह कह सकता है, तुम्हार पास विश्वास है, मेरे पास कर्म है। तू अपना विश्वास मुझे कर्म बिना दिखा, मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाऊँगा।"*

1 थिस्सलुनिकियों 1:3 – *"हम अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते है।"*

गलतियों 2:16, 21 – *"(16) यह जानते है कि मनु य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है। हमने स्वयं भी मसीह पर विश्वास किया है, कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरे, व्यवस्था के कामों से कोई भी प्राणी धर्मी न ठहरेगा। (21) मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ – नहीं ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती तो मसीह का मरना व्यर्थ होता।"*

रोमियों 2:7–10 – *"(7) जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, आदर अमरता की खोज में है, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा। (8) पर जो स्वार्थी है और जो सत्य को नहीं मानते वरन् अधर्म को मानते हैं, उन पर परमेश्वर का क्रोध और कोप भडकेगा। (9) हर एक मनु य पर जो बुरे काम करता है, क्लेश और संकट आयेगा पहिले यहूदी पर फिर यूनानी पर। (10) पर जो भला काम करता है, उसको, महीमा, आदर और कल्याण मिलेगा, पहिले यहूदी को और फिर यूनानी को।"*

उत्तर निर्देशिका

1. जो आज्ञा वर्तमान काल में दी गई उसके द्वारा है _____________

लगातार जारी, दोहराया जाना, लागू करना इत्यादि।

2. पढ़ें यूहन्ना 3:16 वर्तमान काल के अनुसार यहूदी में, यूहन्ना 3:16 में क्या कहता है?

"परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई विश्वास करें - (*वर्तमान काल और सदा विश्वास करता है*) उसमें नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाये।

3. पढ़ें 1 यूहन्ना 3:9 जो परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप नहीं करता। इसका क्या अर्थ है?

जो परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप नहीं करता। (यह दिखाता है कि उसके जीवन के रहने का तरीका पाप में नहीं रहता, जैसे वह दिखाता है कि एक नहीं पछताया हुआ हृदय मतलब वर्तमान काल)

4. पढ़ें लूका 15:7 स्वर्ग में आनन्द होता है, एक पापी के लिए _____________

जो मन फिरता है और लगातार उसमें बना रहता हैं।

5. पढ़ें प्रेरितों के काम 17:30 परमेश्वर सब मनु यों को सब जगह _____________

मन फिराने और उसमें बने रहने की आज्ञा देता है।

6. पढ़ें प्रेरितों के काम 26:20 यह वचन क्या कह रहे हैं?

"पहले दमिश्क के लिए, फिर यरूश्लेम के रहनेवाले, तब सारे यहूदा प्रदेश और अन्य जातियों को समझाता रहा कि पापों से मन फिराओं और (वर्तमान काल और लगातार मन फिराते रहो) परमेश्वर की ओर फिरो, और मन फिराव के योग्य काम करो – वर्तमान काल काम करते रहो, काम तुम्हारे मन फिराव को दिखाते है।

7. पढ़ें 1 यूहन्ना 2:3 परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबन्ध क्या दिखाता है, वह है, परमेश्वर को जानना?

वह करना जो वह कहता है। और उसकी आज्ञाओं को मानना।

8. पढ़ें याकूब 2:18 याकूब कहता है, मुझे अपने विश्वास को बिना काम के दिखाओ (जो असम्भव है) और मैं तुम्हें अपना विश्वास ______________

अपने कामों से दिखाँगा।

9. पढ़ें 1 थिस्सलुनिकियों 1:3 में काम और कार्य जो विश्वास से आते हैं ______________

विश्वास से कार्य करते हैं।

10. पढ़ें गलतियों 2:16, 21 व्यवस्था के कार्य वह जो लोग यह ______________ या उद्धार पाने के लिए कोशिश करते हैं। (वचन 21) यह बचा नहीं सकते, इसमें बचाने की ाक्ति नहीं है।

धार्मिकता

11. पढ़ें रोमियों 2:7–10 यह वचन दो समूह के लोगों के वि ाय में क्या फल है?

वर्णन करता है विश्वासी और अविश्वासी

तृतीय स्तर

अध्याय १३

उद्धार का फल (भाग २)

लेखक – डोन क्रो

इस वचन को ध्यान दो : 1 यूहन्ना 3:10 ''इसी से परमेश्वर की सन्तान और ैतान की सन्तान जानी जाती है। जो कोई धर्म के काम नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं है, और न वह अपने भाई से प्रेम करता है।'' ये नहीं कहा, ''कि इस तरह हम अपने को बचाते है।'' ये कहता है ''इस तरह **हम अपने को जानते** हैं कि कौन परमेश्वर की सन्तान है (1 यूहन्ना 3–10 महत्व दिया है)

यीशु ने इस प्रकार कहा, ''उनके फल से **तुम उन्हें जानोंगे**''। (मत्ती 7:20)

वचन में, परमेश्वर दो तरह से बोलता है, (1) कि, उद्धार अनुग्रह के द्वारा, विश्वास से, (इफिसियों 2:8–6) और (2) अच्छे कामों को जो हर एक मन फिराया हुआ मनु य करेगा। (इफिसियों 2:10) हम क्यों डरते है विश्वासी के **फल** को बोलने से? बाइबल र्माती नहीं, इस वि ाय पर, यहाँ है कि ***कैसे हम जान सकते है*** कि हम परमेश्वर के राज्य तथा परमेश्वर के अधिकार में है।

1 यूहन्ना 2:3–5 (3) ''यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे तो अपने इस काम से हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए है। (5) ''पर यदि कोई व्यक्ति उसके वचन पर चले तो उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है हमें इस बात से मालूम होता है कि हम उस में हैं।''

अगर **तुम जानते हो** कि वह धार्मिक है। **तुम जानते हो** कि प्रत्येक जो सही करता है, वह (परमेश्वर) से जन्मा है (1 यूहन्ना 2:29)। (क्या यह ठीक दिखाता है? परमेश्वर का स्वभाव और मसीह की धार्मिकता हर एक जो धार्मिकता के काम करता है यह दर्शाता है कि वह उसके स्वभाव का भागी है। और जैसा कि यूहन्ना कहता है कि वह उससे (परमेश्वर) से जन्मा है।)

1 यूहन्ना 3:5–10 **(५) तुम जानते हो कि इसलिए प्रकट हुआ कि पापों को हर ले जाए। उसके स्वभाव में पाप नहीं। (६) जो कोई उस में बना रहता है, वह पाप नहीं करता। जो कोई पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है और न उसको जाना है। (७) "हे बालकों किसी के भरमाने में न आना। जो धर्म के काम करता है वही उसके समान धर्मी है।''** (यहाँ वर्तमान काल को बार बार दिखाता है) **जो सही है वह धार्मिकता है, ठीक उसी तरह जैसे, वह धर्मी है। (८) वह जो पाप करता है** (वर्तमान काल ठीक अपने स्वभाव के अनुसार) **वह शैतान से जन्मा है, क्योंकि शैतान आरम्भ से ही पाप करता आया है, परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रकट हुआ कि शैतान के कामों को नष्ट करे। (९) जो परमेश्वर से जन्मा है, पाप नहीं करता** (वर्तमान काल यह उनका स्वभाव है) **क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता, वह परमेश्वर से जन्मा है। (१०) इस तरह हम जानते है कि कौन परमेश्वर की सन्तान है और कौन शैतान की सन्तान है। कोई भी जो सही नहीं करता वह परमेश्वर की सन्तान नहीं है और न ही जो प्रेम अपने भाई से नहीं करता** (वर्तमान काल) (यूहन्ना कहता है, इस तरह हम जानते है, कौन परमेश्वर की सन्तान है और कौन ैतान की सन्ता है जो परमेश्वर को नहीं जानते उसमें परमेश्वर का प्रेम नहीं है। क्या नये जन्म के लिये कुछ परिमाण अवश्य नहीं है?)

1 यूहन्ना 3:14 – हम जानते है **कि हम मृत्यु से जीवन में** पार कर **गये क्योंकि हम अपने भाईयों को प्रेम करते है, जो कोई भी प्रेम नहीं करता मृत्यु की दशा में रहता है।**

1 यूहन्ना 4:6 – हम परमेश्वर के हैं। जो परमेश्वर को जानता है, वह हमारी सुनता है, (चेले) **लेकिन जो परमेवर के नहीं है, वह हमारी नहीं सुनता** (चेले) **इस तरह से हम** (आत्मा को पहचानते है) **और सत्य की आत्मा तथा झूठी आत्मा।**

१ यूहन्ना ४:८ – वह जो प्रेम नहीं करता, परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। (प्रेम एक विश्वासी का चिन्ह है, क्योंकि प्रेम परमेश्वर का स्वभाव है।)

1 यूहन्ना 5:2 – इस तरह से हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के बच्चों से प्रेम करते हैं, परमेश्वर के प्रेम से (वर्तमान काल लगातार हम उसे प्रेम करते हैं) और करते जाते हैं, **और उसकी आज्ञा को मानते हैं।**

1 यूहन्ना 5:18–19 – हम जानते हैं कि जो परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप नहीं करता (*वर्तमान काल, उसकी जीवन ैली ही यह दिखाती है, कि यह मन फिराव है***) वह जो परमेश्वर से जन्मा है, उसे परमेश्वर सुरक्षित तथा अच्छा रखता है।** (*वर्तमान काल*) **और बुराई उसकी हानि नहीं कर सकती।** *हम जानते हैं कि* **हम परमेश्वर की सन्तान है और यह सारा संसार शैतान के अधिकार में है।**

''प्रेरित यूहन्ना ने हमारे साथ इन सब बातों को क्यों बाँटा''

1 यूहन्ना 5:13 – ''मैंने तुम्हें जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।

सारांश : नये जन्म के लिए परमेश्वर की आत्मा के फल का परिमाण धार्मिकता, पवित्रता और प्रेम है। जब आप परमेश्वर के बिना जीवन जीते हैं तो आप को अपने ही ऊपर भरोसा नहीं होता कि आप परमेश्वर के हो। हमारा विवेक हमें दो ा लगाता है और परमेश्वर में भरोसा नहीं होता है। प्रेरित पतरस हमें हमारी बुलाहट को निश्चित करने के लिए बताते हैं कि (2 पतरस 1:10) अपने हृदय में निश्चित करो कि तुम उसके (परमेश्वर) के ही हो, उस जीवन ैली के द्वारा जो उस महिमा भरे सुसमाचार से मिली है। मैंने यह नहीं कहा, ''कि इस तरह हम बचे हैं, मैंने कहा, ''इस तरह ***हम जानते हैं,*** कि ह म परमेश्वर के हैं।''

शिष्यता के प्रश्न

1. पढ़ें प्रेरितों के काम 8:13, 18–22 पहला यूहन्ना ''फल'' के वि ाय में कहता है, और एक सच्चे विश्वासी के परिमाण के वि ाय में यह सब चीजें हैं, जो हृदय से उत्पन्न होती है। जब एक विश्वासी का हृदय सही नहीं होता, (जैसे साइमन का) उन्हें क्या करना है?

2. पढ़ें 2 पतरस 1:5–11 क्या परिमाण है कि एक व्यक्ति उन सब में से जिसे परमेश्वर ने चुना या बुलाया है?

3. पढ़ें मत्ती 25:34–40 इन वचनों ने कौन से गुण हैं जो एक विश्वासी के द्वारा किये जाते हैं?

4. पढ़ें यूहन्ना 13:35 यीशु के चेले किससे जाने जाते हैं?

5. पढ़ें मत्ती 7:21–23 यह व्यक्ति/सब क्यों परमेश्वर के राज्य से फिर गए?

6. पढ़ें यूहन्ना 14:23 अगर एक व्यकित यीशु से प्रेम करता है, तो वे क्या करेंगे?

7. पढ़ें प्रेरितों के काम 26:20 यह वचन क्या कहता है?

8. पढ़ें याकूब 2:17 अगर आप का विश्वास अच्छे काम और कार्य को नहीं दिखाता तो यह किस प्रकार का विश्वास है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

प्रेरितों के काम 8:13, 18–22 – *"(13) शिमौन ने भी विश्वास किया। वह बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा। वह चिन्ह और बडे बडे सामर्थ के काम देख कर चकित होता था। (18) जब शिमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तब वह उनके पास रुपए लाया। उसने कहा, (19) यह अधिकार मुझे भी दो कि जिस किसी पर मैं हाथ रखूं, वह पवित्र आत्मा पाएं। (20) पतरस ने उससे कहा, "तेरे रुपये तेरे साथ नाश हों, क्योंकि तूने परमेश्वर का दान रुपयों से मोल लेने का*

विचार किया है। (21) इस बात में न तेरा हिस्सा है न बांटा, क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं है। (22) इसलिये अपनी इस बुराई से मन फिरा कर प्रभु से प्रार्थना कर। सम्भव है, वह तेरे मन का विचार क्षमा कर दें।

2 पतरस 1:5–11 – *''(5) इसी कारण तुम सब प्रकार का प्रयत्न करके अपने विश्वास पर सद्‌गुण सद्‌गुण पर समझ। (6) समझ पर संयम, संयम पर धीरज, धीरज पर भक्ति (7) भक्ति पर भाईचारे का स्नेह, भाई चारे के स्नेह पर प्रेम बढाते जाओ। (8) यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहे और बढ़ती जाए तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह को पहिचानने में प्रभावहीन और नि फल न होने देंगी। (9) जिस में यह बातें नहीं वह धुन्धला देखता है वह अन्ध है, वह भूल बैठा है कि वह अब अपने पूर्वकालीन पापों से धुल कर ुद्ध हो चुका है। (10) इस कारण है भाईयों, अपने बुलाए जाने और चुन लिए जाने को अचूक बनाने के लिये भली भांति प्रयत्न करते जाओ। यदि तुम ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे। (11) वरन् तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करोगे।''*

मत्ती 25:34–40 – *(34) ''तब राजा अपने दाहिने ओर के लोगों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ इस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो सृभटी के आरम्भ से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है। (35) क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खाने को दिया, मैं प्यासा, था तुमने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, तुमने मुझे अपने घर में ठहराया। (36) मैं नंगा था, तुमने मुझे कपडे पहनाए, मैं बीमार था, तुमने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था तुम मुझ से मिलने आए। (37) तब धर्मी उसको उत्तर देंगे, हे प्रभु हमने कब आपके भूखा देखा और भोजन खिलाया, या प्यासा देखा और पानी पिलाया? (38) हमने कब आपको परदेसी देखा और अपने घर में ठहराया? (39) हमने कब आपको नंगा देखा और कपड़े पहिनाए? हमने कब आपको बीमार या बन्दीगृह में देखा? और मिलने आये? (40) तब राजा उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूँ जो तुमने मेरे इन छोटे से छोटे भाईयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।''*

यूहन्ना 13:35 – *''यदि तुम आपस में प्रेम करोगे तो इसी से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।''*

मत्ती 7:21–23 – *"(21) जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, उनमें से हर एक जन स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकेगा, केवल वह मनु य, जो मेरे स्वार्गीय पिता की इच्छा पर चलता है, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेगा। (22) उस दिन बहुत लोग मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने आपके नाम से भवि यवाणी नहीं की? क्या हमने आपके नाम से दु ट आत्माओं को नहीं निकाला? और आपके नाम से बहुत आश्चर्यपूर्ण काम नहीं किए? (23) तब मैं उन से स्प ट कह दूंगा, "मैंने तुम को कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करनेवालों, मेरे पास से चले जाओ।"*

यूहन्ना 14:23 – *"यीशु ने उसको उत्तर दिया, यदि कोई मनु य मुझसे प्रेम करे तो वह मेरे वचन को मानेगा और मेरा पिता उससे प्रेम करेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ निवास करेंगे।"*

प्रेरितों के काम 26:20 – *"मैं पहिले दमिश्क के फिर यरूश्लेम के रहनेवालों को तब सारे यहुदा प्रदेश में यहुदियों को और अन्य जातियों को समझाता रहा कि पापों से मन फिराओ और परमेश्वर की ओर लौट कर मन फिराव के योग्य काम करो।"*

याकुब 2:17 – *"वैसे ही विश्वास भी यदि वह कर्म सहित न हो तो वह मरा हुआ है।"*

उत्तर निर्देशिका

1. पढ़ें प्रेरितों के काम 8:13, 18–22 पहले यूहन्ना 'फल' के वि ाय में बोलता है, या एक सच्चे विश्वासी के परमाण के वि ाय में। यह सब चीजें मन से निकलती है, जब एक विश्वासी का हृदय सही नहीं पाया जाता (ठीक साइमन की तरह) उन्हें क्या करना हैं?

पापों से मन फिराओ (कुकर्मों से) और परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वह तुम्हारे मन के विचारों को क्षमा करे।

2. पढ़ें 2 पतरस 1:5–11 इसके लिए क्या परिमाण है कि जो मनु य को सबके बीच में परमेश्वर ने बुलाया है, चुना हुआ है?

वह अपने विश्वास में सब आत्मा के गुणों को दर्शाते हैं, व नया स्वभाव के सब गुणों को भी दर्शाते हैं।

3. पढ़ें मत्ती 25:34–40 इन वचनों में एक विश्वासी में कौन से गुणों को दिखाया है?

विश्वास के द्वारा इन कार्यों को करना- जैसे भूखों को भोजन देना, दूसरों की पहूनाई करना, निस्सहायों को वस्त्र देना, बीमारों की देखभाल करना, बंदीगृह में जाना।

4. पढ़ें यूहन्ना 13:35 यीशु के चेले किससे जाने जाते है?

वह जो प्रेम दिखाते हैं एक दूसरे के लिए।

5. पढ़ें मत्ती 7:21–23 परमेश्वर के राज्य से यह व्यक्ति क्यों फिर गए?

वह अधर्म के काम करनेवाले थे, यूनानी में, वर्तमान काल दिखाया है, जो दिखाता है कि कुकर्म करना उनके जीवन शैली थी, व उनका स्वभाव। यीशु ने कहा, वह उन्हें कभी नहीं जाना। वह खोये हुए धार्मिक लोग थे, उनका हृदय परिवर्तन कभी नहीं हुआ था, एक नया मन जो उन्हें परमेश्वर की ओर फिरा कर लाता।

6. पढ़ें यूहन्ना 14:23 अगर एक व्यक्ति यीशु से प्रेम करता है, वह क्या करेंगे?

उसके वचन को मानेंगे या उसकी आज्ञाओं को मानेंगे।

7. पढ़ें प्रेरितों के काम 26:20 यह वचन क्या कह रहे हैं?

अपने मन फिराव को अपने कामों के द्वारा प्रमाणित करो।

8. पढ़ें याकूब 2:17 अगर आपका विश्वास अच्छे कामों के द्वारा नहीं आगे बढता, तो यह कैसा विश्वास है?

मरा हुआ विश्वास, जो बचा न सके। (याकूब २:१४)

तृतीय स्तर

अध्याय १४

शिष्यता के लिए बुलाहट

लेखक – एन्ड्रयू वॉमक

आज हम एक प्रेरित होने के लिए बात करने जा रहे हैं और दूसरों को कैसे प्रेरित बनाएं। मैं आप को याद दिलाना चाहता हूँ, प्रभु ने हमें आज्ञा दी है कि उन्हें बदले नहीं, केवल उन्हें मुँह से यीशु को स्वीकार करने व अपना प्रभु मानने तथा पापों की क्षमा के लिए नहीं लेकिन उन्हें चेले बनाने के लिए। यद्यपि वह पहले दो अवश्यक है, और मैं उन्हें बिल्कुल भी महत्वहीन नहीं कर रहा हूँ, असली उद्देश यह है कि इसे नए जन्म से भी आगे जाना है तथा परिपक्वता में भी। मसीहियत का लक्ष्य है, कि कौन चेला है, आगे जाना व दूसरों को चेला बनाना।

यीशु ने कहा कि जाओं और चेला बनाओ, उन्हें परिपक्व करो और उनमें दूसरे चेले बनाने की क्षमता उत्पन्न करो। हमारी कलीसियाओं में आज ऐसा नहीं होता है। हमारे ऊपर यह भार डाला जाता है, कि उन्हें नया जीवन प्राप्त मसीह बनाओ, यही कहलाती है सेवकाई। हमारे पास सेवक है जो सब तरफ यात्रा करते हैं, बड़े–बड़े क्रुसेड़ करते हैं और देखते हैं कि हजारों लोग प्रभु के लिए निर्णय लेते हैं। जबकि उनमें से कुछ सच में विश्वासी नहीं होते, केवल अपने विवेक का अनुभव करते हैं, मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि कुछ लोग है, जो सचमुच में विश्वासी है और प्रभु से संबन्धित हैं। अकसर, कैसे भी, यह मोहिम चल रही है, कि चेले बन रहे हैं, यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है कि ऐसा हो।

मैं इसे ऐसे व्यक्ति से तुलना करता हूँ, जो छोटे बच्चों से प्रेम करता है। यह बिल्कुल उत्तरदायित्व न होने की तरह है, कि एक बच्चा होना और उत्तेजित होना, लेकिन केवल इसे जन्मा देखना। जब आपके पास बच्चा होता है, यह आपकी एक उत्तरदायित्व होता है कि आप उसको शिक्षण दे तथा पालन – पो ाण करें। हम लोगों से कहते है, कि ''यह विशे ा है कि नया जन्म होना और अपने मुँह से बोलना कि यीशु प्रभु है।'' यह जब होता है तब हम उनकी पीठ पर थपथपा कर कहते हैं कि ''तुम अब एक मसीही हो।

परमेश्वर में विश्वास करो, और बाइबल का अध्ययन करो, सब कुछ ठीक हो जायेगा।'' यह प्रभु नहीं बताता है।

क्योंकि इसके लिये, हमने लोगों को बढ़ाया है। कितने हैं जो पूरे हृदय से प्रभु में हैं परंतु परिपक्वता नहीं है। वह अपने विश्वास को बढ़ाने में असफल हैं, क्योंकि उनको मदद करने के लिए कोई समाग्री नहीं है। यीशु के लिए सकारात्मक गवाह बनने के बजाय, वे नकारात्मक गवाह बन जाते हैं। वह हमसे चाहता है कि हम लोगों तक पहुँचे, इस तरह कि वह पूरी पक्की तरह से चेले बनें और दूसरे लोगों को भी विश्वास में आगे बढ़ाते जाएं।

अगर आप छः महीने में एक व्यक्ति को यीशु के पास लाते हैं, और अपने को अलग करके और इस बिन्दु पर उनको सिखाया कि वह परिपक्व मसीह बन कर अपने विश्वास को आगे भी बढायेंगे, उन छः महीनों के अन्त में हम केवल दो मसीही को ही पाते हैं। तब अगर आप में से हर एक केवल एक ही व्यक्ति को प्रभु में लाते हैं, अपने को अलग करके तब उनकी प्रेरिताई छः महीने के लिए करते हैं, और वर्ष के आखिर में चार मसीह बनते हैं। यह उस मनुष्य से तुलनात्मक नहीं लगता, जो एक बड़ी सभा में हजारों लोगों को मसीह यीशु में लाता है। अधिकतर लोग कहेंगे, ठीक है, ''यह शिष्यता का तरीका केवल चार लोगों को एक वर्ष में बदलता है, जहाँ दूसरा तरीका हजारों लोगों को बदलेगा। हमें दूसरे के साथ जाना है।'' जो मनुष्य हजार लोगों को प्रभु में लाता है, वह 35,000 लोगों को प्रभु में लायेगा। यह अच्छा है, और कोई इसकी आलोचना नहीं करेगा; लेकिन यह बाल्टी में एक बूंद के समान है, यदि संसार की आबादी से तुलना करें तो। असलियत में, इस तरह से कलीसिया कार्य करती रही है।

अगर हम शिष्यता को महत्व देते हैं, तो व्यक्ति जो एक व्यक्ति को हर छः महिने में प्रभु में लाता है, और वह दो भी यही करते हैं, थोड़ा सा ज्यादा जैसे साढे बारह साल में, वह संसार की आबादी से ज्यादा लोगों को शिष्य बनायेंगे। कुछ लोग सोचेंगे कि यह नहीं हो साकता है, परन्तु मैं चुनौती देता हूं आपको कि इसे जांच कर देख लें। मैंने इसे बढ़ा दिया है, और थोड़ा बहुत बारह और आधा साल तक, एक व्यक्ति जो प्रेरिताई एक दूसरे व्यक्ति की करता है, हर छः महीने में, उनको बढ़ते हुए मसीही की देह में आगे बढ़ाते हैं, यदि दूसरे तरीके से सेवकाई करना जिसमें साढे पांच हजार बनाम साढे बारह हजार लोगों को सदस्य बनाना है।

अगर हम आप को ले चलते हैं, जहाँ आप केवल विजय तथा परिपक्वता का अनुभव ही नहीं करते हैं लेकिन इच्छा है कि बाहर जाकर दूसरे लोगों में आगे बढ़ाने का काम करें, अगर आप शिक्षक बनते हैं, बजाय इसके छात्र जो सीखते हैं, तो यहाँ कुछ चीजें हैं जो हो सकती है, अगर एक व्यक्ति इसको पकड़े और प्रभु के पीछे चलें परिपक्वता के साथ और अन्य व्यक्ति को प्रेरिताई करें। अगर आप इसको हर साल एक व्यक्ति के साथ किया, तो आखिरी साल में आप और वह व्यक्ति जिसको आपने प्रेरिताई की – दो। आखिरी दो साल में, दो, चार लेकिन, यदि आप लगातार इसको चालू रखें, तो दस साल के आखिर में होंगे 1,024 लोग जो सीखाये गए और मसीह की देह के लिए सदस्य बनाते जा रहे थे। अगर आप जारी रखें, तो एक व्यक्ति के साथ 20 साल के आखिर में वहाँ एक करोड़ से भी ज्यादा लोग होंगे, यह अद्भुत है। यह तरीका बढ़ोतरी का है जो प्रभु ने स्थापित किया, चेले बनाने के लिए, न कि जाओ और बदलो। यह बहुत अच्छा है, लोगों तक पहुँचना व राज्य को बढ़ाना, लेकिन हमारी सोच इस पर है, सब जल्दी हो।

कितने लोग बड़ी–बड़ी सभाओं में जाते हैं, और वचनबद्ध होते हैं, और घोि ात करते हैं कि मसीही हैं, लेकिन, क्रोध से भरे हैं, कड़वाहट है, मन में जलन है, और नकारात्मक गवाही बनाते हैं? अगर हम गिनती में देखें, तो कितने लोग सच्चे सुसमाचार से फिर गये होते हैं, क्योंकि उन्होंने देखा कि जो यह घो ाणा करता है कि वह मसीही है और सोचा *मैं उस पाखंड़ी की तरह ही अच्छा हूँ ,जो उस कलीसिया में है, मुझे इस की आवश्यकता नहीं है।*

सारा बिन्दु यही है कि शिष्यता परमेश्वर का बनाया हुआ एक तरीका है जो सारे संसार को शिष्य करने के लिए बनाया गया। सत्य आपको स्वतंत्र नहीं करता, जब तक आप वचन में बने रहते हो लगातार (यूहन्ना 8:31–32)। इसलिए परमेश्वर हर एक व्यक्ति को चाहता है कि, वह उसकी परिपूर्णता का अनुभव करे, लेकिन यह भी शिष्यता का एक तरीका है जो उसने बनाया है, जो कोई भी निश्चय किया कि यह करने का तरीका नहीं था, उसने दूसरा तरीका लिया जो कार्य नहीं किया।

मैं आज प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर आप के हृदय में इसे बोले कि आप को शिष्यता के महत्व को दिखाएं। मैं आप को उत्साहित करता हूँ कि आप एक चेला बनें, और दूसरे लोगों की भी शिष्यता करें।

शिष्यता के प्रश्न

1. यह आप को आश्चर्यचकित कर देगा कि यीशु ने कभी भी किसी को ''मसीही'' बनने के लिए नहीं बुलाया, बल्कि वह ''चेले'' बनने के लिए ही उत्साहीत या बुलाता था। आप मत्ती, मरकुस व लूका, यूहन्ना के समाचार में देखें, तो एक खाली, अलग कागज पर इसमें खोज – खोज कर लिख लें कि यीशु केवल चेले बनाने के दिखा रहा है।

2. प्रेरितों के काम पुस्तक में लोगों को ''मसीही'' बनने का निमंत्रण नहीं दिया गया बल्कि उनको ''चेला'' बनने के लिए ही बुलाया गया था।

3. पवित्रशास्त्र में ''चेले'' ाब्द का प्रयोग 273 बार बार किया गया है, पूरी बाइबल की पुस्तक में 'मसीही' ाब्द का उपयोग केवल तीन बार किया गया है इसको एक नोट पुस्तक में लिख लीजिये कि तीन बार 'मसीही' ाब्द का प्रयोग बाइबल में किया गया है।

4. पढ़ें मत्ती 10:25 इस वचन के अनुसार 'चेले' का क्या मतलब है?

5. पढ़ें लूका 14:26 यीशु के चेले होने का मतलब किसी के जीवन का बलिदान बिना किसी स्वार्थ के किसी दूसरे के लिए बलिदान करना। सही / गलत

6. पढ़ें लूका 14:33 कम से कम कुछ के साथ, यीशु के चेले होना, मतलब सब चीजों से बिल्कुल अलग होना, यीशु का नाम घोि ात करना सब से पहले। सही या गलत।

7. पढ़ें मत्ती 19:29 प्रत्येक वह जो घर भाई, बहन, पिता, माता, पत्नी, बच्चे या जमीन इत्यादि भूल गया, यीशु के लिए वह सौ प्रतिशत अधिक प्राप्त करेगा और अनन्त जीवन का वारिस होगा। सही या गलत।

8. पढ़ें प्रेरितों के काम 14:22 विश्वासियों को अपने विश्वास में बने रहना है। सही या गलत।

9. पढ़ें इब्रानियों 10:14 कुछ के लिए ाास्त्र में वास्तव में शिष्यता का मतलब है कि ''मसीही'' होना, कुछ करने की आवश्यकता नहीं (यह अनुग्रह के द्वारा), लेकिन ''चेले'' बनने के लिए बलिदान तथा वचनबद्धता की जरूरत है। सच्चाई यह है कि छुटकारा पाने के लिए यीशु में कुछ करने की जरूरत नहीं, यह पूरा है और कुछ करने की आवश्कता नहीं, लेकिन यीशु की बुलाहट हमारे पूरे जीवन की है और हमेशा के लिए। सही या गलत।

10. पढ़ें प्रेरितों के काम 11:26 यीशु की बुलाहट, दो प्रकार के विश्वासियों के लिए नहीं थी, कुछ मसीही तथा कुछ संसारिक और कुछ चेले बनाने की। वास्तव में मसीही और चेले कुछ एक से ही हैं। सही या गलत।

11. पढ़ें मत्ती 28:19 विश्वासियों के लिए यीशु की यही आज्ञा थी कि

(अ) जाओ और चेला बनाओ

(ब) सब रा ट्रों में परिवर्तन करो।

12. पढ़ें मत्ती 28:20 विश्वासियों को दूसरों की सब आज्ञा मानना सिखाना है, जो यीशु ने उन्हें आज्ञा दी है। सही या गलत।

13. पढ़ें यूहन्ना 1:12 यीशु ने उन सब अच्छे दान को दिया, (जैसे क्षमादान पवित्रता इत्यादि) लेकिन बिना उसके अपने जीवन में स्वीकार नहीं। सही या गलत।

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

मत्ती 10:25 – *'शि य का गुरू के और सेवक का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है। जब उन्होंने घर के स्वामी को ैतान कहा तो, उसके घरवालों को क्या नहीं कहेंगे?''*

लूका 14:26 – *''यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता, तथा माता, पत्नी और सन्तान, भाई और बहन तथा अपने प्राण को अप्रिय न माने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।''*

लूका 14:33 – *''इसी तरह जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।''*

मत्ती 19:29 – *''जिस किसी ने अपना घर भाई, बहन छोड दिया है, उसको सौ गुना मिलेगा। और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा!''*

प्रेरितों के काम 14:22 – *''चेलों के मन को वे स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते रहे कि विश्वास में बने रहो। वे यह कहते थे, हमें बड़े क्लेश उठाकर, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।*

इब्रानियों 10:14 – *''उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सदा के लिए सिद्ध कर दिया है।''*

प्रेरितों के काम 11:26 – *''जब वह उससे मिला तब वह उसे अंताकिया में लाया। वे एक व र्ा तक कलीसिया के साथ मिलते और बहुत लोगों को उपदेश देते रहे। चेले सब से पहले अंताकिया ही में ''मसीही'' कहलाए।''*

मत्ती 28:19 – *''इसलिए तुम जाओ और सब जातियों के लोगों को मेरे शि य बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।''*

मत्ती 28:20 – *''उन्हें सब बातें मानना सिखाओ जिनकी आज्ञा मैंने तुम्हें दी है। और देखो मैं जगत के अंत तक तुम्हारे साथ हूँ।''*

यूहन्ना 1:12 – *''परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकर दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं।''*

उत्तर निर्देशिका

1. यह आप को आश्चर्य चकित कर सकता है, कि यीशु ने कभी किसी को 'मसीही' बनने के लिए नहीं बुलाया बल्कि उन्हें 'चेला' बनने के लिए ही बुलाया। अगर हम (मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना) के समाचार देखें और एक कागज पर यह लिखें कि कई वचन यही दिखाते हैं, कि यीशु की बुलाहट चेला बनने की ही थी।

2. प्रेरितों के काम की किताब में लिखा है, कि लोगों को 'मसीही' बनने के लिए नहीं आमंत्रित किया लेकिन चेला बनने के लिए, प्रेरितों की किताब में देखें तो एक कागज पर लिखे कई वचनों में लिखा है, कि लोगों को चेला बनने को ही बुलाया।

3. पवित्रशास्त्र में 'चेले' ाब्द का प्रयोग 273 बार किया गया है, और सारी बाइबल की पुस्तक में ''मसीही'' ाब्द कुल तीन बार प्रयोग किया गया है। आप इनकी लिस्ट बना लीजिये – 'मसीही' ाब्द का प्रयोग किया गया इन वचनों में –

प्रेरितों के काम ११:२६; २६:२८ और १ पतरस ४:१६

4. पढ़ें मत्ती 10:25 ''चेले'' का क्या अर्थ है? वचन के अनुसार?

अ. चेले का मतलब है जो अपने स्वामी या मास्टर की तरह बन जाए!

5. पढ़ें लूका 14:26 यीशु का चेला बनने का मतलब किसी का बिना किसी स्वार्थ के बलिदान करना, किसी के सारे जीवन के लिए।

सही।

6. पढ़ें लूका 14:33 कहीं कहीं पर यीशु का चेला होना सब कुछ छोड़ देना, पहला स्थान यीशु को ही देना।

सही।

7. पढ़ें मत्ती 19:29 हर कोई जिसने घर, भाई, बहन, पिता, माता, पत्नी, बच्चे या जमीन सब यीशु के लिए छोड़ दिया, उसे 100 गुने से अधिक मिलेगा तथा वह अनन्त जीवन का वारिस होगा।

सही।

8. पढ़ें प्रेरितों के काम 14:22 प्रेरितों को विश्वास में बने रहना चाहिये।

सही।

9. पढ़ें इब्रानियों 10:14 सच में कि कुछ के लिए वचन में है कि चेला बनना वह है कि 'मसीही होना' कोई कुछ करने की जरूरत नहीं, (यह अनुग्रह के द्वारा है) लेकिन चेला बनने के लिए बलिदान चाहिये और वचनबद्ध होना। सच्चाई यह है कि छुटकारे के लिए यीशु में हमें कुछ करने की आवश्यकता नहीं , यह सिद्ध है और हमें कुछ नहीं करना है, लेकिन यीशु की बुलाहट हमारे सारे जीवन के लिए है।

सही।

10. पढ़ें प्रेरितों के काम 11:26 यीशु की बुलाहट दो प्रकार के विश्वासियों के लिए नहीं थी। कुछ मसीही के लिए और बाकी संसारिक और कुछ चेलों के लिए, सच्चाई में, मसीही और चेले एक ही हैं।

सही।

11. पढ़ें मत्ती 28:29 यीशु की आज्ञा विश्वासियों के लिए?

अ. जाओ और चेला बनाओ।

12. पढ़ें मत्ती 28:20 विश्वासियों को दूसरों को वह सब आज्ञा मानना सिखाना है, जो यीशु ने आज्ञा दी।

सही।

13. पढ़ें यूहन्ना 1:12 यीशु ने उन सब अच्छे दान को दिया, (जैसे क्षमादान पवित्रता इत्यादि) लेकिन बिना उसके अपने जीवन में स्वीकार नहीं।

सही।

तृतीय स्तर

अध्याय १५

अपनी गवाही का उपयोग कैसे करें

लेखक – डोन क्रो

मैं आज आप से बात करना चाहता हूं गवाही के वि ाय में कि कैसे उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन में प्रयोग करें। प्रेरितों के काम 5:42 कहता है, *"लेकिन वे प्रतिदिन मन्दिर मैं और घर घर में उपदेश करने लगे और इस बात का सुसमाचार सुनाने से कि यीशु ही मसीह है, न रूके।"* (नया अमेरिकन स्टेनडर्ड लेख)। ध्यान दें कि प्राचीन कलीसिया के चेले मन्दिर में रोज मिलते थे, और घर घर जाकर प्रचार करते व सीखाते थे, कि यीशु ही मसीह है। कई लोगों ने ऐसा महसुस किया कि घर घर जाकर या हर घर के दरवाजे पर जाकर प्रचार करना स्वाभाविक नहीं है और न ही इतना आसान है। मैं कुछ चीजें आपके साथ बाँटना चाहता हूँ, कि हमने यह सीखा है कि सच में घर घर जाकर, प्रेरिताई व शिष्यता के लिए घर के दरवाजे पर जाकर देखा कि लोग फिर कर यीशु में आएं।

यह इतना मुश्किल नहीं है, जितना आपको बताया गया है, और एक चीज मैंने पवित्रशास्त्र में देखी कि प्रेरित पौलुस ने अपनी खुद की गवाही का प्रयोग किया,तीन बार उस अपरिवर्तित व्यक्ति के बारे में बात कर रहा था। प्रेरितों के काम 9, 22, 26 में उसने अपनी गवाही दी, अपना अनुभव और क्या हुआ उसको जब उसने अविश्वासियों से बात की और एक सबसे अच्छी पहुँच जो हमने पायी, जो यीशु का सुसमाचार लोगों तक पहुँचाने में, वह है "प्रार्थना करते करते चलना"। हम दरवाजा खटखटाते हैं, और कहते हैं कि "हम इस जगह में हैं, लोगों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर प्रार्थना सुनता और उत्तर देता है, और चाहते हैं कि अगर आप की कोई समस्या, आपके परिवार में कोई बीमार या कोई और परेशानी, हम आपके लिए प्रार्थना करना चाहेंगे।" कभी वे कहते हैं,"ठीक। हाँ मेरे पास समस्या है" और चाहते हैं कि प्रार्थना करें; दूबारा वह थोड़ा मुश्किल समझते हैं और   र्माते हैं, और कहते हैं, कि "नहीं, हमारे पास कुछ भी प्रार्थना कराने के लिए नहीं इस समय।" तो हम अपनी व्यक्तिगत गवाही बोलना   ुरू कर देते हैं।

मैं कहता हूँ, ''मैंने देखा, आपके पास बच्चे हैं, मेरे पास अपने तीन बच्चे हैं। दिसम्बर 14, 1981 को मेरी दो बेटियाँ जो जुड़वा हैं, पैदा हुई। दूसरी जुड़वा को अभी पैदा होना ही था, उन्होंने उत्तर दिया ''ओह! मैं क्षमा चाहती हूँ, मैं कुछ नहीं सुन सकती इस बारे में,'' तब मैंने कहा, ''चिन्ता मत करो, मुझे बताने दें कि क्या हुआ।'' मैंने कहानी कहना ुरू किया और दूसरी जुड़वा थी; वह पैर से पैदा हो रही थी उसके प्राण को वायु नहीं मिल रही थी। उसके जन्म के समय वह एक तरह से मरी हुई पैदा हुई थी।

दाई ने उसे उठा लिया, और उसे जोर से मारा (जितने जोर से वह मार सकती थी, मारा) उसके फेफडों में पानी दिखा, उसने खींचा जो कुछ वह कर सकती थी किया और आखिर में उसने छोड़ दिया। जैसे किसी भी पिता की तरह, मैंने सोचा मैंने अपनी बेटी को खो दिया। मैं क्या करने जा रहा हूँ? इस बिन्दु पर, मैंने दरवाजे पर खड़े लोगों से कहा ''मैं आप से पूछना चाहता हूँ, आपने कभी पवित्र बाइबल में पढ़ा है? उन्होंने कहा, ठीक है, ''हमने थोड़ा सा पढ़ा है।'' या कभी कभी, ''नहीं वास्तव में'', मैंने बताया, ''कारण मैं आपसे पूछ रहा हूँ क्योंकि बाइबल कहती है, प्रेरितों के काम 10:38 में कि यीशु अच्छा करता रहा, सब को चंगाई देता रहा, ैतान के सताए हुए लोगों को, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। आप इसे छोड़ दें या स्वीकार करें, आप का जो भी मतलब हो, लेकिन मेरी बच्ची मर गई और मैं सोच रहा था कि कुछ समय के बाद उसको दफन कर दिया जायेगा।'' मैंने अपने में ही सोचा, *मैं उसको थोड़ा सा गोद में लूंगा।* जैसे ही मैं उसे उठाने को गया, उसके ऊपर एक ैतान था, जिसको बाइबल अशुद्ध आत्मा कहती है, उसने मुझ पर प्रहार किया और जरा सी देर के लिए लकवा मारे हुए जैसे बना दिया। जैसे ही ऐसा हुआ, मैंने कहा, ''यीशु के नाम में तुझे आज्ञा देता हूँ, अशुद्ध आत्मा, इस बच्चे में से बाहर निकल जा और मैंने यीशु के नाम से उस बच्चे पर जीवन की आज्ञा दी'' और वह बेबी जिसमें वास नहीं था, हांफने लगी, एक और वांस, और उसके बाद उसकी वांस रुक गयी, मैंने फिर कहा ''यीशु मसीह के नाम से तू, ओ, अशुद्ध आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, इसी वक्त इस बच्चे से निकल जा और बच्ची में जीवन आ गया!'' इस समय उसने कई बार हाफते हुए लगातार वांस लेती रही।

मैं उस व्यक्ति को नाम लेकर बुलाता हूँ, जिससे मैं बात कर रहा हूँ, और कहता हूँ, ''आप जानते हैं, यदि एक व्यक्ति बिना आक्सीजन के तीन मिनट में उसका मस्ति क न ट हो जायेगा, बिना प्राण वायु के, मेरी बेटी पूर्णतः सामान्य है, हर तरह से।'' हमने उसका नाम वीटा रखा, जिसका लैटीन भा ा में अर्थ है, ''जीवन'', क्योंकि हम उसे यह

कहानी बताना चाहते थे कि परमेश्वर ने उसके साथ यह किया। उसने उसे फिर से जीवन दिया। उसी समय से में, बहुत ज्यादा बाइबल का अध्ययन करता था, और यह मैंने खोजा कि जिस तरह से मेरे बच्चे के ऊपर अशुद्ध आत्मा थी, ठीक उसी तरह ौतान का राज्य व उसके अंधकार का राज्य और उसकी प्रभुता है, और परमेश्वर के प्रिय पुत्र का भी राज्य है।

''जब यीशु इस पृथ्वी पर आये, वह लोगों को अंधकार के राज्य से छुड़ाने व पश्चाताप व विश्वास के द्वारा अपनी ओर फिराने लगे। मुझे नहीं पता आप क्या विश्वास करते हैं, लेकिन मैं आप को बता रहा हूँ कि मेरे परिवार और मेरे जीवन में क्या हुआ, मैं आप को एक सही कारण बताना चाहता हूँ, मैं आपके दरवाजे पर था, यीशु ने कहा, जाओ और चेला बनाओ। मैंने जान लिया कि बहुत से लोग व्यस्त हैं, कलीसिया नहीं जा सकते या जाना नहीं चाहते। अगर आपके पास प्रश्न है, तो आप अपना हाथ ऊपर उठाकर नहीं कह सकते, कि 'पास्टर, आपने क्या कहा, क्या मतलब है?' इसलिए हम आपके दरवाजे पर आते हैं। दस मिनट में हमें परमेश्वर के वचन से शिक्षण मिला। तब हम वचनों में जाते हैं, और कुछ प्रश्न यह निश्चय करने के लिए पूछते हैं, कि हम सब समझते हैं। यह एक सचमुच में बातचीत है, जो आगे पीछे होती है। हम लोग प्रचार नहीं कर रहे, या उनसे कह रहें हैं कि बाइबल क्या कहती है, लेकिन यह कि उनकी मदद करना यह खोजने के लिए कि यह क्या कहती है, कुछ प्रश्नों के द्वारा से।

''क्या यह आपके लिए रूचिकर है? हम आपकी सुविधा के अनुसार समय रखेंगे, आप के घर आने के लिए जरा आपसे बात करने और कुछ पाठ सीखाने। अगर आप इस पहले पाठ से कुछ नहीं पाते, अगर यह मदद नहीं करता, और आपको उत्साहित नहीं करता, तब आप फिर कभी हमारा मुँह नहीं देखोगे। हम आपको यहाँ कोई बाधा डालने के लिए नहीं है, और या आपको किसी कलीसिया या संस्था में सम्मलित करने के लिए नहीं हैं। हम यहाँ पर केवल आप को बताने आए हैं कि यीशु ख्रीस्त ने आपके लिए क्या किया और यह सहायता करने कि आप परमेश्वर का वचन अपने आप समझ सकें। यहाँ पवित्र बाइबल में बहुत सी चीजें हैं, हम नहीं जानते या पूरी तरह नहीं समझते, लेकिन हम यहाँ पर आपको थोड़ा कुछ सीखाने के लिए आये हैं। क्या आप यह पसंद करेंगे?'' बहुत से लोगों ने कहा, ''हाँ, हम पसंद करेंगे।'' तो हमने समय निधार्रित कर लिया, उनके घर जाने को और शिष्यता के लिए पाठ पढ़ाना ुरू कर दिया। हम वहाँ पर नहीं थे यह करने के लिए, जिसे मैं कहता हूँ, ''माइक्रोवेब प्रचार'' उनका हाथ ऐंठने

और उनको कुछ प्रार्थना बोलने, जब कि वह समझते भी नहीं कि वह क्या कर रहे हैं। हम उनको शिष्यता की शिक्षा देते हैं उनकी यह समझने में सहायता करते हैं कि 'यीशु ख्रीस्त' और यीशु के क्रुस का कार्य।

मैं ने एक याजक को अपने शिष्यता के पाठ के बारे में बताया, और उसने कहा, ''डान, पहले पाठ के बाद क्या हुआ?'' पहले पाठ के बाद, एक व्यक्ति समझता है, उन्हें यीशु ख्रीस्त को उत्तर देने के लिए उन्हें क्या करना है, दया, क्षमा प्राप्त करने के लिए जो यीशु देता है। हम लोग बहुत दबाव ड़ालने वाले विक्रेता नहीं है। यह हमारा प्रस्ताव नहीं है, लेकिन पहले पाठ के द्वारा, वह यह जानेंगे कि उन्हें अपने हृदय से क्या करने की आवश्यकता है। तब उसने पूछा, ''अच्छा क्या होता है, 15 वें पाठ के बाद? मैंने कहा, ''15 वें पाठ के बाद एक व्यक्ति हमारे साथ रहा, उन्होंने अपने पापों से मन फिराया और बपतिस्मा लिया और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा भी पाया। हम देख रहे हैं, इस तरह की चीजें हो रही हैं केवल 15 वें पाठ के बाद ही नहीं, परन्तु 6 वें पाठ के बाद'' इस तरह की चीज होती हैं।

मत्ती की पुस्तक 28 में यीशु ने कहा सब रा ट्र में जाओ और चेला बनाओ, और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा भी दो। और शिष्यता करने के बीच में हम अविश्वासियों को यीशु ख्रीस्त और क्रुस की कथा को उनको समझाते हैं, और उनकी समझदारी से समझ लेते हैं सप्ताह दर सप्ताह, हम उनसे संबन्ध जोडते हैं व मित्रता भी करते हैं। वह हम से प्रेम व विश्वास करने लगते हैं। हम उनको प्रभु का वचन सुनाते हैं, केवल प्रचार नहीं करते। हम परमेश्वर का वचन पढते हैं, और उनको भी पढ़ने को कहते हैं, और उनसे प्रश्न पूछते हैं। जिस तरह से वह परमेश्वर का वचन देखते हैं, उसके आधार पर वह लोग उत्तर देते हैं। हफ्ते दर हफ्ते देखते हैं, कि लोग वहाँ आते हैं, जहाँ वह स्वतंत्रता से यीशु का अंगीकार करते हैं, क्योंकि वह जानते हैं, कि इसका क्या मतलब है, कि यीशु को ग्रहण करना और उसके पीछे चलना, उसको पूरे मन से समर्पण कर देना। यह बहुत अलग है कि जैसे दूसरे प्रचारक आज इस कार्य को प्रस्तावित करते हैं।

जिस तरह से हम लोगों तक पहुँचते हैं जो खोये हुए हैं, पहले अपनी गवाही के जरिये, और हर एक के पास आपनी गवाही होती है। कई बार हम अपनी ही गवाही के पर्चे लिखते हैं मैं ने लिखी, ''मेरी बेटी की मृत्यु''। जो मैंने कई बार दरवाजों पर छोड़

दिया। दूसरे लोग जो हमारे शिष्यता के प्रचारक समूह से उन्होंने पर्चो लिखे जैसे, ''एक बन्धक स्वतंत्र हुआ'' जोरोस के द्वारा, जोकि एक   राब पीने वाला था, दूसरा लिखता है, ''एक ऐसा मनु   य जो मानसिक है, उसकी मृत्यु'' रॉकी फौरी के द्वारा जो ड्रग्स में फँसा था, 15 व   र्ा की आयु से, लेकिन यीशु ने उसे स्वतंत्र कर दिया। हम इन गवाहियों को लोगों के दरवाजों पर जाकर बोलते है।

कुछ लोग कहते हैं, ''मेरे पास कोई बहुत बड़ी गवाही नहीं है, मैंने अपनी बेटी को मरने के बाद जिन्दा नहीं देखा।'' मैंने जान लिया कि बहुत से लोगों के पास इस प्रकार की गवाही नहीं होती। आपके पास एन्ड्रयू वोमैक की तरह गवाही हो सकती है, जिसके पास परमेश्वर की सामर्थ है, उसके जीवन को बचाने की, जो उसको बचपन से लेकर अभी तक पाप से अलग रखा तथा गन्दगी और नास्तिकता का जीवन से, अधि ाकतर लोग इसमें ही जीते हैं। हम में हर एक के पास गवाही है, अगर आप सोचते हैं कि आपकी गवाही इतनी   ाक्तिशाली नहीं है, तो मेरी गवाही का प्रयोग करें। जब हमने पहली बार अपनी शिष्यता प्रचारक समुह को   ुरू किया और लोगों को सीखाना   ुरू किया, जिसमें जोरोज ने मेरी गवाही का प्रयोग किया। उसके बाद उसने, मेरे से भी अच्छी तरह मेरी गवाही का इस्तेमाल किया। तब मैंने कहा, ''हे, जो, जाओ और लोगों को बताओ मेरे साथ क्या हुआ।''

अगर प्रेरित पौलुस ने नए नियम में अपनी गवाही को तीन बार प्रयोग किया, उन तक पहुँचने में जो खोए हुए हैं, आप भी कर सकते हो। आज हमारे पास कम्प्युटर है, सब तरह के कार्यक्रम (Word Perfect, Microsoft Word)। यह बहुत सरल है कि अपनी स्वयं की गवाही को ध्यान में रखना। यह ज्यादा प्रभावशाली है, कहने में, ''यह ऐसा कुछ नहीं जिसे मैंने बाइबल बुक स्टोर से लाया हो। यह वह है, जो मेरे साथ हुआ मैं आपके साथ बाँट रहा हूँ।''

मैं यह कहना पसंद करूँगा, कि आप बैठ कर अपनी स्वयं की गवाही लिखिये – आप के साथ क्या हुआ, आप कैसे यीशु में आये? तब अपनी गवाही को किसी को बताइए, जैसे कि आप किसी के दरवाजे पर जाकर गवाही देते हो।

अगर आपको इस वि   ाय पर और जानकारी चाहिये, तो मेरी वेबसाईट पर जाईये www.krowtracts.com और सूचना को देखिए – टिप्पणी ''अपने विश्वास को बाँटना'' अपनी स्वयं की गवाही लिखिये, दूसरे के साथ बाँटने का अभ्यास करिये और

अध्ययन करिये, यह बहुत जरूरी है कि आप अभ्यास करें, केवल पढ़े ही नहीं। जैसे ही आप बाहर जाते हैं, रा ट्र में प्रचार करें एक समय में एक व्यक्ति। परमेश्वर आपको आशी ा दे।

शिष्यता के प्रश्न

1. पढ़ें मरकुस 16:15 सुसमाचार किसको सुनाया जाना है?

2. पढ़ें मत्ती 28:19–20 किसको शिष्यता सिखाना चाहिये?

3. पढ़ें प्रेरितों के काम 8:5, 26, 16:13–15, 23, 20:20–21 प्रचार किस स्थान पर हुआ?

4. पढ़ें मरकुस 4:11–12 उससे पहले कि सच्चा परिवर्तन हो, एक व्यक्ति को चाहिये

   (अ) देखना;

   (ब) ग्रहण करना;

   (स) सुनना;

   (द) समझना;

   (ई) ऊपर दिये गये सभी

5. पढ़ें प्रेरितों के काम 28:23–24 जब पौलुस बाहर निकला और सुसमाचार की गवाही दी, कब तक उसने किया, लोगों को यीशु के वि ाय में प्रचार करने के लिए?

6. पढ़ें प्रेरितों के काम 16:14 जब कोई सच्चाई से यीशु की ओर फिर जाता है, तब क्या खुलता है?

7. पढ़ें प्रेरितों 2:37 क्या होता है, जब किसी व्यक्ति का दिल खुल जाता है, और वह पक्का विश्वास करता है?

8. पढ़ें प्रेरितों 16:31, 2:38 और एक व्यक्ति को क्या करना है?

9. पढ़ें प्रेरितों 2:42 और यूहन्ना 8:31–32 और तब एक व्यक्ति को क्या करना है?

10. पढ़ें रोमियों 10:14–15 विपरीत क्रम में (इन शास्त्र वचनों में) कैसे एक व्यक्ति यीशु ख्रीस्त के पास आता है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

मरकुस 16:15 – *''यीशु ने उनसे कहा, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृभटी के लोगों में सुसमाचार प्रचार करो।''*

मत्ती 28:19–20 – *(19) ''इसलिए जाओ और सब सब जातियों के लोगों को मेरे शि य बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। (20) उन्हें सब बातें मानना सिखाओ, जिनकी आज्ञा मैंने तुम्हें दी है, और देखो, ''मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे साथ हूँ।'' अमीन।*

प्रेरितों के काम 8:5, 26 – *''(5) और फिलिप्पुस सामरिया नगरी में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। (26) प्रभु के एक स्वर्गदुत ने फिलिप्पुस से कहा, ''उठ और दक्षिण की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूश्लेम से गाज़ा को जाता है, और जो निर्जन प्रदेश में है।''*

प्रेरितों के काम 16:13–15, 23 *''(13) सब्त के दिन अर्थात् विश्राम दिवस पर हम नगर के प्रवेश द्वार के बाहर नदी के किनारे गए, हमने यह सोचा था कि वहाँ प्रार्थना करने का कोई स्थान होगा। वहा कुछ स्त्रियों एकत्र हुई थी, हम बैठ कर उनसे बातें करने लगे। (14) उन में लुदिया नामक थुआथीरा। नगर की बैगनी कपड़े बेचनेवाली एक*

भक्त स्त्री थी। वह हमारी बातें सुन रही थी। प्रभु ने उसका मन खोला, ताकि वह पौलुस की बातों पर ध्यान दे। (15) जब उसने अपने परिवार सहित बपतिस्मा लिया, तब उसने हमसे अनुरोध किया यदि आप मुझे प्रभु की विश्वासनी समझते हो, तो चल कर मेरे घर में रहिये। (23) बहुत बेंत मारने के बाद उन्हें बन्दीगृह में डाला और दरोगा को आज्ञा दी कि वह उन्हें सावधानी से रखे।''

प्रेरितों के काम 20:20–21 – *''(20) जो बातें तुम्हारे लाभ की थी, मैं उनको बताने से कभी नहीं झिझका। मैं लोगों के सामने उनको प्रकट करता रहा और उन्हें घर घर जाकर सीखाता रहा। (21) मैं यहूदियों और यूनानियों के सामने गवाही देता रहा कि उन्हें परमेश्वर की ओर मन फिराना चाहिये। और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाना चाहिए।''*

मरकुस 4:11–12 – *''(11) यीशु ने उनसे कहा, ''तुमको तो परमेश्वर के राज्य के भेद की समझ दी गई है, परंतु बाहरवालों के लिए सब बातें दृभटांतो में बतायी जाती है।'' (12) ताकि, वे देखते हुए भी न देखे और सुनते हुए भी न समझे, ऐसा न हो कि वे पाप मार्ग से फिरे, और क्षमा किये जायें।''*

प्रेरितों के काम 28:23–24 – *''(23) तब उन्होंने पौलुस के लिए एक दिन ठहराया। उस दिन बहुत लोग पौलुस के घर में इकट्ठे हुए। पौलुस ने परमेश्वर के राज्य की गवाही दी। वह मूसा की व्यवस्था और नबियों की पुस्तकों से यीशु के वि य में समझा समझा कर सवेरे से ाम तक वर्णन करते रहे। (24) तब कुछ लोगों ने उन बातों को मान लिया और कुछ ने विश्वास नहीं किया।''*

प्रेरितों के काम 16:14 – *''उनमें लुदिया नामक थुआतीरा नगर की बैंगनी कपड़े बेचनेवाली एक भक्त स्त्री थी। वह हमारी बातें सुन रही थी। प्रभु ने उसका मन खोला ताकि वह पौलुस की बातों पर ध्यान दें।''*

प्रेरितों के काम 2:37 – *''सब सुननेवालों के हृदय छिद गए। उन्होंने पतरस और ो ा प्रेरितों से पूछा, हे, भाईयों हम क्या करें।''*

प्रेरितों के काम 16:31 – *'उन्होंने कहा, ''प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा परिवार उद्धार पायेगा।''*

प्रेरितों के काम 2:38 – *''पतरस ने उन से कहा, अपने पापों से मन फिराओ और तुम में से हर एक व्यक्तिअपनेअपने पापों कीक्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तब तुम पवित्रआत्मा का दान पाओगे।''*

प्रेरितों के काम 2:42 – *''वे प्रेरितों से शिक्षा पाने लगे, वे उनसे संगति रखने, प्रभु भोज की रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में लवलीन रहे।''*

यूहन्ना 8:31–32 – *''(31) तब यीशु ने उन यहुदियों से, जिन्होंने उन पर विश्वास किया था, यह कहा – ''यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे तो तुम मेरे सच्चे शि य ठहरोगे। (32) तब तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।''*

रोमियों 10:14–15 – *''(14) क्योंकि जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्यों लेंगे? और बात उन्होंने नहीं सुनी, उस पर वह कैसे विश्वास करेंगे? (15) और फिर प्रचार किए बिना वे कैसे सुनेंगे? यदि प्रचारक भेजे न जाये तो वह क्यों प्रचार करेंगे। जैसे धर्मशास्त्र में लिखा है, उनके पाँव क्या ही ''सुहावने है, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते है।''*

उत्तर निर्देशिका

1. पढ़ें मरकुस 16:15 सुसमाचार का प्रचार किसको सुनना है?

   प्रत्येक को, प्रत्येक प्राणी को।

2. पढ़ें मत्ती 28:19–20 किसकी शिष्यता करनी चाहिए?

   सभी राष्ट्रों के लोगों की।

3. प्रेरितों के काम 8:5, 26; 16:13–15, 23; 20:20–21 सुसमाचार का प्रचार कहाँ किया गया?

   सब नगरों में, रेगिस्तान में, नदी के किनारे, बन्दीगृहों में, लोगों के बीच और घर घर जाकर प्रचार किया गया।

4. पढ़ें मरकुस 4:11–12 बातचित करने से पहले, व्यक्ति को चाहिये ?

   स. ऊपर दिये सभी।

5. पढ़ें प्रेरितों के काम 28:23–24 जब पौलुस बाहर निकल कर, सुसमाचार की गवाही देने लगा, कितनी देर तक वह लोगों को बताता रहा? यीशु मसीह के वि ाय में?

सुबह से शाम तक, शायद ६ से ८ घन्टे तक!

6. पढ़ें प्रेरितों के काम 16:14 जब कोई व्यक्ति यीशु की ओर फिरता है, तो क्या खुलता है?

हृदय, मानव का मुख्य बीच का भाग.

7. पढ़ें प्रेरितों के काम 2:37 क्या होता है, जब एक व्यक्ति का दिल खुल जाता है, वह जान जाता है?

अगर वह उसका सही उत्तर देते हैं, वह पूछेंगे कि "मुझे, अब क्या करना चाहिए?''

8. पढ़ें प्रेरितों के काम 16:31, 2:38 और उस व्यक्ति को करना चाहिये?

मन फिराना पश्चाताप और यीशु मसीह में विश्वास व पानी का बपतिस्मा लेना चाहिए।

9. पढ़ें प्रेरितों के काम 2:42 और यूहन्ना 8:31–32 और उस व्यक्ति को फिर क्या करना चाहिए?

प्रेरितों की शिक्षण में बने रहना चाहिए। और लगातार, सीखना व यीशु के वचन का अभ्यास करते रहना चाहिए।

10. पढ़ें रोमियों 10:14–15 इन वचनों के द्वारा व्यक्ति कैसे यीशु मसीह में आता है?

कोई उसके पास भेजा गया, प्रचार किया गया, सुनाया गया, क्योंकि वह यीशु का सुसमाचार सुनते हैं और वह अपने उद्धार के लिए यीशु के नाम को पुकारते हैं।

तीसरा स्तर

अध्याय १६

प्रत्येक के वरदानों को शिष्यता में उपयोग करना

लेखक - डोन क्रो

आज हम बात करने जा रहे हैं, हर एक व्यक्ति के वरदानों की जो शिष्यता में प्रयोग किये जाये। वह प्रयोग किये जा सकते हैं। हम कई महिनों से इस शिष्यता के कार्यक्रम के साथ काम कर रहे हैं, बहुत बड़ी सफलता के साथ, यह देखते हुए कि लोगों के जीवन में बदलाव आया और नया जन्म हुआ, पवित्रआत्मा का बपतिस्मा भी पाया और पानी का बपतिस्मा भी लिया। एक दिन मैं एक मित्र से बात कर रहा था और कहा, ''हम कुछ कमी देख रहे हैं, वह लोग गिर रहे हैं'' तेजी से। उसने कहा, ''मैंने सोचा सब कुछ ठीक हो रहा है। तुम्हारा क्या मतलब है?''

मैं आपके साथ यह बाँटने जा रहा हूँ कि अन्दर की कलीसिया को लाया जाय – जहाँ लोग ऐसे ही बैठते हैं, याजक को सुनते हैं और घर चले जाते हैं। और बाहर की कलीसिया जहाँ लोग सीमा से भी आगे चले जाते हैं (अर्थात चर्च के अन्दर से आगे) यह एक सही तरीका है, कि 95% मसीहियों ने कभी किसी को प्रभु यीशु में नहीं लाया पर और 90% प्रचार का काम मसीहियों को लायेगा। संसार में कलीसिया का घर सब से बड़ा प्रचार स्थान है। हम लोग रविवार की ाला में प्रचार करते हैं, और प्रार्थना घर में प्रचार करते हैं। जिस तरह से हम चर्च की इमारत में प्रचार करते हैं, आप सोचेंगे कि कलीसिया को बदलना है।

यह तीसरी ताब्दी तक इस प्रभाव में नहीं था कि कलीसिया की इमारत हो। उस समय से, खोये हुओं तक पहुँचने के लिए, चर्च अन्दर चला गया, और अपने को चर्च की इमारत की चार दिवारी में छुपा लिया। हम बात करना चाहेंगे कलीसिया पहुंचे इन दिवारों के बाहर और फिरे अपने आन्तरिक कलीसिया से बाहरी कलीसिया में। क्रम के अनुसार केवल 0.5 कार्यक्रम है, (एक प्रतिशत से भी कम) जो हमारी चर्च की इमारतों के बाहर पहुँचते हैं। यह बताता है कि ऐसी कोई योजना अमेरिका में नहीं है, जो खोये

हुओं तक पहुँच सके। चर्च की इमारत के बाहर लोगों तक पहुँचना तथा शिष्यता करना, मसीहियत का एक हिस्सा है यह फिर से खोजना है।

फिर से परिवर्तन के द्वारा मार्टिन लुथर–चर्च का ध्यान खींचने के लिए एक सही प्रकाशन लाया, विश्वास के द्वारा। 1800 में जॉन वेसली के द्वारा एक बहुत बड़ा प्रचार का कार्य हुआ। लेकिन ऐसा लगता है कि व्यक्तिगत रूप से शिषयता व प्रचार का कार्य चेलों के समय से ही नहीं खोजा गया। आप कह सकते हैं, ''मुझे पता नहीं कैसे'', इस कार्यक्रम के द्वारा हम आपको जरूर दिखायेंगे कि कैसे यह बहुत सरल है। हम आपको दिखायेंगे कि लोगों के साथ काम करना तथा नये लोगों से घर घर जाकर अपनी गवाही के उपयोग के साथ मिलना। इसी पर मैं ज्यादा ध्यान देना चाहता हूँ। यह सुसमाचार है।

आप कैसे करना चाहेंगे, जो आप करना चाहते हो, वह नहीं, जो कोई और दूसरा करना चाहता है (वह जो आप वास्तव में करना चाहते हो), लेकिन सही में आप क्या करना चाहते हो? यही, इस की हम बात कर रहे हैं। जब मैं लोगों को दिखाता हूँ, ''देखों, यही हम कर रहे हैं, हम लोगों के जीवन को छू रहे हैं। यह बच रहे हैं, नया जीवन मिल रहा है, पवित्रआत्मा से भर गए और पानी का बपतिस्मा लिया है। लोग कहते हैं, ''यह महान है!'' लेकिन अगर मैंने कहा, ''अब कितने लोग मेरे साथ जाना चाहते हैं,'' तो वहाँ 200 लोगों में ाायद 3 लोग हो सकते हैं, क्योंकि बाकी उनमें डरे हुए हैं, या नहीं जानते कैसे क्या करें। या, मैंने कहा ''अभी, भूल जाओ इसके वि ाय में! इसकी चिन्ता मत करो; आप को डरना नहीं है, हम लोग बहार जायेंगे और पवित्र बाइबल का अध्ययन करेंगे और शिष्यता का पाठ आप को सीखाऐंगे।'' आप में से कितने सीखाना चाहते हैं? कम से कम 10 या 12 होंगे जो कहेंगे, ''हाँ, मैं सीखाना चाहता हूँ।'' लेकिन, यह इससे आगे नहीं जायेगा।

हम क्या करना चाहते हैं, दिखाता है कि कैसे हर वरदान जो यीशु मसीह की देह में प्रयोग की जा सकती है, उस खोये हुए तक पहुँचने में और उनके प्रेम करने और शिष्यता करने में यह वह सब वरदान ले लेंगे, और जो वरदान मसीह की देह में पाये जायेंगे उसी कलीसिया में जो स्थित है। आप में से कुछ कहते हैं, ''मैं प्रार्थना करना चाहता हूँ, पवित्रआत्मा के बपतिस्मा के लिए, चंगाई के लिए और कुछ अन्य ऐसी ही। ''ठीक है, हमारी शिष्यता में एक समय होता है जब हम आपको ध्येय के लिए बता सकते है। दूसरे लोग कहते हैं, ''मैं इसमें अच्छा महसुस नहीं करता हूँ,''

क्या आप केक पका सकते हैं? क्या आप कार्ड़ भेज सकते हैं? क्या आप एक फोन कर सकते हैं? क्या आप बाड़े को कलर दे सकते हैं? क्या आप एक छोटे बच्चे की देखभाल कर सकते हैं? जब उसकी माँ की हम सेवकाई कर रहे हैं, ताकि वह घर से एक घंटे के लिये बाहर आकर सीख सकती है? क्या आप व्यवहारिक काम कर सकते हैं? मध्यस्थि के वि ाय में क्या कहते हैं? आप में कुछ मध्यस्थि करने के लिए बुलाए गए हैं, और प्रार्थना करने के लिए। हम आपको उन लोगों को दिखायेंगे जिनकी हम शिष्यता कर रहे हैं, उनके नाम आप को बताते हैं, आप उनकी मध्यस्थि और उनके लिए प्रार्थना कर सकते हैं, अकेले या समूह में, उनके लिए और प्रचारकों और शिष्यता के प्रचारकों के लिए कर सकते हैं, इन कार्यों के लिए जो हर हर सप्ताह बाहर जाते हैं।

वहाँ पर एक कमरा है, उनके लिए जो दूसरों के पास पहुँचते हैं, शिष्यता करने के लिए हमारे पास एक कार्यक्रम है, जिसमें हर वरदान का प्रयोग किया जा सकता है। हम एक संस्था बना रहे हैं, शिक्षक व सहायक शिक्षक के लिए जो प्रेरिताई की योग्यता के साथ सेवकाई के लिए बाहर जा सकते हैं। तब कुछ कार्य के लिए दो लोग सेवकाई के लिए उनके पीछे आ सकते हैं। जैसे भोजन देना बिस्कुट बनाना, चीजों को देखना, कैसे चल रही हैं। हमारे पास लोग हैं जो हमारे लिए मध्यस्थता करते हैं तथा उन लोगों के लिए जिनकी हम सेवकाई करते हैं।

क्या आप जनते हैं, हम क्या देख रहे हैं? हम देख रहे हैं कि परमेश्वर लोगों के जीवन को बदले, क्योंकि उनको सिखाया व उनकी देखभाल की गयी, क्योंकि उसका (परमेश्वर) का प्रेम उनको दिखाया गया। और क्या आप को मालूम है कि इस सेवकाई का काम कौन कर रहा है? यह उनके द्वारा ही किया गया जो इसको करने के लिए ही है – लोग। इफिसियों 4:11 कहता है, चेले, भवि यद्वक्ता, प्रचारक, याजक और शिक्षक नियुक्त किये गये हैं, जिससे पक्का काम सेवकाई में कर सकें। कलीसिया सेवकाई का काम कर रही है, केवल वे ही नहीं जो ''याजक'' कहलाते हैं। जब याजक कलीसिया को सिखाता है और तैयार करता है, सेवकाई के लिए और वे बाहर जाकर सेवा करते हैं, यही सच्ची सफलता है।

उदाहरण के लिए, कि अगर किसी रा ट्र पर युद्ध की घो ाणा की गई और हमारे रा ट्रपति ने कहा, कि ''हम बहुत लोगों को युद्ध में खो देते हैं, इसलिए मैंने यह निश्चिय

किया है कि फौज को पीछे रखा जाय और जनरल अफसरों को आगे लड़ने भेजा जाये।'' और बाकी संसार हमारे पर हँसेगा, और यही हो रहा है। ौतान हमारे ऊपर हँस रहा है, क्योंकि हमने जनरल अफसरों को आगे भेजा है, सब सेवकाई करने के लिए, ''उन्हें सब करने दो –हम उन्हें इस कार्य के लिए पैसा देते हैं,'' हम एक फौज तैयार करने में असफल हो गए। परमेश्वर चाहता है कि हम एक फौज तैयार करें, और हर एक अपने अपने वरदान के अनुसार शिष्यता प्रचार के लिए इस्तेमाल किया जाएं।

हम एक फौज बनाना चाहते हैं, जिसे एक मजबूती से सेवकाई करने के लिए तैयार करना चाहते हैं–केवल हमारे ाहर के लिए ही नहीं परन्तु सारे संसार तक पहुँचने के लिए। यह सब उन चीजों के द्वारा हो सकता है जिनको हमने तैयार किया है। वह सब चीजें व शिष्यता के पाठ जो परमेश्वर ने हमें, दिये हैं।

परमेश्वर आप को आशीि ात करें जैसे सब एक साथ आकर अपने वरदानों का प्रयोग सब खोए हुओं की सेवकाई करने में उपयोग करते हैं, और नये विश्वासियों के लिए भी और 'यीशु' की आज्ञाओं को मानते हैं और सब रा ट्रों में शिष्य बनाते हैं।

उत्तर निर्देशिका

1. नीचे, संक्षेप में इस बात का उल्लेख किया है कि हम समूह को प्रचारक व शिष्यता के लिए तैयार करते हैं, खोए हुओं तक पहुँचने के लिए आपकी कलीसिया इसमें से किसी को भी ले सकती है या स्वीकार कर सकती है। अगर आप इसको जारी रखते हैं, आपके सब वरदानों को सेवकाई के लिए, आप एक व्यक्ति को जल्दी ही राज्य में ला सकते हैं। नीचें दिये गये कुछ प्रश्नों की सूची जो आप अपनी कलीसिया के सदस्यों को देना है। तब एक समूह का संगठन कीजिए इसको जारी करने के लिए –

यही मैं करना पसंद करता हूँ (एक या दो में निशान (✓) लगाए)

—— उनके घर पर नए लोगों को लाएँ।

—— शिष्यता के लिए पढ़ाएं।

—— मध्यस्थता : खोए हुओं के लिए प्रार्थना और प्रेरितों तथा सेवकाई के लिए भी प्रार्थना करना।

—— उन परिवारों को खाना या जरूरत की वस्तुएं देना जिनको जरूरत है।

—— लोगों से संबन्ध रखना उनके घर जाना या फोन पर बात करें।

—— दया दिखाना : उन्हें खाना देना, कार्ड भेजना, उनको जैसी मदद की आवश्यकता है, उनकी सहायता करना।

—— जो बच्चें या माताएं अकेले हैं, उनकी सहायता करना।

—— कलीसिया को वाहन उपलब्ध करना, इत्यादि।

—— अन्यः मैं चाहता हूं ________________________________

2. नीचे दिया गया नमूना शिष्यता के लिए फार्म है, जिसका प्रयोग शिष्यता के अध्यायों के शिक्षण के बाद किया जाता है। यह नमूना कलीसिया के पासबान को दिखाता है तथा जिनको अधिकार है कि कितने अध्याय पढ़ये जा चुके हैं और उन प्रत्येक अध्ययन का क्या परिणम आया।

शिष्यता के लिए परिणाम फार्म का नमूना

तारीख/पाठ

व्यक्ति का शिक्षण/पाठ

व्यक्ति का नाम जो सेवकाई के लिए जाते हैं/क्या पढ़ायाः

जहाँ सिखाया गया वह जगह

पाठ का वि   ाय

यह अध्ययन कैसा रहा?

3. पढ़ें याकूब 1:22 अगर हम केवल परमेश्वर का वचन पढ़ते हैं, उसे अपने जीवन में क्रियान्वित नहीं करते, तब हमने क्या किया?

4. पढ़ें मत्ती 7:24–27 एक बुद्धिमान व्यक्ति के लिए, हमें केवल वह जो यीशु ने कहा, सुनना ही नहीं है, लेकिन हमें करना चाहिए– क्या?

5. पढ़ें इफिसियों 4:11–12 सेवकाई का कार्य किसको करना है?

6. पढ़ें प्रेरितों के काम 8:1,4 वचन का प्रचार करने सब जगह कौन गया?

7. पढ़ें प्रेरितों के काम 8:1,4 कौन सब जगह प्रचार करने नहीं गया?

8. पढ़ें प्रेरितों के काम 11:19–22 प्रारम्भिक कलीसिया जो नये नियम की थी, विश्वासीयों ने सेवकाई का कार्य नहीं किया यह जारी रहा कलीसिया के अगुवओं व सेवकों के द्वारा जो निर्दो ा प्रेरितों ने दिये थे उनके अनुसार –यह एक अगुवे का काम है जो आरम्भ करते हैं और विश्वासी उसे आगे जारी रखते हैं, प्रेरितों के काम 11:19–22 कैसे इन वचनों को जांचेगे?

9. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 12:14–18 मसीह की देह का हर भाग आवश्यक है, हमें अपने आप की तुलना नहीं करनी चाहिये, लेकिन पूरा अर्पण यीशु के लिए सबकुछ नहीं करता लेकिन जिसे परमेश्वर ने तैयार किया, आप करो। आप क्या करोगे, जो आप को इस पाठ से सूचना मिलती है?

प्रश्नों के साथ उपयोग किये जाने वाले पवित्रशास्त्र के वचन

याकूब 1:22 – *"वचन पर चलने वाले बनो और केवल सुननेवाले नहीं, केवल सुननेवाले अपने आप को धोखा देते है।*

मत्ती 7:24–27 – *"(24) इसलिए जो मनु य मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनु य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। (25) व ा हुई। बाढ आयी। आँधी चली और उस घर पर टक्करें लगी, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी। (26) परन्तु जो मनु य मेरी ये बातें सुनता है और उन पर चलता नहीं, वह उस मूर्ख मनु य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर रेत पर बनाया। (27) "व ा हुई। बाढ आई। आँधी चली और उस घर पर टक्करें लगी तो वह गिर कर पूर्णतः न ट हो गया।"*

इफिसियों 4:11–12 – *"(11) उसी ने कुछ को प्रेरित कुछ को नबी और कुछ को सुसमाचार सुननेवाला कुछ को कलीसिया के लेपालक और कुछ को उपदेशक नियुक्त किया। (12) और उन्हें दायित्व सौंपा, जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं और सेवा का काम करें, जिससे मसीह की देह निर्मित होकर उन्नति करें।"*

प्रेरितों के काम 8:1, 4 – *''(1) उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव हुआ। प्रेरितों को छोड़ सब विश्वासी युद्धा और सामरी प्रदेशों मे तितर बितर हो गएं।'' (4) जो विश्वासी तितर – बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए नगर – नगर, गाँव – गाँव घूमने लगे।''*

प्रेरितों के काम 11:19–22 – *''(19) सो जो लोग उस क्लेश के मारे जो स्तिफनुस के कारण पड़ा था, तितर बितर हो गए थे, वे फिरते – फिरते फीनीके, साइप्रस और अंताकिया में पहुँचे। वे यहूदियों को छोड़कर वचन न सुनाते थे। (20) उन में से कुछ साइप्रस निवासी और कुरेनी थे, जो अंताकिया में आकर यूनानियों को भी प्रभु यीशु के सुसमाचार की बातें सुना रहे थे। (21) प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरें। (22) तब उनकी चर्चा यरूशलेम की कलीसिया ने सुनी। उन्होंने बरनाबास को अंताकिया भेजा।''*

1 कुरिन्थियों 12:14–18 – *''(14) देह में एक ही अंग नहीं, परन्तु बहुत से अंग है। (15) अब यदि पैर कहे कि मैं हाथ नहीं हूँ इसलिए देह का नहीं, तो वह इस कारण देह का नहीं है? (16) अब यदि कान कहे कि मैं आँख नहीं हूँ इसलिए देह का नहीं, तो वह इस कारण देह का नहीं है? (17) यदि सारी देह आँख ही होती तो हम कैसे सुनते? यदि सारी देह कान ही होती तो हम किससे सूंघते? (18) परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक – एक करके देह में रखा है।''*

उत्तर निर्देशिका

1. नीचे दिया हुआ उल्लेख है कि एक समूह को प्रचार तथा शिष्यता करने के लिए खोए हुओं तक पहुँचते हैं। आपकी कलीसिया इनमें से किसी एक को ले सकती और हस्ताक्षर कर सकती है। अगर आप यह जारी रखते हैं, सब वरदानों के उपयोग कर अपनी सेवकाई में करते हुए, आप एक व्यक्ति को राज्य में ला सकते हैं। नीचे दी हुई प्रश्नों की सूची है, जो आप अपनी कलीसिया को दें और एक समूह का संगठन करें इसे जारी करने के लिए।

यही मैं करना पसन्द करता हूँ – (एक या एक से ज्यादा पर (✓) निशान लगायें)

– उनके घर जाकर उनसे सम्पर्क करें।

– शिष्यता का पाठ सीखना।

– मध्यस्थित करना – खोए हुओं के लिए प्रार्थना करना और प्रचारक तथा शिष्यता की संस्था के लिए भी।

– उन परिवारों को खाना या जरूरत की वस्तुए देना जिनकी जरूरत है।

– कुछ लोगों से फोन से सम्पर्क करना तथा उनके घर जाना।

– दया सेः प्रचार करना, खाना बनाना दूसरों के लिए, एक कार्ड भेजना, किसी भी तरह मदद करना जो आप कर सकते हैं।

– अकेली माताओं और बच्चों के साथ काम करना।

– कलीसिया को वाहन उपलब्ध करना। इत्यादि ____________________

2. निम्नलिखित नमूना एक शिष्यता के लिए प्ररुप/फार्म है, जिसे शिष्यता के शिक्षण के बाद उपयोग किया जाना है – यह फार्म याजकों और अधिकारीयों को दिखायेगा कि कितने पाठ सिखाए जा चुके हैं और हर अध्ययन का परिणाम –

शिष्यता का परिणाम फार्म

जाने की तिथि/पाठ

व्यक्ति/पाठ पढ़ाता है

व्यक्ति का नाम जो वहाँ गया और पढ़ाया

स्थान जहाँ पढ़ाया गया

पाठ का वि ाय

यह अध्ययन कैसा हुआ?

3. पढ़ें याकूब 1:22 अगर हमने केवल परमेश्वर का वचन सुना, लेकिन अभ्यास नहीं किया, हमने क्या किया?

हमने अपने को धोखा दिया।

4. पढ़ें मत्ती 7:24–27 एक बुद्धिमान व्यक्ति होना, हमें यीशु की बाते केवल सुनना ही नहीं है, लेकिन हमें रकना चाहिए, क्या?

हमें उनको करना चाहिए।

5. पढ़ें इफिसियों 4:11–12 सेवकाई का काम किसे करना है?

सन्तों को केवल कुछ चुने वर्ग के लोगों को नहीं, लेकिन जैस, पद या कार्य मिलता है, उसके अनुसार करें।

6. पढ़ें प्रेरितों के काम 8:1, 4 वचन का प्रचार करने हर जगह कौन गया?

जो बाहर फैल गए थे, वह विश्वासी प्रचार करने गए।

7. पढ़ें प्रेरितों के काम 8:1, 4 कौन हर जगह वचन का प्रचार करने नहीं गए?

प्रेरित। हम इससे देखते हैं कि प्राचीन नये नियम की कलीसिया इस कार्य, शिष्यता व प्रचार के उत्तरदायित्व में थी।

8. पढ़ें प्रेरितों के काम 11:19–22 – प्राचीन नये नियम की कलीसिया में, विश्वासियों ने सेवकाई नहीं की, यह शि यता के नियमों के द्वारा आगे बढ़ी। हमारी कलीसिया में आज अगुवाई ही है, जो चीजों को ुरू करती है, तब विश्वासी उसे आगे बढ़ाते हैं। प्रेरितों 11:19–22 इसे किस तरह बयान करता है?

कलीसिया ने नये विश्वासियों के वार्तालाप को सुना और बरनावास को उनकी मदद के लिए भेजा। वचन - २२।

9. पढ़ें 1 कुरिन्थियों 12:14–18 प्रभु की देह का हर भाग अवश्यक है। हमें आपस में तुलना नहीं करनी चाहिए। यीशु को अर्पण करके वह सब करना चाहिए – जो परमेश्वर ने हमें तैयार किया है, आप क्या करोगे, जो कुछ आप इस पाठ से सीखते हैं?

आशा से, इसको अभ्यास करना और अपने वरदानों के साथ दूसरों तक पहुँचना। मदद करना।

CONTACT DETAILS

CHENNAI

Andrew Wommack Ministries India
72-D, Nandhini Mahal, First Floor,
Velachery Main Road Velachery,
Chennai • 600 042, INDIA.
Ph: (044)-4202 1820

HYDERABAD

Andrew Wommack Ministries India
42-343/1/188, Near Flora Hotel,
Maruthi Nagar A S Rao Nagar,
Hyderabad 500 040, INDIA.
Ph: (040)- 40280718

MUMBAI

Andrew Wommack Ministries India
Bethel, Plot No 305/E, Mith Chowky,
Near Girdhar ParkMalad (W),
Mumbai 400 064, INDIA.
Ph: +91 8976549515

info@awmindia.net www.awmindia.net

Charis Bible Colleges

And the things that thou hast heard of me among many witnesses, the same commit thou to faithful men, who shall be able to teach others also. 2 Tim 2:2

You can learn from the 'school of hard knocks,' I certainly have. But I don't recommend it! There's a better way to learn; it's Charis Bible College.

Andrew Wommack,
President & Founder

The Lord led Andrew to start Charis Bible College (CBC) to equip the saints for the work of ministry with a profound message emphasizing God's Unconditional Love and the balance of Grace and Faith. CBC equips the students giving them rich teaching of God's Word as well as practical hands-on ministry experience.

CBC is not just another bible college, it's a school for life! It is for people from all walks of life whether you are a preacher, businessman, mum, dad or grandparent.

There are three course options to match your own schedule: Full Time, Part Time and Correspondence. In Full Time, you can fully immerse yourself in the Word for 8 months in a grace-filled family atmosphere, or join Part Time on weekends, or study the CBC material at home through Correspondence!

We invite you to take the step of faith and join our CBC family !

Contact us for further information:

Chennai: 72-D, Nandhini Mahal • First Floor • Velachery Main Road
Velachery, Chennai • 600 042 • INDIA. Ph: (044)-4202 1820

Hyderabad: 42-343/1/188 • Near Flora Hotel • Maruthi Nagar
A S Rao Nagar • Hyderabad 500 040 • INDIA. Ph: (040)- 40280718

Mumbai: Bethel, Plot No 305/E • Mith Chowky • Near Girdhar Park
Malad (W) • Mumbai 400 064 • INDIA. Ph: +91 8976549515

info@charisbiblecollegeindia.org   www. charisbiblecollegeindia.org